वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए
—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द : 163
सृष्टि सम्वत् 1972949088

ओ३म्

# आर्य पुनर्गठन

आर्य समाज, अजमेर का हिन्दी पाक्षिक पत्र

उद्घोषक 'आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म॥'

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सारे जगत को आर्य बनायें।

हमारा उद्देश्य :
समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होनेवाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 6 बुधवार 15 मार्च 1989
अंक 1 प.स.-43383/84

अभयं मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात्।
अभयं नक्तमभयं दिवा न सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु॥

फाल्गुन सु 9 सवत 2045
वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60 पैसे

# महर्षि दयानन्द का राष्ट्रीय स्वरूप

—आचार्य दत्तात्रेय आर्य—

महर्षि दयानन्द कई दृष्टियो से आधुनिक भारत के वास्तविक निर्माता कहे जा सकते हैं। उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज भी इसीलिये एक देशव्यापी राष्ट्रीय आदोलन बन गया है और दूर-दूर विदेशो मे जहा-जहा भारतीय काफी सख्या में रहते हैं, वहा भी उसका कार्य और प्रभाव पहुच गया।

उनके जीवन तथा कार्यों के बारे मे भारतीय और विदेशी विद्वानो ने जो सम्मतिया प्रकट की हैं और मूल्याकन किया है, उनसे प्रतीत होता है कि स्वामी दयानन्द का भारत के परम्परागत सुधारको और धर्माचार्यों मे सर्वश्रेष्ठ स्थान था।

## महान पडित और सुधारक

कर्मकाडी तथा वेदपाठी ब्राह्मण परिवार मे जन्म लेने के कारण उन्हे वेद और व्याकरण तथा सस्कृत के आर्ष धर्मग्रन्थ पढने का जो अवसर मिला उसका उन्होने बचपन मे ही पूरा लाभ उठाया।

अन्त मे घर त्यागने के बाद उन्होने कई वर्ष सारे भारत मे भ्रमण करके सस्कृत के पडितो से विद्या ग्रहण की, योगियों और तपस्वियो से योग के रहस्य सीखे और वेद आदि सब प्राचीन सस्कृत ग्रथो का अध्ययन किया और इस प्रकार इतिहासकार जयसवाल के शब्दों में "दयानन्द ने विश्वामित्र, नारद, और शकर की परम्परा कायम रखकर मनुष्य जाति के वर्तमान उद्धारकों मे ऊचा स्थान प्राप्त कर लिया है।" उनके सस्कृत के अगाध-ज्ञान तथा पाडित्य पर प्रसिद्ध योगी अरविन्द तक मुग्ध थे। थियोसोफिकल सोसायटी की सस्थापिका मैडम ब्लेवेट्स्की के शब्दों में :—

It is Perfectly Certain That India never saw a more learned Sanskrit Scholar, a deeper metaphysician a more wonderful orator and a more fearless denounciator of any evil than Dayanand, since the time of Shankaracharya

अर्थात् यह बिल्कुल निश्चित बात है कि शकराचार्य के बाद भारत में दयानन्द से बढकर सस्कृत का बडा विद्वान, दार्शनिक, आश्चर्यजनक वक्ता और बुराइयों



का निर्भय समालोचक दूसरा नही हुआ।

## प्रभावशाली व्यक्तित्व

उनके इस प्रकार पाडित्य के साथ उनके अखड ब्रह्मचर्य के कारण लोग उनसे बडे प्रभावित होते थे। महात्मा गाधी उन्हें आदर्श ब्रह्मचारी मानते थे। विद्वता और ब्रह्मचर्य के साथ ही उनका व्यक्तित्व भी बडा आकर्षक और प्रभावशाली था। वह अपने समय के बौद्धिक तथा शारीरिक महाबली (Intellectual and physical giant) समझे जाते थे।

एक योरोपियन मिशनरी ने, जिसने उन्हे काशी के प्रसिद्ध शास्त्रार्थ के समय देखा था, लिखा है कि वे देखने मे विशाल किंतु सुन्दर पुरुष थे और उनके चेहरे से बडी बुद्धिमत्ता प्रकट होती थी।

He is a fine looking man, large but well proportioned his face specially is expressive of much intelligence.

## ब्रह्मचर्य तथा सन्यास

इसके अतिरिक्त उन्होने ब्रह्मचर्य के बाद ही नियमित रूप से सन्यास ले लिया था। अत एक विद्वान पवित्र तथा तेजस्वी सन्यासी होने के कारण देश भर में जहा वह जाते, लोगो की भीड उन्हे देखने और सुनने को एकत्रित हो जाती थी। जो उनके विरोधी थे वे भी उनके आकर्षक व्यक्तित्व, उच्च चरित्र तथा विद्वता और साहस के कारण उनका सम्मिश्रित आदर करते थे। स्वय एक ब्राह्मण पडित तथा हिन्दू सन्यासी होकर भी वे वेदों तथा शास्त्रों के प्रमाण देकर वर्तमान हिन्दू धर्म के अन्ध विश्वासो और सामाजिक बुराइयो का प्रबल विरोध करते थे। यह बात उस समय लोगो को आश्चर्यचकित कर देती थी। इसीलिये देश मे ही नही बल्कि योरोप और अमरीका तक उनकी उस समय जितनी प्रसिद्धि हुई उतनी तत्कालीन किसी और भारतवासी की नहीं हुई। इसलिये अनेक विद्वानों तथा लेखको ने उनके बारे मे बहुत कुछ लिखा है। अनेक प्रसिद्ध विदेशी विद्वानों ने भी उनकी महानता और क्रातिकारी विचारो की बडी प्रशसा की है।

## राष्ट्रीय स्वरूप

इस आश्चर्यजनक और महान सुधारक के बारे मे सबसे बडी महत्व की बात उनके जीवन तथा आंदोलन का राष्ट्रीय आधार है। दयानन्द की सारी शिक्षा-दीक्षा एक कट्टर ब्राह्मण बालक के रूप में प्रारम्भ हुई थी और एक प्राचीन भारतीय ऋषि या सन्यासी के रूप मे समाप्त हुई। पश्चिमी शिक्षा अथवा सभ्यता ने उनके रहन-सहन अथवा विचारो को प्रभावित नही किया था और न ही उन्होने किसी अग्रेजी स्कूल या कालेज मे कभी शिक्षा ग्रहण की थी। केवल इसी दृष्टि से उनका कार्य तथा आदोलन विशुद्ध भारतीय नहीं था बल्कि उन्होंने हिन्दू धर्म तथा समाज में जो क्रातिकारी सुधार करने का प्रयत्न किया, उनके पीछे भी भारत की राष्ट्रीय एकता और प्रगति का वह स्पष्ट और निश्चित उद्देश्य था जिसे हम आज स्वराज्य प्राप्ति के बाद भी ठीक तरह से अनुभव नही कर सके हैं। राष्ट्रीय दृष्टि

(शेष पृष्ठ 3 पर)

निदेशक · दत्तात्रेय आर्य    प्रधान सपादक · रासासिह    सपादक . वीरेन्द्र कुमार आर्य    फोन कार्या 21010

सम्पादकीय

# यों तो इस खल्क जहां में लाखों ही आए गए,
# किन्तु रोशन बस गुलिस्तां दयानन्द ही कर गए।

चोटी पर पहुँचने के लिये पर्वत के दुर्गम पथ को पार करना ही पड़ता है, अपने आपको हीन समझने वाला व्यक्ति तो मार्ग में ही निराश होकर वापिस लौटना चाहेगा, जो यह विश्वास लेकर चलेगा कि विजय उसका जन्मसिद्ध अधिकार है, वह ऊपर पहुंच कर ही चैन लेगा। गुलाब का सुन्दर फूल प्राप्त करने वाले को कटीली झाड़ियों को पार करना ही होगा क्योंकि कवि मिल्टन के शब्दो में काटों रहित गुलाब अभी तक विकसित नहीं किये जा सके हैं।

टकारा में कर्सनजी के घर पर जन्मे बालक मूलशंकर ने 14 वर्ष की छोटी सी आयु में शिवरात्रि के दिन 'सच्चे शिव' की कृपा प्राप्त करने की चाह में जो व्रत धारण किया था और चूहे की उछल-कूद देखकर उनके मस्तिष्क में जो बोध जिज्ञासा जाग्रत हुई थी उसे उन्होंने दृढ़ संकल्पी बनकर आखिरकार ब्रह्मचर्य एवं योग की अनवरत साधना, वर्षों की घोर तपस्या के पश्चात् गुरु विरजानन्द के चरणों में बैठकर प्राप्त कर ही लिया था। फिर गुरु के वेदज्ञान के प्रचार प्रसार के महान आदेश को शिरोधार्य कर देव दयानन्द कर्तव्य क्षेत्र में अवतरित हुए और वैदिक ज्ञान से समस्त भारतभूमि को ज्योतित एवं भासमान कर दिया। दयानन्द अकेले थे पर उनके मन में अडिग विश्वास, सुदृढ़ आस्था, सत्य श्रद्धा और महान संकल्प शक्ति थी जिसके आगे उनके बड़े से बड़े विरोधी भी नत मस्तक होते चले गये। इसी कारण महर्षि दयानन्द सरस्वती भारतीय पुनर्जागरण रूपी गगनमण्डल के सर्वाधिक देदीप्यमान नक्षत्र बने।

ऋषि दयानन्द एक महामानव थे। 'सत्यार्थप्रकाश' में मनुष्य कौन? 'मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख दुःख और हानि लाभ को समझे अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किंतु अपने सर्वसामर्थ्य से धर्मात्माओं की चाहे वे महा अनाथ निर्बल और गुणरहित क्यों न हों, उनकी रक्षा, उन्नति प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ, महाबलवान और गुणवान भी हो तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे अर्थात जहां तक हो सके वहां तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो चाहे प्राण भी भले ही जावें परन्तु इस मनुष्यपन रूप धर्म से पृथक कभी न होवे।" इस स्वनिर्मित कसौटी पर दयानन्द खरे उतरे।

मैडम ब्लेवेटस्की के 'अनुसार यह निश्चित है कि शंकराचार्य के पश्चात् दयानन्द से अधिक संस्कृतज्ञ, गम्भीर, आध्यात्मिक, आश्चर्य जनक वक्ता और बुराइयों पर निर्भीक प्रहार करने वाला भारत को प्राप्त नहीं हुआ।"

भारत की स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने भी उस महान ऋषि को निम्न शब्दों में श्रद्धासुमन अर्पित किये थे "स्वामी दयानन्द सरस्वती तेजस्वी और आध्यात्मिक तो थे ही, साथ ही वे एक युग प्रवर्तक और समाज सुधारक भी थे। स्वामी दयानन्द राजनैतिक और मानसिक गुलामी के विरुद्ध थे। उन्होंने कहा सभी मनुष्य जन्म से और प्रभु की दृष्टि में समान हैं। उन्होंने स्त्रियों की समानता और शिक्षा व सामाजिक उत्तरदायित्वों के लिये सबर्ष किया।

इंग्लैंड के पूर्व प्रधानमंत्री रैमजेमैकडानाल्ड की दृष्टि में 'आर्य समाज समस्त संसार को वेदानुयायी बनाने का स्वप्न देखता है। स्वामी दयानन्द ने इसे जीवन और सिद्धांत दिया। उनका विश्वास था कि आर्य जाति चुनी हुई जाति है, भारत चुना हुआ देश है, और वेद चुनी हुई पुस्तक है।

ऐसे महान अद्भुत व्यक्तित्व के धनी महर्षि दयानन्द का बोध दिवस गत शिवरात्रि को समस्त आर्य जगत् में समारोहपूर्वक मनाया गया।

बोध दिवस मनाते हुए हमें सैंकड़ों वर्ष हो गये। पर अब ऐसा प्रतीत होने लगा है कि हम महर्षि के विचारों मन्तव्यों के प्रति तथा आर्य समाज जैसे सशक्त, सबल और क्रांति वाहक संगठन के प्रति अपने कर्त्तव्य पालन में अबोध हो गये हैं। हमें दयानन्द और आर्यसमाज के सच्चे पहरूए बनना है—

प्रहरी हो जिस समाज के सजग पहरेदार।
उसको क्या रोक पायेगी आंधी की दीवार।

एक और बात के बोध की भी आवश्यकता है। हमारे संगठन में पद लिप्सा की दौड़ में पीछे रह जाने वाले अथवा अतिमहत्वाकांक्षी लोग एक दम यथास्थितिवादी नेतृत्व को उखाड़ फेंकने के मोह में घर फूंक तमाशा देखने को भी आतुर हो रहे हैं। उन्हें इस अवसर पर इतना ही कहना है कि—

"रातों में आफताब उगाने की चाह में।
जलते हुए चिराग बुझाने तो गलत है॥"

हम हमारे साप्ताहिक सत्संगों में संगच्छध्वं संवदध्वं संगठन सूक्त का पाठ समवेत स्वरों में गाते हुए अघाते नहीं हैं पर फिर भी हम में परस्पर प्रेम मोह ममता सौमनस्यता सहृदयता की भावनाएं नहीं आ पाती। 'प्रेम रस में मग्न होकर हम संगठन सूत्र में आबद्ध नहीं हो पाते। बुजुर्गों से तो हम क्या कहें। नई पीढ़ी के आर्यवीरों से ही आह्वान करना चाहते हैं—

'नौजवानो यही मौका है उठो खुल खेलो।
खिदमते कौम में जो बला आवे खुशी से झेलो॥
देश के सदके में माता को जवानी दे दो।
फिर मिलेगी न यह माता की दुआएं ले लो।"

---

बजाओ तुम वेदों का डंका, फूंको अनाचार की लंका।
सन्ध्या, हवन सत्संग में लाकर, भूले जनों को राह बताओ॥
हुंकार भरो शिवाजी के कवली के सोये प्राणों में।
नवजीवन का संचार करो तुम तूफानों से भी टकराओ॥
आचार भरो अब रग-रग में, चमके बल पौरुष फिर जग में।
हो ध्येय एक, कुछ करो मरो, ऋषिवर की शिक्षा मत त्यागो।

—रामसिंह

शिवरात्रि उस युग प्रवर्तक दयानन्द का बोध दिवस है, जिसने मृतप्राय: राष्ट्र को जिलाया, भूले भटके मानव को सत्य-पथ दिखाया, स्वाधीनता, प्रेम, समानता का पाठ पढाया। जो अकेला होते हुए भी कभी घबराया नहीं, एवं जीवनभर पाखण्ड, ढोंग, शोषण, अन्याय एवं भ्रष्टाचार के विरुद्ध प्रत्येक मोर्चे पर लड़ता रहा। जिसने एक दिन विश्वहित में ही अपने प्राणों की बलि दे दी।

# महर्षि दयानन्द और शिवरात्रि

—वीरेन्द्र कुमार आर्य—

उन्नीसवीं शती में जब समस्त भारत अज्ञान अन्धकार से आच्छादित था, विदेशी



शासकों के अत्याचारों से मुक्ति और त्राण पाने को जब भारत के प्राण अकुला उठे थे, राष्ट्रीय भावना को मिटाने के सभी प्रयत्न किए जा रहे थे, मातृशक्ति को तिरस्कृत किया जा रहा था, ऐसी निराशा की घड़ी मे स्वामी दयानन्द का राष्ट्र के क्षितिज पर प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने अपनी ओजस्विनी वाणी एव निर्भय लेखनी के प्रखर प्रकाश से निशीथ के साम्राज्य को छिन्न भिन्न करके समस्त संसार को सत्य ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर डाला।

## शिवरात्रि की घटना

बालक मूलशंकर को महर्षि दयानन्द में परिवर्तित करने वाली वह महाक्रान्तिकारी घटना आज से लगभग डेढ़ सौ वर्ष पूर्व गुजरात राज्य टंकारा ग्राम के शिव मंदिर में शिवरात्रि को घटी थी। बालक मूलशंकर ने शिवभक्त पिता की आज्ञा एव शिव दर्शन की उत्कट अभिलाषा मे शिव का व्रत रखा। सरल स्वभाव बालक प्रभु दर्शन हेतु रात्रि जागरण करता रहा। यहा तक कि अन्य सभी शिव भक्त दिन भर के व्रत एव कीर्तन की थकान के कारण निद्रा के आगोश मे चले गय। ऐसे निशीथ काल मे बालक मूलशंकर ने शिव प्रतिमा पर श्रद्धापूर्वक चढाये गये पुष्प चन्दन अक्षत, नैवेद्यादि को एक क्षुद्र जन्तु मूषक को प्रतिमा पर चढकर भक्षण एव लघुशंका कर तिरस्कृत करते देखा। कथित भगवान की इस पर कोई प्रतिक्रिया न होने पर बाल निर्मल हृदय पर आघात लगा। इसी आघात ने मूलशंकर को जड पूजा से विमुख कर सच्चे शिव के दर्शन करने का दिव्य संदेश दिया और आगे चलकर यही बालक महर्षि दयानन्द के नाम से विख्यात हुआ। विश्व कवि रविन्द्रनाथ टैगोर के शब्दों मे, 'भारत मे जो कुछ नवीन जागृति, सामाजिक सांस्कृतिक, बौद्धिक एवं राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न हुई उसका आदि मूल वह मूलशंकर ही था।"

## ज्ञान बोध और साधारण घटना

एक अति साधारण घटना से दयानन्द को ज्ञान बोध होना कोई अभूतपूर्व घटना नही थी। इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि राजकुमार गौतम को महात्मा बुद्ध बनाने वाली ऐसी ही एक घटना थी। वृक्ष के नीचे गिरते फलो को किसने नही देखा ? किन्तु विलक्षण नेत्रो वाले सर आइजिक न्यूटन का देखना अद्भुत सिद्ध हुआ। जेम्सवाट ने पतीली पर रखे हुए ढक्कन को अन्दर से आती हुई पानी की भाप के द्वारा उठता हुआ और हिलता हुआ ही तो देखा था और हम सब प्रतिदिन ऐसी घटनाए देखते रहते हैं, परन्तु हमे कोई प्रेरणा प्राप्त नही होती, लेकिन जेम्सवाट ने उमसे भाप की शक्ति को पाया जो जार्ज स्टीफन्सन द्वारा विकसित रेल्वे इन्जन के रूप मे हमारे समक्ष आई और जिससे आज औद्योगिक क्षेत्र का अधिकांशत संचालन होता है। जर्मनी के मार्टिन लूथर को प्रोटेस्ट धर्म के प्रवर्तक के रूप मे एक छोटी सी घटना ने ही तो महापुरुषो की कोटि मे लाकर खडा किया था।

## शिवरात्रि का संदेश

शिवरात्रि का जो संदेश मूलशंकर ने सुना, वह समस्त भारत के लिए ही नहीं अपितु समस्त मानव समाज के लिये एक वरदान सिद्ध हुआ। इसी शिवरात्रि की महिमा के विषय मे कविवर लाखन ने कितना सुन्दर लिखा है :

कामना जागे किसी मे तो
यही जागे
मागना चाहे मनुज तो
बस यही मागे—
कोख दो तो, मूलशंकर मातृ
जैसी दो।
जन्म दो तो, जन्म भू गुजरात
जैसी दो॥
प्रात दो, ऋषि बोध की उस
प्रात जैसी दो।
रात दो, तो बस उसी शिव-
रात जैसी दो॥

यह दिन युग प्रवर्तक दयानन्द का बोध दिवस है, जिसने मृत प्राय राष्ट्र को जिलाया, भूले भटके मानव को सत्य-पथ दिखाया, स्वाधीनता, प्रेम, समानता का पाठ पढाया। जो अकेला होते हुए भी कभी घबराया नही एव जीवन भर पाखण्ड, ढोंग, शोषण, अन्याय एव भ्रष्टाचार के विरुद्ध प्रत्येक मोर्चे पर लड़ता रहा। जिसने एक दिन विश्व हित मे ही अपने प्राणो की बलि दे दी।

अतएव आओ, हम सभी भारतीय इस पावन दिवस पर राष्ट्र की अखण्डता, गौरव को अक्षुण्ण रखने एव भ्रष्टाचार मिटाने की शपथ लें।

# महर्षि दयानन्द का...

(शेष पृष्ठ 1 का)

से वर्तमान हिन्दू धर्म का विवेचन करते समय इसीलिये दयानन्द का विशेष महत्व है। उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज का भी इसीलिये आधुनिक भारत की राष्ट्रीय जागृति के इतिहास मे बड़ा महत्वपूर्ण योगदान है।

### प्राचीनता एव प्राचीन

केवल विशुद्ध भारतीय होना ही राष्ट्रीयता का द्योतक नही है। प्राचीनता के नाम पर हम अपने राष्ट्र को अवनत, प्रगतिहीन और नष्ट भी कर सकते हैं। दयानन्द ने प्राचीनता का प्रारम्भिक आधार स्वीकार किया किंतु लक्ष्य या अन्तिम उद्देश्य इसे नही बनाया। इसीलिये वह हिन्दू धर्म तथा समाज को एक ऐसा नवीन रूप देना चाहते थे जैसा आज का पाश्चात्य शिक्षा-दीक्षा मे पला कोई हिन्दू सुधारक भी देने का साहस नहीं कर सका है। उदाहरण के लिये मूर्तिपूजा के बारे मे हमारे विचार और व्यवहार तथा जात पात के बारे मे कम से कम हमारा व्यवहार देखकर पश्चिम के आधुनिक विद्वान हमे दसवी सदी की दकियानूसी प्राचीनता का दास समझते हैं। इन दोनो विषयो पर दयानन्द के विचार इसीलिये आज भी भारत के लिये क्रांतिकारी हैं। दयानन्द की राष्ट्रीयता की कल्पना कितनी क्रांतिकारी और प्रगतिशील थी, यह योगी अरविन्द की निम्नलिखित राय से स्पष्ट है। वह लिखते हैं, "राष्ट्रीय होने का मतलब जहा के तहां खड़े रहना नही है बल्कि प्राचीन या भूतकाल मे से जीवनदायक तत्व लेकर उसे आधुनिक जीवन के प्रवाह को गतिशील करना है। यही वास्तव मे पुनरुत्थान तथा नवनिर्माण का सबसे शक्तिशाली साधन है। दयानन्द ने यह कार्य किया है और भूतकाल की ऐसी भावना तथा आदर्श को पुन लाकर उनसे आधुनिक ढाचे को सजीव कर दिया है।"

इस प्रकार महर्षि दयानन्द का सारा जीवन और चरित्र ही भारत की सर्वोच्च सांस्कृतिक परम्परा का एक जीता जागता उदाहरण है। उनके कार्य तथा विचारों का आधार प्रगतिशील राष्ट्रीयता की क्रांतिकारी भावना थी। हमारे वर्तमान विवेचन की दृष्टि से जो बात विशेष महत्व की है वह यह कि आधुनिक सुधारको मे दयानन्द ही एक ऐसे महान पुरुष थे जिन्होंने हिन्दू धर्म को वह सुनिश्चित और परिष्कृत रूप देने का प्रयत्न किया जो न केवल हमारी राष्ट्रीय एकता मे सहायक हो सकता है बल्कि जो आधुनिक भारत के स्वतन्त्र और प्रगतिशील हिन्दू नागरिक के लिये अभिमान और गौरव का भी कारण बन सकता है। वस्तुत: इसे वे हिन्दू धर्म के स्थान मे वैदिक धर्म के रूप मे प्रचारित करना चाहते थे।



समारोह को सम्बोधित करते हुए आचार्य दत्तात्रेय आर्य। मंच पर बैठे हैं श्री आदित्य।

## स्वामी दयानन्द ने धर्म को वैज्ञानिक स्वरूप दिया—आर्य

अजमेर (निस) आचार्य श्री दत्तात्रेय आर्य ने कहा कि भारत में धर्म के नाम पर अनेकों मत मतान्तर उत्पन्न होने लगे हैं जिससे लोगों में धर्म के प्रति आस्था कम होती जा रही है जो समाज के लिए चिंता का विषय है।

श्री आर्य ने केसरगंज स्थित आर्य समाज भवन पर आयोजित 'दयानन्द बोध दिवस' के अवसर पर बोलते हुए कहा कि ऋषि दयानन्द ने सर्वप्रथम धर्म को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया तथा धर्म को तर्क द्वारा जानने की पद्धति देकर धर्म के नाम पर फैले सभी अंध विश्वासों का पर्दाफाश किया।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट श्री रूपचन्द्र आदित्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने न केवल सामाजिक व धार्मिक क्षेत्रों में ही विशेष कार्य नहीं किये अपितु राजनैतिक क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किए तथा उन्होंने कांग्रेस की स्थापना के पूर्व ही पराधीन भारत को पूर्ण स्वराज्य प्राप्ति के लिये प्रेरित किया था।

उन्होंने कहा कि ऋषि दयानन्द का कार्य अभी अधूरा है क्योंकि अभी भी समाज में सामाजिक कुरीतियों का बोलबाला है जिसे समाप्त करने के लिये समाज के लोगों को जोरदार अभियान चलाना चाहिए।

इससे पूर्व डा. कृष्णपाल सिंह श्री [illegible] आर्य व कई कार्यकर्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किये। समारोह का संचालन आर्य समाज के मंत्री श्री रासासिंह ने किया।

## वीरेन्द्र 'वीर' दिवंगत

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री वीरेन्द्र वीर मुजफ्फरनगर का गत 11 फरवरी 89 को 74 वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं।

आर्य पुनर्गठन परिवार की विनम्र श्रद्धांजलि! —संपादक

पत्र और विचार

## अजमेर को निरक्षरता मुक्त करें

आदरणीय दत्तात्रेय जी

आप आर्य संस्थाओं को धारा 30 का संरक्षण प्राप्त कराने के लिए सचेष्ट हैं इसके लिए साधुवाद।

एक काम और हाथ में लें तो देश का कल्याण हो। क्या अजमेर की आर्य संस्थाएँ आपके नेतृत्व में 1991 की जनगणना तक अजमेर जिले को निरक्षर मुक्त करने का संकल्प ले सकती हैं? राजस्थान में 70 प्रतिशत निरक्षर हैं स्त्रियों में 95 प्रतिशत निरक्षर हैं। तभी देवराला या नाथद्वारा का कलंक राजस्थान पर लगता है।

मुझे विश्वास है कि आपके सुयोग्य और कर्मठ नेतृत्व में अजमेर ज्ञान ज्योति का दीप प्रज्वलित करने में सबसे आगे आयेगा आखिर ज्ञान दीप अजमेर में आपने ही तो प्रज्वलित किया था।

—डी के दुआ
जयपुर

## निर्भीक वक्ता

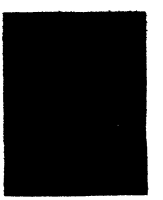
आर्य पुनर्गठन बहुत ही ओजपूर्ण लेखों से समाज का दिग्दर्शन कर रहा है।

इन्हीं तो खून करता है दयानन्द की उम्मीदों का' लेख पढ़कर लगा कि पत्र वास्तविक सत्य का प्रकाशक है। अन्य सामाजिक पत्र पत्रिकाएं चापलूसी पूर्ण लेखों से भरे रहते हैं।

—आचार्य राजदेव
प्रधानाचार्य
आर्य गुरुकुल
एरवा कटरा इटावा

## डॉ. बाबूराम शास्त्री को प्रणवानन्द पुरस्कार

सुप्रसिद्ध संस्कृतविद् एवं वैदिक विज्ञान वेत्ता डा बाबूराम



शास्त्री की ग्रन्थ की पुस्तक वैदिक कासमोगनी को अखिल भारतीय दर्शन परिषद द्वारा इस वर्ष स्वामी प्रणवानन्द पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया है। डा शास्त्री की यह पुस्तक वैदिक सृष्टि दर्शन पर उत्तम कोटि की पहली पुस्तक है।

1986 ई में आगरा विश्व विद्यालय से डी लिट की उपाधि से अलंकृत श्री शास्त्री ने इससे पूर्व इवोल्यूशन ऑफ उपनिषद व 'कालिदास के ललित प्रयोग' जैसी अन्य कई महत्वपूर्ण साहित्यिक पुस्तकों का भी प्रणयन किया है। वर्तमान में आप दयानन्द शोध पीठ अजमेर के अध्यक्ष एवं प्रोफेसर के रूप में अनेक शोध छात्रों को शोध निर्देशन दे रहे हैं।

## आर्यमित्र का सिद्धान्त विरोधी प्रचार

श्री सम्पादक जी

पुनर्गठन का 15 फरवरी का अंक कलेवर में लघु होने पर भी सारगर्भित सामग्री से परिपूर्ण है। आपने आर्यमित्र के कुम्भ और गंगा विषयक लेख पर जो अपना सम्पादकीय दिया है उससे आर्यसमाजियों की आंख खुलनी चाहिए। वस्तुतः आज के आर्यसमाजी पत्र कुछ ऐसे लोगों के हाथों में चले गये हैं जो ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों से अपरिचित हैं ही सिद्धान्त विरुद्ध सामग्री को प्रमुखता देकर छापने में भी उन्हें कोई संकोच नहीं होता। तभी तो कुम्भ की प्रशंसा और गंगा को त्रिभुवन तारिणी कहा जाता है। अन्यथा क्या स्वामी दयानन्द का कोई अनुयायी गंगा स्नान को पाप नाशक मानेगा? इस सम्पादकीय के लिये मेरी बधाई स्वीकार करें। ठा प्रेमसिंह जी का लेख ऋषि दयानन्द के जोधपुर प्रवास विषयक अनेक भ्रान्तियों का खण्डन करने वाला है। श्री शास्त्रीजी का आर्यसमाजों में होने वाले विवाहों विषयक लेख भी सामयिक तथा आर्यसमाज की मर्यादा स्थापित करने वाला है।

—डा भवानीलाल भारतीय
पंजाब विश्वविद्यालय
चंडीगढ़

स्वत्वाधिकारी आर्यसमाज अजमेर के लिए प्रकाशक एवं संपादक रासासिंह हेतु रतनलाल जैन द्वारा श्री आर्य प्रिन्टर्स बाबू मोहल्ला केसरगंज, अजमेर में मुद्रित एवं आर्य समाज भवन, अजमेर से प्रकाशित।

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।
—महर्षि दयानन्द

ओ३म्

# आर्य पुनर्गठन

आर्य समाज, अजमेर का हिन्दी पाक्षिक पत्र

'आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है सत्य हमारा कर्म ॥'

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सकल जगत को आर्य बनायें।

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होनेवाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 6 गुरुवार 30 मार्च, 1989
अंक 2 प स -43383/84

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात्।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ॥

चैत्र कृ. 8 सवत 2046
वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60 पैसे



समारोह को सम्बोधित करते हुए बाए से दाए शिक्षा मन्त्री श्री बी डी कल्ला, आचार्य दत्तात्रय आर्य श्री जे एन गौड व प्रधानाचाय श्री रासासिंह। छाया भाटी

## विद्यार्थी आर्यसमाज के आदर्शों से जुड़कर कार्य करें : कल्ला

अजमेर। शिक्षामंत्री श्री बी डी कल्ला न विद्यार्थियो को आह्वान किया कि वे आयसमाज के आदर्शों से जुडकर देश व समाज की एकता और अखण्डता के लिये काय कर। श्री कल्ला डी ए वी सीनियर उ मा विद्यालय के वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह म मुख्य अतिथि की हैसियत से बोल रहे थे। श्री कल्ला ने छात्रो से आशा व्यक्त की कि वे धम, जाति, और भाषा से ऊपर उठकर समाज मे एकता व अखण्डता कायम रखने के लिय आग आयग। उन्हाने आय शिक्षण सस्थाओ के माध्यम से नई पीढी म प्रचारित-प्रसारित प्राचीन वैदिक सस्कृति पर अपनी खुशी जाहिर की। उन्होने कहा कि आज के प्रतियोगी युग म वही छात्र कामयाब हो सकता है जो नियमित अध्ययन करता हुआ समय के साथ चलता है।

श्री कल्ला ने विद्यार्थी मे पथतत्व के होने की आवश्यकता पर जोर दिया। श्री कल्ला ने अध्यापको एव निजी सस्थाओ पर राष्ट्रीय शिक्षानीति को क्रियान्वित करने की जिम्मेदारी डालते हुए कहा कि अध्यापको का अपने विषय पर पूरा नियत्रण होना चाहिये। उन्हाने छात्रो को पढाते समय नई एव रोचक तकनीक प्रयोग मे लाने पर बल दिया। इसके पूर्व समारोह के अध्यक्ष सेवा-निवृत्त आई ए एस श्री जय नारायण गौड ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे शिक्षामंत्री श्री कल्ला से सस्था को दी जाने वाली अनुदान राशि 80 प्रतिशत से बढाकर 90 प्रतिशत करने की सिफारिश की। जिसके जवाब मे श्री कल्ला ने आश्वासन दिया कि रिपोर्ट आते ही वे राज्य की आय शिक्षण सस्थाओ का अनुदान बढाने की स्वीकृति दे देगे। श्री कल्ला ने अपने कर कमलो से इस अवसर पर विद्यालय के अनेक प्रतिभावान छात्रो को भी पुरस्कृत किया।

समारोह के विशिष्ट अतिथि पद से बोलते हुए वरिष्ठ शिक्षाविद् आचार्य दत्तात्रय आय ने कहा कि आयसमाज की शिक्षण सस्थाओ ने देश के नव निर्माण मे अपना महती भूमिका निभाई है। उन्होने कहा कि इन शिक्षण सस्थाओ का उद्देश्य शिक्षा काय के साथ साथ विद्यार्थियो का चरित्रनिमाण करना भी रहा है। श्री दत्तात्रय आय ने कहा कि जहा आजादी से पूव आय शिक्षण सस्थाओ ने देश के स्वतत्रता आदोलन मे भाग लेने के लिए अपने विद्यार्थियो को प्रेरणा प्रदान की वही स्वतत्रता के पश्चात सुयोग्य एव चरित्रवान नागरिको की एक नई पीढी तैयार करने मे उल्लेखनीय भूमिका निभाई है।

समारोह की शुरुआत छात्रो द्वारा प्रस्तुत ईश वन्दना से हुई। इसके तुरन्त बाद विद्यालय के प्रधानाचाय श्री रासासिंह ने विद्यालय प्रगति रिपोर्ट पेश की। इस अवसर पर स्कूल के अनेक छात्रा ने विभिन्न सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। इस अवसर पर दयानन्द कॉलेज के पूव प्राचाय श्री कृष्णराव बाल्वे, वतमान प्राचाय श्री दिनेशसिंह, भू पू जिला प्रमुख हनुवन्तसिंह रावत आदि गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे।

## सत्यकेतु विद्यालंकार नही रहे

आय जगत के प्रख्यात विद्वान एव इतिहासकार डा सत्यकेतु विद्यालकार का 16 माच को हरिद्वार के पास बहादुराबाद मे कार दुघटना म निधन हो गया। उनके साथ यात्रा कर रहे श्री शेरसिंह व डा. धर्मपाल (दिल्ली) भी घायल हुए हैं।

डा सत्यकेतु बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होने इतिहास ग्रन्थो के अलावा कई राजनीति विषयक ग्रन्थो एव साहित्यिक उपन्यासो का भी प्रणयन किया। आप द्वारा सात भागो मे सम्पादित और लिखित आयसमाज का बृहत इतिहास आपकी आर्यसमाज के प्रति अनन्य निष्ठा का प्रतीक है।

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार के उपकुलपति एव कुलाधिपति के पदो को सुशोभित करने के अलावा डा सत्यकेतु विद्यालकार उत्तर प्रदेश विधान परिषद के भी सदस्य रहे। आपको विभिन्न सरकारो एव सस्थाओ के साहित्यिक पुरस्कारो के अतिरिक्त हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा मगला प्रसाद पारितोषिक से भी सम्मानित किया गया था।

आय पुनगठन' परिवार डा सत्यकेतु विद्यालकार के निधन पर उन्हे अपनी भावभीनी श्रद्धाजली अर्पित करता है तथा प्रभु से उनकी आत्मा को चिरशाति देने की प्रार्थना करता है।

—सम्पादक

निदेशक दत्तात्रेय आर्य प्रधान सपादक रासासिंह सपादक वीरेन्द्र कुमार आर्य ☎ कार्या. 21010

सम्पादकीय

# सम्प्रदायिकता का दावानल पुन: धधकने लगा

धर्मनिरपेक्ष भारत मे तथाकथित अल्पसख्यको के प्रति सरकार की सतुष्टिकरण की लगातार घुटने टेक नीति, वोटो के लालच में अल्पसख्यको के साथ सदैव खुशामद चापलूसी करने की आत्मघाती प्रवृत्ति, समान नागरिक सहिता तथा मानवाधिकार आयोग के स्थान पर मुस्लिम महिला कानून और अल्पसख्यक आयोग के गठन किये जाने, धारा 370 तथा धारा 30 के अन्तर्गत धार्मिक अल्पसख्यको को विशेषाधिकार दिये जाने के विषैले निर्णयो के जहरीले फल अब स्वतन्त्रता के 42 वर्ष बाद राष्ट्र के सामान्य जन को परेशान करने लग गये हैं। मेरठ मुरादाबाद, अलीगढ़, सम्भल, कलकत्ता भिवण्डी, अहमदाबाद श्रीनगर राजौरी, दिल्ली, हैदराबाद आदि साम्प्रदायिकता की दृष्टि से सवेदनशील कहे जाने वाले स्थानो मे तो आये दिन दगे होते ही रहते थे परन्तु राजस्थान जैसे शान्तिप्रिय तथा साम्प्रदायिक सौहार्द्रता के लिये प्रसिद्ध प्रदेश मे भी अब साम्प्रदायिकता का दावानल धधकने लगा है।

गत दिनों मकराना के एक सामान्य से पत्रकार द्वारा अपने साप्ताहिक पत्र "औंवसोरा" मे विश्वचर्चित सलेमान रशदी की पुस्तक "दी सैटनिक वर्सेज" की कुछ टिप्पणियो को लेकर वहा के मुस्लिम वर्ग के असामाजिक तत्वो ने सम्पादक तथा प्रेस पर हमला किया, तोड फोड की। सम्पादक द्वारा शिकायत की गई परन्तु प्रशासन की अल्पसख्यको पर हाथ उठाने की हिम्मत नही हुई और फिर जो नियोजित ढग से तथाकथित अल्पसख्यक वर्ग द्वारा (जो मकराना मे बहुमत में है) लूटमार, आगजनी, मारकाट, छुरेबाजी का जो ताण्डव खेल खेला गया उससे कई निर्दोषो की जानें गई, करोडो का नुकसान हुआ, हजारो मजदूर बेरोजगार हो गये। पाली जिले के सोजत, जैतारण अजमेर जिले के ब्यावर, भीलवाडा तथा बीगोद, उदयपुर, आदि विभिन्न स्थानो पर पैंटोडालर के बल पर, पाकिस्तानी घुसपैठियो की शह पर तथा लीगीतत्वो के षड्यन्त्रों से यह आग सुलग तो रही थी पर सरकार की शाखमूद नीति और घुटने टेक समर्पण नीति ने इस आग मे घी का काम किया है।

सोचा था कि स्वतत्र भारत मे देश विभाजन के पश्चात् साम्प्रदायिकता की आग सवथा बुझ जायेगी। परन्तु धन्य है धर्मनिरपेक्ष शासको की अन्याय पूर्ण नीतियो को जिसके कारण बहुमत की सर्वथा उपेक्षा, अवहेलना एव निरादर होता है तथा तथाकथित विदेशो से प्रेरणा लेने वाले तथा अयतुल्ला खुमैनी के फतवे से प्रेरणा लेकर मानवता एव राष्ट्रीयता का गला घोटने वालो को सिर आखो पर चढाया जाता है। भगवान इस सरकार को सद्बुद्धि दे ताकि साम्प्रदायिकता के विषधरो को कुचला जा सके।

# देवोऽपि दुर्बल घातक

किसी नीतिकार ने यह कथन ठीक ही कहा है कि कमजोर का साथी कोई नही होता। देवता लोग भी कमजोर पर ही घात करने वाले होते हैं। देवता से प्रार्थना की गई कि आपके लिए वनराज सिंह की बलि चढायें तो उत्तर नहीं। बाघ अथवा हाथी की बलि चढायें तो भी देवता ने इन्कार कर दिया। जब देवता से बकरा (अजापुत्र) चढाने की बात की गई तो सहर्ष स्वीकृति प्रदान कर दी। अत देव भी दुर्बल घातक ही होते हैं।

इस ससार का उपयोग वीर लोग ही कर सकते हैं। बहादुरो को ही जीने का अधिकार है और कायरो को सौ-सौ बार धिक्कार है। बलवान के सब साथी होते हैं। नादान की दोस्ती भी जी का जजाल होती है। इसीलिये कहा गया कि "नादान दोस्त से दाना दुश्मन अच्छा।" "वीर भोग्या वसुन्धरा।" डारविन का विकासवाद भी चिल्ला-चिल्ला कर कहता है कि योग्यतम की विजय तथा अर्थात अस्तित्व के लिए सघर्ष और अन्त मे कहा कि बडी मछली छोटी मछली को खा जाती है। "जिसकी लाठी उसकी भैंस" वैसे तो जगल का कानून माना जाता है परन्तु आज की इस बीसवी सदी मे तो यही हो रहा है। उगते हुए सूर्य को दुनिया नमस्कार करती है, डूबते हुए को कोई नही। ताकतवर को सब सलाम करते हैं। दो समान ताकतवर में ही तो शक्ति सतुलन बना रहता है। उर्दू के शायर ने ठीक ही कहा है कि—

"बहादुर कब किसी का आसरा और अहसान लेते हैं,
उसी को कर गुजरते जो दिल मे ठान लेते हैं।
दिलदार मर्द का लोहा सब मान लेते हैं,
जो कमजोर होता है, कान उसके सब पकड लेते हैं॥

अत मैं आर्य (हिन्दू) जाति से, वैदिक धर्मावलम्बियो से, सत्य सनातन वैदिक धर्म के अनुयायियो से प्रताप और शिवा की सन्तानो से, राम और कृष्ण के नामलेवाओं से, दयानन्द और विवेकानन्द के आदेशो को मानने वालो से, बन्दा वैरागी और हकीकतराय के गीत गाने वालो से, महावीर और गौतम के आदर्शो का अनुकरण करने वालो से आह्वान करना चाहूंगा कि वे शक्तिशाली बने, वीर बने, अपने अधिकारो के प्रति सचेष्ट बने, तथा सगठन सूत्र मे आबद्ध हो जाय। कब तक सरकार की कूटपरस्त नीति का शिकार होकर 86% आबादी होते हुए भी उपेक्षा, अवहेलना के शिकार होते रहेंगे? अल्पसख्यको के द्वारा किये जा रहे अपमानो के कडवे घूट पीते रहोगे? कब तक मार खाते रहोगे? अपनी शक्ति को पहचानो! अपनी ताकत को जानो, अपनी कमजोरी को दूर करो। अन्धविश्वासो और सडी गली रूढियो को उखाड फैंको। पुरातन भारतीय आदर्शों से अनुप्राणित होकर अपने कर्तव्य और अधिकारो की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील बनो। यदि अभी नही तो फिर कब जागोगे? याद रखो—

"समय को नही समझा, उसे पिटना पडा है।
बच गया तलवार से तो फूल से कटना पडा है॥"

क्रांति से ही शांति आती है। वीर ही अहिंसा का पालन स्वय भी कर सकते हैं और दूसरो को भी करा सकते हैं। अत

झूम उठो ए भारत के वीरो
तुम हो ताकत से भरपूर।
एक बार फिर मार दो ठोकर
करो शत्रु को चकनाचूर॥

आसुरी शक्तियो से सघर्ष करना होगा। तुम शक्तिशाली हो गये तो दूसरे विधर्मी फिर कभी सिर नही उठायेंगे। तुम्हारा मान सम्मान करेंगे। बहुमत की भावनाओं का आदर करेंगे। गुस्ताखी करने की हिम्मत ही नही करेंगे।

"लख लानत है कमजोर नू
दुनिया मन्दी जोर नू"

—रामासिह

# धर्म के नाम पर यौन शोषण

भारत मे धर्म के नाम पर इतने अनर्थ हुए हैं कि उनकी कोई गिनती नही की जा सकती। इन्हीं अनर्थों मे एक देवदासी प्रथा भी है।

देवदासी वह लडकिया होती है जिनको कि देवी विशेष के नाम पर उनके माता-पिता द्वारा छोटी अवस्था मे ही निराश्रित छोड दिया जाता है। यौवनावस्था मे ये लडकिया समाज व धर्म के ठेकेदारो की काम पिपासा शान्त करने का साधन बनती हैं और बुढापे मे वे भीख मांगने के लिए मजबूर होती हैं।

गत 20 फरवरी को कर्नाटक मे लगभग 3000 नाबालिग लडकियो को देवदासी की दीक्षा दी गई है। स्वतन्त्रता के इतने वर्ष बाद भी नारी अधिकारो का जनाजा निकालने वाली यह देवदासी की कुप्रथा स्वतन्त्र भारत के सविधान के माथे पर एक बदनुमा कलक नही तो और क्या है? भले ही पुरातन काल मे देवदासी का मन्दिरो की सरक्षिका के रूप मे सम्मानजनक स्थान रहा हो (स्थान सम्माननीय होगा, यौन शोषण तो तब भी होता ही था), लेकिन वर्तमान मे तो देवदासिया मात्र काम पिपासा का साधन ही बनकर रह गई हैं। धर्म के नाम पर नारी के किए जा रहे इस यौन शोषण को अविलम्ब रोका जाना चाहिए।

—वीरेन्द्र आर्य

# राशिफल भाग्यवादियों एवं अकर्मण्यों के लिए लिखा जाता है

—सैन्नी प्रमेष—

पत्र-पत्रिकाओं में अपनी राशिफल गम्भीरता से पढ़ने वाले लोगों की संख्या निरन्तर घट रही है। इसका एक कारण यह भी है कि इस युग में निरन्तर सजग रहने वाला व्यक्ति ही तरक्की के रास्ते पर बढ़ता दिखाई देता है, जबकि भाग्य भरोसे बैठने वाला व्यक्ति बहुत जल्दी सब कुछ गवा बैठता है।

शायद बहुत कम लोग जानते होंगे कि पत्र-पत्रिकाएं कभी भी राशिफल इस विचार से नहीं छापती कि वह सही होता है। पत्र पत्रिकायें पाठकों की समझ और परम्परा की नब्ज देखकर ही राशिफल प्रकाशित करती हैं। अधिकांश पत्रिकाएं अपना राशिफल वाला कार्य ज्योतिषियों के बगैर बड़े मजे से चला लेती हैं। एक राशिफल लेखक का कहना है कि 'राशिफल लेखन में चाहे मेहनत की जाए, अथवा जरा सा हेरफेर करके इसे छापा जाता रहे यह काफी घटिया काम है। इसे करते हुए कोफ्त होती है और बहुधा हंसी आती है। जब हम यह सोचते हैं कि हमारे उलटफेर को देश भर के कई पढ़े लिखे लोग गम्भीरता से लेंगे तो हमें रोना भी आता है।

यहां हम ज्योतिष विज्ञान (नक्षत्रों, अन्तरिक्ष जगत) के अध्ययन का विरोध नहीं कर रहे हैं। ज्योतिष के वैज्ञानिक स्वरूप (राशिफल आदि वाले स्वरूप नहीं) की अलग-अलग मान्यताएं हैं।

विश्व के माने हुए चिंतकों ने ज्योतिष को सदा फटकारा है। प्लेटो ने कहा था "ज्योतिष हमें कुछ भी नहीं देता यह हमें पत्थर जैसी हालत में छोड़ देता है, जो हिलाने पर ही हिलता है। ज्योतिष हमें मनुष्य वाली हालत में नहीं रखता जो अपने आप स्वभाव के अनुरूप कार्य करता है।"

जर्मन के विद्वान कोर्नेलियस के अनुसार, "कल्पना और पाखण्ड के सिवा ज्योतिष का कोई आधार नहीं है।" कोर्नेलियस ने ज्योतिष का गहरा अध्ययन करने के बाद ही यह निष्कर्ष निकाला था।

जरमनी के ही खगोलशास्त्री जोहैनिस कैपलर की रोजीरोटी तो चलती ही भविष्यवाणियों के धंधे से थी। किंतु उन्होंने सिर्फ इस कारण से ही ज्योतिष की सराहना की कि उससे अंतरिक्ष के प्रति मनुष्य की रुचि बढ़ी। फ्रांस के ब्रह्मांड विज्ञानी पियरे सिमन लॅप्ले का मत यह था, 'स्वयं को ब्रह्मांड के केन्द्र के रूप में देखने की भूल-भुलैया में पड़कर मनुष्य सहज ही अपने को इस रूप में देखने लगा कि सितारे उसके भाग्य पर प्रभाव डालते हैं।" उन्होंने यह भी कहा कि ब्रह्मांड के वास्तविक ज्ञान के व्यापक प्रसार ने इस धारणा को सदा के लिए नष्ट कर दिया है कि सितारे मनुष्य के भाग्य को प्रभावित करते हैं।

> विश्व के माने हुए चिंतकों ने ज्योतिष को सदा फटकारा है। प्लेटो ने कहा था "ज्योतिष हमें कुछ भी नहीं देता, यह पत्थर जैसी हालत में छोड़ देता है. जो हिलाने पर ही हिलता है। ज्योतिष हमें मनुष्य वाली हालत में नहीं रखता जो अपने आप स्वभाव के अनुरूप कार्य करता है।"

एक हिन्दी दैनिक की शुरुआत पर इस लेखक से एक सम्पादक ने आग्रह किया था, "दस बारह दिन के लिए आकर्षक और विश्वसनीय लगने वाला राशिफल लिख दीजिये।" उन्होंने पत्र पत्रिकाओं के ढेर की तरफ इशारा करके कहा था, "आप इस भण्डार में से राशिफल वाले कालमों से मदद ले सकते हैं। अमुक पत्रिका का राशिफल बहुत 'भरोसे वाला' होता है, उसका अध्ययन कर लें।'

यह लेखक बढ़िया पारिश्रमिक लेकर भी यह घटिया काम नहीं करना चाहता था। इस पर यह काम एक बेकार युवक को सौंप दिया गया, जो कम्यूनिज्म पर भाषण देते नहीं थकता था।

कई पाठक इस बात की तरफ ध्यान नहीं देते कि कई पत्रिकाएं एक ओर राशिफल नियमित छापती हैं और दूसरी ओर ऐसी रचनाएं और विचार सामने रखती हैं जो ज्योतिष की खिल्ली उड़ाते दिखाई देते हैं। महिलाओं की एक पत्रिका ज्योतिष का सीधा मजाक उड़ाने के बावजूद आकर्षक शीर्षकों के नीचे 'आधुनिक' ढंग का राशिफल छापती है।'

शायद राशिफल छापने वाले भलीभांति जानते हैं कि मूर्खों के स्वर्ग में रहने वालों का ध्यान नहीं रखा तो उनकी पत्रिका के ग्राहक कम हो जाएंगे। कुछ पत्रिकाएं तो ज्योतिष पर लम्बे-लम्बे (गम्भीर किन्तु भ्रामक या भोंडे) लेख ही नहीं, विशेषांक भी छापती हैं। अपने पाठकों की समझ को भांपकर ये पत्रिकाएं झाड़फूंक, भूतप्रेत और डायन चुड़ैल वगैरा विषयों पर भी विशेषांक निकालती रहती हैं।

राशिफल छापना एक 'कला' भी मानी जाती है। एक प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक ने एक बार कुछ छात्रों को अलग-अलग इस प्रकार के वाक्य कहे और छात्रों को खुश होते देखा—

"आप स्नेह व सद्भाव के भूखे हैं।"

"आप को शब्दों से फुसलाना सम्भव नहीं।"

"यौन के मामले में आप जागरूक रहने को सही मानते हैं।"

"अपनी स्वतन्त्रता आपको प्रिय है।"

मनोवैज्ञानिक का मानना है कि इसी प्रकार के वाक्य राशिफल छापने वालों की 'कला' को चार चांद लगाते हैं। "निराश करने की बजाय पाठक की उम्मीद (भले ही विचार की दृष्टि से वह मूर्खतापूर्ण हो) बढ़ानी चाहिए और राशिफल को 'संतुलित' बनाने के लिए निराश करने वाली बात को कमजोर बनाकर इस तरह लिखना चाहिए कि पाठक उसे खास महत्व न दे, बल्कि यही देखकर फूल जाए कि राशिफल उनके विचारों और हालत के अनुरूप है," एक अन्य राशिफल लेखक ने यह बात अपने सहयोगी से कही थी।

राशि फल कभी भी निश्चित नहीं हो सकता। निश्चय राशिफल पर ज्योतिष प्रेमी विश्वास नहीं करेंगे। उनका मजा किरकिरा हो जाएगा। स्वर्ग ढह जाएगा। वे सदा अनिश्चय में, कपोलकल्पनाओं में विचरना पसन्द करते हैं। जो राशिफल उन्हें फैसला सुना दे, उसे अगले दिन या सप्ताह, अगले पक्ष या माह कौन पढ़ेगा? राशिफल के उलटफेर और आकर्षक फतवे ही उसके प्रेमियों के स्वर्ग को बनाए रखते हैं।

एक सीधा सरल सवाल उठता है कि क्या राशिफल को गम्भीरता से लेने वाले लोग आत्मविश्वासी हो सकते हैं? यदि नहीं, तो वे दूसरों के बताए भविष्य पर कैसे सही ढंग से विश्वास कर सकते हैं? यदि हां तो वे अपना भरोसा छोड़कर दूसरों के कहे या लिखे को कैसे सच मान लेते हैं?

राशिफल पर भरोसा करना तो लचर मानसिकता है, लोग अब चोटी के भविष्यदर्शियों को भी महत्व नहीं देते। दुनिया भर के ज्योतिषियों में जिन ज्योतिषियों की पूछ है, वास्तव में ज्ञानविज्ञान के क्षेत्र में उन्हें कोई नहीं पूछता। ब्रिटिश के एक खगोल शास्त्री ने 1978 में चुनौती दी थी कि यदि कोई व्यक्ति मनुष्य की जिन्दगी पर राशि चक्र के प्रभाव को सिद्ध कर दे तो उसे 500 पौण्ड स्टर्लिंग पुरस्कार दिया जाएगा। तब से अब तक कोई ज्योतिषी सामने नहीं फटका। हां, कई लोगों ने यह इच्छा जरूर प्रकट की कि बगैर कुछ पुरस्कार लिए वे राशिफल के कथित प्रभाव को पाखण्ड सिद्ध कर सकते हैं।"

'ज्योतिषी की भविष्यवाणियां कभी भी सच नहीं निकली हैं' एक विद्वान का मानना है, "कभी कभी अटकलें जरूर लग जाती हैं या संयोग से वही होता है जो किसी ने घोषित कर रखा होता है। वह इस लिए कदापि नहीं घटता कि किसी ने उसकी भविष्यवाणी कर रखी है। यहां तक कि आसार देखकर जो भविष्यवाणियां की जाती हैं, उनकी कल्पना स्वयं औसत बुद्धि का कोई भी व्यक्ति कर सकता है।"

बहुधा, भविष्यवाणियों पर ध्यान देने वाले लोग अपने प्रयत्नों के महत्व को भूल जाते हैं।

(शेष पृष्ठ 4 पर)

# आने वाले चुनाव और आर्य समाज

—प्रो॰ उत्तम चन्द्र शरर—

आर्य समाज मानवता का प्रचारक समाज है, समाज का उपकार करना इसका मुख्योद्देश्य है। भारत भी संसार में आता है, और इसमें कोई सन्देह नहीं कि वर्तमान भारत में धार्मिक सामाजिक एवं राजनैतिक जागृति का मूल स्रोत आर्य समाज ही है। धार्मिक क्षेत्र में मिथ्या आडम्बरों एवं अन्धविश्वास से देशवासियों को इसने ही मुक्त किया तर्क पूर्ण स्वस्थ दृष्टिकोण को प्रस्तुत करने का श्रेय इसी समाज को जाता है नहीं तो मतमतान्तर तो अन्धविश्वास के पोषक रहे हैं। सामाजिक क्षेत्र में भी समाज के अत्याचार से पीड़ित जनों के पक्ष में आर्यसमाज ने आवाज बुलन्द की। यद्यपि सामाजिक वैषम्य आज भी शेष है परन्तु जनमत उस वैषम्य के पक्ष में नहीं रहा। आज सती प्रथा हो अथवा छुआछूत इन के बचे-खुचे पोषक जनसाधारण को विचित्र जन्तु के रूप में नजर आते हैं। अनाथालय हो या विधवाश्रम अथवा कन्याओं के विद्यालय यह सब आर्यसमाज की तपस्या का परिणाम है और जहां आज भी आर्यसमाज के प्रचार की कमी है वहां ये प्रकार भी पूर्ववत है। यह इधर उधर यत्र तत्र है हमारे अजमेर के मासमे जहां हमने वेद के सत्य मन्त्र दी वहां थोथा तर्क भी सहन नहीं।

राष्ट्रीय चेतना का प्रसारक आर्यसमाज ही है। स्वराज्य स्वदेशी स्वभाषा के गौरव की बात केवल और केवल आर्यसमाज के मंच से चली आज उसे भारतीयों ने अपना लिया यह प्रसन्नता की बात है परन्तु जिस माली ने इस बीज का वपन किया उस का यश तो अक्षुण्ण है।

भारत राष्ट्र स्वतन्त्र हो चुका परन्तु सत्ता जिन हाथों में आई वे सम्भवतः भारतीय संस्कृति से प्रभावित कम थे पश्चिम की भाषा पाश्चात्य रहन सहन का उनके मन मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव था। परिणामतः वैदिक संस्कृति के संरक्षण का काम अधूरा ही रह गया। आज भारत में विदेशी रहन सहन बोल चाल का बोलबाला है भारत की मूल भाषा संस्कृत तो पाठ्यक्रम से भी बहिष्कृत की जा चुकी है हिन्दी भी अपने अस्तित्व को खतरे में पाती है। इन परिस्थितियों में इस वर्ष के अन्त में नये चुनाव आ रहे हैं जिनमें देश की जनता देश की बागडोर अपनी दृष्टि से सक्षम हाथों में सौंपेगी। देश की सभी राजनैतिक पार्टियां तैयारी में हैं। एक दौड़ सी लग रही है यह दौड़ देश सेवा के लिये उतनी नहीं है जितनी सत्ता सम्भालने और हुकूमत करने की भावना से है।

आर्य समाज देश का सजग प्रहरी रहा है परन्तु प्रश्न है आने वाले चुनावों में वह कहां है? उसने देश की स्वतन्त्रता के लिये बिस्मिल जैसे बलिदानी दिये भगत सिंह सरीखे दीवाने दिये परन्तु अब उस का अस्तित्व देश की रक्षा के क्षेत्र में कहां है? क्या केवल यज्ञ सन्ध्या तथा वेद प्रवचन और देश भक्ति के तराने ही पर्याप्त हैं? इनके महत्त्व को नहीं नकारा जा सकता परन्तु यह भी सत्य है कि यदि देश के कर्णधार ऐसे लोग चुने गये जो इन कार्यों में श्रद्धा ही नहीं रखते तो देश का क्या बनेगा? क्या हमारा ब्रह्मचर्य का उपदेश T V के अन्तर्गत प्रलापों की बाढ़ को रोक सकेगा? क्या हमारी चरित्र की दुहाई सरकार द्वारा फैलाए अनाचार का मुकाबला कर सकेगी?

आर्य समाज वर्तमान राजनीति से सर्वथा दूर तटस्थ होकर बैठा है क्या यह उसकी नीति आत्मघाती तो सिद्ध नहीं होगी? दिनकर का यह पद्य तो उसे चेतना देता है —

> समर शेष है इस में दोषी
> नहीं है केवल व्याध
> जो तटस्थ हैं समय लिखेगा
> उसका भी अपराध।

आर्य समाज का कोई राजनैतिक विंग नहीं वह संगठित रूप से किसी प्रत्याशी का समर्थन नहीं कर पाता वह केवल आलोचना करता है परन्तु इस आलोचना में भी उस की शक्ति का बिखराव किसी से छिपा नहीं। वह वैदिक संस्कृति की रक्षा चाहता है परन्तु वैदिक संस्कृति के रक्षकों को देश की बागडोर देने में पीछे हटता है। इस अवस्था में राष्ट्र के निर्माण में वर्तमान काल में उसका सहयोग कितना रहेगा? और फिर आर्यों को यदि अपना समाज राष्ट्र सेवा में कोई मार्गदर्शन न दे तो किसी अन्य भ्रामक संगठन की शिकार होने से उन्हें कौन बचायेगा?

मैं समझता हूं कि राजनीति, विशेष रूप से आज के युग में सदाचरण का मार्ग नहीं सदाचार का पथ नहीं। परन्तु प्रश्न यह है कि क्या दूर रह कर इसमें सुधार सम्भव है? और फिर हम आर्यत्व के क्षेत्र में कितने सुरक्षित रहेंगे यदि देश के नेता सदाचार के पक्षपाती न हों? रास्ता कठिन है परन्तु आंख मूंद लेने से बिल्ली का भय दूर नहीं होगा। आर्यसमाज को इन चुनौतियों का उत्तर देना होगा और वह जितना शीघ्र यह उत्तर दे पाये समाज के जीवन के लिये उतना लाभदायक होगा।

---

## राशिफल भाग्यवादियो .

(शेष पृष्ठ 3 का)

वे यह सामान्य तथ्य विस्मरण कर देते हैं कि भाग्य और भविष्य मनुष्य के सही प्रयत्नों से बनता है और गलत प्रयत्नों से बिगड़ता है मानसिक स्वास्थ्य के लिए यह ज्योतिष हानिकारक है।

ज्योतिषियों के कारोबार को सबसे बड़ा झटका 1975 में लगा था। विश्व के 186 वैज्ञानिकों ने दुनिया को सावधान करते हुए कहा कि ज्योतिष के नाम पर की जाने वाली भविष्यवाणियां कोरा पाखण्ड है और अब इस पाखण्ड को चलाए रखने वाले ज्योतिषियों का पूरी ताकत से विरोध किया जाना चाहिए। यह उल्लेखनीय है कि इन वैज्ञानिकों को नोबेल पुरस्कार मिल चुका था।

यह लज्जाजनक स्थिति है कि हमारे देश में सम्पादकों व पत्रकारों की इच्छा न होने पर भी उन्हें मालिकों के आदेश पर व्यावसायिक सफलता को ध्यान में रखकर ज्योतिष व सबसे घटिया रूप राशि फल को अपनी पत्रिकाओं में जगह देनी पड़ती है। यह स्थिति पढ़े लिखे लोगों व पाठकों की रूढ़िवादिता का भी परिचय देती है।

कुछ भी हो ज्योतिष का भविष्य फल सब भ्रमकारक है।

---

## 12 फरवरी को स्वामी दयानन्द की जन्म जयंती मनाना कहां तक औचित्य पूर्ण है?

कोटा निवासी स्व. प्रो. भीमसेन शास्त्री ने स्वामी दयानन्द के बाल्यकाल की घटनाओं के पौर्वापर्य का निश्चय कर स्वविवेचन के आधार पर फाल्गुन कृष्ण 10 सं 1881 वि तदनुसार 12 फरवरी 1825 को महर्षि की जन्म तिथि निश्चित की थी। कालान्तर में सार्वदेशिक सभा द्वारा नियुक्त धर्मार्य सभा ने भी इसी तिथि को स्वामीजी की प्रामाणिक जन्म तिथि मान लिया। हमें प्रो. भीमसेनजी की इस खोज पर कुछ नहीं कहना है। हमारा निवेदन तो इतना ही है कि आर्यसमाज महापुरुषों की जन्म जयन्ती विक्रम संवत तथा देशी तिथि के आधार पर मनाई जाती है। उदाहरणार्थ लेखराम की जन्म तिथि तृतीया थी अतः लेखराम वीर तृतीया को हमारी पंचांग पद्धति में मान्यता दी गई है। स्वामी दयानन्द का निधन भी कार्तिक अमावस्या को हुआ था यद्यपि उस दिन 30 अक्टूबर का दिन था किंतु आर्यसमाज में कार्तिक अमावस्या को ही ऋषि का निर्वाण दिवस मनाने की परिपाटी है। 30 अक्टूबर को नहीं।

इसी तर्क का अनुसरण करते हुए मेरा सार्वदेशिक सभा से अनुरोध है कि यदि वह प. भीमसेन निर्धारित तिथि को मान्यता देती है तो उसे फाल्गुन कृष्ण 10 को ऋषि की जन्म जयन्ती मनाना चाहिए और इसे ही आर्यसमाज के कैलेण्डर में स्थान मिलना चाहिए न कि 12 फरवरी को।

—भवानीलाल भारतीय

स्वत्वाधिकारी आर्यसमाज अजमेर के लिए प्रकाशक एवं सम्पादक रासासिंह हेतु रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्य प्रिन्टर्स बाबू मोहल्ला केसरगंज अजमेर में मुद्रित एवं आर्य समाज भवन, अजमेर से प्रकाशित।

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है ।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोडने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए
—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द : 163

सृष्टि सम्वत् 1972949088

ओ३म्

# आर्य पुनर्गठन

आर्य समाज, अजमेर का हिन्दी पाक्षिक पत्र

'आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म ।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म ।।'

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सकल जगत को आर्य बनायें ।

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होनेवाली समस्याओ को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है ।

वर्ष 5 बुधवार 15 फरवरी 1989
अंक 3 पं स -43383/84

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात् ।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ।।

माघ शु 10 सवत 2045
वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60 पैसे

'आर्य मित्र'' द्वारा सिद्धात विरोधी प्रचार

# इन्हें तो खून करना है दयानन्द की उम्मीदों का

—वीरेन्द्र कुमार आर्य—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की 20 सितम्बर 1987 की अतरग सभा ने आर्यसभासदों के लिये एक नवीन शर्त को प्रण के रूप में स्वीकार किया था। सभा के निर्णयानुसार इस प्रण का पालन सभी आर्य सभासदो के लिए अनिवार्य होगा । वह प्रण निम्न है

'मै ईश्वर के प्रतीक स्वरूप किसी मूर्ति या जड वस्तु अथवा व्यक्ति की पूजा नहीं करू गा, ना ही मृतक श्राद्ध या स्थान विशेष को तीर्थ मानू गा । तथा किसी अवैदिक या पौराणिक विधि-विधान को नही मानू गा । अर्थात् वेद विरुद्ध आचरण नही करू गा । मैं जन्मगत जाति-पाति या छुआ-छूत को नही मानू गा । मैं किसी भी सम्प्रदाय विशेष या जाति सगठन का सदस्य या अधिकारी भी नही बनू गा तथा आर्य समाज के उपनियमो मे वर्णित सदाचार के नियमो का पालन करू गा । यदि मैं इसके विरुद्ध आचरण करू तो मेरी आर्य सभासदी समाप्त कर दी जावे ।''

सार्वदेशिक सभा ने उक्त प्रण को लेना सभी आर्य सभासदो के लिये अनिवार्य तो कर दिया, लेकिन खेद की बात यह है कि व्यवहार मे तीर्थ आदि के सम्बन्ध मे इसका पालन कहीं नही हो रहा है ।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के मुख पत्र 'आय मित्र' साप्ताहिक के 29 जनवरी, 1989 के मुख पृष्ठ पर 'महाकुम्भ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि' नामक एक लघु लेख प्रकाशित हुआ है । इस लेख मे ऋषि दयानन्द की मान्यताओ और वैदिक सिद्धातो की धज्जियां उडाते हुए एक स्थान विशेष (प्रयाग) को तीर्थराज और नदी विशेष के जल को पवित्र और उसमे स्नान करना कर्त्तव्य बताया है । लेख का एक अ श प्रस्तुत है

"ऐ मेरी पावन मातृभूमि ! तेरे उत्तर मे हिमकिरीटधारी विशाल नगाधिराज अपन उत्तु ग शैलशिखरो के मध्य कलकल करती पावन जलधाराओ से मेरी प्यारी भारतभूमि के धराधाम को अनादिकाल से सिंचित करता चला आ रहा है । उसकी तीर्थयात्रा पावन तीर्थराज प्रयाग के सगम स्थल को स्पर्श करती हुई सागर के विशाल अन्तस्थल मे समागम के साथ पूर्ण होती है । इन्ही शैल-शिखरो मे गिरि के गह्वरो मे, नदियो के सगम पर बैठकर ही हमारे पूवजो ऋषियो और मुनियो ने उस विधाता का साक्षात्कार किया था। इसीलिए तुझमे भ्रमण करना तेरे पवित्र जल मे स्नान करना हम अपना कर्त्तव्य समझते है । और आज उसी की स्मृति मे प्रयागराज कुम्भ मे करोडो की सख्या मे आबाल वृद्ध नर-नारी एक डुबकी लगाने के लिए लालायित हैं । न सर्दी की चिन्ता है, न भूख-प्यास की । कितना महान है मेरा हिमालय, हिमालय से निकलने वाली यह सुरसरि देवी—सुरसेरि भगवती गगे—त्रिभुवन तारणि तरल तरगे ।''

उपर्युक्त उद्धरण से स्पष्ट है कि आर्यमित्र का सम्पादक मण्डल आम पौराणिको की भांति प्रयाग को तीर्थस्थान और गगा (नदी विशेष) के जल को पवित्र मानता है । ऋषि दयानन्द के भक्तो के लिए इससे अधिक विडम्बनापूर्ण स्थिति और हो ही क्या सकती है कि देश के सबसे बडे प्रदेश की समस्त आर्य समाजो के सगठन का मुखपत्र ही ऋषि दयानन्द के सिद्धातो व मन्तव्यो के विरुद्ध और पौराणिकता के पक्ष मे प्रचार कर रहा है ।

'आर्य मित्र' मे पौराणिक मान्यता समर्थक यह लेख प्रथम बार ही प्रकाशित नहीं हुआ है । इससे पूर्व भी यदा-कदा पौराणिक विचारो पर आधारित सामग्री का प्रकाशन इस पत्र के सम्पादकीय मे हुआ है । गत जन्माष्टमी के अवसर पर श्रीकृष्ण पर लिखा गया सम्पादकीय भी किसी पोगापथी के मस्तिष्क की ही उपज था । लेकिन जिस सभा का सर्वोच्च अधिकारी (प्रधान) ही मृतक श्राद्ध व हरिद्वार मे अस्थि विसर्जन करने जैसे आर्यसमाज विरोधी पौराणिक मान्यताओ का पक्षधर हो, उस सभा के 'पत्र' से और आशा भी क्या की जा सकती है !

अब ऋषि दयानन्द तीर्थ किनको मानते हैं, इसका भी अवलोकन कीजिए —

"वेदादि सत्य-शास्त्रो का पढना पढाना, धार्मिक विद्वानो का सग, परोपकार, धर्मानुष्ठान, योगाभ्यास निर्वैर, निष्कपट सत्य-भाषण, माता-पिता की सेवा, परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना, शान्ति, जितेन्द्रियता, सुशीलता, धर्मयुक्त पुरुषार्थ, ज्ञान, विज्ञान आदि शुभ गुण कर्म (यह सब) दु खो से तारने वाले होने से तीर्थ हैं ।''

(स प्र स. 11)

'जिससे दु ख सागर से पार उतरे कि जो सत्य भाषण, विद्या, सत्सग, यमादि योगाभ्यास, पुरुषार्थ विद्या दानादि शुभ कर्म हैं, उसी को तीर्थ समझता हू, इतर जल स्थलादि को नही ।'

(स्वमन्तव्यामन्तव्य)

"वेदादि सत्य शास्त्रो का नाम तीर्थ है कि जिनके पढने, पढाने और उनमे कहे हुए मार्गों पर चलने से मनुष्य लोग दु ख सागर को तैरके, सुखो को प्राप्त होते हैं ।'

[ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका ग्र थ (प्रामाण्याप्रामाण्य)

"जितने विद्याभ्यास, सुविचार, ईश्वरोपासना धर्मानुष्ठान सत्य का सग, ब्रह्मचर्य, जितेन्द्रियतादि उत्तम कर्म हैं, वे सब तीर्थ कहाते हैं क्योंकि इन करके जीव दु ख सागर से तर जा सकते हैं ।

(आर्योद्देश्यरत्नमाला)

ऋषि दयानन्द के उपर्युक्त विचारो के आलोक मे सच्चे तीर्थ की परिभाषा को जाना जा सकता है। हर की पैडी' को ऋषिवर ने 'हाड की पैडी' की उपमा दी थी । परन्तु आज अपने को उन्ही के उत्तराधिकारी कहने वाले तथाकथित आर्यसमाजी नेता उसी 'हाड की पैडी' के जल मे एक डुबकी लगाने मात्र के लिए लालायित है। हा हन्त !

निदेशक दत्तात्रेय आर्य    प्रधान सपादक · रासासिह    सपादक वीरेन्द्र कुमार आर्य    कार्या 21010

सम्पादकीय

# महर्षि का जन्म दिवस कब ?

## नेतृत्व सही मार्गदर्शन दे

इधर एक दो वर्षों से स्वराज्य, स्वधर्म, स्वसस्कृति स्वभाषा और स्वाभिमान के प्रथम उन्नायक एव मत्र द्रष्टा महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मदिवस 12 फरवरी को यत्रतत्र मनाने के समाचार प्राप्त हुए है। अब तक आर्य जगत् मे महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्म-तिथि के सम्बन्ध मे व्याप्त अनिश्चतता एव प्रामाणिक तथ्यात्मक जानकारी के अभाव मे जन्मदिवस नही मनाया जाता था तथा आर्य पर्व सूची आदि मे तथा आर्य तिथि पत्रो मे इसका कही कोई उल्लेख नही मिलता। परिणाम स्वरूप समस्त आय जगत् मे तथा कि सभी आय समाज मे ऋषि जन्म दिवस का आयोजन नही होता था। केवल "ऋषि बोध दिवस" "ऋषि निर्वाण दिवस' आदि मनाये जाते है। परन्तु वेद सस्थान दिल्ली के सौजन्य से विगत एक दो वर्षो से कतिपय विद्वानो न 12 फरवरी 1824 ई को ऋषि का जन्म होना बताया है। तदनुसार आयोजन होने लगे हैं और पत्र पत्रिकाओ मे भी चर्चा होने लगी है। इस सम्बन्ध मे आर्य की शिरोमणि सभा 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा" तथा उसके अन्तर्गत गठित 'धर्माय सभा' तथा आर्य विद्वान समस्त आर्य जगत् को सभी तथ्यो से अवगत कराते हुए महर्षि की सही जन्मतिथि तथा समारोह मनाने की प्रक्रिया तय करते हुए समस्त आर्य समाजो को निर्देश जारी करे। अन्यथा एकरूपता नही रह पायेगी और कही मनेगा कही नही मनेगा। सब मनमानी करेगे। हमारे देश मे जन्मदिवस ही समारोह पूर्वक मनाने की परम्परा रही है यथा जन्माष्टमी, रामनवमी आदि। हमें पूर्ण विश्वास है कि इस दिवस की गौरव गरिमा को बनाये रखने हेतु सार्वदेशिक सभा शीघ्र ही आवश्यक निर्देश देगी।

# वीर हकीकतराय

प्रतिवर्ष बसत पचमी के अवसर पर वीर बालक हकीकतराय के अद्भुत बलिदान का सहज स्मरण हो जाता है। 14-15 वर्ष की किशोरावस्था के उस आर्य वीर ने अपने नाम को सार्थक करते हुए आर्य धर्म की रक्षा के लिये हसते-हसते अपना बलिदान दे दिया। ऐसे रणबाकुरो, अडिग साहसी आर्यवीरो के कारण सदियो की दासता तथा इस्लाम की तलवार और इसाईमत के प्रलोभन के बावजूद भी आर्य (हिन्दू) धर्म बचा हुआ है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है—

'सिंह भूखा होने पर भी, घास खा सकता नहीं।
रणवीर मर सकता है, पर सर झुका सकता नही॥"

आत्मिक शक्ति के प्रबल पक्षधर ओ३म् के परमभक्त, राम और और कृष्ण के पद चिह्नो पर चलने वाले तथा शिवा और प्रताप के वशज उस वीर हकीकतराय ने माफी मागने के स्थान पर, इस्लाम को कबूल करने के बजाय जल्लाद की तलवार से अपना सिर कलम करवा दिया। धन्य हो हकीकत !

वह कौम मिट सकती नही, जिसमे हकीकत वीर हो।
कोई बता दे विश्व मे, ऐसा कोई वरवीर हो॥

आओ आप और हम इस महान अमर बलिदानी की पुण्य स्मृति मे यह सकल्प ग्रहण करे कि—

"सर जावे तो जावे, मेरा वैदिक धर्म नही जावे।"

— रासासिह आर्य

दयानन्द उवाच

## सृष्टि की उत्पत्ति

—डा. बाबूराम शास्त्री—

जिज्ञासु स्वामी जी! इस सृष्टि की उत्पत्ति प्रकृति से से हुई है या परमेश्वर से? इसका प्रयोजन क्या है? ईश्वर और जीव मे क्या भेद है?

दयानन्द सृष्टि की उत्पत्ति मे प्रकृति और परमेश्वर दोनो ही कारण है सत्व, रजस, और तमस की साम्यावस्था रूप जड प्रकृति सृष्टि का उपादान कारण है और सच्चिदानन्द रूप परमेश्वर सृष्टि का निमित्त कारण है जैसे चेतन पुरुष के सहयोग के बिना जड मिट्टी से स्वत घटोत्पत्ति नही हो सकती उसी प्रकार चेतन पुरुष-परमेश्वर, के बिना जड प्रकृति से सृष्टि की उत्पत्ति नही हो सकती जो नासमझ लोग मकडी का दृष्टान्त देकर ईश्वर को जगत् का अभिन्न निमित्तोपादान कारण बतलाते है— उनकी मान्यता यथार्थ नही है क्योकि ईश्वर मकडी के समान शरीरवाला नही है और न ही उसमे मकडी के समान जडता का अश है— मकडी का जड शरीर तन्तु का उपादान कारण है और चेतन जीवात्मा उसका निमित्त कारण है। जन्माद्यस्ययत' या "यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते" आदि युक्तियो के आधार पर यदि कोई ईश्वर को उपादान कारणता सिद्ध करना चाहे तो यह उसकी तर्क-विहीन विद्या बुद्धि का परिचायक है। समरणशील विकारी व मरण-धर्मा विश्व का उपादान कारण ईश्वर को मान लिया जावे तो सच्चिदानन्द स्वरूप अज और अधिकारी परमेश्वर भी वैसा ही हो जावे या "कारणगुणात्मकत्वात् कार्यस्य" को सिद्धान्तानुसार ईश्वर के गुणकर्मस्वाभावानुसार ससार का भी गुण-कर्म-स्वभाव हो जावे किन्तु प्रत्यक्ष मे ऐसा देखा नही जाता। अत ईश्वर सृष्टि का निमित्त कारण ही है—उपादान नही—सृष्टि का उपादान कारण प्रकृति है। सृष्टि उत्पत्ति क्रम मे प्रकृति से महत्तत्व की उत्पत्ति होती हैं, महत्तत्व से अहकार—अहकार से एकादश इन्द्रिया एव पचतन्मात्राए और पचतन्मात्राओ से पचमहाभूतो की उत्पत्ति होती है और पचमहाभूतो से सम्पूर्ण भौतिक सृष्टि होती है।

सृष्टि का प्रयोजन जीवो को भोग और अपवर्ग—मोक्ष प्राप्त कराना है, यदि सृष्टि न हो तो जीवो को अनन्त भोग न प्राप्त हो सके और पुण्यात्मा ज्ञानीजनो को अपवर्ग की प्राप्ति न हो सके। जगत को बनाने मे ही ईश्वर की ज्ञान-इच्छा-क्रिया रूपी सामर्थ्य का साफल्य है और इसी म ईश्वर के न्यायप्रियता, दया भी पालकत्वादि गुणो की सार्थकता है। यदि सृष्टि न हो तो ईश्वर पूर्वसृष्टि मे जीवो के द्वारा किये गए पुण्य-पापादि कर्मो का फल कैसे दे सकता है? अत ईश्वर स्व सामर्थ्य के प्रकाश व जीवो को भोगापवर्ग प्रदान करने के लिए ही सृष्टि करता है। जो तैत्तिरीय उपनिषद मे आकाश आदि क्रम से, छान्दोग्य मे अग्न्यादि-क्रम से, ऐते मे जलादि क्रम से, वेदो मे कही पुरुष, कही हिरण्यगर्भ आदि क्रम से, मीमासा मे कर्म, वैशेषिक मे काल, न्याय मे परमाणु योग मे पुरुषार्थ, साख्य मे प्रकृति और वेदान्त मे ब्रह्म से सृष्टि की उत्पत्ति मानी गयी है—उनमे कोई विरोध नही है। जब महाप्रलय होता है तो आकाश-आदि क्रम से सृष्टि होती है, जब आकाश और वायु का प्रलय नही होता और अग्न्यादि का होता है तो अग्न्यादि क्रम से सृष्टि होती है, और जब अग्नि का भी प्रलय नही होता तो जलादि क्रम से सृष्टि होती है अर्थात् दिन-अवान्तर प्रलय मे जहाँ-जहाँ तक प्रलय होता है—भावी सृष्टि वही से प्रारम्भ होती है। पुरुष या हिरण्यगर्भ परमेश्वर के वाचक हैं— परमेश्वर के निमित्त कारण है, महाप्रलय के बाद उसी की प्रेरणा से प्रकृति सृष्टि का सृजन करती है। जो मीमासा आदि दर्शनो मे कर्म आदि को

(शेष पृष्ठ 4 पर)

# जोधपुर नरेश और ऋषि दयानन्द

—ठाकुर प्र मसिह—

महाराजा जसवतसिहजी जोधपुर नरेश द्वारा निमन्त्रित स्वामी दयानद सरस्वती जोधपुर 31 मई 1883 का पधारे और वहा विशिष्ट राजकीय अतिथि के रूप मे 16 प्रकतबर १८८३ तक रहे वही स्वामी जी पर भयकर रोग का आक्रमण हुआ और अतत रूग्णावस्था मे अजमेर आकर 30 अक्तूबर 1883 को निधन हो गया। जोधपुर का वातावरण उस समय ऐसा विपरीत रहा जो जोधपुर एव जोधपुर राजघराने के लिए कलक रूप बन गया।

मेरे पिताजी रावराजा रघुनाथ सिंह जी उस समय तेरह वष के थे उनके पिता रावराजा सुरतानसिंह जी का कुछ समय पूव निधन हो गया था। उन पर जोधपुर नरेश की कृपा थी तथा राजघराने से सबध होने के कारण एव जागीर के पाटवी कु वर होने से नरेश ने ने उनको अपने सरक्षण मे लेकर अपने पास राइका बाग पैलस मे रख लिया। जोधपुर राज दरबार का वातावरण राजस्थान के अ य देशी रजवाडा की तरह ही था। राजा लोग मरहठो पि डारियो की लूट, आपसी युद्ध एव मुगल दरबार मे सेवा के लिए उपस्थिति से मुक्त होकर आराम का जीवन व्यतीत कर रहे थे। मुगल दरबार के विशिष्ट व्यक्तियो न इन रियासता मे अपना स्थान बना लिया था। जयपुर नरेश महाराजा सवाई रामसिंह जी कुशल प्रबधक एव विद्वानो का आदर करनेवाल कट्टर शैव थे उदयपुर नरेश महाराणा सज्जनसिंह जी वार व्यवहार कुशल व बुद्धिमान थे। जोधपुर नरेश महाराजा जसवत सिंह जी भी युद्ध कुशल एव गुणवान व्यक्तियो के कद्रदान थे। यहा के सभी नरेश आखेट प्रिय थे। उत्तम अश्वारोही व अस्त्र शस्त्र के उपयोग मे प्रवीण थे। अश्व सचालन एव शस्त्र का उपयोग मृगया मे सहायक था। वे मास मदिरा सेवन तथा भारतीय शास्त्रीय सगीत व वेश्याओ के न य आदि मे रुचि लेते थे। वेश्याओ को रियासत की नौकरी मे रक्खा जाता था जो गुणिजन महकमा कहलाता था। जोधपुर मे मुगल सभ्यता का अधिक प्रभाव था। जोधपुर नरेश के पास तो नन्ही भगतन कृपापात्र थी ही पर तु वहा के लगभग कई जागीरदारो प्रतिष्ठित राजपुरुषो व सेठ-साहूकारो के पास भी अपनी अपनी वेश्या नौकर थी, जो प्रतिष्ठा का प्रतीक मानी जाती थी। जोधपुर नरेश यद्यपि स्वामी जी से प्रभावित हुए थे परतु प्रारभ मे अपने अस्वस्थ होने तथा बाद मे अपने स्वभाव के कारण केवल तीन बार स्वामी जी के निवास स्थान पर पधारे व स्वामी जी भी केवल तीन बार राइकाबाग राजमहल मे पधार। उस समय स्वामी जी का नरेश ने राजगुरु के समान सत्कार किया। राजमहल एव दरबारियो मे आपसी अधिकार तथा स्वाथवश षडयन्त्र तो सव त्र ही थे परन्तु जोधपुर मे कुछ विशेष थे। स्वामी जी द्वारा निर्भीक होकर सत्य के प्रचार करने से प्रत्येक हि दू सम्प्रदाय के ठेकेदारा मुसलमान व ईसाई धम के सकुचित विचार वाले प्रचारको आदि उन समस्त ऐसे व्यक्तियो का जिनके स्वाथ आर्थिक लाभ एव अध विश्वास व भक्ति पर कुठारा घात हुआ वह स्वामीजी के विरुद्ध हो गए। परतु नरेश क भय से स्वामीजी के विरुद्ध षडयन्त्र गुप्त रूप से हुआ।

स्वामी जी जब राइका बाग पलेस मे नरेश से भट करने पधारे तब पिताजी को स्व मीजी के दशन तथा वार्तालाप सुनने का सौभाग्य प्र प्त हुआ। स्वामी जा के व्यक्तित्व सुगठित शरीर एव नरेश के साथ वार्तालाप एव व्यवहार का पिताजी पर स्थायी प्रभाव हुआ। कुछ समय बाद जब पिताजी को महाराज प्रतापसिंह जी के सरक्षण मे नरेश की आज्ञा से रख लिया गया तब पिताजी आय समाज के विद्वान् एव स यासियो के सम्पक मे आने लगे और आजीवन स्वामी जी के परम भक्त बने रहे।

महार ज प्रतापसिंह जी द्वारा जोधपुर राज्य मे सुधार काय के कारण उनके अनेक शत्रु हो गये और अतत महाराजा जसवतसिंह जी के 11 अक 1895 को स्वगवास हो जाने पर भावी नरेश महाराज सरदारसिंह जी के नाबालिगी मे तथा उनके राज्याभिषक के उपरान्त जोधपुर रियासत के प्रबध मे उनका प्रभाव कम हो गया। तब वहा आयसमाज का सरकारी महकमा भी समाप्त कर दिया गया। फलत कमचारियो व अ य सवा की सेवा स्वत ही समाप्त हो गई।

मेरे पिताजी भी उस उथल-पुथल के समय अपनी जागीर के गाव जीवद स्थायी निवास क लिए चले गये और प अचलेश्वर जी श्रीमाली ब्राह्मण सोजत निवासी जो जोधपुर आयसमाज के अतरग सभा के सभासद एव पादरियो के द्व रा ईसाई प्रचार के विरुद्ध महाराज प्रतापसिंह जी द्वारा उपदेशक पद पर नियुक्त थे उनको अपने पास स्थायी निवास के लिए बुलाकर निवास व भोजन आदि का प्रबध कर दिया। फलस्वरूप स्वामीजी के ग्र थो व जीवन चरित्र आदि का पारायण प्रतिदिन सायकाल के समय एक घन्टे तक ठिकाने के प्रमुख व्यक्तियो व पिताजी क सम्मुख प्र रभ हुआ तथा आयसमाज के प्रतिष्ठित स यासियो उपदेशका आदिको निमन्त्रित किया जाने लगा स्वामी जी के जोधपुर प्रवास की घटनाओ पर भी प अचलेश्वर जी चर्चा से होने लगी। इस समय यह भी अनुभव हुआ कि जोधपुर से सबधित कुछ घटनाओ का मिथ्या प्रचार होने के कारण जोधपुर मे आय समाज का प्रभाव बहुत कम होने लगा था। इन सब विषया पर आय समाज के प्रसिद्ध जीवना लेखक डाक्टर भवानी लाल जी ने उत्तम प्रकाश डाला है। डाक्टर साहब ने बडे परिश्रम से तत्कालीन दस्तावेजो हकीकत बही आदि का निरीक्षण व अध्ययन करके अधिकार पूवक लिखा है। मैं भी मेरा स्मृति के आधार पर यहा पर कुछ लिख रहा हू।

(1) स्वामी जी को जोधपुर पधारने का निमत्रण देने का कारण -

स्वामी जी उस जमाने के प्रसिद्ध सुधारक वेदो के प्रकाण्ड पण्डित व राज सम्मानित व्यक्ति थे। उदयपुर मे स्वामी जी का राजकीय सम्मान अति विशिष्ट राज गुरु की भाति हुआ था अत जोधपुर मे भी यह सोचा गया कि ऐसे महामानव के सम्मान मे जोधपुर क्यो पीछे रहे! जोधपर मे सामाजिक अधविश्वास ईसाई पादरियो द्वारा हि दू सम्प्रदायो की घटिया तरीके से आलोचना मुसलमान अधिकारियो का नरेश पर प्रभाव आदि के बढ जाने से महाराज प्रताप सिंह जी ने यह उचित समझा कि स्वामी जी के जोधपर पधारने से समस्त बुराईयो का निराकरण हो जायेगा।

(2) स्वामी जी के राइका बाग पलेस मे आगमन के समय न ही भगतन का नरेश के पास उपस्थित होना तथा शीघ्रता पूवक उसको रवाना करने के लिए पालकी मे बिठाना व उस पालकी को नरेश द्वा । सहारा देना—यह अतिसुदर कपोल कल्पना की गई है। जिन लोगो ने रियासत के समय राइका बाग पैलेस देखा है—वह जानत है कि उस भवन मे एक स्थ न स दूसर स्थान मे जान के लिए पालका का उपयोग महारानियो क लिए भी नही होता था तो न ही भगतन के लिए पालका का उपयोग क्या कर किया गया? क्या नरेश के पास अन्य कोई नौकर नही था जो स्वय द्वारा सहारा देनेकी नौबत आ गई क्या स्वामी जी अचानक नरेश के महल मे चले गये और क्या नरेश से मिलने किसी व्यक्ति अथवा किसी विशिष्ट अतिथि के जाने के लिए पहल से समय निर्धारित नही किया जाता था क्या आजकल स्वतत्र भ रत मे भी गवनर अथवा किसी विशिष्ट व्यक्ति से मिलना बिना पूव निर्धारित समय के सभव है? यह कल्पना जोधपुर नरेश को बदनाम करने के लिए की गई थी और आश्चय है कि इस प्रकार के चित्र भी कल्पना के आधार पर बना लिए गए और इस घटना का राजदरबार के शिष्टाचार से अनभिज्ञ लोगो ने मान लिया।

(क्रमश)

# आर्य समाज में होने वाले विवाह : कुछ नैतिक और कानूनी प्रश्न

—आचार्य दत्तात्रेय आर्य

### प्रावधान का दुरुपयोग

मेरी अंग्रेजी पुस्तक "आर्य समाज हिन्दू विदाउट हिन्दुइज्म" की समीक्षा "इल्लस्ट्रेटेड वीकली ऑफ इण्डिया" नामक सुपरिचित अंग्रेजी साप्ताहिक मे जब प्रकाशित की गई, तो वहा आर्य समाज के बारे मे पुस्तक मे दी गई जानकारी की प्रशसा की गई वही एक बात यह भी लिखी गई कि इससे पूर्व आर्य समाज के बारे मे साधारणत लोग यही समझते थे कि वह एक ऐसी सस्था है जो विवाह कराती है और विशेषकर ऐसे विवाह जो अन्यत्र नही किये जा सकते।

आर्य समाज के बारे मे इस गलत धारणा का कारण यह प्रतीत होता है कि बम्बई जैसे बडे शहरो मे कुछ आर्य समाजे इस प्रकार के विवाह रचाकर पर्याप्त धनराशि एकत्र करती हैं। अन्य प्रान्तो व नगरो मैं भी कई आय समाजे केवल कुछ निश्चित राशि लेकर इस प्रकार के विवाह कराती हैं और बदले मे विवाह का प्रमाण-पत्र देती हैं, जिसका उपयोग न्यायालयो अन्य स्थानो मे इस प्रकार के विवाह को कानूनी मान्यता प्राप्त करने के लिये किया जाता है। अजमेर की केसरगज स्थित प्रसिद्ध एव पुरानी आय समाज से इस प्रकार के विवाह सम्पन्न कराने के लिए विशेष प्रयत्न व आग्रह किया जाता है, क्योकि उसके द्वारा दिया गया प्रमाण पत्र आसानी से स्वीकार हो जाता है।

गत कुछ वर्षों मे इस समाज मे विवाह के लिए आए प्रार्थना पत्रो का विवेचन करने से इस बात की पुष्टि होती है कि उनमे से कुछ विवाह नैतिक अथवा कानूनी दृष्टि से वाछनीय नहीं थे। परिणामस्वरूप जब ऐसे कई अभ्यर्थियो के आवेदनो को अस्वीकृत किया गया तो कुछ निहित स्वार्थी तत्वो द्वारा इसके विरुद्ध इस समाज की समालोचना की गई। व्यवहार मे देखा जाता है कि ऐसे विवाहो मे कानूनी प्रावधानो की शर्त की उपेक्षा की जाती है। प्राय अन्तरजातीय व धर्मान्तरण के अतिरिक्त ऐसे विवाह भी विशेष धनराशि लेकर आर्य समाजों द्वारा सम्पन्न किये जाते हैं जिन्हें आर्य समाज के सिद्धान्तो तथा नैतिक दृष्टि से भी उचित नही कहा जा सकता। अक्सर विवाह अभ्यर्थी इसीलिये "चट मगनी, पट ब्याह" करने का आग्रह करते हैं और इस प्रकार उनके बारे मे जाच पडताल करके उन्हे सम्पन्न कराना आर्य समाज के लिये भी कठिन हो जाता है।

उदाहरण के लिये "प्रेम विवाह" के नाम पर अक्सर एक कालेज मे पढने वाले लडके-लडकिया सुबह घर से निकलकर दिन मे आर्य समाज मे विवाह कराकर सायकाल या तो अन्तर्ध्यान हो जाते हैं या अपने अभिभावको को विवाह का प्रमाण पत्र दिखाकर उसे स्वीकार करने के लिये बाध्य कर देते हैं। उदाहरण के लिये एक सिंधी प्राध्यापिका को अपने पूर्व विवाह की सूचना दिये बिना उसके एक साथी अध्यापक ने इस समाज द्वारा विवाह करने मे सफलता प्राप्त कर ली।

### आर्य विवाह कानून

आर्य समाज में होने वाले विवाह को कानूनी मान्यता एक केन्द्रीय अधिनियम के अन्तर्गत प्राप्त है, जो मध्यप्रदेश के तत्कालीन सासद और प्रसिद्ध आर्य नेता श्री घनश्याम जी गुप्त के प्रयत्न से पारित किया गया था। इसका नाम 'आयमैरिज एक्ट" 1937 है, जो 1955 के एक्ट द्वारा सशोधित किया गया। उसकी पहली धारा मे ही ये स्पष्ट किया गया है कि इस अधिनियम के अतर्गत किये गए वे ही विवाह वैध माने जायेंगे जो आर्य समाजियो मे परस्पर सम्पन्न किये जाते हैं। वस्तुत इस कानून की इस लिये आवश्यकता अनुभव की गई कि आर्य समाज के अनुयायियो मे जन्मगत जाति बन्धन तोडकर और कई बार अहिन्दुओ को शुद्ध करके विवाह किये जाते थे। इसी प्रकार विधवा विवाह भी आय समाज के माध्यम से सम्पन्न होते थे। इसलिये इस अधिनियम की धारा दो मे यह स्पष्ट किया गया कि "हिन्दू लॉ" या रीति रिवाज और परम्परा चाहे जो हो किन्तु आर्य समाज के अनुयायियो मे सम्पन्न किया गया कोई विवाह इस आधार पर अवैध नही माना जावेगा कि वर-वधू भिन्न जातियो व उपजातियो के थे अथवा कोई एक या दोनों विवाह से पूर्व हिन्दू धर्म से भिन्न धर्म के अनुयायी थे। इसी प्रकार वयस्क और पूर्व मे अविवाहित अहिन्दू धर्मान्तरण करके आर्यसमाजी होने की घोषणा करे तो उनके भी विवाह किये जा सकते हैं।

इस प्रकार ये स्पष्ट है कि आर्य समाज मे सम्पन्न किये गये इस प्रकार के विवाह के दोनो पक्ष अर्थात् वर-वधू आर्य समाज के अनुयायी होने चाहिये। जाने-अनजाने वे किसी आयु व विवाह विच्छेद सबधी किसी कानून के विरुद्ध न हो साथ ही आर्य समाज के सिद्धान्तो और नैतिक मर्यादाओ का उल्लंघन करनेवाले न हो।

### आर्य समाज अजमेर का निश्चय

उपरोक्त पृष्ठ भूमि मे आर्य समाज अजमेर ने निश्चय किया है कि भविष्य में उसके द्वारा केवल निम्नलिखित अवस्थाओ मे ही आर्य समाज मन्दिर में विवाह की अनुमति दी जाए—

1– दोनो पक्षो मे से एक आर्य समाज का अनुयायी हो। साधारणत आर्य समाजियो को अपने विवाह आर्य समाज मन्दिर मे कराने चाहिये ताकि वे वैदिक पद्धति से ही किए जाए और उनमे प्रचलित आडम्बरो तथा अपव्यय के लिये स्थान न रहे।

2– अन्तरजातीय विवाह

3– विधवा विवाह

4– धर्मान्तरण करके आर्य समाज मे प्रवेश करने के इच्छुक वर-वधू के विवाह।

5– आर्य समाज मे होने वाले विवाहो और विशेषकर धर्मान्तरण के बाद होने वाले विवाहो की एक शर्त होनी चाहिये कि विवाह के बाद वे अपने नाम के आगे आर्य शब्द लिखने की लिखित घोषणा करें।

6– विशेष परिस्थितियो में वे विवाह जो बिना दहेज, मूहूर्त अथवा अन्य धार्मिक व सामाजिक कुरीतियो के कारण अन्यत्र न किये जा सकें।

उपर्युक्त शर्तों के अतिरिक्त निम्नलिखित प्रमाण पत्र भी आवश्यक होने चाहिये—

1- आयु

- पहले अविवाहित होने सबधी

3- यदि विवाह विच्छेद हुआ तो न्यायालय का निर्णय

4- यथा सभव वर-वधू के पक्ष के अभिभावको की स्वीकृति।

## सृष्टि रचना...

(शेष पृष्ठ 2 का)

सृष्टि का कारण बतलाया गया है—वह युक्तिसगत ही है क्योकि किसी भी पदार्थ की सृष्टि कर्म अर्थात् चेष्टाविशेष काल, उपादान विज्ञानरूप पुरुषार्थ, विभिन्न घटक तत्वो का सम्मेलन और कर्ता विशेष के अभाव मे नही हो सकती—अत कर्मादि समस्त रूप मे सृष्टि के प्रति हेतु हैं—न कि व्यस्त रूप मे।

ईश्वर और जीव मे महान अन्तर है ईश्वर सर्ग-स्थिति-सहार-कारक सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी सर्वव्यापक है— जीव मे इन गुणो का अभाव है। ईश्वर अविद्या अस्मिता आदि पचक्लेश, कर्म विपाक और आशय से अछूता है—अत अज है जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त है किन्तु जीव क्लेश कर्मादि के वशीभूत होकर बार-बार शरीर धारण करता है। जीव भोक्ता है—ईश्वर द्रष्टा है। जीव का परम पुरुषार्थ मोक्ष की प्राप्ति है जबकि ईश्वर नित्य, शुद्ध, बुद्ध, और मुक्तस्वभाव है। जीव आनन्द स्वरूप ब्रह्म को प्राप्त करके ही आनन्दित होता है, ईश्वर का प्राप्तव्य कुछ नही है। ईश्वर अखण्ड एव सच्चिदानन्द है—वह मनवाणी के परे है—जीव उसे प्राप्त करने के लिए ही जप, योग, उपासना आदि का आश्रय ग्रहण करता है। 'द्वा सुपर्णा' आदि आदि ऋग्वैदिक मत्र में जीवात्मा को भोक्ता एव ईश्वर को द्रष्टा बतलाकर दोनो का भेद स्पष्ट कर दिया गया है। अत ईश्वर और जीव उपर्युक्त भेदो के कारण परस्पर भिन्न हैं।

स्वत्वाधिकारी आर्यसमाज अजमेर के लिए प्रकाशक एव सपादक रासासिह हेतु रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्य प्रिन्टर्स बाबू मोहल्ला केसरगज अजमेर मे मुद्रित एव आर्य समाज भवन, अजमेर से प्रकाशित।

ओ३म्

# आर्य पुनर्गठन

आर्य समाज, अजमेर का हिन्दी पाक्षिक पत्र

'आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म ।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म ॥'

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है ।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए
—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द 163

सृष्टि सम्वत् 1972949088

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सकल जगत को आर्य बनायें ।

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होनेवाली समस्याओ को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है ।

वर्ष 5 मंगलवार 28 फरवरी 1989
अंक 4 प स -43383/84

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात् ।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ॥

फाल्गुन कृ 7 सवत 2045
वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60 पैसे


# स्वामी शक्तिवेश की हत्या से सबक लो!

—वीरेन्द्र कुमार आर्य—

स्वामी शक्तिवेश जी की नृशंस हत्या अन्य हत्याओ से कई तरह से अलग है। स्वामी जी की हत्या के कारणो के अध्ययन से यह पूरी तरह से स्पष्ट हो जाता है कि मामला अत्यन्त गम्भीर है। और यदि इसे गंभीरतापूर्वक नही लिया गया तो कालातर मे आर्यसमाज के अस्तित्व के लिए सकट पैदा हो सकता है।

स्वामी जी की हत्या क्यो हुई ? यह कोई छिपा हुआ राज नही है। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के स्वामित्व को लेकर पैदा हुए मतभेद की परिणति स्वामी जी की हत्या मे हुई। इससे खेदजनक बात और हो भी क्या सकती है कि स्वामीजी के हत्यारे (हत्या का षडयन्त्र रचने वाले) भी तथाकथित आर्यसमाजी ही हैं।

अभी कुछ समय पहले न्यायालय द्वारा गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के स्वामित्व (सचालन) सम्बन्धी मुकदमे का निर्णय स्वामी शक्तिवेश के पक्ष मे दिया गया था। प्रकटतया इससे गुरुकुल पर अपना अधिकार जताने वाला कुछ लोगो का एक गुट उनसे रुष्ट था। यह गुट शक्तिवेश जी से इसलिए अप्रसन्न नही था कि वे कोई भ्रष्टाचारी या अकर्मण्य व्यक्ति थे। वस्तुत इन लोगो का स्वामी जी से विरोध इसलिए था कि उनके स्वामित्व के कारण गुरुकुल से जुड़े इन लोगो के स्वार्थ पूरे नही हो सकते थे।



स्व. स्वामी शक्तिवेश जी

स्वामी शक्तिवेश जी की हत्या से आर्यजनो की आख खुल जानी चाहिए। स्वामी जी की हत्या सच्चे ऋषिभक्तो के लिए एक चेतावनी है—जिस गभीरता से लिया जाना आवश्यक है। गत कुछ

(शेष पृष्ठ 4 पर)

# आर्य संस्थाओं को धारा 30 का लाभ देने की मांग

अजमेर । राजस्थान की समस्त आर्य समाजी शिक्षण संस्थाओ ने एकजुट होकर माग की है कि अल्प सख्यक शिक्षण सस्थाओ के लिये बनाई गई सविधान की धारा 30 का लाभ अन्य अल्पसंख्यक हिन्दू शिक्षण संस्थाओ की तरह आर्य समाजिक शिक्षण सस्थाओ को भी दिया जाय।

यह प्रस्ताव 17 फरवरी 89 को दयानन्द कालेज मे डी ए वी सीनियर उ मा विद्यालय अजमेर के स्थापना शताब्दी समारोह के तहत आयोजित शिक्षा सस्थाओ के सम्मेलन मे पारित किया गया। आर्य शिक्षण सस्थाओ के इस सम्मेलन मे राज्य के श्री गगानगर ब्यावर, अलवर, जयपुर, सुमरपुर बादीकुई और अजमेर आदि स्थानो से लगभग 100 प्रतिनिधियो ने भाग लिया।

सम्मेलन मे प्रस्ताव रखते हुए दयानन्द कालेज के पूर्व प्राचार्य एव स्वागताध्यक्ष श्री दत्तात्रय आर्य ने कहा कि स्वाधीनता के बाद देश की शिक्षा पद्धति मे सुधार की दृष्टि से किये गये परिणाम निराशाजनक ही रहे हैं। उन्होने कहा कि आज गैर सरकारी शिक्षण सस्थाओ मे सरकार का हस्तक्षेप बहुत अधिक बढ गया है। जिसका प्रभाव विद्यार्थियो को नैतिक शिक्षा देने मे बाधा पहुचाता है। इस कारण आर्य समाज जैसी शिक्षण सस्थाए भी स्वय की निष्ठा खोती जा रही हैं। अत आज जरूरत पुराने गौरव को बनाये रखने की है।

उन्होने कहा कि ईसाई मिशनरी स्कूलो मे आज प्रत्यक्ष या

(शेष पृष्ठ 4 पर)



शिक्षा सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए बायें से दायें श्री जगनप्रसाद रावत व आचार्य दत्तात्रय आर्य ।

निदेशक दत्तात्रेय आर्य प्रधान सपादक रासासिंह सपादक वीरेन्द्र कुमार आर्य ☎ कार्या 21010

## सम्पादकीय

# धार्मिक कट्टरता राष्ट्र के लिए घातक

सच्चा धर्म जोड़ना सिखाता है, तोड़ना नहीं। भारत विविध धर्मों एवं सम्प्रदायों का देश है। यद्यपि यहां पर 85% सत्य सनातन वैदिक (हिन्दू) धर्म को मानने वाले हैं फिर भी भारतीय संविधान ने किसी एक धर्म को प्रमुख राजधर्म घोषित न करके इसे धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र घोषित किया है। सर्वधर्म समभाव की नीति राज्य की ओर से अपनायी गई है और सब धर्मों को अपने अपने प्रचार, प्रसार की स्वतंत्रता है।

भारतीय धर्म और संस्कृति की सदैव यह परम्परा रही है कि उसमे व्यापकता, उदारता, सच्चाई, मानवता, सहिष्णुता को स्थान मिला है उसमे संकुचितता, घृणा, कट्टरता आदि के लिये कोई स्थान नही है। परन्तु विदेशी भूमि पर जन्मे तथाकथित धर्मों और सम्प्रदायो मे 'मजहब मे अक्ल को कोई दखल नही' को तरजीह दी गई है। व्यक्ति विशेष के द्वारा चलाये गये धर्मों मे, मसीहा, पैगम्बर, आदि के वचनों को 'बाबा वाक्य प्रमाण' मानकर तथा जिहाद धर्मयुद्ध आदि को कल्पनाकर लोहे की लकीर मान लिया गया है बाईबिल एव कुरान की कई असगत एव बुद्धि विरुद्ध अवैज्ञानिक बातो के विरुद्ध जब जब भी कोई आवाज उठाने की हिम्मत की गई तब तब उन आवाज उठाने वाला के विरुद्ध पादरियो, मुल्ला मौलवियो, और धर्माचार्यों द्वारा कई फतवे दिये गये और धर्म के नाम पर कइयो को जिन्दा जला दिया गया, कइयो को अमानुषिक यातनाए दी गई रथ के पहियो के नीचे कुचलवा दिया गया अथवा सर कलम कर दिया गया।

मनुष्य एक विवेकशील एव बुद्धिजीवी प्राणी है। परमात्मा ने उसे सोच विचार कर कार्य करने मननशील होने, ज्ञान पूर्वक आचरण करने हेतु उन्नत मस्तिष्क प्रदान किया है। दिमाग पर ताले नही लगाये जा सकते। धर्म और विज्ञान, धर्म और सच्चाई, धर्म और ज्ञान एक-दूसरे के पूरक हैं। बिना ज्ञान, विज्ञान और सच्चाई के धर्म मे कई अनगन अप्रामाणिक तर्क विहीन अन्धविश्वासो, दूषित परम्परा और दोषपूर्ण कर्मकाण्डो को जन्म मिल जाता है। ज्ञान विज्ञान की खिड़कियां बन्द कर देने पर कट्टरता, कठमुल्लापन को जन्म मिलता है जो व्यक्ति समाज, राष्ट्र और मानवता के लिये घातक है।

हमारे वैदिक धर्म मे धर्म के 10 लक्षणो का उल्लेख करते हुए उनमे धृति क्षमा, दम अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, अक्रोध के साथ साथ धी, विद्या और सत्य को भी स्थान दिया गया। धर्म की परिभाषा करते हुए कहा गया 'यतो अभ्युदय निश्रेयस संसिद्धि" अर्थात् जिनसे इस लोक और परलोक दोनो की उन्नति और सिद्धि है। वही यह भी कहा कि 'वेद प्रतिपादितो धर्म" अर्थात् वेद द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त ही धर्म है। वेद स्वय ज्ञानात्मक है। वेद ज्ञान भण्डार है। धर्म ही ग्राह्य है। "यस्तर्केण अनुसन्धन्त स एव धर्म" अर्थात् तर्क और सत्य की कसौटी पर जो खरा उतरे वही धर्म है। यह ठीक है कि व्यावहारिक पक्ष को दृष्टिगत रख कर यह कह दिया गया कि 'सत्य ब्रूयात्, प्रिय ब्रूयात्, न ब्रूयात्, सत्य अप्रिय। प्रिय च अनृत न ब्रूयात् एष धर्म सनातन॥" अर्थात् सत्य बोलो पर प्यारा लगनेवाला सत्य बोलो, कड़वा लगने वाला सत्य मत बोलो। प्यारा लगने वाला झूठ भी मत बोलो, यही सनातन धर्म है।

दुर्भाग्य से भारत में मूलरूप से जन्मे तथा वर्तमान मे ब्रिटेन के नागरिक प्रसिद्ध विवादास्पद लेखक सुलेमान रश्दी द्वारा लिखित "दी सेटेनिक वर्सेज" नामक पुस्तक मे उल्लिखित तथ्यों को लेकर तानाशाह शासक अयातुल्लाह खुमैनी द्वारा उन्हे मौत के घाट उतार देने का फतवा देने से समस्त विश्व के मनीषी विद्वानो, लेखको एव साहित्यकारो मे एक रोष की लहर फैल गई है, विश्व मे तनाव बढ गया है और कई देशो ने विचारो की आजादी का समर्थन करते हुये तथा लेखको को मारने की धमकी एवं फतवे की निन्दा करते हुए ईरान से अपने राजनयिक सम्बन्ध तोड़ लिये हैं। पर इधर तमाम इस्लामी देशो मे इस्लाम के अलम्बरदार सुलेमान रश्दी के खून के प्यासे होकर तोड़फोड़, प्रदर्शन और नारेबाजी कर जिहाद को बढावा दे रहे हैं जो इंसानियत के लिये घातक है।

यद्यपि भारत ने पहले ही इस पुस्तक के प्रकाशन पर पाबन्दी लगा दी है फिर भी यहा के मुस्लिम कट्टरवाद के शिकार होकर धर्मान्धता का परिचय देते हुये जलसे जुलूसो का आयोजन करने के साथ जगह-जगह बन्द का आयोजन करवाकर साम्प्रदायिक दगो और तनाव को उकसा रहे हैं जो राष्ट्र के लिये तथा मानवता के लिये घातक है। तर्क का जवाब तर्क से, कलम का जवाब कलम से देना चाहिए, परन्तु इस्लाम मे वैचारिक स्वतन्त्रता न होने के कारण ही यह धर्मोन्माद बढ रहा है, जो स्वय इस्लाम के लिए भी दुखदायक है। काश मजहब मे भी अकल के लिये दखल होता। तभी तो एक उर्दू शायर को कहना पड़ा—

"खुदा के बन्दो को देखकर खुदा से मुनकिर हुई है ये दुनिया।
जिस खुदा के ये मानने वाले हैं, वह खुदा कोई अच्छा खुदा न होगा॥"

—रासासिंह

## 'आर्य पुनर्गठन' का विवरण

## फार्म नं. 4

(नियम 8 देखिये)

| | | |
|---|---|---|
| 1 | प्रकाशन का स्थान | अजमेर |
| 2 | प्रकाशन की अवधि | पाक्षिक |
| 3 | मुद्रक का नाम | रतनलाल गर्ग |
| | (क्या भारत का नागरिक है ?) | हा |
| | पता | आर्य प्रिन्टर्स बाबू मौहल्ला, अजमेर |
| 4 | प्रकाशक का नाम | रासासिंह |
| | (क्या भारत का नागरिक है ?) | हा |
| | पता | आर्य समाज केसरगज अजमेर |
| 5 | संपादक का नाम | रासासिंह |
| | (क्या भारत का नागरिक है ?) | हा |
| | पता | आर्य समाज, केसरगज, अजमेर |
| 6 | उन हिस्सेदारों के नाम और पते जिनके पास कुल पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्से हैं। | आर्य समाज, केसरगज, अजमेर |

मैं रासासिंह एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी के अनुसार पूर्णतया सत्य है।

रासासिंह

दिनांक · 28-2-89 (ह० प्रकाशक)

# जोधपुर नरेश और ऋषि दयानन्द

— ठा प्रेमसिंह —

(गतांक से आगे)

(5) स्वामी जी के जोधपुर आगमन एव प्रस्थान के समय "रोपड" गाव मे विश्राम करने का उल्लेख है। गाव 'रोहट' उस समय एक ठिकाना था। वहा के जागीरदार प्रगतिशील विचारो के भद्र पुरुष थे। डाक्टर साहब ने जीवन चरित्र मे ग्राम के नाम को सही लिखा है।

(6) स्वामी जी से मिलने रावराजा मोहनसिंह जी आये थे तथा वेदान्त विषय पर चर्चा की—यह नाम भी गलत लिखा गया था उस समय इस नाम के कोई रावराजा नही थे। रावराजा सोहनसिंह जी सस्कृतज्ञ थ और स्वामी जी से वार्तालाप इन्होने ही किया था। यह नाम दुरुस्त करना आवश्यक है।

यहा मैं यह भी लिखना चाहूगा कि जोधपुर के हालात का स्पष्टीकरण डा साहब ने अति उत्तम किया है। महाराज प्रतापसिंह जी तथा रावराजा तेजसिंह जी द्वारा आय समाज के काय मे योगदान देने का विवरण डा साहब ने अलग पुस्तक मे दिया है। परन्तु मेरे विचार से जोधपुर नरेश और महाराज प्रताप सिंह जी के विरुद्ध प्रचार तथा मास मदिरा सेवन को इतना तूल देने से लेखको द्वारा आय समाज का कोई हित नही हुआ बल्कि आय समाज को सरकारी विभाग से अलग कर दिया गया और जोधपुर नरेश महाराजा सरदार सिह जी के शासन काल मे आय समाज वहाँ बहुत शिथिल हो गई।यहा एक और शका उत्पन्न होती है कि जब स्वामीजी को जोधपुर मे इलाज से कोई लाभ नही हुआ तो स्वामी जी ने किसी अन्य मे इलाज कराने का क्यो नही कहा और जोधपुर राज्य से बाहर के किसी आय भद्र पुरुष को क्यो नही सूचित किया।

आजकल का वातावरण तत्कालीन वातावरण से बिलकुल भिन्न है पुराने आदर्श समाप्त प्राय हो गये हैं। खान पान मे विपरीत प्रगति हुई है।आय समाज के पुनर्गठन की और आय समाज अजमेर के यशस्वी प्रधान द्वारा प्रयत्न किये जा रहे हैं। धम के मूल सिद्धान्त तो अटल है परन्तु सदाचार और व्यवहार के सिद्धात परिवतनशील होते हैं। अत इस विषय पर विचार आवश्यक है। साप्ताहिक सत्सग मे सत्याथ प्रकाश का पाठ व वेद कथा होती ही है परन्तु हमारे युग-पुरुष राष्ट्र पितामह स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन चरित्र को जानना भी आवश्यक है। नव जागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती पस्तक का भी इसी प्रकार पाठ प्रारम्भ किया जावे तो आपत्ति नही होनी चाहिये।

(3) नन्ही भगतन हिन्दू कट्टर वैष्णव थी और छुआछूत मे बहुत विश्वास करती थी। स्वामी गणेश पुरी की भक्त थी। वह नन्हीं जान के नाम से प्रसिद्ध नही थी। जन साधारण तथा राजमहल मे उसे नेनीजी के नाम से जाना था। दरबार (नरेश) की वह कृपा पात्र थी। परन्तु वह रखैल नही थी। राज काज मे भी उसका दखल था।

(4) स्वामीजी को काच पीस कर दूध मे दिया गया इस विषय पर डाक्टर भवानी लाल जी भारतीय ने प्रकाश डाला है। विष देने सबधी नरेश या महाराज प्रताप सिह जी व रावराजा तेजसिंह जी को उस कुछ भी ज्ञात नही हो सका। अपने प्रतिद्वन्द्वी को मारने के लिये विष देने का राजस्थान के रजवाडो मे प्रचलन था परन्तु विष मे सखिया या धतूरा उपयोग मे लिया जाता था। पिताजी को इस बाबत कोई जानकारी नही थी अत डाक्टर साहब का निष्कष ही सही है।

---

दयानन्द उवाच

## बन्ध और मोक्ष

—डा बाबूराम शास्त्री—

जिज्ञासु स्वामी जी! मोक्ष किसे कहते है? बन्ध और मोक्ष का कारण क्या है? मोक्ष के साधन क्या हैं? क्या मोक्ष से पुनरावृत्ति होती है या मुक्त जीव ब्रह्म मे लीन हो जाता है?

दयानन्द दुख से आत्यन्तिक निवृत्ति—दुख से सदैव के लिए छूट जाना ही मोक्ष है। प्रकृति और पुरुष—ईश्वर, जीव के भेद का ज्ञान ही मोक्ष का हेतु है और अज्ञान ही जीव के बन्धन का कारण है। मोक्ष के साधन 4 हैं नित्यानित्य वस्तु विवेक इस लोक-परलोक के कमजन्यफल के भोग से वैराग्य शम दम-उपरति-तितिक्षा समाधान श्रद्धारूप षटक सम्पत्ति और मुमुक्षुत्व अर्थात् मोक्ष की इच्छा। इन चार साधनो से सम्पन्न पुरुष ही मोक्ष का अधिकारी है। ऐसे सात्विक जितेन्द्रिय साधक को मैत्री-करुणा-मुदिता उपेक्षावृत्ति का यथायोग्य आचरण करना चाहिए और श्रवण मनन-निदिध्यासन और योगाभ्यास के द्वारा अविद्या अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेशरूप, पांच क्लेशो को विनष्ट कर आत्मानुभूति करनी चाहिए।

मुक्त जीव ब्रह्मलीन नही होता क्योंकि यदि ब्रह्मलीन हो जाये तो मोक्ष का आनन्द कौन भोगे? ब्रह्मलीन होने का तात्पय है—ब्रह्म मे जीव का प्रलय होना —जीव अजर अमर है शाश्वत है इस प्रकार की मुक्ति मुक्ति नहीं विनाश है ब्रह्म मे लय होना समुद्र मे डूब मरना है वस्तुत जीवात्मा जब अपना बुद्धि और आत्मा मे स्थित सत्य ज्ञान अनन्त और



डा बाबूराम शास्त्री

आनन्दस्वरूप परमात्मा को जानना है—वह उस व्यापक ब्रह्म मे स्थित होकर अनन्तविधानिधान ब्रह्म की कृपा से सभी कामनाओ को प्राप्त करता है अर्थात् यथाकाम आनन्द का भोग करता है—यथेच्छ लोको का स्वेच्छा से भ्रमण करता है—उसकी गति आबाधित होती है—वह सृष्टि के रहस्य को जान लेता हैं मुक्तात्माओ का सत्सग प्राप्त करता है—और पदार्थों का ज्ञान उसे हस्तामलक होता है।

जैसा कि कहा गया मुक्तात्मा ब्रह्मलीन नही होता—उसकी स्वतन्त्र सत्ता बनी रहती है। यह मुक्त जीवात्मा परान्तकाल पयन्त मोक्षानन्द भोग कर पुन जन्म लेता है। यह कहना सगत नही है कि जब जीव सदैव के लिए आवागमन के बन्धन से नही छूटता तो ऐसे मोक्ष से क्या लाभ? लाभ महान है—मोक्षकाल मे जीवात्मा ब्रह्मानन्द का अधिकारी होता है और इस मोक्षकाल की अवधि बहुत बडी है—अल्पज्ञ और अल्पशक्तिसपन्न जीव का आनन्दोपभोग अनन्त नही हो सकता और परान्तकाल तक आनन्दभोग करना कुछ कम तो नही है। वस्तुत तैंतालीस लाख बीस सहस्र वर्षों की एक चतुयुगी—दो सहस्र चतुयुगियो का एक अहोरात्र ऐसे तीस अहोरात्रो का एक मास, ऐसे बारह मासो का एक वष और ऐसे शत वर्षो का एक परान्तकाल, होता है—इस प्रकार मुक्तात्मा 31 नील 10 खरब 40 अरब वष तक मुक्तावस्था मे मोक्षानन्द का भोग करता है। मोक्ष की अवधि वस्तुत इतनी अधिक है कि आचार्यों ने अथवाद का आश्रय लेकर यहा तक कह दिया कि न च पुनरावतते अर्थात मुक्तात्मा का पुनरावतन नही होता जबकि अज नित्य, शाश्वत और पुराण जीवात्मा के लिय पुनरावतन अपरिहाय है अन्यथा ईश्वर का सृष्टि-उपक्रम ही खटाई मे पड जायेगा।

# डी.ए.वी. संस्थाओं का एक गौरवपूर्ण इतिहास है -रावत

अजमेर। उत्तर प्रदेश के पूर्व गृहमन्त्री श्री जगनप्रसाद रावत ने कहा है कि डी ए वी शिक्षण संस्थाओ का इतिहास अत्यन्त गौरवपूर्ण है।

श्री रावत यहा डी ए वी सीनियर उच्च माध्यमिक विद्यालय अजमेर के स्थापना शताब्दी समारोह के अवसर पर आयोजित भूतपूर्व छात्रो के सम्मेलन मे मुख्य अतिथि पद से अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। उन्होने कहा कि डी ए वी शिक्षण संस्थाओ की शिक्षा के क्षेत्र मे ही नहीं स्वतन्त्रता आन्दोलन मे भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है और अजमेर के डी ए वी विद्यालय के अनेक छात्रो व अध्यापको ने भी स्वतन्त्रता की लडाई मे सक्रिय रूप से भाग लिया था। यह ज्ञातव्य है कि श्री रावत भी इसी विद्यालय के छात्र रहे हैं। इस सम्मेलन की अध्यक्षता राजस्थान हाईकोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश व विद्यालय के ही भूतपूर्व छात्र श्री जवानसिंह राणावत ने की।

इस अवसर पर सर्वश्री दत्तात्रेय आर्य—पूर्व प्राचार्य डी ए वी कालेज अजमेर, श्री कृष्णराव जी वाब्ले पूर्व प्राचार्य डी ए वी कालेज, श्री लक्ष्मीलाल जी जोशी पूर्व अध्यक्ष माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राज. श्री ओ पी माथुर, प्राचार्य राजकीय महाविद्यालय अजमेर श्री रमेशचन्द्र जी गुप्ता जिला शिक्षा अधिकारी (छात्र) अजमेर श्री मुकुन्दराम जी गर्ग—प्रसिद्ध वकील श्री चित्तरंजन जी वर्मा-एडवोकेट ने भी भूतपूर्व छात्रो के समक्ष अपने विचार व्यक्त किये। ज्ञातव्य है कि ये सभी महानुभाव डी ए वी सीनियर उ मा विद्यालय अजमेर के पूर्व छात्र थे।

सम्मेलन का संचालन विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री रासासिंह ने किया। श्री सिंह ने बाहर से प्राप्त शुभकामना संदेशो के बारे मे जानकारी देते हुए सभी आगन्तुक महानुभावों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया।

## स्वामी शक्तिवेश.

(शेष पृष्ठ 1 का)

दशको मे आर्यसमाज मे ऐसे नामधारी घुसपैठियो का वर्चस्व अत्यधिक बढ गया है जो कि अपने स्वार्थों की पूर्ति मे बाधा बनने वाले किसी भी व्यक्ति को अपने मार्ग मे हटाने के लिए कहीं तक भी जा सकते हैं जाहिर है कि जब ऐसे लोगो की आर्यसमाज के सिद्धातों मे ही निष्ठा नही है तो फिर इन्हे आर्यसमाज की प्रतिष्ठा के जनसाधारण मे गिरने से तो सरोकार होने का प्रश्न ही पैदा नही होता।

आर्य समाज के अस्तित्व को अजन्मा नामधारी आर्यों से संकट पैदा हो गया है। ऐसे लोग समाज के संगठन मे अनेक सर्वोच्च पदो पर आसीन हो गये हैं। विभिन्न प्रदेशों की प्रतिनिधि सभाओ के चुनाव के असामाजिक तत्वो के बल पर ये लोग अपना दबदबा बना चुके हैं। ये एक कटु सच्चाई है कि प्रदेशीय सभाओ के चुनाव ऐसे लोगो के कारण ही श्रमिक संगठनो के चुनावो का रूप ले चुके हैं।

स्वामी शक्तिवेश जी की हत्या से आर्यजनता को सबक लेना चाहिए और आर्यसमाज के संगठन मे घुस आये स्वार्थी नामधारी आर्यसमाजियो को अलग थलग कर देने के लिये एक जोरदार अभियान चलाना चाहिए। यही स्वामी शक्तिवेश जी को आर्य जगत् की सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

## आर्य संस्थाओं को....

(शेष पृष्ठ 1 का)

अप्रत्यक्ष रूप से ऐसा वातावरण बन गया है जिसके प्रभाव से विद्यार्थी संस्कृति को खोते जा रहे हैं। अत यह जरूरी हो गया है कि अल्पसंख्यकों की शिक्षण संस्थाओ मे नैतिक मामलो की रक्षा के लिये बनाई गई संविधान की धारा 30 का लाभ आर्य समाज की शिक्षण संस्थाओ को भी दिया जावे।

अत मे श्री आर्य ने कहा कि आर्य समाजी भी अल्प संख्यक ही है इस लिये उन्हें भी हिन्दू समाज को जैन, बोद्ध सिक्ख और यहा तक स्वामी विवेकानद द्वारा स्थापित स्वामी रामकृष्ण मिशन की शिक्षण संस्थाओ के समान अल्पसंख्यक मानकर आर्य शिक्षण संस्थाओ को संविधान की धारा 30 के अंतर्गत लिया जावे। इस प्रस्ताव को औपचारिक रूप से सम्मेलन मे जेठमल आर्य ने पढ़कर सुनाया जिसका समर्थन जयपुर के सत्यव्रत सामवेदी ने किया तथा अन्य सभी प्रतिनिधियो ने हाथ खडे कर प्रस्ताव का अनुमोदन किया।

इस दौरान राज आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान छोटूसिंह की अध्यक्षता मे अग्रिम कार्यवाही के लिये 21 सदस्यीय समिति का गठन किया गया। जिसके अध्यक्ष श्री दत्तात्रय आर्य व मन्त्री सत्यव्रत सामवेदी होंगे। उ प्र के पूर्व गृह मन्त्री जगनप्रसाद रावत सम्मेलन के मुख्य अतिथि थे। सम्मेलन का संचालन डी ए वी स्कूल के प्रधानाचार्य श्री रासासिंह जी ने किया।

## उत्सव

—श्री गुरुकुल [illegible] गुरुकुल महोत्सव [illegible] 12 मार्च 1989 को [illegible] सम्मेलन वेद सम्मेलन योग एवं अध्यात्म सम्मेलन एवं यजुर्वेद पारायण यज्ञ तथा विभिन्न विषयो की संगोष्ठियो के साथ आयोजित होने जा रहा है। आर्यजगत के नेता राजनेता वैदिक विद्वान व अनेक शिक्षाविद इस महोत्सव को अपनी सान्निध्यता से अनुगृहित करेंगे।

—मुख्याधिष्ठाता

## मोतीलाल माल्यावार दिवंगत

डी ए वी सीनियर उच्च माध्यमिक विद्यालय अजमेर मे भूतपूर्व विज्ञान शिक्षक एवं अधिवक्ता श्री मोतीलाल माल्यावर का निधन 25 फरवरी 1989 को 92 वर्ष की आयु मे हो गया।

अजमेर आर्य समाज ने उनके निधन पर शोक व्यक्त किया है और उनकी आत्मा की चिरशांति की प्रभु से कामना की है।

उल्लेखनीय है कि श्री मोतीलाल जी के सान्निध्य में अजमेर समाज के प्रधान आचार्य दत्तात्रयजी व आर्य समाज शिक्षा सभा के मंत्री श्री कृष्णराव वाब्ले ने शिक्षा प्राप्त की थी।

## स्वामी शक्तिवेश के निधन पर शोक व्यक्त

आर्य समाज अजमेर ने आर्य जगत् के प्रसिद्ध सन्यासी गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के संचालक व अधिष्ठाता एवं प्रवासी गुरुकुल उपदेशक महाविद्यालय अजमेर के संस्थापक के निर्मम हत्याकाण्ड से हुए असामयिक निधन पर शोक व्यक्त किया है।

पूज्य स्वामी जी का निधन आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति है। अजमेर आर्य समाज के प्रति उन्हे विशेष लगाव था। हम सब परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह पूज्य स्वामी जी की आत्मा को चिर शांति एवं सद्गति प्रदान करे तथा शोक संतप्त समस्त गुरुकुल वासियो को इस असहनीय दुख को सहन करने की शक्ति धैर्य एवं सान्त्वना प्रदान करे।

## निर्वाचन

आर्य समाज फोर्ट, बम्बई

1 प्रधान श्री रामरिछपाल अग्रवाल
2 उप प्रधान श्री सुदर्शन कुमार सहगल
3 मंत्री श्री सदाशिव पर्वतकर
4 उपमंत्री एवं पुस्तकाध्यक्ष श्री बी टी सालीयान
5 कोषाध्यक्ष श्री भगवान नदीराम मल्होत्रा

—मंत्री

स्वत्वाधिकारी आर्यसमाज अजमेर के लिए प्रकाशक एवं संपादक रासासिंह हेतु रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्य प्रिन्टर्स बाबू मोहल्ला केसरगंज अजमेर मे मुद्रित एवं आर्य समाज भवन अजमेर से प्रकाशित।

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है ।

ओ३म्

# आर्य पुनर्गठन

आर्य समाज, अजमेर का हिन्दी पाक्षिक पत्र

'आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म ।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म ।।'

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सकल जगत को आर्य बनाए ।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने मे सदा उद्यत रहना चाहिए ।
—महर्षि दयानन्द

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होनेवाली समस्याओ को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है ।

वर्ष 6 रविवार 15 अप्रेल, 1989
अंक 7 प.स -43383/84

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात् ।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ।।

चैत्र शु दशमी सवत 2046
वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60 पैसे


# भारत में शैक्षिक क्रांति और डीएवी शिक्षण संस्थाएं

—डा बाबूराम शास्त्री—

पिछले सौ वर्षों मे आर्य समाज ने शिक्षा जगत् मे जिस क्रांति का बीजारोपण किया है—वह किसी शिक्षाविद् से तिरोहित नही है । महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वैदिक धर्म-दर्शन सस्कृति के पुनरुद्धार के लिए—स्त्रियो, शूद्रो तथा समाज के पिछड़े वर्ग के लोगो के लिए, सम्यक् शिक्षा की एक सुविचारित सार्वजनीन आर्षशिक्षा पद्धति का शुभारम्भ किया जिसके फल-स्वरूप देश-विदेश मे अनेको गुरुकुलो का जन्म हुआ जिनमे वर्णाश्रम व्यवस्था के अनुसार छात्र-छात्राए ब्रह्मचयपूवक आचार्य के सान्निध्य मे रहकर विद्याध्ययन करते हैं, गुरुकुलो मे छात्र-छात्रा के सर्वांगीण विकास पर विशेष बल दिया जाता है जिसमे यम-नियमादि के पालन पर ध्यान दिया जाता है योगासन, प्राणायामादि के द्वारा शारीरिक व मानसिक विकास का पथ प्रशस्त किया जाता है और सध्यावन्दनादि के द्वारा आध्यात्मिक उत्थान का उपाय किया जाता है औपचारिक शिक्षा के साथ-साथ व्यावहारिक शिक्षा को भी महत्व दिया जाता है । चारित्रिक शिक्षा गुरुकुल शिक्षाप्रणाली का महत्वपूण अग है सदाचरण के द्वारा ही मनुष्य आदरास्पद होता है—सम्मान का भाजन होता है, वेद भी "मनुर्भव" का उपदेश करके हमे मनुष्य—उत्तम पुरुष, ही बनने की प्रेरणा देता है । किन्तु आज के इस वैज्ञानिक युग मे जहा विश्व के दूसरे राष्ट्र विज्ञान व तकनीक मे दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति कर रहे हैं, देश को उस दिशा मे भी अग्रसर होना नितान्त आवश्यक हो गया है अपनी प्रभुसत्ता बनाए रखने के लिए । इन्ही भौतिक उपलब्धियो को दृष्टिगत करते हुए—आर्य समाज की स्थापना और गुरुकुल शिक्षा पद्धति के उदय के साथ ही समाज के प्रगतिशील विचारको—शिक्षाशास्त्रियो एव समाजोन्नायक विभूतियो ने—एक कालोचित—समन्वित शिक्षा पद्धति की रूपरेखा तैयार की, उसी का क्रियान्वयन—डी ए वी सस्थाओ की स्थापना के रूप मे हुआ, जिन सस्थाओ मे—आर्ष मर्यादाओ के ताने-बाने मे आधुनिक शिक्षा-पट निर्मित होने लगा । इसी शिक्षा पद्धति के फलस्वरूप डी ए वी शिक्षण सस्थाओ ने राष्ट्र को असख्य सदाचारी, कर्तव्यनिष्ठ व ईमानदार राष्ट्रनेता, प्राध्यापक, डाक्टर, इजीनियर, न्यायाधीश, विधिवेत्ता, व्यवसायी व प्रशासनिक अधिकारी प्रदान किये, अपने अपने क्षेत्र मे जिनकी सेवाए अविस्मरणीय हैं । डी ए वी शिक्षण सस्थाओ ने शिक्षा जगत् म जो क्रान्ति उत्पन्न की है, इन इन सस्थाओ ने जिस वैचारिक क्रान्ति को जन्म दिया है, समाज और राष्ट्र को जो इनकी देन है—उसकी कोई इयत्ता नही है—वह निस्सन्देह अतुलनीय है वह बेजोड है, किंतु ऐसा लगता है कि इन सस्थाओ से राष्ट्र और समाज का भौतिक अभ्युदय तो हुआ—जो समयोचित भी है और आवश्यक भी, पर इससे समाज का शरीर ही पुष्ट हुआ है—आत्मा नही, शायद प्रारम्भ में इन शिक्षण सस्थाओ में भौतिक ज्ञान-विज्ञान को उन्नति के साथ-साथ आत्मिक विकास पर भी पर्याप्त बल था—जो शिथिल हो गया है । आज वह बात नही है जो पहले थी आज डी ए वी शिक्षण सस्थाए अपनी पहचान खोती जा रही हैं, अन्य शिक्षण सस्थाओ और डी ए. वी शिक्षण सस्थाओ मे अब विशेष अन्तर नही रहा है । हमारी शिक्षा पद्धति, हमारे आचार-व्यवहार, क्रियाकलाप वैसे ही हो चले हैं जैसे औरो के हैं । यह बात नही है कि महर्षि दयानन्द ने लौकिक अभ्युदयकारिणी अर्थकारी व्यावसायिक शिक्षा का समर्थन न किया हो या आर्य समाज मात्र निःश्रेयस् का पक्षपाती हो, स्वामी जी स्वय जर्मन के प्रोफेसर वाइज से पत्र-व्यवहार करके देश के नवयुवको को कला-कौशल की शिक्षा दिलाना चाहते थे और राष्ट्र के भौतिक अभ्युदय की उत्कट अभिलाषा रखते थे किंतु स्वामी जी क प्रमुख उद्देश्य वैदिक—धर्म—दर्शन एव सस्कृति का पुनरुद्धार करना था, लौकिक अभ्युदय के साथ—राष्ट्र के शरीर की रक्षा के साथ-साथ, राष्ट्र की आत्मा—धर्म—सस्कृति, की रक्षा करना उनका मुख्य लक्ष्य था गुरुकुल शिक्षा पद्धति मे इस पर विशेष बल दिया जाता था—और आज भी गुरुकुलो मे इस पर बल है । इन आवासीय गुरुकुलो मे छात्र-छात्राए आचार्य के सान्निध्य मे विद्याग्रहण के साथ-साथ आचार की भी शिक्षा-ग्रहण करते है, इसी मे आचार्य का आचार्यत्व निहित है, आचार—व्यवहार से ही शिक्षार्थी की परख होती है—मात्र औपचारिक शिक्षा से नही । आज समाज मे व्याप्त अनाचार, भ्रष्टाचार का मात्र एक ही कारण है—हमारी विकृत शिक्षा पद्धति जिसमे सदाचार को कोई स्थान ही नही दिया गया है छात्र चरित्रनिर्माण की दिशा मे सचेष्ट न होकर उपाधियो के पीछे भाग रहा है और नाजायज तरीके मे भी डिग्री प्राप्त करने मे कोई सकोच नही कर रहा है । आचार-सदवृत्त, ही वैदिक सस्कृति का प्राण है इसी-'आचार को परम धर्म" कहा है और यह कहा गया है कि "आचार से हीन व्यक्ति को वेद भी नही पवित्र कर सकते" और "आचारवान् व्यक्ति ही ज्ञान प्राप्त कर सकता है" ।

यह देश का दुर्भाग्य ही कहा जाना चाहिए कि आजादी के 42 वर्षो के बाद भी आज इस देश की कोई सुविचारित राष्ट्रोपयोगी शिक्षानीति नही है । "मैकाले" ने दुरभिसन्धि मे जिस शिक्षा-पद्धति का श्रीगणेश किया था—उसी पर हम आज भी चल रहे है । इस शिक्षा पद्धति से निश्चित ही राष्ट्र का गौरव कम हुआ है और यह अध पतन जारी है । इससे आर्यत्व खतरे मे है शिक्षा खतरे मे हैं शिक्षा का यदि यही विकृत रूप पनपता रहा और देश के राजनेताओ की अदूरदर्शितापूर्ण दुर्जन तुष्टीकरणनीति और अल्पसख्यक-बहुसख्यक, सवर्ण-अवर्ण, अनुसूचित-अननुसूचित, उच्च निम्न वर्ग की भेदक नीति बनी रही तो आर्य सस्कृति और आर्य जाति की पहचान समाप्त होने मे अधिक समय नही लगेगा और अगली शताब्दी तक वैदिक धर्म और वैदिक सस्कृति का नाम लेने वाला शायद ही बचे ।

इन परिस्थितियो मे "आर्य समाज" के शिक्षाविदो, वैदिक विद्वानो, अधिकारियो एव प्रबुद्ध कार्यकर्ताओ का पुनीत कर्तव्य है कि वे मिल बैठकर वर्तमान प्रश्न-

(शेष पृष्ठ 4 पर)

निदेशक दत्तात्रेय आर्य प्रधान सपादक रासासिह सपादक वीरेन्द्र कुमार आर्य कार्या 21010

## सम्पादकीय

### "जग को जगाने वाला आर्यसमाज है। विश्व को बचाने वाला आर्य समाज है ॥"

किसी आर्यकवि की ये पंक्तियाँ कितनी सार्थक एवं उपयुक्त प्रतीत होती हैं। 7 अप्रैल 1875 ई० को महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बम्बई नगरी में आर्य समाज की स्थापना की थी। इस संगठन को स्थापित हुए 114 वर्ष हो चुके हैं। इन सौ से अधिक वर्षों में इस महान क्रान्तिकारी संगठन ने जो महान कार्य किया है वह इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने योग्य है।

ऋषि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाने के लिये आर्यसमाज ने धर्म, समाज, राष्ट्र, मानवता, राजनीति, संस्कृति, शिक्षा, साहित्य आदि प्रत्येक क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन लाने के लिये अथक प्रयास किये। अपनी सेवाओं, अपने अनूठे बलिदानों, अपने जुझारू आंदोलनों, अपनी सत्यनिष्ठाओं और चारित्रिक शुद्धता के आधार पर व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के निर्माण में अनुपम योगदान दिया। वेदों के सन्देश को घर-घर पहुंचाने, उन्हें जन साधारण तक लोकप्रिय बनाने, जातिगत संस्कारों को मूलोच्छेदन करने, अन्धविश्वासों को मिटाने, पाखण्डों के गढ़ ढहाने, डंके की चोट सत्य का जयघोष करने, राष्ट्रीयता और देश भक्ति की घुट्टी पिलाने, आजादी की भावना को संस्कारित कर प्रत्येक के दिलों में तदर्थ जाग्रति एवं चेतना उत्पन्न करने, निराश लोगों में आशा का संचार करने, सोये हुए भारत को जगाने, स्वभाषा, स्वधर्म, स्वराज्य, स्वदेश एवं स्वसंस्कृति के प्रति स्वाभिमान पैदा करने में आर्यसमाज अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। आज भी जो संगठन हजारों शाखाओं के रूप में देश विदेश में फैल कर मानवता की सेवा कर रहा है, एकेश्वरवाद का प्रचार प्रसार कर चरित्र निर्माण एवं मानवता का पाठ पढ़ा रहा है, हजारों शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से कोटि-कोटि जनता की सेवा में लगा हुआ है, बिछुड़ों को गले लगाने वाला, विधर्मियों की ईंट का जवाब पत्थर से देने वाला, वीरत्व के भाव जगाने वाला, दीन-दुखियों की सेवा करने वाला, अनाथ एवं विधवाओं को सहारा देने वाला संगठन आर्य समाज ही है।

तभी तो भारतीय स्वाधीनता संग्राम के महान पुरोधा सुभाषचन्द्र बोस ने एक बार कहा था—"महर्षि दयानन्द सरस्वती उन महापुरुषों में से थे, जिन्होंने आधुनिक भारत का निर्माण किया और जो इसके आचार सम्बन्धी पुनरुत्थान तथा धार्मिक पुनरुद्धार के उत्तरदाता हैं। हिन्दू समाज का उद्धार करने में "आर्य समाज" का बहुत बड़ा हाथ है। रामकृष्ण मिशन ने बंगाल में जो कुछ किया, उससे कहीं अधिक आर्यसमाज ने पंजाब और उत्तरप्रदेश में किया है। यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण न होगा कि पंजाब का प्रत्येक नेता आर्यसमाजी है। स्वामी दयानन्द को मैं एक धार्मिक और सामाजिक सुधारक तथा कर्मयोगी मानता हूं। संगठन कार्यों में सामर्थ्य और प्रचार प्रसार की दृष्टि से आर्य समाज अनुपम संस्था है। संगठन कार्य दृढ़ता, उत्साह और समन्वय की दृष्टि से आर्य समाज की समता कोई नहीं कर सकता।"

आर्य समाज का पुनर्गठन आवश्यक —'आर्य पुनर्गठन' आर्य समाज के 114वें स्थापना दिवस पर समस्त आर्य जगत को यह आह्वान करना चाहता है कि वे एक बार फिर अपनी सुप्तप्राय शक्ति का आत्म साक्षात्कार करें, इस धधकती हुई आग को पुनः धधकायें, इस पर पड़ी हुई राख को उड़ा दें और आर्यसमाजों का नये ढंग से पुनर्गठन करें। चुनावी प्रक्रिया और प्रजातंत्रीय प्रणाली तथा गुटबंदी आदि के कारण कई निहित स्वार्थी पौराणिक तत्व भी इस महान क्रान्तिकारी संगठन में घुसकर इसे भीतर से खोखला कर रहे हैं। इसे निष्क्रिय एवं शिथिल 'अप्रगतिशील' बताकर तथा कट्टरपंथी एवं तर्कवादी संगठन कहकर इसे कुण्ठित करने के दुष्प्रयत्न कर रहे हैं, इससे हीनता का भाव भर रहे हैं। जाति, वर्ण, संप्रदायगत व धर्मों में बंटे हुए ये लोग पौराणिकरूढ़ियों, अन्धविश्वासों, सामाजिक कुरीतियों एवं दकियानूसी विचारों के विरुद्ध लड़ने का साहस नहीं जुटा पा रहे हैं, थोथी एकता एवं सर्वधर्म समभाव एवं समन्वय के नाम पर पोप लीलाओं एवं पाखण्डों पर प्रहार करने तथा सच्ची बात डंके की चोट से कहने में संकोच कर रहे हैं। 'यथास्थितिवादी' 'सत्तावादी' अथवा सरकारी बनकर संगठन को हानि पहुंचाते हुए दयानन्द की आत्मा को दुःख पहुंचा रहे हैं, आर्यसमाज में भीतर घात कर रहे हैं। ऐसे लोगों को बाहर निकालना होगा, संगठन से हटाना होगा, शुद्धिकरण करना होगा, "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का अलख पहले जगाना होगा। तभी आर्य जाति, वैदिक धर्म एवं आर्यावर्त का कल्याण होगा। तभी हमारा यह कहना सार्थक होगा कि 'जो बोले सो अभय, वैदिक धर्म की जय।'

—रासासिंह

## आर्य समाज

जग को जगाने वाला आर्य समाज है।
विश्व को बचाने वाला, आर्य समाज है ॥
ईश की उपासना का, रास्ता दिखा दिया,
जड़ की अराधना के पाप से बचा लिया,
ढोंग ढोल जिसके भय से, डोल रहा आज है।
आर्य समाज ...... ...

ठाकुरों की ठोकरों ने, कर दिया बेहाल था,
दस्युओं का फैला हुआ, चारों ओर जाल था,
जिसने देश जाति की, बचाई आज लाज है।
आर्य समाज ...... ...

नारियां भी वेद पाठ, संध्या, हवन कर रहीं,
रूढ़ियां कुरीतियां हैं, अपने आप मर रहीं,
वेद के प्रचार का जो, कर रहा सुकाज है।
आर्य समाज ...... ...

कौन था जो आर्यों की, भावना जगा गया,
कौन था जो मौत से भी, जूझना सिखा गया,
श्रद्धानन्द, लेखराम, प्यारा हंसराज है।
आर्य समाज ...... ...

देशहित में वार दी, अनेक ही जवानियाँ,
खून से लिखी हैं इसने, देश की कहानियाँ,
लाजपत लुटा के जान, पा लिया स्वराज है।
आर्य समाज ...... ...

कौन भाग्यवाद से जो, विश्व को बचायेगा,
पाप-पुण्य क्या है कौन, विश्व को बतायेगा,
मानवीय रोग का तो, एक ही इलाज है।
आर्य समाज ...... ......

### शोक व्यक्त

आर्यसमाज, अजमेर ने हिन्दी के मूर्धन्य उपन्यासकार एवं पुरानी पीढ़ी के आर्य समाजी वैद्य गुरुदत्त के एवं वयोवृद्ध गांधी वादी चिन्तक, पत्रकार और ऋषि भक्त श्री रामनारायण चौधरी के निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त किया है तथा दिवंगतों की आत्मा की चिर शांति के लिए प्रभु से प्रार्थना की की है।

—मन्त्री

### पीयूष सम्मानित

आर्यसमाज सान्ताक्रुज ने इस वर्ष का 11000/- रु. का वेदोपदेशक पुरस्कार वरिष्ठ जननीप-देशक पन्नालाल पीयूष को प्रदान किया है।

—डॉ. देव रत्न आर्य

# महर्षि दयानन्द की विवादग्रस्त मृत्यु

**प्रस्तुत लेख के लेखक डॉ ब्रजभूषणसिंह 'आदर्श' हिन्दी-जगत के एक वरिष्ठ पत्रकार हैं। आपने लम्बे समय तक विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन किया है और पत्रकारिता पर लिखी आपकी कई पुस्तकें खासी चर्चित हुई हैं। महर्षि दयानन्द की मृत्यु के कारणों पर अपने इस लेख में डॉ आदर्श ने कुछ विशेष शोध परक जानकारिया देने का स्तुत्य प्रयास किया है। हम आय विज्ञजनो की भी इस पर प्रतिक्रियायें आमन्त्रित करते हैं।**

—सम्पादक

स्वामी दयानन्द सरस्वती की मृत्यु का प्रकरण विवादास्पद है और उस पर गम्भीरता से विचार किया जाना चाहिए। स्वामी जी की प्राय सभी जीवनियो म कहा गया है कि उनकी मृत्यु विष देने से हुई और यह जोधपुर के राजा जसवत सिंह द्वितीय की रखैल नन्ही जान की दुरभिसधि का परिणाम था। नन्ही एक अनिद्य सुदरी तथा कट्टर वैष्णव हिंदू थी। जोधपुर के महाराजा जसवत सिंह उसे सबसे अधिक चाहते थे। उसकी सम्पन्नता का अदाज इस बात से लगाया जा सकता है कि उसकी मृत्यु के बाद उसकी सम्पत्ति की नीलामी से सरकार को 20 लाख रु मिले। उसके पास 700 तो कीमती घाघरे थे। अनेक बीमारियो से ग्रस्त उसकी मृत्यु स्वामी जी की मृत्यु के बहुत बाद 24 जुलाई 1909 को हुई। वह धर्म परायण थी और इस कारण नन्ही भगतिन के नाम से लोकप्रिय थी।

जीवनीकार बताते हैं कि जब स्वामी जी धर्म प्रचार के लिए जोधपुर गए उन्होंने राजा को नन्ही बाई की पालकी मे कधा लगाते देखा। इस पर उन्होंने राजा का भर्त्सना की। यह बात नन्ही को खटक गई और उसने स्वामी जी को जहर दिलवाने की दुरभिसधि की। इस घटना का इतिहास में कोई स्पष्ट प्रमाण नही मिलता है। अत उनकी मृत्यु के लिए किसी को जिम्मेदार ठहराना औचित्यपूर्ण नही है।

यह कहानी मनगढन्त लगती है क्योंकि स्वामी जी के जोधपुर आगमन के समय नन्ही जोधपुर मे नहीं थी और उसका स्थान नैनीबाई ने लिया था। दूसरी बात यह कि जोधपुर महल का जनाना खाना (रानी का बाग) पुरुषो के हिस्से से लगा हुआ था। वहा जो सकरा सा रास्ता था उसे पार करने के लिए पालकी की जरूरत ही नहीं पडती थी। राजा को पालकी में कधा लगाने की बात तो दूर।

महाराजा ने स्वामी जी को दीवान फैजुल्ला के बाग मे ठहरने की व्यवस्था कराई थी। वे उनके अनन्य भक्त थ और उनका बड़ा मान सम्मान करते थे। ऐसी स्थिति मे स्वामी जी का महाराजा को बिना पूर्व सूचना दिए राजमहल मे जाना भी सभव प्रतीत नहीं होता।

एक अन्य जीवनी लेखक देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय का कथन है कि जो टिप्पणी स्वामी जी ने की थी वह महाराजा के अनुज किशोरसिंह की अय्याशी के प्रति थी और जिसके लिए उसने स्वामी जी से क्षमायाचना की थी। ननीबाई की छोटी बहिन नान्नीबाई उन दिनो किशोरसिंह की रखैल थी। इन रखैलो के कारण ही रियासत मे षडयन्त्र के खल खेल जाते थ और स्वामी जी को यह बात भली भाति मालूम थी।

इन जीवनीकारो ने अलग प्रकार से जहर देने वाले रसोइए के नाम बताए हैं और कुल मिलाकर 8 नाम सामने आते हैं। इनमे प्रमुख नाम जगन्नाथ का है। इसी प्रकार जहर का नाम भी स्पष्ट नही है। कोई कहता है कि स्वामी जी को काच पीस कर खिलाया गया, कोई संखिया और कोई पारा पिलाने का दावा करता है। यहा भी बहुमत दूध मे पिसा हुआ काच खिलाने के पक्ष मे है।

पर डाक्टरो का मत क्या था? जिन डाक्टरो ने स्वामी जी का उपचार किया था वे थे—डा सूरजमल, डा अलीमर्दन खा पश्चिमी राजपूताना के मुख्य चिकित्सक डा एडम्स और रेसीडेन्सी सर्जन डा रोबेन। इन ने डाक्टरो स्वामी जी का इलाज जोधपुर मे किया पर नाकामयाब रहे। इनमे से किसी ने भी न तो जहर की बात की और न उसका उपचार ही किया। लोगो ने सदेह किया कि अलीमर्दन और अग्रज चिकित्सको ने जान बूझकर इलाज म लापरवाही की। पर सबसे पहले डाक्टर जिन्होंने स्वामी जी की चिकित्सा की थी वे थे डा सूरजमल। उन्होंने भी न तो जहर की बात की और न उसका उपचार। स्वामी जी जैसे योगी भी गिलास भर काच मिला दूध पी गए और उन्हे भी इसका कुछ आभास नही हुआ। यह बात कुछ जमती नही। उतना ही नही जहर सेवन और डाक्टरो की लापरवाही के बाद भी स्वामी जी की मृत्यु एक माह बाद हुई।

जब स्वामी जी ने जोधपुर से माउन्ट आबू के लिए प्रस्थान किया उसके बाद डा लक्ष्मणदास

—डा ब्रजभूषणसिंह आदर्श—

ने उनकी चिकित्सा की। एक आर्यसमाजी नेता भागे-भागे अजमेर भी गए और वहा के प्रसिद्ध हकीम पीर जी की दवा लाए जो स्वामी जी को मारवाड जक्शन पर दी गई। इसके बाद अजमेर पहुचने पर डा न्यूमन ने उन्हे डबल निमोनिया बताया। इस सदर्भ म प्रो जे ए एस जोर्डन्स ने अपने नवीनतम शोध पूर्ण ग्रथ स्वामी दयानन्द सरस्वती लाइफ एण्ड आइडियाज मे लिखा है कि दो सौ मील की रेल यात्रा करने बाद स्वामी जी अजमेर आए जहा सिविल सर्जन डा न्यूमन ने उनकी जाच कर डबल निमोनिया बताया। डाक्टर की स्पष्ट हिदायत के बावजूद भी स्वामी जी तीव्र ज्वर मे भी कमरे के बाहर बरामदे मे चले गए जहा कडाके की ठड पड रही थी। इससे उनकी स्थिति बहुत गम्भीर हो गई।

स्वामी जी के लिए चिकित्सको की जाति को लेकर कोई भ्रांति नही थी। अन्यथा वे हिंदू मुस्लिम और अग्रज सभी चिकित्सकों से चिकित्सा नही करवाते। सच तो यह है कि महाराज ने अच्छी से अच्छी चिकित्सा का प्रबध स्वामी जी के लिए किया।

स्वामी जी की मृत्यु के काफी समय बाद उन्हें जहर देने की बात प्रचारित हुई और पुष्टि के लिए नन्ही जान रसोइए द्वारा जहर देने, मुसलमान और अग्रज डाक्टरो द्वारा जान बूझकर लापरवाही बरतने का त्रिकोण बनाया गया। ऐसा प्रतीत होता है।

ज्ञातव्य है कि आर्यसमाज लाहौर के मुख पत्र दि आर्या ने भी स्वामी जी को जहर देने का कोई उल्लेख नही किया था। बल्कि 1883 के अक मे स्पष्ट कहा गया कि उनकी मृत्यु नजले से हुई।

ये तथ्य बताते हैं कि वस्तुत स्वामी जी की मृत्यु प्राकृतिक रूप से हुई। स्वामी जी की महानता पर इसका कोई असर नही पडता। क्योंकि वह उनके महान कार्यों पर आधारित है। रोम्या रोला के अनुसार स्वामी दयानन्द सरस्वती राष्ट्रीय एकता तथा पुनर्निर्माण के बहुत उत्साही प्रवक्ता थे। उनकी मृत्यु पर मैडम ब्लैवेटस्की ने कहा था कि शकराचार्य के बाद स्वामी दयानन्द से बडा संस्कृत विद्वान, दार्शनिक ओजस्वी वक्ता तथा सामाजिक बुराईयो पर निर्मम प्रहार करने वाला कोई नही हुआ। महर्षि अरविंद ने कहा कि वे ज्ञान मार्ग के सिपाही देवलोक के योद्धा व्यक्ति और सस्थाओ के निर्माता और कठिनाई के विजेता थे।

पता—एल 203 कोटरा, भोपाल

## उपदेशक-महाविद्यालय मे प्रवेश प्रारम्भ

श्री स्वतानन्द निगमाश्रम गजदारानगर, बिजनौर (उ प्र) के अन्तर्गत स्वामी इन्द्रवेश के निर्देशन मे सचालित उपदेशक महाविद्यालय म जून-जुलाई 89 म 50 नए विद्यार्थियो को प्रवेश दिया जाएगा।

स्वामी इन्द्रवेश द्वारा जारी विज्ञप्ति मे उक्त जानकारी दी गई है। विज्ञप्तिनुसार चार वर्षीय उपदेशक कोर्स के सभी विद्यार्थियो का व्यय आश्रम ही वहन करता है। प्रवेश इच्छुक जन विस्तृत जानकारी के लिए आश्रम से सम्पर्क करें।

# प्रख्यात गांधी वादी चिंतक स्वर्गीय श्री रामनारायण चौधरी की वसीयत

मेरे पास इस समय इस प्रकार रुपया है:—

(1) स्टेट बैंक की अजमेर शाखा मे तीन टी डी आर के रूप मे 15,000 रु (अक्षरे पन्द्रह हजार रुपये)

(2) कृष्णा ब्रदर्स पुस्तक विक्रेता महात्मा गांधी मार्ग अजमेर मे 10,000 रु (अक्षरे दस हजार रुपये) बिना ब्याज उधार तीन वर्ष मे अनुबध के अनुसार लौटाने की शर्त पर

(3) इस 15,000 रुपये (अक्षरे पन्द्रह हजार रुपये) की राशि का इस प्रकार उपयोग किया जाय।

(क) 5,000 रु (अक्षरे पाच हजार रुपये) टी डी आर के परिपक्व होने पर जीवन निर्माण सस्थान-गोल बाग मार्ग, भरतपुर को दान स्वरूप दिया जाय ताकि सस्थान इस रुपये से राजस्थान् त्रिमूर्ति अर्थात स्व अर्जुन लाल जी सेठी, केसरीसिंह जी बारहठ और विजयसिंह जी पथिक की स्मृति मे एक कुटिया बनाये।

(ख) 5,000 रु (अक्षरे पाच हजार रुपये) श्री सवाईसिंह किशोर निवास, त्रिपोलिया बाजार जयपुर को दिये जाय ताकि वे मेरी पूर्व सूचना के अनुसार वर्तमान व्यवस्था परिवर्तन आदि के लिए खर्च करें।

(ग) 5,000 रु. (अक्षरे पांच हजार रुपये) मेरी बड़ी बेटी चि सीता को उनके द्वारा प्रस्तावित स्व अजनादेवी की स्मृति मे मातृछाया नामक लावारिस बच्चो के कल्याण के लिये आश्रम के बनाने और काम करने लगने पर दिया जाय।

(घ) 10,000 रु. (अक्षरे दस हजार रु) मेरी छोटी बेटी सुभद्रा को तीन वर्ष बाद दिया जाय ताकि ये रिटायर होने पर अपनी पसन्द की कोई सेवा कार्य की योजना बनावे तो उसके सचालन के लिये काम आवे।

(ङ) इन 25,000 रुपये (अक्षरे पच्चीस हजार रुपये) के ब्याज का और मेरी पुस्तको की रायल्टी तथा बिक्री के लाभाश का जो रुपया आवे वह तथा बैंको मे मेरे बचत खातो मे जमा निकले वह मेरे दामाद चि जगदीश जी के पास अमानत जमा रहे और वे चि सुभद्रा के रिटायर होने पर या अन्यथा अजमेर मे आकर रहे उस वक्त तक मैं चि. सुभद्रा के जिस मकान में रहता रहा हूं, उसकी मरम्मत, सफेदी, गृहकर आदि के लिए खर्च करते रह सकें।

मेरा सब सामान, कपड़े, फर्नीचर, पुस्तकें और कागजात चि. सुभद्रा को दिये जाए।

(4) मेरी जहा मृत्यु हो वहीं दाहसस्कार कर दिया जाय। मेरे लिये कोई शोक सभा, जुलूस या अन्य कोई मातमी रस्म अदा न की जाय। मेरे शव को मानव कधों के बजाय किसी वाहन में मरघट तक पहुंचा दिया जाय।

(5) मैंने ये वसीयत पूरे सोच विचार के बाद और पूरे होश हवास मे लिखी है ताकि सनद रहे और वक्त जरूरत काम आवे।

(6) इस वसीयत के बाद मेरी और अजना देवी की कोई वसीयत हो तो वह रद्द समझी जाय।

(7) इस वसीयत के कार्यान्वयन का भार मेरे परम स्नेही और दुख-सुख के साथी श्री दत्तात्रेय आर्य पर होगा। मेरे शव का दाहसस्कार [illegible] प्रताप नारायण करेंगे।

—रामनारायण चौधरी



स्वर्गीय श्री रामनारायणजी चौधरी का आर्यसमाज, अजमेर एव उसकी शिक्षण सस्थाओ तथा इन सस्थाओ के सचालक आचार्य दत्तात्रेय आर्य से लगभग 60 वर्ष पुराना सबध था। इन्ही आत्मीय सबधो के कारण स्वर्गीय श्री चौधरी ने अपनी अतिम वसीयत आचार्य दत्तात्रेय जी के नाम की थी। इस अक मे हम वह वसीयत अपने पाठको के अवलोकनार्थ प्रकाशित कर रहे है। आगामी अक मे हम श्री चौधरी के सम्बन्ध मे आचार्य दत्तात्रेय आर्य के सस्मरण प्रकाशित करेंगे।

—सम्पादक

# भारत में शैक्षिक

(शेष पृष्ठ 1 का)

लित आर्य शिक्षा पद्धति का पुनर्मूल्यांकन करे और ह्रासोन्मुख इस शिक्षा पद्धति का पुनरुद्धार करे है। इस दिशा मे मैं निम्न बाते कहना चाहूँगा, इन पर व्यापक रूप से विचार विमर्श के बाद कोई निर्णय लिया सकता है।

1 आर्य शिक्षाशास्त्रियो वैदिक विद्वानो एव कर्मठ सदाचारी अधिकारियो व कर्मचारियो की एक 'विद्वद् परिषद्' का गठन किया जाय जो राष्ट्रीय एव सार्वजनीन व सर्वांगीण शिक्षा नीति की रूपरेखा तैयार करे।

2 आर्यमर्यादानुकूल, चारित्रिक शिक्षा-प्रमुख ऐसे आवासीय विद्यालयो की स्थापना की जाय जिसमे संस्कृत हिन्दी के अनिवार्य रूप से पठन-पाठन का प्रबन्ध हो और ऐच्छिक रूप से विज्ञान, वाणिज्य, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, इतिहास, भूगोल, आदि विषयों के (प्राचीन और आधुनिक) तुलनात्मक अध्ययन की व्यवस्था हो। सामान्य अग्रेजी भाषा का अध्ययन भी आवश्यकतानुसार, यथोपयोगी कराया जाय। कहने का तात्पर्य यह है कि डी ए वी शिक्षा पद्धति और गुरुकुलीय आवासीय आर्ष शिक्षा पद्धति के समन्वयात्मक रूप का क्रियान्वित किया जाय।

3 सभी प्रदेशो मे कम से कम एक "दयानन्द शोध एव अध्ययन केन्द्र" की स्थापना की जाय जिससे प्रामाणिक वैदिक ग्रथो का प्रणयन हो सके—एतदर्थ तपस्वी, निष्ठावान्, सदाचारी वैदिक विद्वानो का आह्वान किया जाय और उन्हे प्रोत्साहन दिया जाये।

4 वैदिक सन्यासियों एव वानप्रस्थो व त्यागी धर्मप्रचारको की एक धर्म परिषद गठित की जाय जो समय-समय पर उक्त विद्यालयो की शिक्षा पद्धति व कार्यप्रणाली का निरीक्षण करे व सम्यक् सुझाव दें।

5 अनुभवी, प्रशासनिक कुशलता वाले, न्यायविद् व विधिवेत्ता आर्य विद्वानों का एक 'सेवा आयोग' गठित किया जाय जो योग्य आर्य प्रत्याशियो को उनकी योग्यता के अनुसार—वरीयता से विभिन्न सेवाओ (Services) मे नियुक्त कराने के लिए सरकार व अन्य नियोजको से सम्पर्क करे।

सभी प्रबुद्ध आर्यजनो की ऐसी धारणा बन रही है कि "आर्य समाज" का वर्चस्व अब पहले जैसा नही रहा, सगठन मे अब शिथिलता आ गयी है, शायद वह "जीवेम शरद शतम्" की अवधि पूरी कर चला है अत समाज के "पुनर्गठन" की आवश्यकता है हमारे प्रसिद्ध समाजसेवी, शिक्षाविद्, आर्यसमाज, अजमेर के प्रधान और डी ए वी. कॉलिज के पूर्व प्राचार्य प्रो दत्तात्रेय जी इस दिशा मे बहुत पहले से सचेष्ट है किन्तु आपकी शिकायत है कि—

उद्बाहुर्विरोम्येष नैव कश्चित् शृणोतिमाम्।
कुशलोऽस्य समाजस्य पुनर्संगठन विधीयताम्॥

प्रबुद्ध आर्यजन और समाज सेवी बुधजन प्रो दत्तात्रेय जी की पीड़ा समझते हैं—किन्तु जाने क्यो इस दिशा में कदम नही उठ रहे हैं? समाज के उद्देश्यो की पूर्ति एव महर्षि के स्वप्नों को साकार करने के लिए समाज का पुनर्गठन आवश्यक है।

स्वत्वाधिकारी आर्यसमाज अजमेर के लिए प्रकाशक एव सपादक रासासिंह हेतु रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्य प्रिन्टर्स बाबू मोहल्ला केसरगज, अजमेर मे मुद्रित एव आर्य समाज भवन, अजमेर से प्रकाशित।

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने मे सदा उद्यत रहना चाहिए।
—महर्षि दयानन्द

ओ३म्

# आर्य पुनर्गठन

आर्य समाज, अजमेर का हिन्दी पाक्षिक पत्र

'आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म ॥'

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सकल जगत को आर्य बनाए।

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होने वाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 6 रविवार 30 अप्रेल, 1989
अक 8 प स -43383/84

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात्।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ॥

वैशाख कृ नवमी सवत 2046
वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60 पैसे

काबे में कुफ्र

## संरक्षण के नाम पर शोषण

—वीरेन्द्र कुमार आर्य—

राजस्थान सरकार अपने समाज कल्याण विभाग के अधीन राज्य भर मे समाज से बहिष्कृत एव निराश्रित महिलाओ के लिए महिला सदनो का सचालन कर रही है। इन सदनो मे फैली दुर-व्यवस्था एव व्याप्त भ्रष्टाचार का सदनो की व्यवस्था व नियत्रण और महालेखा परीक्षक ने अपनी रिपोट मे खुलासा किया है।

महालेखा परीक्षक की रिपोर्ट से स्पष्ट होता है कि 'महिला सदन' की आवासनियो का जीवन कैदी से भी निम्नतर होता है। सदन मे व्याप्त भ्रष्टाचार के कारण आवासनियो को भर पेट खाने से भी वचित रखा जाता है और चिकित्सा तथा जीवन एव स्वास्थ्य सम्बन्धी अन्य सुविधायें भी उन्हें उपलब्ध नही कराई जाती।

भ्रष्टाचार तो आज समाज मे चारो ओर ही व्याप्त है, इसलिए महिला सदनों मे व्याप्त भ्रष्टाचार के समाचारो से जनसाधारण की सवेदन शीलता पर कोई प्रभाव पडने वाला नही है। अब यदि कोई कहे कि समाज कल्याण के नाम पर यह सब अकल्याणकारी काम किया जाता है, तो यह तर्क भी आज कोई सार नही रखता है। आज तो सदाचार की आड मे ही दुराचार किया जाता है और ब्रह्मचर्य की आड मे यौनाचार होता है।

महालेखा परीक्षक ने सदनो मे व्याप्त लालफीताशाही की ओर सकेत करते हुए कहा है कि कई आवासनियो को अदालती आदेशो के बावजूद कई वष बाद तक मुक्त नही किया गया। निश्चित रूप से यह भी एक गम्भीर मामला है। लेकिन इससे भी गम्भीर एव चिन्तनीय एक तथ्य और भी है जिसका महालेखा परीक्षक सभवत' अपनी सीमाओ के कारण रिपोर्ट मे उल्लेख नही कर पाया है। यह एक सुविदित तथ्य है कि महिला सदन की आवासनियों का अधिकारियो द्वारा यौन शोषण भी होता है। अजमेर की नारीशाला के सम्बन्ध मे प्रकाशित समाचारो का उदाहरण इस सदर्भ मे दिया जा सकता है।

वस्तुत यदि कोई व्यक्ति महिला-सदन या नारी शालाओं में व्याप्त अव्यवस्था एव अधिकारियो द्वारा किए जा रहे आवासनियो के शोषण के लिए सरकार को दोष देना चाहे तो यह उसकी नादानी ही होगी। सरकार लाख कोशिशे करके स्थिति मे कोई विशेष सुधार करने मे सफल नहीं हो सकती है। समाज मे फैले वैचारिक प्रदूषण को जब तक दूर नही किया जाता तब तक स्थिति के सुधरने की आशा करना व्यथ है। और समाज के विचारो को परिमार्जित करने का काम बुद्धिजीवी वग ही कर सकता है, सरकार तो मात्र इस कार्य मे उसका थोडा-बहुत सहयोग ही कर सकती है।

## हम हिंदू नहीं आर्य है

—आचार्य राजवीर शास्त्री —

आर्यों का इतिहास सृष्टि क प्रारभ से अरबो वर्षों का है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि आय चक्रवर्ती शासक रहे हैं। उनका साहित्य, विज्ञान, कला कौशल आदि विश्वविख्यात है। किंतु परतत्र भारत मे उनका हिंदू नाम कुतुबुद्दीन ऐबक का रखा हुआ है जो स्वय हिंदू अर्थात् मुहम्मद गौरी का गुलाम था। जिसके अनुसार हिंदू की आयु एक हजार वर्ष से भी कम है।

यदि हम आर्य लोग इस अपमान सूचक शब्द को तिलाजलि नही देंगे, तो हम प्राचीनता से सर्वथा पृथक हो जायेंगे। क्योंकि उपलब्ध रामायण, महाभारत आदि ऐतिहासिक ग्रथो मे कही भी हिंदू शब्द नही आया है। इस देश का प्राचीन नाम आर्यावर्त्त था, जिससे स्पष्ट होता है कि इस देश के मूल निवासी आर्य ही हैं।

इस महत्वपूर्ण तथ्य की उपेक्षा करने वाले कतिपय लोग अब भी अपमान सूचक हिंदू शब्द की वकालत करते रहते हैं, यह एक दुर्भाग्य की बात है।

अजमेर से प्रकाशित होने वाले 'वेदमार्ग' पत्र के जनवरी 89 के अक मे श्री नृसिंह देव अरोडा का एक लेख प्रकाशित हुआ है, जिसमे आर्य और हिंदू पृथक् नही है इसका समर्थन करते हुए हिंदू शब्द की व्याख्या कल्पित ढग से की है। उनके अनुसार यह शब्द हिमालय के (हि) और इन्दु सरोवर के (न्दु) को मिलाकर बना है। उनका आशय यह है कि हिमालय से लेकर कन्याकुमारी (इन्दु सरोवर) तक जो लोग रहते है, वे हिंदू है। उनका आशय तो बुरा नही कहा जा सकता। क्योकि महर्षि मनु ने भी बहुत पहले आर्यावर्त्त की यही सीमा बताई थी। परन्तु एक गलत शब्द की पुष्टि पर आक्षेप अवश्य है। इससे पूर्व कुछ व्यक्ति एक वेदमत्र के हिरण्यवती के (हि) और दुहाना के (दु) को मिलाकर हिंदू शब्द का निर्माण करते थे। और कुछ ऐसी भी व्याख्या करते थे 'यो हिंसया दूयते स हिन्दू' अर्थात् जो हिंसा को देखकर दुखी हो जाता है, वह हिंदू है। अब अरोडा जी ने एक अन्य व्याख्या ही कर दी। प्रश्न तो यह है कि क्या कन्याकुमारी को इन्दु सरोवर' कहने का कोई प्रमाण है? तथा इन्दु सरोवर' का अतिम शब्द 'वर' है 'न्दू नही। और शब्द का निर्माण आपने किस भाति कर भी लिया, किंतु उसका इतिहास क्या है? क्या आप वैदिक वाग्मय, रामायण, महाभारत, धर्मशास्त्र आदि से अपने को पृथक रखना चाहते है? अथवा अपने गौरवपूर्ण 'आर्य' शब्द के प्रयोग मे कुछ हीनता समझने लगे हैं? इस प्रकार की अप्रमाणिक बातें करना स्वाभिमानी व्यक्तियो के लिए शोभा नही देता।

निदेशक दत्तात्रेय आर्य प्रधान सपादक रासासिंह सपादक वीरेन्द्र कुमार आर्य ☎ कार्या 21010

सम्पादकीय

# आर्य शिक्षण संस्थाओं का संगठन आवश्यक

आज राजस्थान में अनुदानित शिक्षण संस्थाओं का भविष्य समुज्ज्वल नहीं है। ये संस्थाएं ऐतिहासिक शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से जन सेवा में संलग्न होने पर भी सरकार द्वारा सर्वथा उपेक्षित हो रही हैं। राजस्थान में सरकारी शिक्षण संस्थाओं की संख्या आटे में नमक के समान ही है। यद्यपि ये अनुदानित शिक्षण संस्थाएं सरकारी शिक्षण संस्थाओं की तुलना में कम खर्च और कम साधनों के बावजूद अच्छे परीक्षा परिणाम देकर अच्छा अनुशासन रखकर उत्तम कार्य कर रही हैं।

राजस्थान में आर्य समाज की शिक्षण संस्थाएं भी गैर सरकारी शिक्षण संस्थाओं में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। डी ए वी आदि शिक्षण संस्थाएं स्वाधीनता संग्राम से जुड़ी हुई रही हैं। राष्ट्रीय एवं नैतिक शिक्षा इन शिक्षण संस्थाओं की अपनी विशेषता रही है। साम्प्रदायिक, जातीय वर्गीय संकीर्णताओं से ऊपर उठकर बिना किसी भेदभाव के इन शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा दी जाती रही है। हिन्दी माध्यम, संस्कृत शिक्षण तथा विशेषता रही है। सुधारवादी विचारधारा तथा प्रगतिशील दृष्टिकोण अपनाने पर भी ये संस्थाएं जोर देती आई हैं। परन्तु सरकार की भेदभावपूर्ण नीति, 'सब धान बाइस पसेरी' की कहावत को चरितार्थ करते हुए अनुदान प्रतिशत का वर्गीकरण शिक्षा विभाग का बढ़ता हुआ हस्तक्षेप, कर्मचारियों के हित के नाम पर अनुशासन हीनता का प्रोत्साहन आदि जैसी कई समस्याएं बढ़ती जा रही हैं। शिक्षा निजी क्षेत्र में स्वायत्तता लिये हुए होनी चाहिये परन्तु व्यवहार में तेजी से सरकारीकरण का डण्डा घूमता जा रहा है।

फिर ईसाई मुसलमान सिक्ख आदि की शिक्षण संस्थाओं को संविधान की धारा 30 के अन्तर्गत कई विशेषाधिकार प्राप्त हैं उनमें सरकार हस्तक्षेप करते हुए भी डरती है और कई बार इनमें अराष्ट्रीय तत्वों का प्रोत्साहन मिलता है परन्तु राष्ट्रीयता एवं देश भक्ति की प्रबल पोषक आर्य शिक्षण संस्थाओं को ये विशेष सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं।

इन आर्य शिक्षण संस्थाओं को धारा 30 के अन्तर्गत विशेषाधिकार दिलवाने हिंदी, संस्कृत, राष्ट्रीयता एवं देश भक्ति को प्रोत्साहित करने आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों के अनुकूल आर्य शिक्षण संस्थाओं को संचालित करने, भारतीयता को बढ़ावा देने, इन्हें एक सूत्र में आबद्ध करने हेतु विगत 17 फरवरी 1989 ई को अजमेर नगर में डी ए वी स्कूल की शताब्दी के अवसर पर राजस्थान की आर्य समाज की शिक्षण संस्थाओं के प्रतिनिधियों का सम्मेलन आयोजित हुआ। जिसमें पर्याप्त विचार विमर्श के पश्चात प्रांतीय स्तर पर "राजस्थान आर्य शिक्षण संस्था परिषद्" का गठन किया गया। जिसके अध्यक्ष श्री दत्तात्रेय आर्य, कार्यवाहक अध्यक्ष श्री छोटूसिंह आर्य तथा महामंत्री श्री सत्यव्रत जी सामवेदी जयपुर चुने गये तथा प्रदेश की समस्त आर्य शिक्षण संस्थाओं के प्रमुख प्रतिनिधियों को भी इसमें सम्मिलित किया गया है।

इस "आर्य शिक्षण संस्था परिषद्" का दूसरा प्रांतीय अधिवेशन आर्य समाज आदर्शनगर (जयपुर) में 9 अप्रैल, 1989 ई. को श्री छोटूसिंहजी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसमें पूर्व निदेशक शिक्षा श्री तपेन्द्र जी, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति श्री बी के हूजा, राजस्थान उच्च न्यायालय के के न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री शिवकर लाल मेहता, पूर्व सांसद आचार्य भगवान देव आदि महानुभाव भी विशेष आमंत्रित थे। इस अधिवेशन में संगठन को अधिक सक्रिय एवं गतिशील बनाने का निश्चय हुआ।

## जूझारू व्यक्तित्व

—इस आर्य शिक्षण संस्था परिषद् के अध्यक्ष श्री दत्तात्रेय आर्य ने बंगाल के रामकृष्ण मिशन की भांति ही राजस्थान की आर्य शिक्षण संस्थाओं को भी धारा 30 के अंतर्गत न्यायोचित हक दिलवाने, इन संस्थाओं की अस्मिता की रक्षा करने हेतु स्वयं ही राजस्थान उच्च न्यायालय में न्याय पाने के लिये असाधारण तैयारी कर एक अनुभवी अभिभावक के रूप में स्वयं इस अस्सी से अधिक उम्र में पैरवी का कार्य किया और "एकला चलो रे" की उक्ति को चरितार्थ करते हुए एक लक्ष्य को पूरा करने हेतु अपना समय, शक्ति तथा ज्ञान अर्पित किया है। सुनवाई पूरी हो चुकी है अब फैसले की प्रतीक्षा है। इस जूझारू व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति को ईश्वर सफलता प्रदान करे यही प्रान्त की आर्य जनता की कामना है।

—रासासिंह

# पारायण यज्ञों की नई बीमारी से आर्यसमाज सावधान

पिछले कुछ समय से आर्य समाज जैसे तर्कपूत, विवेक सम्पन्न क्रांतिकारी विचार धारा वाले संगठन में भी विभिन्न प्रकार के यज्ञों के नाम पर पौराणिकों की राह पर ही कर्मकाण्ड का मायाजाल प्रचलित हो रहा है।

जिस प्रकार से सनातनी पौराणिक भाई शांति यज्ञ, तांत्रिक यज्ञ, चण्डी यज्ञ, आदि आयोजित करते रहते हैं उसी लकीर पर आर्यसमाज को अपने गुरुडम में लपेटने का दुस्साहस करने वाले तथाकथित छद्मवेषी एवं धर्मध्वजी आर्य समाजी "ऋग्वेद पारायण यज्ञ", 'चतुर्वेद पारायण यज्ञ', 'वेद परायण यज्ञ' वर्षा यज्ञ और कुछ नहीं तो 'गायत्रीयज्ञ', प्रचण्ड गायत्रीयज्ञ' सवाकरोड़ गायत्री मंत्रों का यज्ञ आदि सम्पन्न करवाने, आयोजित करवाने को तत्पर रहते हैं। उसके पीछे लोक कल्याण, राष्ट्रभूतय विश्व शांति आदि मोहक उद्देश्य भी उद्घोषित किये जाते हैं, फिर कई जोड़ों को यजमान बनाने के लिये उत्प्रेरित कर मोटी मोटी धन राशियां भी ली जाती हैं। पूर्णाहुति का धुआंधार प्रचार किया जाता है। पुण्य के भागी बनिये', धर्म यश प्राप्त करें, धर्म लाभ प्राप्त करें आदि लुभावने नारे दिये जाते हैं। जिसमें जनसाधारण की यज्ञ के प्रति श्रद्धा का शोषण किया जाता है। फिर कर्मकाण्डी पुरोहित, ब्रह्मा आदि बनने वाले तथाकथित आर्य पण्डित जन अनजाने पौराणिकों की भांति ही कई पोपलीलाएं एवं सस्ते सौदे करने लग जाते हैं जिनका न कहीं आदि होता है और न अन्त। इसी प्रकार पंचकुण्डीय तथा एक सौ पृष्ठ मुखीय यज्ञ भी होने लगे हैं।

महर्षि दयानन्द प्रणीत ग्रन्थों में इस प्रकार के यज्ञों को करने का उल्लेख हुआ है या नहीं यह तो विद्वान लोगों के लिये शोध एवं चिन्तन का विषय है। प्राचीन एवं अर्वाचीन वैदिक साहित्य में ब्रह्मयज्ञ देवयज्ञ अतिथि यज्ञ अग्निहोत्र, वेद यज्ञ

(शेष पृष्ठ 4 पर)

# ऋषि दयानंद की मृत्यु को विवादग्रस्त कहना भ्रम है

—डा भवानीलाल भारतीय—

दिनाक 15 अप्रैल के 'आर्य पुनर्गठन' में "महर्षि दयानद की विवादग्रस्त मृत्यु" शीर्षक लेख का प्रकाशन कोई प्रथम घटना नही है। इससे पूर्व भी हमीदिया कालेज भोपाल के इतिहास के भूतपूर्व प्रोफेसर डा बी के सिह ने अंग्रेजी साप्ताहिक इलस्ट्रेटेड वीकली आफ इण्डिया मे इसी प्रकार के विचार व्यक्त किये थे। प्रिंसिपल श्री राम शर्मा ने लगभग 16-17 वर्ष पूर्व हरियाणा सरकार के आर्थिक अनुदान से अंग्रेजी मे स्वामीजी की जीवनी पर एक पुस्तक लिखी। इसमे भी उन्होने स्वामीजी की मृत्यु को सहज, स्वाभाविक और किसी प्रकार के षड्यन्त्र से रहित माना।

यह पुस्तक प्रकाशित तो नही हो सकी किंतु इसकी तीव्र प्रतिक्रिया उन दिनो विस्फोटात्मक रूप मे हुई। वस्तुत यह पुस्तक तो हरयाणा की तत्कालीन सरकार की प्रेरणा से ही लिखी गई थी किंतु लेखक का मनोनयन पजाब विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति प्रिंसिपल सूरजभान ने किया था। इस पाण्डुलिपि को मैंने आद्योपान्त

पढ़ा है और इसके लेखक स्व श्रीराम शर्मा से इसमे उल्लिखित ऋषि की मृत्यु के प्रकरण पर विस्तार से चर्चा भी एकाधिक बार की थी। यहा यह लिख देना भी आवश्यक है कि जब शर्मा जी के द्वारा निर्धारित इस धारणा का पता आम जनता को लगा कि वे स्वामीजी की मृत्यु का सहज एव स्वाभाविक प्राकृतिक मृत्यु सिद्ध करने के लिये उधार खाये बैठे हैं तो आर्य जनो मे इसकी भयकर एव कटु प्रतिक्रिया हुई थी। हजारो आर्यसमाजो ने इस पुस्तक को छापने का विरोध करते हुए उक्त विश्व विद्यालय को तार भेजे तथा और इसमे से कइयो ने तो यहा तक लिखा कि स्वामीजी की मृत्यु को लेकर इस प्रकार की विवादमूलक धारणा को प्रचालित कर दयानन्द की दुबारा हत्या की जा रही है। तार मे प्रेषित प्रतिवाद मूलक शब्द थे You are murdering Swami Dayanand second time

मैंने स्वामीजी को विष दिये जाने की घटना का विस्तृत एव विवेचनामूलक उल्लेख अपने ग्रथ 'नवजागरण के पुरोधा दयानद सरस्वती' मे किया है। पुनर्गठन के पाठको से निवेदन है कि इस विषय को वे वहा अवश्य देखे। श्री ब्रजभूषण सिंह के इस लेख मे जो आक्षेप योग्य स्थल हैं, उनकी समीक्षा इस प्रकार है।

1 स्वामी दयानद के जोधपुर आगमन के समय नन्ही भगतन निश्चित रूप से महाराजा के अतपुर मे थी। इसका स्पष्ट उल्लेख स्वामीजी द्वारा जोधपुर नरेश को 8 सितम्बर 1883 (अनुमान पर आधारित) को लिखे पत्र मे पाया जाता है। यहा स्वामीजी ने महाराजा को सावधान किया है और कहा है कि वे वेश्या सग सम्पर्क तज करे। इस पत्र मे नन्ही का स्पष्ट उल्लेख है। परोक्ष रूप से तो ऐसे उल्लेख उनके अनेक पत्रो मे हैं।

2 श्री सिंह का यह कथन ठीक है कि स्वामी जी को विष देने वाले के अनेक नाम भिन्न-भिन्न जीवनचरितो मे आये है। ज्ञातव्य है कि विष देने वाला शाहपुरा का ब्राह्मण धूडजी या धूल जी मिश्र था। सखिये को दूध मे मिला कर दिया गया। यही विचार अतिम रूप से स्वीकृत हुआ। दूध मे काच मिलाने की पुष्टि नही हुई।

3 डाक्टरो ने विष देने की चर्चा नही की या तदनुकूल उपचार नही किया यह बात विष न देने के पक्ष मे नही जाती। डा लोग तो अपने विचार या निश्चय के अनुकूल ही चिकित्सा करते है। 1883 मे ऐलोपैथी चिकित्सा उस हद तक विकसित नहीं थी जैसी आज है। आज तो भक्ष्य पदार्थो के परीक्षणो के द्वारा तुरन्त यह निश्चय हो जाता है कि किस प्रकार का विष दिया गया है और उसका उपचार भी हो जाता है। डा अलीमर्दान ने चिकित्सा मे लापरवाही तो की ही, भारी विश्वासघात भी किया। वह औषधि के बहाने स्वामी जी के शरीर मे विजातीय द्रव्य (विष) पहुचाता रहा। यही कारण है कि महाराज एक मास तक तो कष्ट ही भोगते रहे और अन्तत पूरे एक महीने के बाद परलोकगामी हुए।

4 डा जॉर्डन्स लिखित विष प्रकरण की समीक्षा मैंने अपने ग्रन्थ नवजागरण के पुरोधा मे की है। वही देखे।

5 मैंने तो प महेशप्रसाद मौलवी के लेख के हवाले से यहा तक सिद्ध कर दिया है कि अली मर्दान को रिश्वत के रूप मे 1700 रुपये दिये गये ताकि वह स्वामीजी की चिकित्सा को बिगाड़े और उन्हे मार डाले। द्रष्टव्यनवजागरण के पुरोधा पृ 518 पाद टिप्पणी 47

6 स्वामीजी को डबल निमोनिया होना, ठण्ड लगना और तीव्र ज्वर होना तथा इसी स्थिति मे उनका अजमेर की भिनाय की कोठी मे कमरे से बरामदे मे आकर लेट जाना आदि घटनायें तो विष देने के एक महीने बाद की हैं। विष तो 29 सितम्बर की रात को ही दे दिया गया था।

7 यह तो ठीक है कि लाहौर से प्रकाशित The Arya (सपादक एव प्रकाशक-रतनचन्द बेरी) ने स्वामीजी के मृत्यु सूचक समाचार मे विष देने की चर्चा नही की। किंतु यह तो स्वाभाविक ही था। विष देना तो एक गोपनीय एव विश्वासघात पूर्ण कृत्य था। इसका तुरन्त भण्डाफोड होना तो सभव था ही नही और अजमेर से हजारो मील दूर लाहौर के पत्र सम्पादक का महर्षि की मृत्यु के वास्तविक कारण का तुरन्त पता लग ही कैसे सकता था। तथापि महाराज के परलोक गमन के तुरन्त पश्चात् ही विष देने की चर्चा जगल मे लगी आग की भाति सर्वत्र फैल गई थी।

8 वस्तुत आलोच्य लेख का आधार डा बी के सिंह, श्रीराम शर्मा तथा डा जार्डन्स द्वारा प्रस्तुत विचार ही हैं। मैं भी इन पर विस्तार पूर्वक लिख चुका हूँ।

पुनश्च राजस्थान के एक भूतपूर्व आई ए एस अधिकारी श्री ओंकारसिंह ने भी स्वामीजी को विष न दिये जाने की पुष्टि मे एक लेख टाइम्स आफ इण्डिया, राजस्थान पत्रिका आदि मे छपाया था। मैंने इस लेख का भी तत्काल प्रतिवाद कर दिया था।

## प्रौढ शिक्षा प्रचार तथा धारा ३० के सम्बन्ध में आर्यसमाजो को आह्वान

महोदय,

श्री सत्यव्रत जी द्वारा बुलाई गई आर्य शिक्षण सस्थाओ की बैठक मे को आप मे मिलकर बहुत प्रसन्नता हुई। उस बैठक म यह निर्णय लिया गया कि स्वामी दयानन्द की कल्पना के अनुसार राजस्थान मे विद्यार्य सभा स्थापित की जाय और वह आर्य शिक्षण सस्थाओ का बदलती परिस्थिति के अनुसार समय–समय पर मार्ग निर्देशन करे। आशा है श्री छोटूसिंह इस ओर शीघ्र ध्यान देंगे।

उक्त बैठक मे आर्य सस्थाओ को धारा 30 के अन्तर्गत अल्पसख्यक समुदाय का दर्जा दिलाने के लिये सर्वसम्मति प्रकट हुई। इस दिशा मे प्रो दत्तात्रय जो सचेष्ट हैं और मुझे पूर्ण विश्वास है कि उन्हे सफलता प्राप्त होगी। आर्य समाज का केस रामकृष्ण मिशन से कही अधिक सुदृढ आधार पर अवलम्बित है।

समय कम था, बोलने वाले

(शेष पृष्ठ 4 पर)

## दयानंद उवाच

# वेदोत्पत्ति

—डा बाबूराम शास्त्री—

जिज्ञासु स्वामी जी। वेदो की रचना किसने की ? वेदो की की रचना किसने की ? वेदो की रचना का प्रयोजन क्या है ?

दयानन्द वेदो की रचना सच्चिदानन्द परमब्रह्म परमेश्वर नकी इसमे यजुर्वेद स्वय प्रमाण है। यजुर्वेद की मान्यता है कि यज्ञस्वरूप विष्णु सब व्यापक परमेश्वर से ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद और अथर्ववेद प्रकट हुए ईश्वर वाक्य होने से मनुष्यो को वेद का ही पठन-पाठन करना चाहिए और वेदोक्त मार्ग पर ही चलना चाहिए। अथर्ववेद भी इसी सिद्धात का प्रतिपादन करता जो है सम्पूर्ण विश्व का धारण करने वाला परमेश्वर है—उसका ही नाम स्कम्भ है उसी ... वेदो का कर्ता समझो—मनुष्य मात्र को उसी की उपासना करनी चाहिए। इस विषय में ... महर्षि याज्ञवल्क्य भी प्रमाण है। याज्ञवल्क्य की धारणा है कि आकाश से भी बड़ा जो सर्वव्यापक परमेश्वर है—उसी से ऋक यजु, साम और अथर्ववेद उत्पन्न हुए जैसे मनुष्य का श्वास बाहर भीतर होता रहता है स्वभावत चलता रहता है—उसी प्रकार सृष्टि के आदि में ईश्वर के निश्वासरूप वेद प्रकट होते हैं और प्रलयकाल मे उसी मे समाहित हो जाते हैं—वे कभी नष्ट नहीं होते जैसे बीज मे अकुर सदा विद्यमान रहता है—वही वृक्षरूप मे विकसित होकर पुन वृक्ष के बीज में गुप्त रहता है—उसी प्रकार वेद भी प्रलयकाल मे ईश्वर के ज्ञान मे गुप्त रहते हैं—ईश्वर की विद्यारूप होने से वेद भी नित्य है।

परमेश्वर सब का रक्षक होने से जगत् का पिता और परमकारुणिक होने से सबकी माता के समान है—वह मानव जाति के कल्याण के लिए—धर्मार्थकाममोक्ष के साधनभूत वेदों का उपदेश करता है। सभी सत्यविद्या और ... विज्ञान वेद मे अन्तर्निहित है—अत अभ्युदय और निःश्रेयस की कामना करने वाले को वेदों का स्वाध्याय करना चाहिए।

## पारायण यज्ञों...

(शेष पृष्ठ 2 का)

राजसूय यज्ञ अश्वमेध यज्ञ सोमेध यज्ञ आदि के नाम का तो उल्लेख तो विभिन्न स्थानो पर मिलता है परन्तु इन नवीन प्रकार के यज्ञों का प्रचलन कब से हुआ तथा क्या ये वैदिक है या अवैदिक ? इसी प्रकार, गायत्री मत्र के प्रभाव और माहात्म्य को लेकर भी अन्ध श्रद्धा उत्पन्न होने जा रही है। गायत्री मत्र का जाप करने से प्रमुख-प्रमुख लाभ होते हैं यह धारणा तो कई अच्छे-अच्छे आर्य समाजियों की है। अत धर्मार्यसभा से अनुरोध है कि इस नई बीमारी को फैलने से पहले ही रोकने हेतु उचित व्यवस्था करवाने के निर्देश दे अन्यथा स्तुतामया वरदा वेदमाता के स्थान पर कोरा गायत्री का जाप ही सवस्व हो जायेगा और उस गुरु मत्र अतर्निहित भाव के के क्रियात्मक पहलू की अवहेलना एव उपेक्षा होती रहेगी। एक बीमारी से पीछा छुड़ाते छुड़ाते हमे दूसरी बीमारी न लग जाये।

आर्य समाज का रोल सास्कृतिक, धार्मिक एव सुधारवादी प्रगतिशील सगठन होने के नाते एक एक डाक्टर का है। डाक्टर को मरीज का इलाज करना है। मरीज को स्वस्थ करना है। परन्तु यदि डाक्टर को ही मरीज का ... बन जाय तो फिर वह डाक्टर क्या डाक्टरी करेगा ? फिर यदि जी छूने की बनने का प्रयास करें और छूने ही रह जाए तो उसका फिर कोई धनी धोरी नहीं रहेगा।

अत समाज को लकीर का फकीर नहीं बनना है। परपराओं को तोड़ना है, रूढ़ियों को नेस्तनाबूद करना है। प्रगतिशीलता को अपनाना है। वेदानुसार सत्य एवं धर्म की राह पकड़नी है।

लीक लीक गाडी चले, लीक हि चले कपूत।

लीक छाडि तीनो चले-शायर, सिह, सपूत।।

यहा मैं आर्य समाज के मन्दिरो मे सेवा कार्य करने वाले पण्डितो पुरोहितो सस्कारकर्त्ताओ, कर्मकाण्डियों से अनुरोध करूंगा कि वे स्वय इस प्रकार के अध विश्वासो को न पनपने दें। अपने यजमानो को सजग करें सावधान करें। लोभ मोह और सस्ती वाहवाही के चक्कर में पड़कर भूलकर भी ऐसे कार्यों को प्रोत्साहित न करें।

यह सत्य है कि 'यज्ञ वै श्रेष्ठतम् कर्म' अर्थात् यज्ञ ही श्रेष्ठतम कर्म है यज्ञ के बल पर ही देवताओ ने विजय प्राप्त की थी। पर यहा यज्ञ का अर्थ देव पूजा सगतिकरण दान होता है। यज्ञ का अर्थ तपस्या, त्याग बलिदान, श्रेष्ठ कार्य हेतु समर्पण होता है।

—रासासिंह

# प्रौढ़ शिक्षा

(शेष पष्ठ 3 का)

अधिक थे अत मैंने उक्त सभा मे प्रौढ शिक्षा विशेष कर प्रौढ ... शिक्षा का विषय नही उठाया। मैं समझता हू जब आर्य विद्या सभा निर्मित हो जाती है उस को इस ज्वलन्त समस्या की ओर पुरजोर ध्यान देना चाहिए। राजस्थान मे देवराला तथा नाथ द्वारा जैसे अक्षम्य असामाजिक घृणित काण्ड क्यो होते है ? क्यो कि स्त्री शिक्षा और प्रौढ शिक्षा का अभाव है। आज राजस्थान मे स्त्री शिक्षा केवल 5% है। 95% स्त्रिया निरक्षर हैं। क्या यह हम पर कलक नहा है ?

क्या इस कलक को धोने मे आर्य शिक्षण सस्थाओ का कोइ कर्त्तव्य है ? आर्य समाज के नियमो मे एक नियम यह भी है कि प्रत्येक को केवल अपनी उन्नति से सतुष्ट नही होना चाहिए। सब की उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिए। दिल्ली मे गत वर्ष लिटरेसी मिशन के तत्वावधान मे दस डीएवी स्कूलो ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। क्यो न राजस्थान की आर्य सस्थायें इसी प्रकार राजस्थान साक्षरता मिशन मे योगदान दें ? विद्यादान समय की पुकार है और सम्पूर्ण विकास की नीव है। आप के पत्र द्वारा मैं आर्यसस्थाओ को इस यज्ञ मे आहुति देने के लिये आमंत्रित करता हूं।

—बलभद्र कुमार हूजा
जयपुर।

## युवक प्रशिक्षण शिविर

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद, आर्य समाज शक्तिनगर नई दिल्ली द्वारा 3 मई से 9 मई 1989 तक उडीसा के आदिवासी अचलो मे एक विशाल युवक प्रशिक्षण शिविर लगाया जा रहा है। परिषद ने अपनी विज्ञप्ति मे इस आयोजन मे सभी आर्यजनो से आर्थिक सहयोग देने की अपील की है।



स्वत्वाधिकारी आर्यसमाज अजमेर के लिए प्रकाशक एव सपादक रासासिंह हेतु रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्य प्रिन्टर्स बाबू मोहल्ला केसरगज अजमेर मे मुद्रित एव आर्य समाज भवन, अजमेर से प्रकाशित।

ओ३म्

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वद ही समस्त धर्म क। मूल है।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सकल जगत को आर्य बनाए।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने मे सदा उद्यत रहना चाहिए।
—महर्षि दयानन्द

# आर्य पुनर्गठन

आर्य समाज, अजमेर का हिन्दी पाक्षिक पत्र
'आर्य हमारा नाम है वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म ।।'

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एव भविष्य में पैदा होनेवाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वष 6 रविवार 15 मई, 1989
अ क 9 प स -43383/84

अभय मित्रादभयम अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ।।

वैशाख शु दशमी सवत 2046
वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60 पैसे

## बाल विवाह की बलिवेदी पर

इस बार फिर हर वर्ष की भाति राजस्थान मे हजारो मासूम बालको को अक्षय तृतीया के दिन बाल-विवाह की बलिवेदी पर चढा दिया गया।

केन्द्र सरकार यद्यपि दशको पूव शारदा एक्ट (बाल-विवाह निरोधक कानून) बनाकर बाल-विवाहो को गैर कानूनी करार दे चुकी है, लेकिन ऐसे विवाहो म इसके बावजूद कोई कमी नही आई है।

गत कुछ वर्षोंसे सैकडो बालको के विवाह एक साथ सामूहिक रूप से समारोहपूर्वक सम्पन्न कराये जाते हैं। इन समारोहो के चित्र समाचार-पत्रो मे भी प्रकाशित होते हैं। किन्तु इसके बाद भी प्रशासन हरकत मे नही आता है। कानून की अव-मानना से उसे जैसे कोई सरोकार ही न हो।

बाल-विवाह की कुप्रथा केवल अल्पशिक्षित लोगो मे ही हो ऐसी बात नहीं है। कुछ जाति विशेषो मे तो शिक्षित वग भी इस कुप्रथा की चपेट मे है। गत कई वर्ष पूव राजस्थान के एक तत्कालीन म त्री द्वारा अपनी लडकी का बाल-विवाह करने का मामला भी अखबारो सुर्खियो में आया था।

—वीरेन्द्र कुमार आय—

बाल-विवाह समर्थक ऐसे विवाह के पक्ष में जो तर्क देते हैं, वे भी बहुत ही लचर और बचकाना हैं। उनका पहला तक होता है कि बचपन मे शादी होने पर ऐसे युवाओ के चरित्रहीन होने का डर नही रहता। जबकि वास्तविकता यह है कि चरित्रहीन न होने देने मे बाल-विवाह कदापि सहायक नही हैं।

वस्तुत जहा बाल-विवाह युवाओ के मूलभूत अधिकार का हनन करने वाला है, वहीं यह सुखी दाम्पत्य के लिए भी एक भारी अभिशाप है।

विवाह जैसे जीवन के महत्व-पूण निणय मे सम्बन्धित वर-वधू को सम्मिलित न करना उनके प्रति एक बडा अक्षम्य अपराध है। भावी जीवन-साथीके स्वभाव, रुचिया व योग्यता पूर्व मे जाने बिना दाम्पत्य–सूत्र मे बध जाने वाले व्यक्तियो का दाम्पत्य-जीवन प्राय असफल ही रहता है।

प्रश्न पैदा होता है कि आखिर बाल-विवाहो को किस प्रकार रोका जाए? यह सत्य है कि किसी भी सामाजिक कुरीति के उन्मूलन मे जन चेतना का प्रमुख हाथ होता है, लेकिन इसम कानूनी दण्ड भी अपना काम करता है।

सामाजिक सुधारवादी सगठनो व बुद्धिजीवियो को जनसाधारण को बाल विवाह की बुराइयो स अवगत कराकर इसके विरुद्ध जनमत बनाने का काम करना चाहिए तथा सरकार को बाल-विवाह के पोषक-समर्थक—व्यक्तियो को अभय-दान नहीं देना चाहिए। बाल-विवाह की कुरीति का उन्मूलन तभी सभव है।

## अखबारों से यूं निपटेगी सरकार

—वीरेन्द्र कुमार आय—

केन्द्र की राजीव सरकार मानहानि-विधेयक लागू कराने मे विफल होने के बाद अब एक दूसरे अचूक तरीके से अखबारो का शिकार करने निकल पडी है।

यद्यपि इस। की केन्द्रीय सरकार जब से मानहानि विधेयक लाने के मामले मे जनमत के विरोध के कारण औंधे मु ह गिरी है, तभी से किसी न किसी अन्य तरीके से अखबारो व पत्रकारो को परेशान करती आ रही है। लेकिन लगभग गत दो माहो से मे उसने अखबारो से निपटने का जो तरीका अपनाया है, वह बहुत ही मारक और खतरनाक है।

पिछल दो माह से सरकार ने स्वय द्वारा नियन्त्रित अखबारी कागज के मूल्य मे अप्रत्याशित वृद्धि की है। और यह वृद्धि इतनी अधिक है कि लघु-पत्रो या मझौले पत्रो की तो बात छोडिए बडे-बडे पत्रो के सामने अपने अस्तित्व के लिए सकटपैदा हो गया है। अनेक प्रमुख दैनिक पत्रो ने अपने पृष्ठो की सख्या मे कमी कर दी है। कईयो ने परिशिष्टो का प्रकाशन अनिश्चित काल तक के लिए स्थ-गित कर दिया है।

इस तथ्य का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि जब प्रमुख पत्रो की स्थिति भी इस मूल्य वृद्धि से इस कदर गडबडा गई है तो अन्य छोटे पत्रो का क्या हाल होगा? निश्चित रूप से यदि स्थिति यही रही और अखबारी कागज के मूल्यो मे कोई कटौती नही की गई तो अधिकाश लघु एव मध्यम स्तर के समा-चार-पत्र बन्द हो जाएगे। सरकार चाहती भी यही है।

इस प्रेस-मारक नीति के कई गम्भीर परिणाम निकलेंगे। यह सत्य है कि अखबारो को समाप्त करके या असहाय और अपनी कृपा का पात्र बनाकर सरकार निरकुश हो जाएगी और निरकुश शासन मे जनता की क्या हालत होती है—इसे सब जानते हैं। इसक अतिरिक्त सरकार की इस कुनीति स मादशहीन पत्रो-पत्रकारो को भी प्रश्रय मिलेगा। क्योकि दस-बीस प्रतियाँ फाइलो के लिए छापने वाले पत्रो की सेहत पर कागज की मूल्य वद्धि से कोई प्रभाव पडने वाला नही है। साथ ही विज्ञापनो व पत्र-कारिता के माध्यम से अपन अन्य क्षुद्र स्वार्थों की पूर्ति करने वाल इन पत्रा के स्वामियो को सरकार की चमचागिरी करने से भी कभी परहेज नही रहा है। य लोग अब भी अपना इस चाड परम्परा का दृढता से पालन करते रहेगे। और इस तरह घोडो के न रहने पर गधो की बन आएगी।

सरकार अपन प्रेस मारक रवैये के चलते देश को एक गहरे सकट मे ले जा रही है। कोई आम जागरूक नागरिक भी वर्तमान स्थिति को देखते हुए इस तथ्य को सहज ही समझ सकता है। लेकिन सत्ताधारी दल के सभी चार सौ सासद अपनी सरकार की इस देश एव आदश पत्रकारिता घाती नीति के विरुद्ध अपनी आवाज नही निकाल रहे है। इन लोगो को यह कभी नही भूलना चाहिए कि अभी इस चुप्पी का दड चुनावो मे जनता भले ही नही दे लेकिन एक दिन इतिहास उनके नेता राजीव गाधी के साथ उन्हे भी अवश्य दड देगा। इतिहास सबके साथ न्याय करता है और दोषी को कभी क्षमा नही करता, यह एक शाश्वत सत्य है।

निदेशक दत्तात्रेय आर्य  प्रधान सपादक रासासिह  सपादक वीरेन्द्र कुमार आर्य  ☎ कार्या 21010

## सम्पादकीय

# संघ लोक सेवा आयोग द्वारा हिन्दी की उपेक्षा असह्य

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है, भारत के संविधान द्वारा घोषित राज भाषा है, कोटि-कोटि जनो की आशा है। हिन्दी के माध्यम से ही स्वाधीनता संग्राम का युद्ध लड़ा गया तथा जन-जन तक आजादी का अलख पहुंचाया गया। राष्ट्र के सभी महान पुरुषों—महर्षि दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, विश्व कवि रविन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गांधी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, पं जवाहरलाल नेहरू, लाला लाजपतराय, वीर विनायक दामोदर सावरकर, महामना मदनमोहन मालवीय, स्वामी श्रद्धानंद, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन आदि ने हिन्दी के महत्व को स्वीकरते हुए इसे जनभाषा और राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया।

15 अगस्त 1947 ई को भारत स्वतन्त्र हुआ। 26 जनवरी 1950 ई को भारत को सम्पूर्ण सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज्य घोषित किया गया। 14 सितम्बर 1949 ई को संविधान में हिंदी को भारत गणराज्य की राजभाषा का दर्जा दिया गया। भारत की जनता यह अपेक्षा कर रही थी कि संविधान लागू हो जाने के बाद धीरे-धीरे देश के केवल दो प्रतिशत लोगो द्वारा बोली और समझी जाने वाली विदेशी भाषा अंग्रेजी का वर्चस्व समाप्त हो जायेगा तथा देश के राजकाज में हिन्दी तथा प्रदेशो में क्षेत्रीय भारतीय भाषाओं को उनका सम्मानजनक स्थान मिलेगा। परन्तु यह आशा फलवती नही हो पाई, कोई सपना बन कर रह गई। विदेशी भाषा अंग्रेजी का प्रभुत्व और वर्चस्व बढ़ता ही चला गया। परिणाम स्वरूप अंग्रेजी ही सर्वेसर्वा बन बैठी। जनभाषा हिन्दी निरन्तर उपेक्षित ही हो रही है।

आज देश की युवा पीढ़ी का कालेजो तथा विश्वविद्यालयो में अधिकांश समय, शक्ति और धन इस अंग्रेजी भाषा के ज्ञान को प्राप्त करने में लग जाता है फिर भी पूरा दक्षता प्राप्त नही की जा सकती। उनका अंग्रेजी ज्ञान अधकचरा ही रहता है। यह भारतीय शासको की मानसिक दासता का ही दुष्परिणाम है कि आजादी के 42 वर्षों में भी राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं को उनका सम्मानजनक स्थान प्राप्त नही हो सका है।

स्व राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त ने एक बार राज्यसभा (संसद) में कहा था कि—

'किसी देश में निजता का पद पाती है परवत्ता क्या ?
बिन एक व्यापक वाणी के राष्ट्र की सत्ता क्या ?'

इससे भी पूर्व हमारे मनीषियो ने मुक्त कण्ठ से उद्घोषित किया था कि—

'जिसको न निज भाषा निज देश का अभिमान है।
वह नर नही पशु निरा है और मृतक समान है।।"

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भी कहा था कि—

"निजभाषा उन्नति अहै सबै उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।

अत्यन्त रोष के साथ कहना पड़ रहा है कि भारत सरकार के अभिकरण "संघ लोक सेवा आयोग" द्वारा राष्टीय स्तर की उच्चाधिकारियो से सम्बन्धित 14 केन्द्रीय प्रतिस्पर्धा परीक्षाए आयोजित होती हैं, परन्तु उनमे से दो चार को छोडकर अधिकांश का माध्यम केवल अंग्रेजी भाषा होती है। देश की अस्सी प्रतिशत जनता गांवो में निवास करती है। वह पब्लिक स्कूलो के आडम्बरो से दूर राजकीय अथवा सामान्य विद्यालयों में हिन्दी या भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करती है। केवल दो प्रतिशत अंग्रेजी जानने समझने वाले लोग ही इन सब नौकरियो को हड़प लेते हैं और देश की 98% युवा पीढ़ी अंग्रेजी से बाधित होकर बेरोजगारी का शिकार हो जाती है अथवा ऊंची नौकरियों से वंचित रहती है।

इसी जोर जुल्म और अत्याचार का प्रतिरोध करने तथा हिन्दी एवं भारतीय भाषाओ को भी संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओ का माध्यम बनाने, अंग्रेजी के वर्चस्व को दफनाने के लिये कुछ नौजवान और संगठन आगे आये और उन्होने "अखिल भारतीय भाषा संरक्षण संगठन" बनाकर संघ लोक सेवा आयोग के मुख्यालय पर सत्याग्रह का बिगुल बजा दिया। 16 अगस्त 1988 ई. से धरने, प्रदर्शन, घेराव, जुलूस, क्रमिक अनशन आदि का कार्यक्रम चला। राजधानी और देश के कई प्रबुद्ध संगठनों, राजनैतिक दलो, युवा संघो ने इन्हे भरपूर सहयोग दिया। पर भारत सरकार ने हठधर्मिता पूर्ण अडियल रवैया अपनाया। उसके कानों पर जू तक न रेंगी। सत्याग्रहियो धरणार्थियो को पुलिस के क्रूर जुल्मो का सामना करना पड़ा। पर सत्याग्रही वीर भी लोहे के बने हुए थे उन्होने हार स्वीकार न की और अततोगत्वा 28 अप्रैल 1989 ई से चार नौजवानो ने आमरण अनशन प्रारम्भ किया है। उनकी हालत चिन्ताजनक हो गई है। इन पंक्तियों के लिखे जाने तक यद्यपि संसद में भी चर्चा हुई है, और राजीव गांधी के कानो तक भी आवाज पहुंची है, गृह राज्यमंत्री चिदम्बरम् तथा गृहमंत्री बूटासिंह का भी द्वार भी खटखटाया गया है पर कोरे आश्वासनो के अलावा अभी परिणाम वही ढाक के तीन पात है।

'आर्य पुर्नगठन' भारत सरकार से प्रबल शब्दो में यह मांग करता है कि इन चार रणबांकुरे नौजवानो के प्राणो को बचाने के लिये अविलम्ब राष्ट्र भाषा और राजभाषा हिन्दी को उसका उचित स्थान देते हुए संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं से अंग्रेजी का वचस्व समाप्त किया जाय तथा हिंदी एवं भारतीय भाषाओं को परीक्षाओं का माध्यम घोषित कर भारतीय संविधान में उल्लेखित मर्यादाओं का अविलम्ब पालन किया जाये। यदि इनके प्राणो पर कुछ संकट आया तो देश की जनता तुम्हे बख्शेगी नही।

## आखिर संघर्ष रंग लाया

भारत सरकार द्वारा उद्घोषित नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति की क्रियान्विति के नाम पर केन्द्रीय शिक्षा बोर्ड द्वारा 10+2 स्तर पर नये सत्र से देववाणी संस्कृत का गला घोटन का जो दुष्चक्र चलने जा रहा था उसका संस्कृत प्रेमियो, आर्यसमाज, देश के तत्व चिंतक मनीषियो और जन संगठनो एवं नेताओ द्वारा पुरजोर विरोध किया गया। समाचार पत्रो ने भी इसमे भरपूर सहयोग दिया। यद्यपि भारत सरकार के मानसिक गुलामो वाले वातानुकूलित कमरो में बैठने वाले अंग्रेजी परस्त अधिकारिया पर तो फिर भी असर नहीं पड़ा, पर देश के सर्वोच्च न्यायालय में इस संस्कृत गला घोटू आदेश के विरुद्ध याचिका प्रस्तुत कर न्याय पाने की गुहार की गई तो माननीय न्यायाधीशो ने संस्कृत के महत्व को स्वीकार कर इस अन्यायकारी आदेश के विरुद्ध स्थगनादेश दे दिया और पूर्ववत् केन्द्रीय बोर्ड के विद्यालयो मे संस्कृत का अध्ययन-अध्यापन जारी रखे जाने के आदेश दे दिये। इस निर्णय का 'आर्य पुनर्गठन' स्वागत करता है। संस्कृत प्रेमियो से अनुरोध करता है कि वे जागरूक रहे तथा मैकाले के मानस पुत्रो के षड्यन्त्रो से सावधान रह कर देश की इस अमर धरोहर को सुरक्षित रखें।

( सम्पादकीय शेष पृष्ठ 3 पर भी)

# आज की डी. ए. वी. संस्थाएं

15 अप्रैल 1989 के 'आर्य पुनर्गठन' में डॉ बाबूराम शास्त्री का लेख 'भारत मे शैक्षिक क्रान्ति और डी ए वी शिक्षण सस्थाए'' पढा।

आज डी ए वी स्कूल अथवा डी. ए वी पब्लिक स्कूलो की जो अवस्था है, लेखक ने उस पर अच्छा प्रकाश डाला है। अब मैं अपना निजी अनुभव यहा लिखना चाहती हू, कि आज डी ए. वी शिक्षण सस्थाओ मे कितना परिवर्तन आ गया है। मुझे कितनी निराशा तथा हार्दिक आघात लगा है। आज इन सस्थाओ का एगलो स्वरूप की भौतिकता का ही स्वरूप सामने आया है। वैदिक स्वरूप जो कि महर्षि की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य था, वह समाप्त ही समझा।

आज से करीब 50-60 वर्ष पहले वैदिक शिक्षण सस्थाओ मे सध्या, हवन, नैतिक शिक्षा धर्म शिक्षा के दो पीरियड लगते थे। मेरे शहर (डेरा गाजी खा) को आर्य पुत्री पाठशाला, जिसमे मैंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण की है, यह सब कुछ आवश्यक था, धर्म शिक्षा आवश्यक थी, उसमे फेल कन्या को फेल ही समझा जाता था। उसके पश्चात् मेरा बेटा डी ए वी स्कूल दिल्ली और चण्डीगढ मे पढा है। थोडी बहुत धर्म शिक्षा अथवा वेद मन्त्र थोडा बहुत होता था। अब मेरा पोता अभिषेक जिसे भारी धन राशि खर्च करके डी ए वी पब्लिक स्कूल वेस्ट पटेल नगर दिल्ली मे दाखिल कराया है। दो वर्ष से अधिक समय से यहा पढ रहा है। L.K G व U K G तथा क्लास 1st मे अब पढ रहा है। कोर्स की पढाई मेतो 5½ वर्ष के बच्चे को आवश्यकता से अधिक बोझ डाला जा रहा है। धर्म शिक्षा तथा किसी भी वैदिक शिक्षा के लिए नाम मात्र भी कुछ नही। सब कुछ दूसरे स्कूलो जैसा ही है। श्री दरबारीलाल ने कुछ समय पहले टाई गले मे लगाना तथा गुडमार्निग के बदले नमस्ते का एलान किया था। सभी आर्य पत्रिकाओ मे भी प्रसन्नता व्यक्त की गई थी। परन्तु कुछ समय बाद टाई लगाना फिर से प्रारम्भ कर दिया तथा। हमे उसके लिए फिर से खरीदनी पडी। मुझे एक दिन यह सुन कर आश्चर्य हुआ कि हमारा बच्चा यदि मैडम को नमस्ते कहे तो वह नाराज हुई और बच्चो को गुड मार्निग कहने का आदेश दिया। मैंने देखा है कि डी ए वी स्कूल अथवा डी ए वी पब्लिक स्कूलो की अध्यापिकाओ मे वैदिक धर्म के विषय मे न तो कोई रुचि है न ही जरा भी ज्ञान है।

कहा हमारे समय मे नित्य ही सध्या हवन मे सम्मिलित होना आवश्यक था वर्ना अनुपस्थिति लगती थी। सप्ताह मे एक बार हमारी बाल समाज लगती थी। रविवार के साप्ताहिक सत्सग मे उपस्थिति आवश्यक थी। जिसमे हमे विद्वानो के भाषण में वैदिक शिक्षा, देश भक्ति, स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, आदि शिक्षा हमारी रग-रग मे कूट-कूट कर भर दी गई थी। आज भी इस वृद्धावस्था मे भी अपनी सस्कृति, स्वदेश प्रेम तथा वैदिक धर्म के प्रति अपार श्रद्धा तथा प्यार है।

आज के बच्चे चाहे वह डी ए वी स्कूल कॉलिजो के हो अथवा और किसी सस्थाओ के हो, भौतिक दौड में ही बराबर है, नैतिकता, धर्म शिक्षा, सदाचार की शिक्षा मे शून्य हैं। देश के प्रति किसी को भी कोई दर्द नही। यह सब आज की शिक्षा मे कमी है। इतना भारी खर्च इस शिक्षा पर करके भी यह डी ए वी पब्लिक स्कूलो के बच्चे मनुष्य नही बन पायेंगे। इसका मुझे भारी दुख है।

—कृष्णा आर्या
मोतीनगर नई दिल्ली न 5

पुस्तक-समीक्षा

## महर्षि दयानंद-पत्रों के दर्पण में

लेखक डा कृष्णपाल सिह
प्रकाशक दयानन्द वैदिक शोधपीठ अजमेर
सन् 1988, पृष्ठ I-VIII+88
मूल्य 50 रुपये

तेरह अध्यायो मे विभाजित यह पुस्तक महर्षि दयानन्द के पत्रो मे अभिव्यजित उनके प्रार्थनापासना, वेद, सस्कृत भाषा, पुराणमीमासा हिंदू या आर्य, गृहस्थ राजधर्म, समाज सुधार, शिल्पकला गोरक्षा और राजनीति विषयक विचारो का दर्पण है—इसके पर्यालोचन से महर्षि के तद्विषयक विचार सुगमता से हृदयगम हो जाते हैं। महापुरुषो का व्यक्तिगत पत्र व्यवहार उनके भक्तो, प्रशसको और चरित लेखको के लिए ही नही सर्वसाधारण के लिये भी सदा एक विशेष उत्सुकता और आकर्षण का विषय रहा है, इसका कारण यह है कि जिन्हे ऐसे व्यक्तिगत पत्र लिखे जाते हैं व उनके निकटस्थ अथवा उनसे सबधित लोग होते है और उनमे जिन विषयो का सकेत या विवरण होता है वे प्राय अन्या की जानकारी मे नही होते। ऋषि दयानन्द ने अपने जीवनकाल मे स्वय जो पत्र लिखे हैं अथवा जो उन्हे लिखे गये हैं उनकी अभी तक ज्ञात सख्या एक हजार से ऊपर है। उनके पत्रो के सग्रह पर आधारित यह रचना एक प्रकार से उनके विचारो का एक दर्पण है जिसे देखने का यह पहला अवसर है। इसमे स्वामी जी की एक विशेष छवि देखने को मिलती है। उनका जीवन एक ऐसी खुली पुस्तक था जिसमे कोई भी व्यक्ति झाककर देख सकता है। उनके जीवन, विचार व व्यवहार मे किसी भी गोपनीयता के लिए गुजाइश नहीं हैं। इस विशेषता के अतिरिक्त इन पत्रो से उनके कुछ परिचित और अपरिचित विचारो और सिद्धातो का भी समर्थन और स्पष्टीकरण होता है, यह इस पुस्तक की दूसरी विशेषता है।

यह पुस्तक सर्वसाधारण के लिए उपयोगी है, आर्यजनो को इससे दिशा-निर्देश मिलेगा और स्वामीजी की मान्यताओ से परिचय भी पुस्तक सरल भाषा मे लिखी गयी है—विचारो की अभिव्यक्ति मनोरम है—प्रस्तुति हृदयग्राही।

—दत्तात्रेय आर्य

संपादकीय...

## पंजाब के आर्य जगत मे आशा की किरण

"देर आयद, दुरुस्त आयद"। यदि सुबह का भूला हुआ सायकाल वापिस घर आ जाय तो उसे भूला हुआ नही कहते है। गत वर्ष पजाब की आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्वाचन के समय दो दल हो गये थे और धडे बदी एव दलबन्दी से दो सभाये हो जाने से आर्यसमाज के सामाजिक सगठन का अस्तित्व आतकवाद के साये मे रहने वाले पजाब मे, खतरे मे पड गया था। पर इस बार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री आनन्द बोध जी सरस्वती की दूरदर्शिता पूर्ण सूझ-बूझ, पजाब के आर्य भाइयो की एकता की दृढ इच्छा एव वीरेन्द्र जी के रचनात्मक सहयोग से देश की बडी और पुरानी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के सर्वसम्मति से चनाव होकर योग्य व्यक्तियो को कार्यभार सौंपा गया। इसके लिए सभी सम्बन्धित पक्ष बधाई के पात्र हैं।

## 'आर्य पुनर्गठन' जोड़क है तोड़क नहीं

'आर्य पुनर्गठन' आर्य समाज को पुन सगठित एव सुदृढ करना चाहता है, सैद्धान्तिकता को बढावा देना चाहता है, आर्य समाज मे घुस आई बुराईयो का पर्दाफाश करके ऋषि दयानन्द के परम पुनीत सद्मार्ग को आलोकित करना चाहता है। अत इसकी आलोचनाओ एव प्रत्यालोचनाओ का आर्य जनता स्वागत करे। आर्य पुनर्गठन जोडने वाला है तोडने वाला नही। यह सुई है पर जोडने के लिए कैंची की कतरन भी आवश्यक है। अत ऋषि की निर्वाण स्थली अजमेर से निकलने वाले इस पत्र के आशय को आर्य जनता इसी सदभावनाके साथ स्वीकार करे। हमारा एक मात्र लक्ष्य आर्यसमाज को शुद्ध, प्रामाणिक, विश्वसनीय, सुदृढ क्रांतिकारी, सिद्धातनिष्ठ सगठन बनाना है।

—रासासिंह

### दयानन्द दर्शन

## इतिहासार्थ

—डॉ. [illegible] शास्त्री—

जिज्ञासु - स्वामी जी ! इतिहास किसे कहते हैं ? क्या विष्णु पुराणादि इतिहास ग्रन्थ हैं ?

दयानन्द - आप्त प्रमाण से युक्त इतिवृत्त ही इतिहास कहलाता है। जो व्यक्ति साक्षात् सब पदार्थ विद्याओं का जानने वाला, छल कपट-ईर्ष्या-द्वेष आदि से रहित व धर्मात्मा है—जो सत्यवादी व सदाचारी है—पूर्ण विद्या से आलोकित आत्मा वाला जो—"सर्वे भवन्तु सुखिनः" की भावना से मानव जाति के कल्याणार्थ सत्य का उपदेश करने वाला है—जिसने [illegible] से लेकर परमेश्वर पर्यन्त सम्पूर्ण पदार्थों का साक्षात् ज्ञान प्राप्त कर लिया है और तदनुसार आचरण भी करता है—उसे आप्त पुरुष कहते हैं। उसी का उपदेश प्रमाण होता है—इसके विपरीत औरों का नहीं—सत्य वृत्तान्त का वर्णन ही इतिहास है—कल्पित का नहीं। सत्य प्रमाणयुक्त सत्य वृत्तान्त जो आप्त पुरुषों के द्वारा उपदिष्ट है वही इतिहास है। विष्णु पुराणादि ग्रन्थ आप्तोक्त नहीं हैं—न ही उनमें सत्य वृत्तान्तों का उल्लेख है: उनमें अनेकों कपोल-कल्पित गाथायें भी उपलब्ध हैं—अतः उन्हें इतिहास नहीं माना जा सकता। इसके विपरीत [illegible] आप्तोक्त हैं—ऋषियों ने उनमें सत्य वृत्तान्तों का ही उल्लेख किया है और [illegible] जाति के कल्याणार्थ ही [illegible] का उपदेश किया है—अतः उन्हें ही पुराण व इतिहास समझना चाहिए।

---

## दयानंद महाविद्यालय अजमेर के लिये विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा एक करोड़ की योजना स्वीकृत

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने नवीन शिक्षा नीति के अन्तर्गत अन्य त्रिवर्षीय पाठ्यक्रमों के समान खेलकूद, स्वास्थ्य तथा शारीरिक प्रशिक्षण के लिए भी एक त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम की योजना तैयार की है। इस योजना के अन्तर्गत प्रत्येक राज्य में कम से कम एक महाविद्यालय को इस काम के लिए लगभग एक करोड़ रुपये की अनावर्तक तथा पांच वर्ष के लिए आवर्तक आर्थिक सहायता का प्रावधान है। राजस्थान में अजमेर के स्नातकोत्तर दयानन्द महाविद्यालय को इस योजना के अन्तर्गत सत्र 1989-90 से ये पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने के लिए चुना गया है। यह जानकारी देते हुए महाविद्यालय के निदेशक श्री दत्तात्रेय आर्य ने सूचित किया है कि इस योजना के क्रियान्वयन के लिए आवश्यक भिन्न-भिन्न खेलों के मैदानों, तरण-ताल, व्यायामशाला (जिम्नेजियम) आदि सारी सुविधाएं दयानन्द कालेज के विशाल परिसर में उपलब्ध करा दी गई हैं।

---



---

### [illegible]

## पौराणिक मेलों का पाखंड और आर्य समाज

अल्पकाल होते हुए भी "[illegible]" आर्यसमाज को एक नई दिशा देने में सफल हो रहा है। इसके विभिन्न लेख आर्यसमाज के समक्ष विभिन्न ज्वलंत समस्याओं के प्रति हमारा ध्यान आकृष्ट करते हैं तथा हमें सोचने के लिए बाध्य करते हैं।

पिछले अंक में आर्यसमाज में प्रचलित पौराणिक मेलों के पाखण्डपूर्ण प्रचार की ओर श्री रासासिंह ने हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। यह नितान्त समीचीन तथा आवश्यक है। पौराणिकों की पाखण्डलीला का खण्डन करने वाला आर्यसमाज स्वयं ही कर्मकाण्ड के मनमाने कपोल कल्पित आडम्बरों का शिकार हो रहा है। आश्चर्य है कि हम इस प्रकार के अशास्त्रीय कृत्यों पर अंकुश लगाने में स्वयं को नितान्त असमर्थ पा रहे हैं।

—डा. भवानीलाल भारतीय चण्डीगढ़।

---

## सप्तम श्री घुड़मल आर्य पुरस्कार राजेन्द्र 'जिज्ञासु' को

हिंडौन सिटी। स्थानीय नगर आर्यसमाज द्वारा श्री घुड़मल [illegible] आर्य ट्रस्ट द्वारा स्थापित श्री घुड़मल आर्य पुरस्कार इस बार 1989 में प्रख्यात आर्य विद्वान् व कार्यकर्ता प्राध्यापक श्री राजेन्द्र 'जिज्ञासु' को आपके द्वारा लिखित व सम्पादित महात्मा हंसराज व आर्यसमाज पर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी दिनांक 24 अगस्त, 89, दिन बृहस्पतिवार के पावन-पर्व पर दिया जा रहा है।

इस सम्मान में आपको सम्मान-राशि के अतिरिक्त अभिनन्दन पत्र तथा एक शाल नागरिक सम्मान के साथ प्रदान किया जायेगा।

—सचिव

---



---

स्वत्वाधिकारी आर्यसमाज अजमेर के लिए प्रकाशक एवं सम्पादक रासासिंह हेतु रतनलाल जैन द्वारा श्री आर्य प्रिन्टर्स बाबू मोहल्ला केसरगंज, अजमेर में मुद्रित एवं आर्य समाज भवन, अजमेर से प्रकाशित।

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सदा उद्यत रहना चाहिए।
—महर्षि दयानन्द

ओ३म्

# आर्य पुनर्गठन

आर्य समाज, अजमेर का हिन्दी पाक्षिक पत्र

'आर्य हमारा नाम है वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है सत्य हमारा कर्म ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सकल जगत को आर्य बनाए।

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होने वाली समस्याओ को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 6 मगलवार 30 मई, 1989
अक 10 प स -43383/84

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय पराक्षात।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ॥

ज्यष्ठ कृ दशमी सवत 2046
वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60 पैसे

## उल्टा चोर कोतवाल को डांटे

# 'आर्य मित्र' के छद्मवेशी पौराणिकों का अनर्गल प्रलाप

—वीरेन्द्र कुमार आर्य—

'आर्य पुनर्गठन' के 15 फरवरी, 1989 अक मे प्रकाशित मेरे लेख इन्हे तो खून करना है दयानन्द की उम्मीदों का' का उत्तर आर्यमित्र'' ने अपने 7 मई, 1989 के अक मे प्रकाशित किया है।

उल्लेखनीय बात यह है कि मेरे लेख का उत्तर देने का साहस आर्यमित्र' के सम्पादक मण्डल का कोई व्यक्ति जब नही कर सका तब किन्ही श्री विनय प्रताप को 'शिखण्डी' बनाकर उससे उत्तर दिलाया गया है और इन श्रीमान का सारा 'प्रताप' विषय से हटकर अनर्गल प्रलाप करने मे ही लगा है।

श्री विनय प्रताप यह स्वीकार करते हैं कि 'आर्य पुनर्गठन' के सम्पादक थोडा ज्ञान रखते हैं। लेकिन खेद है कि श्री विनय प्रताप स्वय तो ज्ञान के मामले मे बिलकुल ही कोरे है। तभी आपने 'आर्य पुनर्गठन' के लेख का युक्तिसगत उत्तर देने के स्थान पर आर्य पुनर्गठन' एव उसके सम्पादक की व्यक्तिगत आलोचना करने मे ही अपने को धन्य समझा है।

आप का यह कहना कि 'आर्य पुनर्गठन' ने अपने गत दो साल के कार्यकाल मे कोई विशेष कार्य नहीं किया सफेद झूठ है। वास्तविकता तो यह है कि आर्य समाज के वर्तमान तथा भावी कार्यक्रम के सम्बन्ध मे 'आर्य पुनर्गठन' ने विभिन्न चोटी के आर्य विद्वानो के चिन्तनपूर्ण विचारो का प्रकाशन कर आर्य जगत् का जो मार्गदर्शन किया है, उसकी अन्य कोई सामाजिक पत्र बराबरी नही कर सकता। लेकिन जिन्हे आर्य समाज के नाम पर यन-केन प्रकारेण अपने क्षुद्र स्वार्थों की पूर्ति करने से ही मतलब है ऐसे लोगो को भला 'आर्य पुनर्गठन' के कार्य की महत्ता कहा दिखाई देगी? आप कहते हैं कि आर्य पुनर्गठन' ने श्री बलराज मधोक का पत्र व्यवहार प्रकाशित किया है। 'आर्य पुनर्गठन' ने कभी श्री मधोक का पत्र व्यवहार प्रकाशित नही किया। हमे श्री प्रताप मतिभ्रम के रोगी लगते हैं। उन्हे अविलम्ब किसी अच्छे वैद्य के पास उपचार के लिए जाना चाहिए।

श्री विनय प्रताप का तर्क है कि मैने यह कैसे समझ लिया कि सौ वर्ष से अधिक गौरवमय इतिहास वाली सभा का दशको पुराना पत्र सिद्धान्त विरोधी विचारधारा का प्रचार-प्रसार कर सकता है? इनके इस बचकाना तर्क पर मुझे हसी आती है। सदाचारी वश मे क्या कभी दुराचारी सन्तान पैदा नही हो सकती? मेरे कथन का अभिप्राय आप समझ गए न!

श्री विनय प्रताप का एक दूसरा बचकाना तर्क देखिए। आप कहते हैं, 'आज जब हिन्दू समाज पर अस्मिता एव अस्तित्व रक्षा का सकट व्याप रहा हो समाज मे इस प्रकार का विघटन एव विग्रह उत्पन्न करना अपने समाज, अपनी सस्कृति तथा धर्म के साथ सरासर गद्दारी है। वाह साहब, यानी आपका हिन्दू समाज पर सकट के नाम पर वैदिक सिद्धान्त विरोधी प्रचार करने की खुली छूट दे दी जाए और आपके ऐसे सिद्धान्त विरोधी कृत्य की कोई आलोचना भी न की जाए। बहुत खूब, क्या कहने हैं आपके!

वस्तुत हिन्दू समाज पर आज जो सकट है उसके लिए विनय प्रताप जैसे तथाकथित आर्य समाजी ही जिम्मेदार हैं। जब तक हिन्दू समाज मे प्रचलित

(शेष पृष्ठ 4 पर)

### श्री इन्द्रदेव पाठक के नाम हमारा पत्र

प्रिय महोदय,

सप्रेम नमस्ते।

आपने पत्र मे "आर्यमित्र" मे प्रकाशित लेख के पक्ष मे कई कमजोर दलीले देकर उसे आर्य समाज के सिद्धान्तानुकूल सिद्ध करने का प्रयास किया है। कितना अच्छा होता कि यदि आप सत्य का आश्रय लेते हुए अपनी भूल स्वीकार कर लेते।

स्वामी श्रद्धानन्द व स्वामी विरजानन्द सरस्वती का उदाहरण देकर सिद्धात विरुद्ध लेखन के अपराध से बरी होने की आपकी चेष्टा उचित नही कही जा सकती। इसके अतिरिक्त आपने भारी शब्दाडम्बर द्वारा भी अपने लेख को सिद्धात सम्मत सिद्ध करने की जो कोशिश की है आपकी वह कसरत भी व्यर्थ ही है। जल से शरीर शुद्ध होता है और नदी किनारे एकान्त मे साधना की जा सकती है, इससे हमने कहा इकार किया है। हमारा आपसे विरोध गगा या नदी विशेष के जल को पापनाशक मानने के पाखड को लेकर है।

मैंने अपने लेख मे ऋषि दयानन्द की मान्यताओ को उदधरित करते हुए आर्य मित्र" के लेख को सिद्धात विरुद्ध सिद्ध किया था। इसीलिए बेहतर तो यही होता कि आप भी ऋषि दयानन्द की मान्यताओ को ही अपने पक्ष मे उदधरित करते। लेकिन आपने ऐसा नही किया।

श्री इन्द्रराज पर मैंने कोई झूठा दोषारोपण नही किया। उन द्वारा मृतक श्राद्ध कराने सबधी कृत्य की मैंने जाच कराई थी। और उसमे उन द्वारा मृतक श्राद्ध कराना सिद्ध हुआ था। मेरे लेख के प्रकाशन के इतने दिनो बाद आपका उस सबध मे आपत्ति उठाना तर्कसगत नही है।

जहां तक धर्मार्य सभा मे जाने की बात है हम इसके लिए तैयार हैं। यदि आप हमारे आक्षेपो को गलत मानते है तो आप ही इस सबध मे धर्मार्य सभा की व्यवस्था (निर्णय) ले। धर्मार्य सभा का निर्णय हमे स्वीकार्य होगा।

आप द्वारा नदी विशेष के जल को पापनाशक बताना तथा मृतक श्राद्ध कराना क्या आर्य समाज का सैद्धातिक विघटन नही है। वस्तुत हम आपके इन सिद्धात विरुद्ध कार्यों का विरोध करके ही आर्य समाज का पुनर्गठन कर रहे हैं।

पत्रोत्तर देने की सौजन्यता की अपेक्षा है।

भवनिष्ठ
(वीरेन्द्र कुमार आर्य)
सम्पादक

निदेशक दत्तात्रय आर्य    प्रधान सपादक रासासिंह    सपादक वीरेन्द्र कुमार आर्य    ☎ कार्या 21010

## सम्पादकीय

### नहीं लगता मुझे हालात पे, कुछ बात भी होगी।
### अभी तो रहनुमा झगड़ेंगे, बैठक मुल्तवी होगी ।।

आर्य पुनर्गठन आर्यों का आर्य समाजों का, आर्य शिक्षण संस्थाओं का पुनर्गठन करना चाहता है। महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों एवं मन्तव्यों के अनुरूप वेद मार्ग का अनुसरण करने वाले वैदिक धर्म में दृढ़ आस्था और विश्वास रखने वाले, वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार करने वाले आर्य धर्म के अनुसार जीवन को आर्यत्व से ओत प्रोत बनाने वाले कर्त्तव्यपरायण और सच्चरित्र एवं विश्वसनीय आर्यों का संगठन 'आर्यसमाज' बनाने हेतु आर्य समाज का पुनर्गठन परमावश्यक है।

आज आर्यसमाज एक मोड़ पर किंकर्त्तव्यविमूढ़ सा सम्प्रदाय का रूप धारणकर शिथिल सा प्रतीत हो रहा है। भला वेगवती नदी के प्रवाह को कोई रोक सकता है? आर्यसमाज एक क्रांतिकारी मिशन है, कुछ कर गुजरने की तमन्ना रखने वाला प्रखर और प्रचण्ड तेज वाला संगठन है। डंके की चोट इस बात का उद्घोष करने वाला है कि सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। आर्यसमाज के 10 नियम विश्व में बेजोड़ एवं अनुपम हैं। आर्यसमाज के सिद्धांत और मन्तव्य तथा उसका कार्यक्रम एवं इतिहास उसकी सेवाएं भी अनुपम एवं बेदाग तथा विवेक सम्मत एवं तर्क संगत है इसके बावजूद भी आज के भारत और आज के विश्व में आर्य समाज की आवाज क्यों बुलंद नहीं? क्यों आर्यसमाज की बात ध्यान से नहीं सुनी जाती? क्यों आर्य समाज के कार्यक्रमों को मीडिया में प्रचार प्रसार मिलता? क्यों आर्यसमाज कछुए की तरह अपनी चहारदीवारी में ही सिकुड़ता जा रहा है? इन सब प्रश्नों का एक ही उत्तर है कि इस क्रान्तिकारी संगठन से संस्थाओं की आड़ में जेब भरने वालों संस्थाओं के नाम पर क्रांतिपथ में अवरोध पैदा करने वालों को निकाल बाहर करना होगा। चुनावी हथियार के आधार पर अधिकाधिक वोट बटोर कर आर्य समाज और उसके पदों को हथियाने वाले तिकड़मबाज भ्रष्ट तोड़ जोड़ माहिर राजनीति से प्रेरणा पाकर समाज को प्रदूषित करने वाले लोगों में चरित्रहीनों से समाज का पिण्ड छुड़ाना पड़ेगा। आर्य समाज में घुसे हुए पौराणिकों सनातनियों मूर्तिपूजकों अधकचरे तथाकथित आर्यों व सामाजिक रूढ़ियों एवं अंधविश्वासों में फंसे हुए छद्मवेशियों से आर्यसमाज को छुटकारा दिलाना होगा। इन सब के लिये पहले सच्चे और कर्मठ आर्यों का निर्माण करना होगा जुझारू एवं सच्चरित्र एवं प्रखर आर्यों को संगठन की पतवार सौंपनी होगी। आर्यसमाज के मंदिरों में प्रवचन सुनने और कार्यक्रमों में सम्मिलित होने के लिये भले ही सब आवें परन्तु समाज के पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी में संस्थाओं के महत्त्वपूर्ण पदों पर तो आर्यसमाज की विचारधारा से तपे तपाये खरे सोने को परखे हुए सिद्धान्तनिष्ठ एवं कर्मशील व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों को आगे लाना होगा भले ही हमारी संख्या कम हो जाय परन्तु "वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्ख शतान्यपि एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारागणोऽपि" के कथन के अनुसार गुणवान परन्तु श्रेष्ठ पुत्र तो एक ही ठीक है सौ भी हो जाए और सब मूर्ख हों तो वे किसी काम के नहीं। आकाश में एक ही चन्द्रमा पूरे अंधकार का नाश करता है परन्तु हजारों टिमटिमाने वाले तारे मिलकर भी उस अंधकार को नहीं भगा सकते।

किसी कवि ने ठीक ही कहा है कि यह मत कहो कि कर सकता क्या अकेला लाखों में होता है सूरमा अकेला। इसलिये हमें संख्या बढ़ाने के स्थान पर गुणात्मक अभिवृद्धि पर जोर देना चाहिये और इसी के लिये आर्य समाज का पुनर्गठन आवश्यक है। आर्यसमाज के पुनर्गठन के लिये मठाधीशों को हटाना होगा निहित स्वार्थियों को निकालना होगा सिद्धांतहीन अनार्यों को हटाना होगा, दीवारों को तोड़कर जनसाधारण के बीच कार्य क्षेत्र बनाना होगा। पर यह कार्य सामान्य नहीं है इसके लिये एक और दयानन्द या श्रद्धानन्द की आवश्यकता पड़ेगी।

"आर्यपुनर्गठन" विगत दो तीन वर्षों से लगातार प्रयत्नशील है विचार देने को सचेष्ट है बुराइयों पर करारे प्रहार कर रहा है अपनी आवाज बुलन्द कर रहा है। पर ऐसा प्रतीत हो रहा है कि नक्कार खाने में तूती की आवाज कोई नहीं सुन रहा है। पर आर्य पुनर्गठन निराश नहीं होगा। भले ही कुछ लोग इससे चिढ़ कर इसे दुर्गन्धित कहें पर यह अपने सीमित साधनों से एकला चलो रे की नीति का अनुसरण करते हुए निरन्तर कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर होता रहेगा।

एक कवि के शब्दों में यही कहना चाहूंगा –

'उसको फतह से भला कौन रोक पायेगा।
मंजूर जिसको घाव भी उपहार की तरह।।'

इसलिये आर्य पुनर्गठन डंके की चोट यह उद्घोषणा करता है कि—

ऋषि की निर्वाण-स्थली से आर्य पुनर्गठन ने ललकारा है।
दूर हटे आलस्य अनार्यत्व यही आर्यसमाज का नारा है।।

—रासासिंह

## राजीव का साम्प्रदायिता विरोध

राजीव गांधी इन दिनों साम्प्रदायिकता के विरुद्ध बढ़-चढ़ कर बोल रहे हैं। चुनावी दिनों में साम्प्रदायिकता एवं राष्ट्रीय अखंडता के मुद्दों पर ही वे बोला करते हैं।

अभी गत कुछ दिनों पूर्व बिहार की एक जनसभा में उन्होंने साम्प्रदायिकता के विरुद्ध जोरदार शंखनाद किया है और विपक्षी दलों पर साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देने का आरोप लगाते हुए वामपन्थी दलों से साम्प्रदायिक ताकतों के विरुद्ध संघर्ष में कांग्रेस का साथ देने का आह्वान किया है।

हम यहां राजीव गांधी द्वारा विपक्ष पर साम्प्रदायिक तत्त्वों को बढ़ावा देने के लगाए गए आरोप के विरोध में कुछ नहीं कहना चाहते। लेकिन स्वयं इंका व उनकी प्रशंसा के पात्र वामपन्थी दल कितने साम्प्रदायिकता विरोधी हैं इस की जांच परख अवश्य करना चाहेंगे।

जहां तक वामपंथी दलों का प्रश्न है उन्हें कुछ हद तक साम्प्रदायिकता विरोधी कहा जा सकता है। वैसे इन दलों की साम्प्रदायिकता विरोधी मुहिम पूरी तरह एक पक्षीय ही रही है। एक तरफ ये मुस्लिम लीग जैसी साम्प्रदायिक पार्टी से चुनावी गठबन्धन करते हैं तो दूसरी ओर हिन्दुओं के कट्टरवाद के विरुद्ध वक्तव्य देते हैं।

और इंका का साम्प्रदायिकता विरोध तो सरासर ढोंग ही है। वैसे कांग्रेस का इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि साम्प्रदायिकता के पेड़ को पालपोसकर एक वट वृक्ष का रूप देने में इस पार्टी का ही प्रमुख हाथ रहा है। लेकिन हम दूर की बात नहीं करेंगे। राजीव गांधी के कार्यकाल को ही ले लीजिए। मुस्लिम महिला संशोधन विधेयक पर आरिफ मोहम्मद खान जैसे साम्प्रदायिकता विरोधी मंत्री को उनकी सरकार से त्याग पत्र देकर बाहर होना पड़ा था। और साम्प्रदायिकता के विरुद्ध जोर शोर से चिल्लाने वाले श्री गांधी ने मुस्लिम कट्टरपंथियों के सामने अपने हथियार डाल दिए थे।

मिजोरम का उदाहरण अभी बिल्कुल ताजा है। इंका ने गत वर्ष हुए मध्यावधि चुनावों में किस तरह ईसाइयत को बढ़ावा देने के नाम पर वोटों की फसल काटी, यह कोई गुप्त रहस्य नहीं है। वहां इंका ने अपने घोषणा पत्र तक में साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देने वाली बातों का प्रकाशन किया था।

निस्संदेह राजीव गांधी और उनकी पार्टी को विपक्षी दलों को साम्प्रदायिकता का पोषक बताने एवं स्वयं को साम्प्रदायिकता विरोधी कहने का कोई हक नहीं है। वास्तविकता तो यह है कि स्वयं इंका विपक्ष से कहीं अधिक साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देती है।

—वीरेन्द्र आर्य

# प्रश्न सिद्धान्त का है, आक्रोश किस लिए ?

—सत्यवादी—

लेखक आर्य जगत् के प्रख्यात विद्वान हैं। आपकी भावना का सम्मान करते हुए हम आपका वास्तविक नाम प्रकाशित नहीं कर रहे हैं। —सम्पादक

गत सप्ताह 'आर्य मित्र' के एक लेख में अजमेर के आर्य पत्र 'आर्य पुनर्गठन' के एक लेख की आलोचना की गई है। वस्तुत. यह 'आर्य पुनर्गठन' के उस लेख का विरोध था जिस में 'आर्य मित्र' के पौराणिक दृष्टिकोण की भर्त्सना की गई थी। मेरी दृष्टि से दोनो लेख गुजरे हैं। मुझे खेद है कि दोनो में व्यक्तिगत आक्रोश का अंश अधिक है। आखिर इस में नाराजगी का क्या कारण ? दोनों ही ऋषि दयानन्द के अनुयायी हैं। ऋषि के ग्रन्थ तथा मन्तव्य कुछ छुपे हुए नहीं। यदि किसी ओर से इस विषय में गलती हुई है तो उसे सज्जनता से दर्शा देना चाहिए और दूसरे का कर्तव्य है कि वह गलती को गलती मान ले। उस पर अपने अहं का प्रदर्शन करता हुआ विवाद न करे।

'आर्य पुनर्गठन' के दो आक्षेप हैं, पहला तो यह कि उत्तर प्रदेश सभा के प्रधान महोदय अपनी माता जी की दुःखद मृत्यु के पश्चात् उनकी सद्‌गति की प्रार्थना तथा अस्थि विसर्जन के लिए हरिद्वार गये। इसमें कोई दो राय नहीं कि ऋषि दयानन्द इस कृत्य के विरोध में हैं। प. इन्द्रराज जी विशुद्ध आर्य सज्जन हैं, आर्यत्व उनके रोम-2 में है, परन्तु फिर भी यदि यह पौराणिक पाखंड किसी विवशता से वे कर पाये हैं तो अनुचित है। विशेष रूप से इसलिए कि वे आर्यों की एक शिरोमणि सभा के प्रधान और 'यद्-यद् आचरति श्रेष्ठ तद् तदेव इतरोजनः' अधिकार प्राप्ति के साथ कर्त्तव्य का अनुशासन कड़ा हो जाता है। इतना ही पर्याप्त है कि वे अपनी विवशता पर खेद प्रकट कर दें, यह उन के सम्मान में वृद्धि का कारण होगा, और उनकी शालीनता ऐसा करने के लिए उन्हें बाध्य करेगी।

दूसरा आक्षेप 'आर्य मित्र' में छपे महाकुम्भ शीर्षक एक लेख पर है—लेख की यह पंक्तियां और और आज उसी की स्मृति में प्रयागराज कुम्भ में करोड़ों की संख्या में आबाल वृद्ध नर-नारि एक डुबकी मात्र के लिये लालायित हैं, न सरदी की चिन्ता न भूख प्यास की, कितना महान है मेरा हिमालय, हिमालय से निकलने वाली वह सुरसरि, देवी सुरसरि भगवति गंगे, त्रिभुवन तारिणि तरल तरंगे।" (आर्य मित्र 29 जनवरी) क्या यह सत्य नहीं है कि इस प्रकार का भावुकता पूर्ण लेख गंगा को त्रिभुवन तारिणि बना रहा है। वस्तुत तो लेखक भी मानता है कि गंगा एक नदी है और जल से शरीर ही साफ होता है परन्तु भावुकता पूर्ण ऊपर लिखी पंक्तियां पौराणिकता का पोषण करती हैं। लेखक को चाहिए था कि साथ ही आर्य समाज के दृष्टिकोण को भी दे देता तो शायद किसी इतिहास के प्रसंग में कहीं बात भी खप जाती। परन्तु भावुकता का क्या किया जावे ? मेरी प्रार्थना है कि आर्य विद्वानों को, लेखकों को हर बात सम्भल कर करनी चाहिए, यह ऋषि दयानन्द का मत है जहां एक-एक शब्द पर शास्त्रार्थ हो पाये हैं। 'सिद्धान्तत हम दोनो आर्य समाजी हैं, आज प्रमाद वश आर्यों में सिद्धान्त ज्ञान भी कम है, और व्यवहार में गुरुडम, प्रतिमा पर पुष्प माला लगाना इत्यादि पौराणिक पाखंड पनप रहा है। इस में कुछ 'हिन्दुत्व' की सियासत भी कारण है। आज आर्य शब्द के महत्व को आर्यबन्धु भी ओझल कर रहे हैं, हिन्दुत्व की बाढ़ सी है। हम इस बाढ़ में तैरें, बह न जाएं। केवल इसका ध्यान रहे।

'आर्य मित्र' के लेखक ने पुनर्गठन की गरीबी पर व्यंग्य किया है, यह उसे शोभा नहीं देता। पुनर्गठन का कलेवर, ताम-झाम वह नहीं जो आर्य मित्र का है। और फिर यह है भी पाक्षिक, परन्तु सत्य बात यदि फकीर भी कहे तो राजा को स्वीकार करनी चाहिए। दयानन्द जैसे फकीर के अनुयायी सत्य से प्रेम करें, ताम-झाम बड़प्पन का कारण नहीं है। यदि ताम-झाम ही पैमाना हो तो राणा प्रताप से मानसिंह का स्थान कहीं आगे है परन्तु संसार जानता है कि कितने मानसिंह आए और चले गए, परन्तु राणा प्रताप का यश सदा अक्षुण्ण है।

दयानन्द उवाच

# देवता विषय

जिज्ञासु —स्वामी जी ! यज्ञ में देवता शब्द से किसका ग्रहण होता है ?

दयानन्द —वेद में जो-जो पदार्थ देवता बतलाए गये हैं—उन्हीं का ग्रहण होता है। जैसे यजुर्वेद में अग्नि, वात, सूर्य, चन्द्रमा, वसु, रुद्र, आदित्य, मरुत्, विश्वेदेवा, बृहस्पति, इन्द्र और वरुण को देवता कहा गया है। कर्मकाण्ड में देवता पद से मुख्य रूप से वेद मन्त्रो का ही ग्रहण होता है क्योंकि गायत्री आदि छन्द ही देवता हैं। इन्ही वेद-मन्त्रो से सभी विद्याओं का प्रकाश होता है। यास्क कहता है कि जिस कामना से ऋषि जिस देवता में आर्थपत्य की इच्छा करता हुआ स्तुति करता है—उस देवता वाला वह मन्त्र होता है।' यह मन्त्र तीन प्रकार का है—परोक्षकृत, प्रत्यक्षकृत और आध्यात्मिक। जिन-जिन मन्त्रों में किसी विशेष अर्थ का नाम प्रसिद्ध नहीं है—वहा-वहा यज्ञ आदि को देवता जानना चाहिए। "अग्निमीले" मन्त्र के भाष्य में जो तीन प्रकार का यज्ञ लिखा है अर्थात एक अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध-पर्यन्त, दूसरा प्रकृति से लेकर पृथिवीपर्यन्त सृष्टिकार्य तथा शिल्पविद्या और तीसरा विज्ञान और योग—ये ही उन मन्त्रो के देवता हैं—और जिन मन्त्रो से यह यज्ञ सिद्ध होता है—वे भी इन मन्त्रों के देवता हैं। इसके अतिरिक्त जो मन्त्र मनुष्यों का प्रतिपादन करते हैं—उनके देवता मनुष्य हैं, इसी प्रकार कहीं यज्ञादि कर्म देवता हैं, कहीं माता-पिता, कहीं विद्वान्, कहीं अतिथि और कहीं आचार्य। किन्तु यज्ञ के प्रसंग में मन्त्र और परमेश्वर को ही देव मानते हैं। यहां यह ज्ञातव्य है कि जो देव हैं—वही देवता हैं। यास्क का अभिमत है कि दान देने प्रकाश करने, पदार्थों का सत्योपदेश करने और द्युस्थानी होने से मनुष्य या पदार्थ देव कहलाते हैं। शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गन्ध आदि का द्योतन करने के कारण मन सहित पांचो ज्ञानेन्द्रियां भी देव कहलाती हैं। सर्वशक्ति-मत्त्वादि-गुणोपेत परमेश्वर ही वस्तुत एक देव या देवता है—अन्य देव तो उसी की सामर्थ्य के भिन्न-भिन्न प्रकाशित रूप हैं—वह जिस-जिस में जितना-जितना दिव्यगुण रखता है उतना ही उनमें देवत्व है—अधिक नहीं। व्यवहार में आठ वसु ग्यारह रुद्र और बारह आदित्य तथा इन्द्र और प्रजापति—ये तैंतीस देव कहे गये हैं। किन्तु इन सबका देवत्व देवाधिदेव परमेश्वर की सामर्थ्य के अधीन है—उसी की दीप्ति से ये दीप्तिमान हैं, अत परमार्थ में वही एक देव है—उसी की उपासना करनी चाहिए। —डॉ बाबूराम शास्त्री

## डा. भारतीय जी का सम्पादक के नाम पत्र

श्री सम्पादक जी,

पुनर्गठन का 15 फरवरी का अंक कलेवर में लघु होने पर भी सारगर्भित सामग्री से परिपूर्ण है। आपने आर्यमित्र के कुम्भ और गंगा विषयक लेख पर जो अपना सम्पादकीय दिया है उससे आर्यसमाजियों की आंखे खुलनी चाहिए। वस्तुत. आज के आर्यसमाजी पत्र कुछ ऐसे लोगों के हाथों में चले गये हैं जो ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों से अपरिचित हैं ही, सिद्धांत विरुद्ध सामग्री को प्रमुखता देकर छापने में भी उन्हें कोई संकोच नहीं होता। तभी तो कुम्भ की प्रशंसा और गंगा को त्रिभुवन तारिणी कहा जाता है। अन्यथा क्या स्वामी दयानन्द का कोई अनुयायी गंगा स्नान को पाप नाशक मानेगा ? इस सम्पादकीय के लिये मेरी बधाई स्वीकार करें।

—डा भवानीलाल भारतीय,
पंजाब विश्वविद्यालय,

## आर्य समाज अजमेर द्वारा प्रकाशित साहित्य

### प्रो दत्तात्रेय आर्य द्वारा लिखित पुस्तकें

1 दश, धर्म और हिन्दू समाज को आर्य समाज की देन—मूल्य 0 50 पैसे
2 हमारी राष्ट्रीयता का आधार-मूल्य रु 1 00
3 विद्यार्थियो के लिए आचार सहिता—मूल्य 0 50 पैसे
4 दी आर्यसमाज हिन्दू विदाउट हिन्दु इज्म (वर्मा जी)—विशेष रियायती दर रु 75 00
5 आर्यसमाज हिन्दू धर्म का सम्प्रदाय नही-मूल्य—50 रु
6 आयसमाज दी मोस्ट पावरफुल मुवमेंट
(सा दे सभा द्वारा प्रकाशित)—5 00 रु

### दयानन्द शोधपीठ के प्रकाशन

1 दयानन्द कथा सग्रह मूल्य रु —3 00
2 महर्षि दयानन्द पत्रो के दर्पण मे मूल्य रु —50 00

### अन्य प्रकाशन

1 धर्म शिक्षा (भाग 1 से 11 तक) पूरे सैट का मूल्य रु 32 00
2 परिचय निर्देशिका (समस्त देश-विदेश की आर्य शिक्षण संस्थाओ का परिचय)—मूल्य रु 12 00
3 आय समाज (हिन्दी) मूल्य सजिल्द 20 00 रु अजिल्द 16 00
ले लाला लाजपतराय

## सत्यार्थ-प्रकाश ग्रन्थ माला 15 भाग

(प्रत्येक समुल्लास पर स्वतत्र टैंक्ट)

| | |
|---|---|
| 1-ईश्वर एक नाम अनेक | 9-स्वर्ग और नरक कहा है? |
| 2 आदर्श माता-पिता | 10-चौके चूल्हे मे धर्म नहीं |
| 3 शिक्षा और चरित्र निर्माण | 11-हिन्दू धर्म की निर्बलता |
| 4 गृहस्थाश्रम का महत्व | 12-बौद्ध और जैनमत |
| 5 सन्यासी कौन और कैसा हो? | 13-वेद और ईसाई मत |
| 6- राज्य व्यवस्था | 14-इस्लाम और वैदिक धर्म |
| 7-ईश्वर और वेद | 15-सत्य का अर्थ तथा प्रकाश |
| 8-जगत की उत्पत्ति | |

विशेष—सभी टैंक्ट आय जगत के चोटी के विद्वानो के द्वारा लिखित है एव ग्रन्थमाला का सम्पादन आय समाज अजमेर के प्रधान प्रो दत्तात्रेयजी आर्य ने किया है। ग्रथमाला के सैट का मूल्य 8/ रुपये है।



## आर्य मित्र के...

(शेष पृष्ठ 1 का)

कुरीतियों एव रूढियों को दूर नहीं किया जाता तब तक हिन्दुओं की समस्याए समाप्त नही हो सकती।

एक ओर कहा प. विश्वबन्धु जी व्यास जैसे वयोवृद्ध आर्य विद्वान शास्त्रार्थ युग की वापिसी का आह्वान कर रहे है, वही दूसरी ओर आप जैसे व्यक्ति भी हैं जो हिन्दू समाज पर सकट का नारा लगाकर आय समाज को समझौतावाद का पाठ पढा रहे हैं। धिक्कार है आपको! ऋषि दयानद की आत्मा आप जैसे कृतघ्नों को कभी क्षमा नही करेगी।

फिर हिन्दुओं को सगठित करने का उत्तरदायित्व क्या आप पर ही है? हिन्दुओ का मार्ग-दर्शन करने के लिए तो उनके स्वय के अनेको सगठन हैं। आपको तो हिन्दुओ के सगठन से अधिक आर्य समाज के भविष्य की चिंता होनी चाहिए। आखिर आर्य समाज की जागरूकता एव गतिशीलता स्वय हिंदुओ के भी हित में।

...राज के प्रकरण मे ...मित्र' मे प्रकाशित 'महाकुम्भ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि' के समर्थन मे आप जैसे कुछ निराधार तर्क ही मुझे आर्यमित्र' के प्रबन्ध सम्पादक बन्धुवर श्री इन्द्रदेव पाठक ने अपने पत्र मे दिए थे। मेरे द्वारा दिए गए उनके पत्र के उत्तर को मैं पाठको के अवलोकनार्थ प्रकाशित कर रहा हूँ।

इसके अतिरिक्त मेरे 'आर्य पुनर्गठन' मे प्रकाशित लेख के समर्थन मे आए मान्य डॉ भवानीलाल जी भारतीय के पत्र को भी पुनर्प्रकाशित कर रहा हूँ। इन्हें ध्यानपूर्वक पढने से आपको सत्यता का प्रकाश मिल सकेगा, ऐसी आशा है।

श्री विनय प्रताप कहते हैं कि भविष्य मे मेरी ऐसी गैर जिम्मेदाराना उच्छृखलता को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा और मेरे विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी। मै उनकी यह चुनौती स्वीकार करता हू और अपनी पूरी शक्ति से यह घोषणा करता हू कि यदि भविष्य मे फिर कभी 'आर्यमित्र' या आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के अधिकारियो ने आर्य समाज के सिद्धात विरुद्ध विचारो का प्रचार-प्रसार किया तो मैं उसका लेखकीय विरोध करने वाला प्रथम व्यक्ति होऊगा। और रही आपकी अनुशासनात्मक कार्यवाही की धमकी तो उस पर गालिब के एक शेर को मैं यू कहना चाहूगा—

हमें मालूम है आपकी शिद्दत
लेकिन,
दिल को बहलाने का 'प्रताप'
का ख्याल अच्छा है।

मुझे न चाहते हुए भी इस लेख मे कुछ कठोरता से काम लेना पडा है। इसमे मेरी विवशता थी, क्योंकि आप (श्री विनय प्रताप) [illegible] को समझते हैं और मुझे, आपको समझाना ही अभीष्ट था।

और अन्त मे चलते-चलते—
लफ्ज गू गे हैं भला वो क्या
सफाई देगे।
दिल को छू लेगे जो सुनाई
देगे।



स्वत्वाधिकारी आयसमाज अजमेर के लिए प्रकाशक एव सपादक रासासिंह हेतु रतनलाल गग द्वारा श्री आर्य प्रिन्टर्स बाबू मौहल्ला केसरगज, अजमेर मे मुद्रित एव आर्य समाज भवन, अजमेर से प्रकाशित।

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सकल जगत को आर्य बनाए।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने मे सदा उद्यत रहना चाहिए।
—महर्षि दयानन्द

# आर्य पुनर्गठन

आर्य समाज, अजमेर का हिन्दी पाक्षिक पत्र

'आर्य हमारा नाम है वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म॥'

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एवं भविष्य मे पैदा होने वाली समस्याओ को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 6 बृहस्पतवार 15 जून, 1989
अंक 11 प स -43383/84

अभय मित्रादभयम अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु॥

ज्येष्ठ शु 11 संवत 2046
वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60 पैसे

# 'आर्यमित्र' का 'दैवी' चमत्कार

—वीरेन्द्र कुमार आर्य—

ऐसा प्रतीत होता है कि आज-कल 'आयमित्र' के सचालको ने आय समाज विरोधी मान्यताओ के प्रचार-प्रसार का बीडा पूरी तरह उठा लिया है। इस पत्र के प्राय हर दूसरे अक मे वैदिक सिद्धात विरोधी सामग्री देखने को मिल रही है।

पिछले दिनो 'आयमित्र के कुम्भ विषयक लख पर जब हमने विरोध व्यक्त किया था तो 'आर्यमित्र के सचालक अपनी भूल स्वीकारने के स्थान पर उल्टे हमे ही पाखण्डी बनाने लगे। हम पर व्यक्तिगत आक्षपो की झडी भी लगाई गई। इस काम के लिए किन्ही विनयप्रताप को माध्यम बनाया गया और अपन पक्ष मे बेतुके और सदर्भहीन तक दिए गए। यहा तक कि हमारे विरुद्ध अनुशासनात्मक कायवाही करन की धमकी भी दी गई।

परन्तु सिद्धान्त के मामले मे हम किसी भी विरोध के सामने झुकने वाले [illegible] अब फिर आयमित्र के गत दो अको मे हमे कुछ सिद्धात विरोधी सामग्री देखन को मिली है। उस पर आयजगत का ध्यान आकर्षित करना हम अपना कर्त्तव्य समझते हैं।

आय मित्र मे प्रकाशित पौराणिक धर्म से प्ररित एक कविता पर बधुवर श्री धर्मवीर जी शास्त्री टिप्पणी कर रहे हैं (देख बाक्स) तथा अन्य एक पर हम।

'आयमित्र' के 11 जून 1989 के अक मे स्वामी आनदबोध जी के एक दुघटना मे बाल बाल बच जाने का समाचार प्रकाशित हुआ है। यह प्रसन्नता की बात है कि स्वामीजी बच गए। हमारी प्रभु से यही प्राथना है कि वे दीर्घायु हो। लेकिन 'आयमित्र न स्वामीजी के बच जाने को एक दैवी चमत्कार' करार दिया है। बहुत खूब! क्या कहने हैं आपके! क्या आपको इतना भी नही मालूम कि यह आयसमाज व ऋषि दयानन्द की मान्यताओ के विपरीत है।

एक साधारण आर्य जन भी यह जानता है कि आयसमाज 'दैवी चमत्कारो के पाखड मे विश्वास नही करता। आयसमाज की स्थापना तो ऋषिवर न ऐसे पाखडो का समाप्त करन के लिए ही की थी। और विडम्बना देखिए कि उन्ही के नाम का दम भरन वाले ये नामधारी आय ही उनकी मान्यताओ के विपरीत आचरण कर रहे है।

'आर्यमित्र' आर्यसमाज का पत्र है। इसके प्रकाशन मे आय जना का धन व्यय होता है। आर्यजनो को इस तरह इसे पौराणिको का हथियार नही बनने देना चाहिए।

पत्र आय समाज का और उससे प्रचार-प्रसार पौराणिक हिंदू धर्म का, ये बहुत ही खेदजनक और चिंतनीय विषय है। इस पर अविलम्ब रोक लगाई जानी चाहिए। अब इस सिद्धात विरोधी कार्य की और अनदेखी करना ऋषि के प्रति द्रोह होगा।

आर्य पुनर्गठन' आर्यमित्र को 'छदमवेशी पौराणिको के शिकजे से निकालन का आयजनो का आह्वान करता है।

***

## 'आर्यमित्र' या 'आर्यामित्र'

—धर्मवीर शास्त्री—

आय समाज अपने मार्ग से भटकता-सा प्रतीत हो रहा है। स्थिति ऐसी बनती जा रही है कि आयसमाजो मे सिद्धात की, महर्षि दयानन्द सम्मत विचार-धारा की बात कहना भी पाप नही तो कठिन अवश्य हो गया है। सिद्धात के स्थान पर समन्वय की प्रवृत्ति पनपनी जा रही है। इसका अन्तिम परिणाम स्वय आय समाज के लिये घातक होगा इसमे सन्देह नही है।

इस समन्वयवादी प्रवृत्ति के दर्शन 'आयमित्र' मे प्राय हो जाते है। श्राद्ध (मृतक का) चर्चा का विषय बन चुका है। अच्छा होता यदि श्राद्ध कर ही लिया था तो खेद की अभिव्यक्ति के साथ श्राद्ध-कर्ता बात को समाप्त करने का प्रयास करते। पर इसके उलट उसके औचित्य को सिद्ध करने के असफल प्रयत्न किये गये।

अब दूसरी घटना चर्चित पत्र के कुम्भ विषयक सम्पादकीय की है। जरा बताय कि गगा पर कोई पौराणिक लिखता तो क्या उसके भाव और शब्दावली भिन्न होते। महर्षि सत्कम को पाप के नाश का हेत कहते है और हमारे आय-मित्र (?) गगा को पापनाशिनी कहते हैं। ताप-नाशिनी कहते तो भी बात सध जाती।

मैं चर्चित पत्र की एक तीसरी और ताजी हरकत की ओर आर्य बन्धुओ का ध्यान आकर्षित करना चाहता हू। 21-5-89 का 'आयमित्र' का अक देखें। उसमे एक गद्य-पद्य की खिचडी-सी कविता (?) छपी है। शीषक है— क्रान्ति पथ पर बढ चलो। हमने पढी और रचयिता का आदेश मान कर आगे बढ गये। आगे देखा तो मिला—'मत पडो विवाद मे साकार-निराकार का यहा विवाद को की से जोडकर स्त्रीलिग मे डाल दिया है सो तो विवाद ही जाने। हम विवाद के लिग विषयक विवाद मे नही पडते। हमारी चिन्ता का विषय तो यह है कि यह दयानन्द का दीवाना दयानन्द के बलिदान को प्रथवत्ता प्रदान करने के लिये आर्यों को साकार-निराकार के विवाद से बचन की शिक्षा (?) दे रहा है।

वाह रे रचनाकार! और वाह रे सम्पादक!! क्या खूब! पौराणिक भी हमसे जो कहने का साहस न करते वह हमारी ही प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र हमसे कह रहा है। बरेली मे बैठे विश्वश्रवा जी शास्त्रार्थी तैयार करने की प्रेरणा देते हैं और यह उनसे कुछ ही दूर (लखनऊ) का आर्य समाज का पहरूआ आयमित्र (?) शास्त्रार्थ-सग्राम से अपना दावा ही वापस ले रहा है।

कुम्भ विषयक सम्पादकीय के विषय मे किन्ही श्री विनय प्रताप ने जो अनय-अविनय का प्रदर्शन कर अपना समय बर्बाद किया है क्या उसका कोई विधायक परिणाम निकल सकता है? दो पन्ने का पत्र

(शेष पृष्ठ 4 पर)

निदेशक दत्तात्रेय आर्य  प्रधान सपादक रासासिह  सपादक वीरेन्द्र कुमार आर्य  ☎ कार्या 21010

## संपादकीय

# बातें तो बहुत छोटी, परन्तु सिद्धान्तत : खोटी ?

'आर्य पुनर्गठन' आर्य जगत को सिद्धांतो के प्रति जागरूक सचेष्ट करने के लिए निरन्तर प्रयासरत है। इसी कडी मे हम आर्यजनो के विचारार्थ दो तीन छोटी-छोटी बातें प्रस्तुत कर रहे हैं जो आर्य सिद्धातो की दृष्टि से तथा महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों के सर्वथा विरुद्ध हैं, फिर भी प्रचलित होती जा रही हैं—

1 कई बार विभिन्न महापुरुषो की जयन्तिया, जन्मदिवस, बरसी आदि मनाये जाते हैं। उस अवसर पर उनका चित्र किसी ऊचे स्थान पर सम्मान की दृष्टि से रखा जाता है। यहा तक तो ठीक है पर कई समारोहो मे उन चित्रो पर भी माला पहनाई जाती है तथा उसके सामने अगरबत्ती आदि भी जलाई जाती है। ऐसा करना आर्य समाज के सिद्धातो की दृष्टि से उचित नही कहा जा सकता।

2 बहुधा जब किसी आर्यनेता का निधन होता है तो उनकी दिवगत आत्मा की शान्ति सद्गति की कामना हेतु तथा गृह शुद्धि यज्ञ करने के लिए जो आयोजन होता है वहा भी मेज पर उस सम्मानित आर्यपुरुष का चित्र रखा जाता है और फिर उसके आगे फूल या मालाये आदि भी श्रद्धावश रख दी जाती हैं। क्या यह आर्य सामाजिक दृष्टि से उचित कहा जा सकता है ?

3 जब आर्य जनो की भी शव-यात्राय आदि निकली हैं तो उस पर भी मुर्गा घृत आदि का दृष्टि से सम्मान और श्रद्धावश मालाए आदि धारण कराई जाती है। रास्ते मे आर्य सस्थाओ या समाजो की ओर से अथवा आर्यजनो द्वारा शव के प्रति सम्मान प्रगट करने के लिए मालाए आदि अर्पित की जाती है श्रद्धासुमन अर्पित किये जाते हैं। क्या ऐसा करना भी सिद्धातो की दृष्टि से आर्यजनोचित है ?

4 महर्षि दयानन्द की सस्कार विधि के अनुसार तो 'भस्मान्त शरीर' अर्थात शरीर का अन्त भस्म है। अन्त्येष्टि सस्कार के अलावा कोई कार्य शेष नही रहता। पर तीसरे दिन उठावने पर 'शान्ति यज्ञ' या गृहशुद्धि यज्ञ का आयोजन होता है, उसके बाद भी बारहवी या तेरवी नही मानने पर भी शोकपूरित श्रद्धाजलि प्रस्तुत करने के नाम पर पुनः शान्ति यज्ञ आदि का आयोजन कई अवसरो पर किया जाता है तो आर्य सैद्धान्तिक दृष्टि से उचित नही कहा जा सकता।

आर्यसमाज मूर्तिपूजा का घोर विरोधी है। जडपूजा नही करता फिर चित्रो को माला पहनाना शव पर मालाए चढाना आदि क्या जडपूजा की श्रेणी मे नही आ जाते ? अथवा सिद्धान्त व्यवहार और लोकाचार की दृष्टि से क्या करना चाहिए ? इसका हमारी धर्मार्य सभा की ओर से स्पष्ट व्यवस्था होनी चाहिए ताकि सब उसका पालन कर सकें। सिद्धान्त विरुद्ध शवो की कपाल क्रिया नही करके पूर्ण आहुति के नाम पर कुछ करना भी कहा तक युक्ति सगत है।

आजकल कई आर्य विद्यालयो सस्थाओ मे इधर सरस्वती वदना और स्तुति की जाने लगी है। पौराणिक जगत मे सरस्वती विद्या की देवी मानी जाती है। यदि हमारे यहा भी कला के नाम पर मगलाचरण के रूप मे सरस्वती के चित्र अथवा वदना स्तुति आदि शुरू हो गये तो फिर सिद्धान्त का हनन होने लग जायगा। यज्ञो के अवसर पर अगर तगर धूप नैवेद्य कुमकुम अक्षत, राखी कलावा आदि का प्रयोग तिलक आदि लगाना, यजमान और पुरोहित द्वारा तिलक धारण करना आदि के सम्बन्ध मे भी थोडे बहुत अन्तर के साथ सर्वत्र मनमाना आचरण होने लगा है।

जैसे मैने प्रारम्भ मे ही कहा कि ये बातें बहुत छोटी हैं परन्तु धीरे 2 पनपती चली जा रही हैं जो सिद्धातो की दृष्टि से खोटी हैं, अनुचित है। अतः इस ओर भी आर्य विद्वानो को, धर्मार्य सभा को विचार कर आर्य जगत को स्पष्ट दिशा निर्देश देने चाहिये जिससे आगे जाकर कुसस्कार नही पनपे और सिद्धान्तो की अनुपालना हो सके।

---

# स्वाध्यायशील बनो

पहले बडे से बडे विद्वानो से लेकर सामान्य से सामान्य आर्य जन भी स्वाध्यायशील होते थे। सिद्धान्तो की पूरी जानकारी रखते थे। सिद्धान्तो पर चर्चा करने को तत्पर रहते थे। हर आर्य के घर मे वेद तथा आर्य साहित्य रहता था। समाजो मे भी महर्षि दयानन्दजी ने पदाधिकारियो मे अन्य पदो के साथ-2 पुस्तकाध्यक्ष बनाने की भी बात की थी। आज भी समाजो मे यह पद होता है। समाजो के अपने पुस्तकालय भी होते थे। परन्तु आज सिद्धान्त की पुस्तको को पढने वाले बहुत कम रह गये है। स्वाध्याय की परम्परा लुप्त सी होती चली जा रही है। कोई आर्य साहित्य नही खरीदना चाहता। कोई पढना नही चाहता। आर्य पत्र-पत्रिकाओ के पढने वाले प्रेमी बहुत कम होते जा रहे हैं जो चिन्तनीय एव विचारणीय है। जब हमारे विचार बनेगे सुसस्कारित होंगे, परिपक्वता आयगी तभी हमारा कार्य भी तदनुरूप श्रेष्ठ होने लगेगा। अत स्वाध्याय करना अत्यन्त आवश्यक है। हर आर्य जन को इसे अपनी दिनचर्या का अग बना लेना चाहिये। कहा भी गया है—'स्वाध्यायान्माप्रमद' अर्थात स्वाध्याय से प्रमाद मत करो। महर्षि ने इसीलिए कहा था कि "वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

—रासासिंह

---

## दयानन्द उवाच

# सृष्टि-विद्या-विषय

—डा बाबूराम शास्त्री—

जिज्ञासु स्वामी! सृष्टिकर्त्ता कौन है ? उसका स्वरूप क्या है ?

दयानन्द सृष्टि का कर्त्ता ईश्वर है। जब यह कार्य-सृष्टि उत्पन्न नही हुई थी—तब एक सर्वशक्तिमान परमेश्वर और दूसरा जगत का मूल कारण अर्थात् बनाने की सामग्री—प्रकृति, वर्तमान थी। उस समय न तो असत् था और न ही सत् था—परमाणु न थे और अपर व्योम भी नही था। न मृत्यु थी—न ही अमृतत्व—उस समय बिना वात के ही तत एकम पद वाच्य परात्पर ब्रह्म स्वसामर्थ्य से प्राणवान था—उससे उत्कृष्ट कोई तत्व नही था। उस ब्रह्म या पुरुष के तपस से सत्व-रजस तमस की साम्यावस्था रूप प्रकृति मे क्षोभ उत्पन्न हुआ जिससे महद ब्रह्म या महत्तत्व का उत्पत्ति हुई। महत्तत्व से अहकार-अहकार से पचतन्मात्राए और एकादश-इन्द्रिया—पचतन्मात्राओ से पच-महाभूत और पचमहाभूतो से सम्पूर्ण भूत-भौतिक प्रपच का उत्पत्ति हुई। सहिताभाग मे हिरण्यगर्भ समवर्तताग्रे कह कर इसी सिद्धात की पुष्टि की गयी है। श्वेताश्वतरोपनिषद ने 'अजामेका लोहित शुक्ल-कृष्णा मत्र मे सृष्टि के मूल उपादान अर्थात प्रकृति की चर्चा की है और उपादानत्वेन उसे सृष्टि का कारण बतलाया है—यह प्रकृति अजा है कभी जन्म नही लेती अर्थात अनादि है और लोहित शुक्लकृष्णा रजस-सत्व-तमस है। रूप प्रकृति जड होने से स्वय सृष्टि रूप कार्य करने मे असमर्थ है—जब चेतन पुरुष का सान्निध्य उसे प्राप्त होता है तो वह सर्गोन्मुख होती है। सृष्टि का निमित्त कारण जो परमेश्वर है—उसे ही अग्नि, आदित्य, वायु चन्द्रमा शुक्र, ब्रह्म आप, प्रजापति सुपर्ण, इन्द्र, वरुण, रुद्र, विष्णु, हिरण्यगर्भ, प्राण स्कम्भ आदि नामो से जाना जाता है। सहस्रशीर्षाक्षिपाद पुरुष भी वही है—भूत, भविष्यत, वर्तमान स्थावर जगमात्मक विश्व उसी की सामर्थ्य से प्रकट होता है। जगत कार्यकर्ता और अधिष्ठाता वही है—वही सारे जगत का स्वामी है। उसी की सामर्थ्य से, ग्राम्य, आरण्य और वायव्य पशुओ का जन्म होता है—मनुष्यो के चारो वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र उसी से जन्म लेते हैं। उसके मन से चन्द्रमा चक्षु से सूर्य, श्रोत्र से वायु-प्राण, और मुख से अग्नि की उत्पत्ति हुई है। उसकी नाभि से अन्तरिक्ष, शीर्ष से द्युलोक पद से भूमि और श्रोत्र से दिशाए उत्पन्न हुई हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि परमेश्वर की महिमा ही यह सम्पूर्ण चराचर जगत है किंतु वह इतना ही नही है सम्पूर्ण जगत तो उसका एकपाद मात्र है—उसके तीन पाद तो अमृत हैं—उर्ध्वलोको मे है, क्योकि परमेश्वर या ब्रह्म चतुष्पाद् है। इसी तथ्य को पुरुष सूक्त मे 'त्रिपादूर्ध्व उदैत पुरुष पादोऽस्येहाऽभवत पुन" के द्वारा उदघाटित किया गया है।

# स्वर्गीय श्री रामनारायण जी चौधरी : कुछ संस्मरण

जैसा मैंने सात अप्रैल को स्वर्गीय रामनारायण जी चौधरी के निधन के तीसरे दिन आयोजित शांति यज्ञ के अवसर पर अपने संक्षिप्त शोक संवेदना संदेश में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा था कि चौधरी जी के निधन के साथ अजमेर ही नहीं राजस्थान में एक प्रकार से गांधीवादी युग समाप्त हो गया है। चौधरी जी स्वयं अपने आपको निष्ठावान गांधीवादी व सार्वजनिक कार्यकर्त्ता कहते थे और अंतिम क्षणों तक यहां प्रदेश में लोग सर्वत्र उन्हें इसी रूप में जानते और पहचानते थे।

वे लगभग 94 वर्ष के थे। इस प्रकार मुझसे आयु में लगभग 14 वर्ष बड़े होने पर भी उनके साथ मेरा एक निकटतम मित्र जैसा संबंध था। मुझे इसलिए अंतिम वसीयत को कार्यान्वित करने का उत्तरदायित्व देकर उन्होंने 'मेरे परम स्नेही व दुख सुख के साथी' कहा है। अपना वसीयत में उन्होंने अन्य बातों के अतिरिक्त अपनी यह हार्दिक भावना भी व्यक्त की कि उनके शोक में कोई सभा या जुलूस आयोजित न किया जाय। किंतु मेरे व अनेक मित्रों व प्रशंसकों की राय है कि उन्होंने इस प्रकार के आदेश द्वारा जहां अपने गांधीवादी आदर्श का परिचय दिया है वहां उन जैसे देशभक्त स्वतंत्रता सेनानी और गांधीवादी विचारक एवं कर्मठ कार्यकर्त्ता के प्रति उनके प्रशंसकों व देशवासियों का भी जो कर्तव्य है उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

## मेरा परिचय

अपने विद्यार्थीकाल में ही मेरा वर्धा से आए श्री जी आर पांडे जैसे क्रांतिकारी और बाद में यहां ग्राम सेवा संघ के तत्वावधान में काम करने वाले स्व श्री विजयसिंह पथिक तथा श्री रामनारायण चौधरी जैसे प्रमुख कार्यकर्त्ताओं से सम्पर्क रहा है। स्व श्री अर्जुनलाल जी सेठी उस समय लोकमान्य तिलक के विचारों का प्रतिनिधित्व करते थे। अपने कुछ तीन चार सहपाठियों के साथ मैं उनके यहां अंग्रेजी पढ़ने जाया करता था किंतु शीघ्र ही यह स्पष्ट हो गया कि सेठी जी का उद्देश्य केवल अंग्रेजी ट्यूशन करना ही नहीं था बल्कि हम जैसे नवयुवकों को अपने विचारों से दीक्षित करना था। स्वर्गीय श्री अर्जुनलाल जी सेठी के संबंध में किसी अन्य अवसर पर मैं अपने संस्मरण व्यक्त करूंगा।

स्वर्गीय श्री चौधरी जी से इस बात का इतना ही संबंध है कि बाद में यहां जब गांधीवादी कार्यकर्त्ताओं का पदार्पण हुआ उस समय मुझे उनके और अधिक सम्पर्क में आने का अवसर प्राप्त हुआ। इन लगभग 60 वर्षों में घटी अनेक छोटी मोटी घटनाओं का स्मरण और विवरण यहां संभव नहीं है। इसलिए मैं केवल उन्हीं अनुभवों का जिक्र करूंगा जिनका स्वर्गीय श्री चौधरी जी से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध रहा है।

## लेखन और सम्पादन

चौधरी जी एक कुशल और प्रभावशाली सम्पादक थे। हिंदी अंग्रेजी दोनों के सिद्धहस्त लेखक थे।

**—आचार्य दत्तात्रेय आर्य—**

जिस समय की घटना मुझे आज स्मरण आती है उस समय संभवतः वे तरुण राजस्थान निकालते थे। कुछ समय बाद उन्होंने वर्तमान दैनिक नवज्योति का प्रकाशन आरम्भ किया। इनमें कुछ लेखों को तत्कालीन अंग्रेज सरकार ने आपत्तिजनक घोषित कर उनसे जमानत की रकम मांगी। इस कार्य में डूंगरपुर के महारावल श्री लक्ष्मणसिंहजी जी व स्व पंडित जियालाल जी द्वारा उन्हें उपलब्ध कराई गई राशियों का चौधरी जी स्वयं जिक्र करते थे।

एक बार उन्होंने यहां के प्रसिद्ध नवयुवक सभापति सर भागचंद सोनी से ये राशि उपलब्ध कराने के लिए प्रेरित करने का कार्य मुझे सौंपा। मुझे इस पर आश्चर्य हुआ। ये सही है कि स्व भागचंद जी का स्व पण्डित जियालाल जी से घनिष्ठ संबंध था। किंतु मेरा उनसे कोई व्यक्तिगत परिचय नहीं था। और न ही इस प्रकार का कार्य मेरी रुचि के अनुकूल था। फिर भी चौधरी जी के आग्रह पर मैंने जब यह संदेश उनके सामने रखा तो उन्होंने स्व जियालाल जी के मार्फत सहयोग देना स्वीकार कर लिया।

जैसा सर्वविदित है कि देश की सामाजिक-धार्मिक ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय जागृति में भी आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। राजस्थान में स्वामी जी के विचारों का उनके जीवनकाल में पर्याप्त प्रभाव था। महात्मा गांधी के राष्ट्रीय आंदोलन में भी अनेक नवयुवक ऐसे थे जो आर्य समाज के इन्हीं विचारों से प्रेरणा लेकर आये थे। स्व चौधरी जी भी उन्हीं में से एक थे। एक पुरातन पंथी वैश्य परिवार में उत्पन्न होने पर भी उनके धार्मिक और सामाजिक जीवन में आर्य समाज के सुधारवादी आंदोलन का बड़ा प्रभाव था। जिसकी वे अक्सर चर्चा किया करते थे। उनके द्वारा सम्पादित पत्रों में शायद वे इसलिये मुझे कुछ लिखने की प्रेरणा दिया करते थे। और इस प्रकार मेरा उनका व्यक्तिगत सम्पर्क प्रारंभ होकर घनिष्ठ होता गया।

## कांग्रेस का गठन

सन् 1920 तक अजमेर का सार्वजनिक जीवन मुख्यतः आर्य समाज और उसके कार्यकर्ताओं पर ही केन्द्रित था। श्री अर्जुनलाल सेठी ने बाद में लोकमान्य तिलक की विचारधारा के आधार पर यहां एक सीमित राजनैतिक प्रवृत्ति का प्रारम्भ किया। देशी राज्यों की समस्याओं से संबंधित कुछ अन्य कार्यकर्ताओं ने देशी राज्य प्रजा परिषद के द्वारा अजमेर को ही अपना केन्द्र बनाया था। कांग्रेस का नेतृत्व महात्मा गांधी के हाथ में आने पर उनके अनुयायी कुछ प्रमुख कार्यकर्ता बाहर से यहां आये या भेजे गये ताकि वे यहां तथा राजस्थान में कांग्रेस के राजनैतिक और गांधीवादी रचनात्मक कार्य को संगठित करें।

इन कार्यकर्ताओं को श्री जमनालाल बजाज अथवा बिड़ला जी से आर्थिक सहयोग भी मिलता था। इन्हीं दिनों खिलाफत आन्दोलन के कारण स्थानीय मुसलमानों के नेता मिर्जा अब्दुल कादिरबेग प्यारे मियां आदि कांग्रेस के साथ थे। अर्जुनलाल सेठी अपनी विचारधारा तथा स्थानीय नेतृत्व के कारण एक प्रकार से यहां के राजनैतिक प्रतिनिधि थे। इसलिये नवीन आये हुए गांधीवादी कार्यकर्ताओं से उनका यहां की राजनैतिक सत्ता व नेतृत्व के लिये संघर्ष होना स्वाभाविक था। इसमें इन गांधीवादी कार्यकर्ताओं ने पं जियालाल जी से सहायता व सहयोग मांगा। दूसरी ओर अर्जुनलाल जी को स्थानीय मुसलमानों का समर्थन था। यह भी एक कारण था कि जिससे प्रभावित होकर पंडित जी ने श्री हरिभाऊ उपाध्याय आदि को इस संघर्ष में सहायता दी क्योंकि पं जियालाल जी खिलाफत आंदोलन के प्रभाव को मुस्लिम साम्प्रदायिकता का प्रतीक समझते थे। अस्तु, परिणाम यह हुआ कि स्थानीय कांग्रेस पर अधिकार के इस संघर्ष में सारा नेतृत्व और संगठन पं जियालालजी ने स्वयं अपने हाथों में ले लिया। उनके द्वारा सबसे अधिक सदस्य बनाये गए और उस समय के नियमानुसार सबके लिए खद्दर के कपड़े बने। चुनाव के पूर्व अधिकांश मतदाता आर्य समाज भवन से खद्दर के कपड़े पहन कर गए और इस प्रकार भारी बहुमत से पंडित जी द्वारा समर्थित दल की विजय हुई। दूसरे शब्दों में यह कहना अनुचित न होगा कि स्थानीय कांग्रेस किसके हाथ में हो इसका निर्णय पंडित जी के प्रभाव तथा सहायता से हुआ। यद्यपि वे स्वयं न कांग्रेस के सदस्य थे और न ही उसमें कोई पद या अधिकार के लिये उम्मीदवार ही थे। इसके बाद कई वर्षों तक पंडित जी कांग्रेस में एक प्रकार से किंगमेकर बने रहे और जब इन नवीन सत्ताधारी कार्यकर्ताओं में भी आपस में झगड़े व संघर्ष होने लगे तो उनकी मध्यस्थता का कार्य भी अक्सर पंडित जी को करना पड़ता था। उदाहरण के लिए सन् 1938 में राज के तत्कालीन शिक्षामंत्री श्री हरिभाऊ उपाध्याय श्री नरसिंह दास जी (बाबाजी) श्री रामनारायण जी चौधरी आदि में कांग्रेस के संगठन व पदाधिकारों के मामलों में गंभीर मतभेद उत्पन्न हो गए मामला महात्मा गांधी तक पहुंचा और उन्होंने सलाह दी कि दोनों पक्षों में से एक कांग्रेस से अलग होकर दूसरे पक्ष को सत्ता सौंप दे। गांधी जी ने आदेश दिया कि श्री हरिभाऊ जी व उनके साथी रचनात्मक कार्य करें।

क्रमशः

पत्र और विचार

## आचार्य दत्तात्रेय जी के नाम आचार्य विशुद्धानन्द जी का पत्र

आदरणीय महोदय,

सादर नमस्ते !

मै चिरकाल से आपको क्रांतिकारी प्रयासो और आर्य समाज मे सक्रिय भूमिका के सजग प्रणेता के रूप मे देख रहा हू । सार्वदेशिक सभा मे आपने नये-नये क्राति जनक प्रस्ताव और सुझावो के माध्यम से आर्य जगत को प्रशस्त मार्ग दर्शन का सराहनीय कार्य किया है।

कुछ दिनों पूर्व अवगत हुआ कि संविधान की धारा 30 के अन्तर्गत आर्य समाज को विशेष अधिकार दिलाने की दिशा मे आपने आर्य सस्थाओ के समुदाय के सरक्षण करने के लिये न्यायालय में एक वाद प्रस्तुत किया है। उत्तर प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा न कभी इस दिशा मे प्रयास कुछ किया था अत मै वह निराश हो बैठ गई या यह भी सुनने मे आया है कि उच्चतम न्यायालय मे एतद विषयक कोई विवाद निलम्बित है यदि हो भी तो निष्क्रिय और निष्फल है।

प्रसन्नता का समाचार मिला है कि आपने शैक्षिक विकास के लिये शासन से एक करोड रुपया भी प्राप्त कर लिया है। आपकी चतुर्मुखी प्रगति और अथक प्रयासों पर किसी को स्पर्द्धा हो तो गर्व का विषय होगा, परन्तु अभी तक आपकी पहुँच लेखनी तथा सामाजिक कार्यक्षेत्र मे अछूती बनी हुई है। इस आयु मे एक ओर लेखनी प्रसूत कई दर्जन-ग्रन्थ व लेख सम्पादन दूसरी ओर समाजोद्धार के लिये प्रयत्नशील रहने की मैं मुक्त कंठ से प्रशंसा करूंगा।

—आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री
वेदार्थ कल्पद्रुम प्रणेता,
बदायू (उ प्र)

## प्रतिक्रिया आवश्यक थी

'आर्य पुनर्गठन नियमित रूप से मिल रहा है। आपकी दिशा एकदम समयोचित है। आपके इस पाक्षिक के लिए हार्दिक शुभकामनाएं, । 'आर्य मित्र' के लेख पर आपके पत्र की प्रतिक्रिया आवश्यक थी । 30 मई का आपका सपादकीय स्तुत्य है।

पुनश्च बधाई।

—सदाशिव आर्य,
प्राचार्य मास्टर दीनानाथ
मगेशकर महाविद्यालय,
शहाजानी (महाराष्ट्र)

## महारावल के निधन पर शोक व्यक्त

वरिष्ठ शिक्षाविद एव अजमेर की आर्य शिक्षण सस्थाओं के सचालक आचार्य दत्तात्रेय आर्य ने डूगरपुर के पूर्व महाराजा महारावल लक्ष्मणसिंह के निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त किया है।

स्व महारावल के के नाम भेजे अपने शोक सदेश मे आचार्य दत्तात्रेय न लिखा है कि महारावल जी ने राजनैतिक एव सार्वजनिक जीवन मे जिन सैद्धांतिक आदर्शों को प्रतिपादित किया उसका वर्तमान मे दूसरा उदाहरण मिलना कठिन है।

उल्लेखनीय है कि स्व महारावल लक्ष्मणसिंह दयानद कालेज, अजमेर के प्रमुख सस्थापकों मे स एक थे। और वे जीवन पर्यन्त अजमेर की आर्य सस्थाओ स जुडे रहे। उनके शोक मे आर्य समाज शिक्षा सभा की समस्त शिक्षण सस्थाएं को एक दिन के लिए बन्द कर दिया गया।

## 'आर्यमित्र' या 'आर्यामित्र'

(शेष पृष्ठ 1 का)

और दस पन्ने का पत्र, सार्वदेशिक से भी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की पुरातनता और आर्यमित्र का सबसे प्रथम आर्य साप्ताहिक होना आदि बातें क्या किसी को आर्य सिद्धान्तो को उलटने का अधिकार दे सकते हैं। आप्रान् पृष्ट कदाराताचष्ट को चरितार्थ न करके आर्य पुरुषो की भांति त्रुटियो के लिये खद व्यक्त करना और आगे के लिय सतर्क रहना ही एकमात्र उपाय है इसके निपटारे का। दूसरो से ठेले फकवाना बालोचित नहीं हैं। समन्वय की इच्छा हैं तो बडी अच्छी बात है। समन्वय का सत्य मे सबके एकीकरण का ही तो समन्वय है। हिन्दुओ की अस्मिता की रक्षा विचारो की एकता से होगी और इसके लिये स्वामी जी द्वारा निर्दिष्ट मार्ग ही ठीक है। आंखों और पैरो का समन्वय इसी में है कि आंख देखे और पैर चलें। समन्वय और एकता का अर्थ यह तो नही है कि आखें बन्द कर पैरो को चलने दिया जाय। फिर तो पतन अपरिहार्य है।

बन्धुओ, आर्यसमाज हिन्दू ही नही विश्वसमाज की आख है उसमे दयानन्दी सुरमा डालते रहो। कल्याण इसी मे है, अपनी पहचान खोने मे नही।

## आर्य समाज अजमेर द्वारा प्रकाशित साहित्य

### प्रो दत्तात्रेय आर्य द्वारा लिखित पुस्तकें

1 देश, धर्म और हिन्दू समाज को आर्य समाज की देन—मूल्य 0 50 पैसे
2 हमारी राष्ट्रीयता का आधार-मूल्य रु 1 00
3, विद्यार्थियो के लिए आचार सहिता—मूल्य 0 50 पैसे
4 दी आर्यसमाज हिन्दू विदाउट हिन्दुइज्म (अंग्रेजी)—विशेष रियायती दर रु 75 00
5 आर्यसमाज हिन्दू धर्म का सम्प्रदाय नही-मूल्य—50 रु
6. आर्यसमाज दी मोस्ट पावरफुल मूवमेंट (सा दे सभा द्वारा प्रकाशित)—5 00 रु

### दयानन्द शोधपीठ के प्रकाशन

1 दयानन्द कथा सग्रह मूल्य रु —3 00
2 महर्षि दयानन्द पत्रो के दर्पण मे मूल्य रु —50 00

### अन्य प्रकाशन

1 धर्म शिक्षा (भाग 1 से 11 तक) पूरे सैट का मूल्य रु 32 00
2 परिचय निर्देशिका (समस्त देश-विदेश की आर्य शिक्षण सस्थाओ का परिचय)—मूल्य रु 12 00
3 आर्य समाज (हिन्दी) मूल्य सजिल्द 20 00 रु अजिल्द 16 00 ले लाला लाजपतराय

## सत्यार्थ-प्रकाश ग्रन्थ माला 15 भाग

(प्रत्येक समुल्लास पर स्वतन्त्र ट्रैक्ट)

1-ईश्वर एक नाम अनेक
2-आदर्श माता-पिता
3-शिक्षा और चरित्र निर्माण
4-गृहस्थाश्रम का महत्व
5-सन्यासी कौन और कैसा हो ?
6-राज्य व्यवस्था
7-ईश्वर और वेद
8-जगत की उत्पत्ति
9-स्वर्ग और नरक कहा है ?
10-चौके चुल्हे मे धर्म नही
11-हिन्दू धर्म की निबलता
12 बौद्ध और जैनमत
13-वेद और ईसाई मत
14-इस्लाम और वैदिक धर्म
15-सत्य का अर्थ तथा प्रकाश

विशेष—सभी ट्रैक्ट आर्य जगत के चोटी के विद्वानो के द्वारा लिखित हैं एव ग्रन्थमाला का सम्पादन आर्य समाज अजमेर के प्रधान प्रो दत्तात्रेयजी आर्य ने किया है। ग्रन्थमाला के सैट का मूल्य 8/ रुपये है।

## आर्यसमाज शिक्षा सभा, अजमेर

## आवश्यकता

जियालाल शिक्षण प्रशिक्षण सस्थान अजमेर हेतु अंग्रेजी सस्कृत तथा वाणिज्य विषयो मे एम ए/एम काम एम एड व्याख्याताओ की आवश्यकता है। आवेदन मंत्री के नाम दस रुपये के निर्धारित प्रपत्र पर शीघ्र प्रस्तुत करें।

स्वत्वाधिकारी आर्यसमाज अजमेर के लिए प्रकाशक एव सपादक रासासिंह हेतु रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्य प्रिन्टर्स बाबू मोहल्ला केसरगंज, अजमेर मे मुद्रित एव आर्य समाज भवन, अजमेर से प्रकाशित।

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सदा उद्यत रहना चाहिए।
—महर्षि दयानन्द

ओ३म्

# आर्य पुनर्गठन

आर्य समाज, अजमेर का हिन्दी पाक्षिक पत्र

'आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म।।'

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सकल जगत को आर्य बनाए।

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होनेवाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 6 शुक्रवार 30 जून, 1989 | अभय मित्रादभयम अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात्। | आषाढ़ कृष्ण 12 संवत 2046
अंक 17 पं स -43383/84 | अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु।। | वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60 पैसे


आर्यसमाज अजमेर का पुनर्गठन की दिशा में क्रांतिकारी कदम

## समाज की सदस्यता के लिए सार्वदेशिक सभा द्वारा निर्धारित प्रण के कार्यान्वयन का निर्णय

आर्य समाज की वर्तमान शिथिलता का एक प्रमुख कारण उसके पदाधिकारियो एव सदस्यो की ऋषि दयानन्द के मन्तव्यो व आर्य समाज के सिद्धान्तो के प्रति निष्ठा की कमी होना रहा है। इसी के परिणाम स्वरूप समाजो मे पौराणिक मान्यताओ के पक्षधर लोगो का वर्चस्व भी स्थापित हो गया है। इस स्थिति से निपटने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य समाजो के सभी पदाधिकारियो व आर्य सभासदो के लिए एक मान्यता विषयक प्रण लेने का निर्देश दिया है।

उपर्युक्त सदर्भ मे ही आर्य समाज अजमेर के सभी सभासद एव पदाधिकारी समाज के प्रवेश पत्रो मे आर्य सभासदो के लिए जोडे गए प्रण की शपथ लेगे। इस आशय का निर्णय आर्य समाज अजमेर की 18 जून, 1989 की अन्तरग सभा मे सर्वसम्मति से लिया गया।

अजमेर आर्य समाज सार्वदेशिक सभा के उक्त सदस्यता विषयक प्रण' लेने के निर्णय को लागू करने वाली देश की सबसे पहली समाज है। उल्लेखनीय है कि सार्वदेशिक सभा को उक्त प्रण के सम्बन्ध मे जिस उपसमिति ने सुझाव दिया था, आर्य समाज अजमेर के प्रधान आचार्य दत्तात्रेय आर्य उसके सयोजक थे। इसलिए इस समाज की अन्तरग सभा ने इस निर्णय को सर्व प्रथम अपने यहा ही लागू करने की पहल की है।

समाज के प्रवेश सम्बन्धी आवेदन पत्र मे इस प्रण' को सम्मिलित करने के लिए आर्य समाज, अजमेर ने नवीन प्रवेश-पत्रो को प्रकाशित कराया है। देश की अन्य आर्य समाजो की जानकारी एव सुविधा के लिए प्रवेश-पत्र का एक नमूना 'आर्य पुनर्गठन' के इसी अक मे प्रकाशित किया जा रहा है।

## सरकार आतंकवादियों से सख्ती से निपटे-दत्तात्रेय

अजमेर। आर्य समाज, अजमेर के प्रधान आचार्य दत्तात्रय आर्य ने केन्द्र एव पजाब सरकार से आतकवादियो से सख्ती से निपटने की अपील की है।

रविवार को पजाब के मोगा शहर मे आतकवादियो द्वारा आर एस एस के 26 स्वयसेवको की जघन्य हत्या पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए आचार्य दत्तात्रेय ने कहा है कि यह बहुत ही कायराना व अधार्मिक कृत्य है। कोई भी धर्म निर्दोष व्यक्ति की हत्या की इजाजत नही देता है।

सोमवार दिनाक 26-6-89 को प्रेस के नाम जारी किये अपने व्यक्तव्य मे आर्य नेता ने केन्द्र एव पजाब की सरकार से अपील की है कि आतकवादियो से पूरी सख्ती से निपटे और उन्हे खुलकर हत्याओ का ताडव नृत्य करने की छूट न दे। उन्होन सरकार को चेतावनी दी कि यदि पजाब मे आतकवादियो को और ढील दी गई तो वहा के लोगो मे आपसी सौहार्द की भावना पूरी तरह समाप्त हो जायेगी जिससे देश के टुकडे-टुकडे हो जायेंगे।

आचार्य दत्तात्रेय आर्य ने पजाब के सिखो सहित सभी वर्गों से आपसी भाईचारे की भावना को कायम रखने की अपील करते हुए कहा कि हिन्दू और सिख के नाम पर न बहकें और अपने प्राचीन इतिहास को याद करें जिसके अनुसार हमारे देश का प्राचीन नाम आर्यावर्त्त था और उसके सभी निवासी एक आर्य नाम से पुकारे जाते थे। श्री आर्य ने हिन्दूओ व सिक्खो को अपने प्राचीन मान्य धर्म ग्रन्थ वेद को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की शिक्षा पर चलने का आह्वान किया।

श्री आर्य ने मोगा हत्याकाड मे मारे गये सभी लोगो के परिवारो के प्रति अपनी हार्दिक शोक सवेदना व्यक्त की है।

## जातीयता का ज्वर

गत कुछ दिनों से राजस्थान में जातीय सम्मेलनो की बाढ आई हुई है। ब्राह्मण सम्मेलन, राजपूत सम्मेलन, गौड गुर्जर सम्मेलन आदि सम्मेलनो का आयोजन बडे जोर–शोर से हो चुका है और कई आगामी दिनो मे होने जा रहे हैं।

देश के सभी सुधारको नेजातीयता मानवता पर कलक एव राष्ट्र की प्रगति मे बाधक बताया है। प्राय देश के प्रमुख नेता भी जातीयता की भावना को एक सामाजिक बुराई के साथ-साथ लोकतन्त्र विरोधी भी मानते है। लेकिन वास्तविकता यह है कि जातीयता की विष बेल को पालपोसने का काम भी ये राजनेता ही करते हैं।

चुनावो मे उम्मीदवार के नाम का चयन केवल जाति के आधार पर होता है। जाट बहुल क्षेत्र से जाट को टिकिट मिलेगा तो कायस्थ बहुल क्षेत्र से कायस्थ को। उम्मीदवार का चयन का मापदण्ड योग्यता से कही अधिक जाति को माना जाता है।

अब क्योकि आम चुनाव निकट आ रहे हैं तो स्वजातीय नेता के रूप मे उभर कर अपने-अपने टिकिट पक्के कराने की गहमा-गहमी बढ गई है। इसी के चलते जातीय सम्मेलनो के आयोजन का ताता लगा हुआ है। राजस्थान मे ही नही देश के हर प्रदेश मे यही स्थिति है।

जातीय सम्मेलनो मे कैसे भाषण होते हैं? इन भाषणो मे जाति पर सकट बताया जाता है। देश के लिए स्वजाति की कुर्बानियो का बखान किया जाता है और फिर स्वजाति के किन्ही स्वर्गीय दिग्गजो के नाम पर कोई स्मारक बनाने या उन पर टिकट जारी करने की सरकार से माग के साथ सम्मेलन का समापन होता है।

अब इनसे यह कौन कहे कि यह जातीयता प्रगतिशील समाज के निर्माण मे बाधक है। जातीयता की सकीर्ण मानसिकता के चलते देश मे कभी एकता एव आपसी सौहार्द का वातावरण पैदा नही हो सकता है। हिन्दू-मुस्लिमो की एकता का राग अलापने वाले नेताओ और तथाकथित बुद्धिजीवियो को पहले एक ही समुदाय के लोगो मे जो आपसी भेदभाव को खत्म करना चाहिए। बाकि दहाई पर पहुचने मे पहले इकाई को देखे। —वीरेन्द्र आर्य


निदेशक दत्तात्रेय आर्य | प्रधान सपादक रासासिंह | सपादक वीरेन्द्र कुमार आर्य | कार्या 21010

सम्पादकीय

# क्या पुनः वेदो को शंखासुर ले जायेगा ?

वेदोद्धारक जगद्गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन मे एक महत्वपूर्ण घटना आती है कि जब स्वामी जी अपने सिद्धान्तो तथा वेदविद्या का प्रचार-प्रसार करते हुए शाहजहापुर मे आकर धर्मपिपासुओ की प्यास बुझाने लगे। एक दिन लक्ष्मण शास्त्री स्वामी जी के निकट आकर शास्त्रार्थ करने लगे। शास्त्रार्थ का विषय मूर्ति पूजन था। स्वामी जी ने शास्त्री जी को कहा कि अपने पक्ष के पोषण मे आप कोई वेद का प्रमाण उपस्थित कीजिये। शास्त्री महाशय ने कहा कि प्रमाण कहा से दू ? वेद तो शखासुर ने हरण कर लिये हैं। स्वामी जी ने तत्काल वेद हाथ मे उठाकर कहा—'पण्डित जी आपके आलस्य और प्रमाद-रूप शखासुर का वध करके ये वेद मैंने जमनी से मगाये हैं। लीजिये इनमे से खोजकर कोई प्रमाण निकालिये।" उस समय सारी सभा हास्यरस में लोट पोट हो गई और पण्डित जी ने मौन साधना ही उचित समझा।

महर्षि दयानन्द की यह उक्ति कितनी सटीक थी कि पण्डितो ने, विद्वानो ने, आचार्यों ने आलस्य और प्रमाद के अधीन होकर वेदों का स्वाध्याय छोड दिया, वेदाध्ययन का त्याग कर दिया, वेद पोथी के रूप में कपडो मे लपेटकर मंदिरो के भण्डार गृहो मे रख दिये गये जिन्हें दीमक चाट गई, परिणाम स्वरूप धीरे-धीरे वेदपाठियो, वेदज्ञो की सख्या कम होती चली गई। विदेशियो ने भी अपने विकराल आक्रमणो के समय यहा के बडे-बडे विश्वविद्यालयो के पुस्तक मन्दिरो को आग की भेंट चढा दिया। फलतोगत्वा एक समय ऐसा आया कि वेद दुर्लभ ग्रन्थ हो गये। वेदो की मूल प्रतिया मिलनी बन्द हो गई। महर्षि दयानन्द सरस्वती को वेदो की प्रामाणिक प्रतिया जमनी से मगवानी पडी। वेदो के मनमाने अर्थ भी इसी कारण से हुए।

युगपुरुष महर्षि दयानन्द ने पुन वेदो का उद्धार किया। वेद विद्या का प्रचार प्रसार किया, वेदाध्ययन पर जोर दिया तथा स्वय महर्षि ने वेदो का सस्कृत तथा आर्य भाषा हिन्दी मे भाष्य किया। यद्यपि वे इस कार्य को पूर्ण नही कर पाये। बाद मे आर्य विद्वानो ने उसी शैली पर वेदो का भाष्य किया।

महर्षि ने स्पष्ट शब्दो मे प्रतिपादित किया कि वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं, वेद परमात्मा की पवित्र वाणी है। उन्होंने आर्य समाज के तीसरे नियम मे समग्र मानवता के कल्याण हेतु यह उद्घोष किया कि "वेद सब सत्य विद्याओ की पुस्तक है। 'वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"

परन्तु आज हमे अत्यन्त दुःख के साथ कहना पड रहा है कि ऋषि के अनुयाइयो मे वेद पठन और स्वाध्याय की प्रवृत्ति दिन प्रतिदिन घटती चली जा रही है। वेद पुस्तकालय की आलमारियों मे बन्द रहते हैं। उन पर धूल जमती रहती है। उन्हे कोई पढने वाला नहीं मिलता। वेद खरीद कर पढने वाले भी बहुत कम रह गये हैं। सस्ता साहित्य पढने वाले, समाचार पत्रो की गर्मागर्म खबरो मे रस लेने वाले अथवा अर्थ वृत्ति एव वणिक मनोवृत्ति को प्रमुखता देने वाले एव टी. वी के आगे जमे रहने वाले लोगो से कैसी आशा की जा सकती है कि वेद पठन के परमधर्म का निर्वाह करेंगे। चारो ओर हताशा उदासीनता एव निराशा का वातावरण है। आर्यसमाज के पदाधिकारियो को अपने धन्धो और सस्थाओ से फुरसत नही, पुरोहित-पण्डितो को सस्कार कराने से फुरसत नहीं। आर्य विद्वानो को अपनी पाठ्य पुस्तकें पढाने पढने से फुरसत नहीं। फिर वेदो का अध्ययन कौन करेगा ? वेदो का कल्याण कैसे होगा ? जब अध्ययन अध्यापन ही सुचारु रूप से नही होगा तो वेदानुकूलजीवन तो मृगमरिचिका ही रहेगा।

अत हम सब महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम लेने वाले और आर्यसमाज के अनुयायी यह प्रण करें कि वेद ज्ञान को पुनः आलस्य और प्रमादरूपी शखासुर को अपहरण नही करने देंगे। स्वाध्यायशील बनेंगे। हम पढेंगे और दूसरो को भी पढायेंगे। तभी कहना सार्थक होगा—

"वेद की ज्योति जलती रहे, ओ३म् का झण्डा ऊचा रहे।"

—राधासिंह

## निर्दोषो का खून कब तक और बहेगा ?

पजाब की धरती रक्त रजित हो चुकी है। मानवता कराह उठी है, पर फिर भी पैशाचिकता अहसास करने से बाज नहीं आ रही है। कब तक मा भारती के अधखिले फूल और मासूम कलिया रोंदे और मसले जायेंगे तथा गाजर मूली की तरह काटे जायेंगे एव ए के. 47 की गोलियो से भूने जाते रहेंगे ? इन वीभत्स तथा जघन्य हत्याकाडो से कौन से धर्म और वाहे गुरु का आशीष मिलेगा ?

मदहोश आतकवादियो अब तो होश मे आओ ! अपने ही हिंदू सिख भाइयो को क्यो अकाल मौत के मुह मे ढकेल रहे हो ? क्या पाच वर्षों से निरतर खून बहाने और बडे बडे बलिदानो का भोग लेने के बाद भी तुम्हारी खून की प्यास नही बुझी ? तुम्हारे ये जघन्य हत्याकाण्ड के कुकृत्य इनसानियत के नाम पर कलक है। लानत है ! तुम इतने अज्ञानी हो कि अपने ही हाथो अपना नाश कर रहे हो।

हम भारत सरकार तथा पजाब के गवनरी शासन से यह अनुरोध करना चाहते हैं कि तुम्हारी पोल खुल चुकी है, यदि तुम्हारे बस मे शासन करना नही है तो त्याग पत्र देकर अलग हो जाओ। तुमने तुम्हारी तथा तुम्हारी सन्तानो की रक्षा के लिये तो कमाण्डो, ब्लैक कैट, गनमेन, बोडी गार्ड और पता नही क्या-क्या लगा दिये परन्तु पजाब के निर्दोष हिंदू सिक्खो का कत्ले आम क्यों नही रोक सकते ? आने वाला इतिहास तुम्हे इस अपराध के लिये, कभी क्षमा नही करेगा।

हम पजाब के हिंदू सिक्खो से भी अनुरोध करना चाहते हैं कि अपनी रक्षा के लिये स्वय सगठित होकर कटिबद्ध हो जाओ, इस निकम्मी सरकार के भरोसे मत रहो। शक्तिशाली बनो, वीर बनो, जुझारू बनो।

दुनिया मन दी जोरा नू लखा लानत है कमजोरा नू।

देशद्रोही आतकवादियो से इन्हीं की भाषा मे बात करनी होगी।

हम कायर बबर एव देशद्रोही आतकवादियो द्वारा 25/6/89 ई को प्रात काल मोगा (पजाब) में राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के 27 स्वय सेवकों की गई हत्याकाड की भर्त्सना करते हैं। इनका बलिदान रग लायेगा।

—राधासिंह

## 'जीवेम् शरदः शतं'

आर्यसमाज अजमेर के प्रधान, आर्यसमाज शिक्षा सभा के वरिष्ठ उप प्रधान तथा दयानन्द कॉलिज के सस्थापक एव उन्नायक प्राचार्य एव 'अजमेर के मालवीय" कहे जाने वाले आर्य नेता दत्तात्रेय वाबले विगत् 19 जून, 1989 ई को अपने जीवन के अस्सी वर्ष पार कर चुके हैं। उनका जन्म 19 जून, 1909 को महाराष्ट्र में हुआ था। हम परमात्मा से वेदानुसार उनके शतायु होने की कामना करते हैं।

इस आयु तक पहुचते-पहुचते व्यक्ति थक जाता है, शारीरिक एव मानसिक दृष्टि से अक्षम होने लगता है परन्तु शिक्षाविद् एव अपने स्वास्थ्य के बारे मे सदैव जागरूक एव सचेष्ट रहने वाले अजमेर के इस आर्य पुरुष पर यह उक्ति चरितार्थ नही होती। उनका ओज, उत्साह और सक्रियता एव कर्मठता और भी तपकर निखर रहे हैं। वे वक्ता, व्यवस्थापक एव लेखनी तीनो के धनी हैं। सौभाग्यशाली हैं। आज भी नियमित आप यजने

(शेष पृष्ठ 3 पर)

# स्वर्गीय श्री रामनारायण जी चौधरी : कुछ संस्मरण

(गतांक से आगे)

ता 14-12-38 को श्री हरिभाऊ जी ने मेरे नाम अपने पत्र मे यह सूचित किया कि महात्मा जी के आदेशानुसार वे और उनके साथी कांग्रेस से अलग हो रहे हैं और आशा व्यक्त की कि "मेरे और मेरे साथियो के कांग्रेस से हट जाने पर अजमेर मे शांति स्थापित हो जावेगी।" इस पत्र के साथ उन्होने वर्धा मे महात्मा जी के साथ हुई बातचीत का साराश भी लिख भेजा जिसमे गाधीजी ने यह आशका प्रकट की थी कि विरोधी पक्षो से मिलकर काम करने के सुझाव मे सघर्ष अधिक बढने की आशका है क्योकि अन्यत्र भी गाधी जी मिश्रित कमेटियां बनाने के प्रयोग मे सफल नहीं हुए।

## कांग्रेस के झगड़े

दुर्भाग्य से अजमेर कांग्रेस की दलबंदी फिर भी दूर न हो सकी। जो लोग महात्मा जी के आदेश के बाद कांग्रेस मे रहे उनमे भी पद व अधिकारो के बटवारे पर झगड़े प्रारम्भ हो गए। अत सबने मिलकर पडित जियालाल जी को पच नियुक्त किया, वे जो निर्णय दे वह सबको मान्य होगा। श्री गौरीशकर भार्गव के जो लेटर पेपर के पीछे स्पष्ट है, उन्ही के मकान पर पडितजी ने जो निर्णय दिया उसका विवरण लिखा गया है उसके ऊपर यह शब्द हैं।

—आचार्य दत्तात्रेय आर्य—

## स्व. प. जियालाल जी कांग्रेस संगठन के निर्वाचक

अर्थात "पार्टी के प्रमुख निर्णायक पच पडित जियालाल"। इस निर्णय के विवरण पत्र पर जियालाल जी के अतिरिक्त जयनारायण जी व्यास, रामनारायण जी चौधरी, बाबा नरसिंह दास जी, गौरीशकर जी भार्गव आदि के भी हस्ताक्षर हैं। इस पच फैसले में जिला कांग्रेस (डी सी सी) तथा प्रातीय कांग्रेस (पी सी सी) के पदाधिकारियो तथा कार्यकारिणी के सदस्यो के तथा ए आई सी सी के प्रतिनिधि चुनने और म्यूनिसिपल कमेटी के लिए उम्मीदवार चुनने के लिये बोर्ड के सदस्यो के नाम हैं जिसके अनुसार पी सी सी के प्रधान जयनारायण जी व्यास तथा मत्री रामनारायण जी चौधरी, डी सी सी की प्रधान गोमती देवी जी व उपप्रधान प्यारे मिया, ए आई सी सी के प्रतिनिधियो मे कृष्ण गोपाल जी गर्ग, स्वामी कुमारानद जी, अजमेर के डेलीगेट्स मे बाबा जी, चन्द्रगुप्त जी, बीतमल जी के नाम भी हैं। कार्यकारिणी के सदस्यो मे श्री बालकृष्ण कौल का भी नाम था किन्तु उनका नाम इस कारण हटा दिया गया कि वे पडित जियालाल जी की स्वीकृति लेकर नही आये। जैसा बाबा जी ने तारीख 29-1-39 के जियालाल जी को लिखे पत्र से स्पष्ट है। इस प्रकार सर्वसम्मत सूची बन जाने के बाद फिर झगडा प्रारम्भ हो गया। बाबाजी ने अपने ता 30-1-39 के दूसरे पत्र मे बाबूजी (जियालाल जी) को लिखा कि वे यहा की राजनीति से तग आ गए हैं और इस्तीफा देते हैं।

उधर श्रीमती गोमती देवी जी की तरफ से श्री रमेश चन्द्र जी भार्गव ने अपने 30-1-39 के पत्र मे चौधरी जी पर झगडे की जिम्मेवारी बताई और लिखा है कि कि सूची मे लिखे कुछ लोगो पर प्रतिबंध है। अत उन्हे कोई पद देना अवैधानिक होगा।

## नगर परिषद के चुनाव

सन् 39 मे अजमेर म्युनिसिपल कमेटी के पहले सार्वजनिक चुनाव हुए और सभवत प्रथम बार कांग्रेस ने उसमे भाग लेने का निश्चय किया किन्तु कांग्रेस के उम्मीदवार चुनने के प्रश्न को लेकर मतभेद उत्पन्न हो गया और पडित जियालाल जी ने पुन मध्यस्थ होकर कांग्रेस की सहायता की। 18-3-39 के पत्र व्यवहार से स्पष्ट है कि अत मे चुनाव बोर्ड मे तीन-तीन व्यक्ति दोनो पक्ष के तथा एक व्यक्ति जिसे पडित जियालाल जी मनोनीत करे, वह रखकर बोर्ड बनाने का निश्चय किया गया।

## स्व. रामनारायण जी के संस्मरण

अजमेर कांग्रेस के प्राय सब पुराने कार्यकर्ता पडित जी के मित्र थे और जैसा ऊपर के उदाहरण से स्पष्ट है प्रत्येक कार्य मे यहा तक कि उनके अपने आतरिक सगठन के मामलो मे भी जियालाल जी की सहायता और सहयोग आवश्यक समझते थे। जैसा कि रामनारायण चौधरी जी ने अपने सस्मरण मे उल्लेख किया है इसका कारण स्वभावत यही था कि अजमेर के सार्वजनिक जीवन मे पडित जी का बड़ा प्रभाव था।

---

## 'जीवेम् शरदः शतं'

( शेष पृष्ठ 3 का )

को आर्य शिक्षण सस्थाओ, आर्य समाज एव दयानन्द बाल सदन की प्रगति एव विकास के लिये चिन्तित एव प्रयत्नशील रहते हैं। आर्य समाज के पुनर्गठन का भूत उनपर सवार है। आर्य समाज के सिद्धातोके लिये तो वे सवस्व बलिदान करने को तैयार है। इस आयु म भी उनका स्वाध्याय चलू है। कोई भी अर्वाचीन अथवा प्राचीन प्रकाशन ऐसा नही जो उनकी नजरो से न गुजर चुका हो। आर्य पत्र पत्रिकाए, सस्मरण पत्र भी निरन्तर पढते हैं और समय-समय पर सामाजिक विषयो पर कलम भी उठाते हैं। आज के आर्य जगत मे शायद ही उनके जैसा इस आयु वाला कानूनविद् तो कोई दूसरा मिले। कार्यालय मे चारो ओर कानूनी पुस्तको का जमावडा और सबके पृष्ठो को छानकर आर्यसमाज की सैद्धान्तिक सर्वोच्चता, प्रामाणिकता की रक्षा करने को तत्पर है।

पुरानी पीढी का यह तपःपूत आर्य पुरुष स्वस्थ एव निरोग रहता हुआ "जीवेम् शरद शत' की वेदोक्ति का चरितार्थ करते हुए अजमेर एव आर्य जगत् की सेवा अहर्निश करता रहे।

"कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत समा"

अर्थात् इस ससार मे कर्मो को करते हुए ही मनुष्य सौ वर्ष जीने की इच्छा करें।

—रासासिंह

## 'बकरा किस्तों पर' प्रतिबन्ध की मांग

आर्य समाज, अजमेर ने राजस्थान सरकार से पाकिस्तानी व्यग्य 'बकरा किस्तो पर' पर प्रतिबध लगाने की माग की है। उल्लेखनीय है कि उक्त व्यग्य मे हिंदुओ के विवाह सस्कार की खिल्ली उडाई गई है और गाय के विषय मे भी आपत्तिजनक शब्दो का प्रयोग किया गया है।

— मत्री

॥ ओ३म् ॥

## आर्य समाज, अजमेर

**प्रवेश–पत्र**

नाम .. .. .. पिता का नाम ... ..

आयु जन्म भूमि गृह का पता -- --

व्यवसाय या कार्यालय का पता

चन्दा शताश .. दिनाक ..

हस्ताक्षर

---

ओ३म्

# आर्य समाज, अजमेर

**प्रवेश–पत्र** **फॉर्म नं ______**

सेवा मे
श्री मन्त्री जी आर्य समाज
अजमेर

श्रीमान जी
नमस्ते ।

मैं प्रसन्नतापूर्वक आर्य समाज के उद्देश्यो को (जैसा कि नियमो मे वर्णन किये गये हैं) तथा मन्तव्यो और सिद्धान्तो को (जो वेदों के आधार पर ऋषि दयानन्द के ग्रन्थो मे लिखे गये हैं) और जिनमे से कुछ प्रमुख सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा निर्धारित प्रतिज्ञा पत्र मे उल्लेखित है मानता और उनके अनुकूल आचरण स्वीकार करता हूँ । मुझे आर्य समाज अजमेर का उसके उपनियमानुसार सदस्य स्वीकार कर।

नाम पिता का नाम .. ..

आयु जन्म भूमि .. गृह का पता ..

व्यवसाय या कार्यालय का पता

विवाहित हैं या अविवाहित यदि विवाहित है तो सतान

शिक्षा मासिक आय चन्दा शताश

दिनाक .. भाषा जो जानते हैं ..

प्रार्थी के हस्ताक्षर .. जिनके द्वारा यह प्रवेश पत्र आया उनका नाम ..

अन्तरग सभा का निश्चय

दिनाक

सदस्यता स्वीकार होने के पश्चात निम्नाकित प्रतिज्ञापत्र प्रस्तुत कर दूंगा ।

हस्ताक्षर

प्रधान मन्त्री

## प्रतिज्ञा

मैं ईश्वर के प्रतीक स्वरूप किसी मूर्ति पूजा या जड वस्तु अथवा व्यक्ति की पूजा नहीं करूंगा न ही मृतक श्राद्ध व स्थान विशेष को तीर्थ मानूंगा तथा किसी अवैदिक या पौराणिक विधि विधान को नहीं मानूंगा अर्थात् वेद विरुद्ध आचरण नही करूंगा । मैं जन्मगत जातिपाति व छुआछूत को नही मानूंगा । मैं किसी भी सम्प्रदाय विशेष या जाति सगठन का सदस्य या अधिकारी नही बनूंगा तथा आर्य समाज के नियमोपनियमो मे वर्णित सदाचार के नियमो का पूर्णत पालन करूंगा ।

यदि मैं इसके विपरीत आचरण करू तो मेरी आर्य सभासदी समाप्त कर दी जावे ।

ह आर्य सभासद

मैं पहले से ही आर्य समाज अजमेर का सदस्य हूँ और अतरग सभा की दिनाक 18-6-1989 के आदेशानुसार प्रतिज्ञा सहित यह नवीन प्रवेश पत्र उसे स्वीकार करने के उद्देश्य से भर रहा हूँ ।

ह आर्य सभासद

---

स्वत्वाधिकारी आर्यसमाज अजमेर के लिए प्रकाशक एव सपादक रासासिंह हेतु रतनलाल गग द्वारा श्री आर्य प्रिन्टर्स बाबू मौहल्ला केसरगज अजमेर मे मुद्रित एव आर्य समाज भवन अजमेर से प्रकाशित

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने मे सदा उद्यत रहना चाहिए।
—महर्षि दयानन्द

ओ३म्

# आर्य पुनर्गठन

आर्य समाज, अजमेर का हिन्दी पाक्षिक पत्र

'आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म॥'

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सकल जगत को आर्य बनाए।

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एवं भविष्य मे पैदा होने वाली समस्याओ को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 6 शनिवार, 15 जुलाई 1989 अभय मित्रादभयम अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात्। आषाढ शुक्ला 12 सवत 2046
अक 13 प स -43383/84 अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु॥ वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60 पैसे


सभा प्रधान को आचार्य दत्तात्रेय आर्य का पत्र

## आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान 'सार्वदेशिक सभा' के आदेश को क्रियान्वित करे

आचार्य दत्तात्रेय आर्य ने आर्य प्रतिनिधि सभा (राज )के प्रधान श्री छोटूसिह से आग्रह किया है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा हाल ही मे आय समाज के प्रवेश-पत्रो मे जोडे गए प्रण के प्रतिज्ञा पत्र को वे सभी आर्य समाजा के पदाधिकारियो व अाय सभासदो को भरने के निर्देश दे।

श्री छोटूसिह के नाम लिखे अपन पत्र मे आचार्य दत्तात्रेय आर्य, ने लिखा है कि उक्त प्रण के लेने को अनिवार्य करने से आय समाज के सगठन का शुद्धिकरण होगा और समाज की वतमान शिथिलता भी दूर होगी। आपने लिखा है कि क्यो कि सार्वदेशिक सभा को सुझाव देने के लिए गठित उपसमिति का सयोजक (आचार्य दत्तात्रेय आर्य) राजस्थान का निवासी था इसीलिए सर्वप्रथम राजस्थान मे ही इस समिति की सस्तुति पर स्वीकृत प्रस्तावो को क्रियान्वित करना हमारा नैतिक कत्तव्य हो जाता है।

आचार्य दत्तात्रेय ने अपने पत्र मे अन्त मे आशा व्यक्त की कि आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान यथा शीघ्र सार्वदेशिक सभा के उक्त निर्देश को क्रियान्वित करेगी। उल्लेखनीय है कि आर्यसमाज अजमेर इस निर्देश को अपने यहा क्रियान्वित करन वाली देश की सबसे पहली समाज है।

सेवा वृद्धि के सबध मे राज्य सरकार का महत्वपूर्ण निर्णय

## दयानन्द कालेज के प्राध्यापकों की सेवावृद्धि संबंधी याचिकाएं खारिज

दयानन्द महाविद्यालय अजमेर की प्रबध समिति तथा महाविद्यालय के प्राध्यापको के बीच अनुदान नियमो के अनुसार 58 वष की आयु मे उनकी सेवा निवृत्ति के प्रश्न को लेकर विवाद चल रहा था। यू जी सी वेतनमान लागू होने के पश्चात सेवावृद्धि का प्रावधान नही है। राज्य सरकार के इस आदेश की स्थापना मे प्रबध समिति ने किसी की सेवा वृद्धि की सिफारिश न करने का निर्णय लिया था किंतु स्वय राज्य सरकार द्वारा अपनी इस घोषित नीति के विपरीत परस्पर विरोधी निर्णय किये जाने के कारण यह विवाद उच्च न्यायालय तक पहुंचा। दुर्भाग्य से उच्च न्यायालय ने भी दो भिन्न-2 निर्णय लिये और श्री रिखि के प्रकरण के निणय का गलत अर्थ लगाकर तत्कालीन शिक्षा सचिव श्री कूमट ने प्रबध समिति के विरुद्ध निणय देकर श्री रिखि को दो वर्ष पूव का लगभग 76 000/- रु दिये जाने का आदेश दिया और परिणाम स्वरूप यह राशि सस्था को दिये जाने वाले अनुदान मे से काट ली गई। प्रबध समिति की ओर से श्री कूमट की निष्पक्षता पर सदेह व्यक्त किये जाने पर बाकी के तीन प्राध्यापको श्री म कृ मारवाह, ल का शर्मा एव श्री ओ पी रैना की इस प्रकार की अपीलें राज्य शिक्षा मत्री महोदय को निर्णयार्थ स्थानान्तरित कर दी गई।

राज्य शिक्षा मत्री महोदय ने दिनाक 5-7-89 को लम्बे समय से विचाराधीन इन तीनो अपीलो को खारिज करते हुए प्रबध समिति के पक्ष मे निर्गय दिया है जो कई दृष्टियो से महत्वपूर्ण और राज्य सरकार की इस सदभ मे वर्तमान मे नीति का परिचायक है। सर्वप्रथम इस निणय द्वारा श्री रिखि के प्रकरण मे श्री कूमट द्वारा दिनाक 20-1-88 को दिये गये आदेश से अपनी असहमति प्रकट करते हुए उसे गलत घोषित किया है। वतमान निर्णय के अन्य दो महत्वपूर्ण बिन्दु यह है कि 1963 के अनुदान नियमो के लागू होने के बाद विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित प्रबध अप्रभावित हो गया है तथा दूसरा यह है कि अनुदान नियमो के अन्तर्गत सेवा वृद्धि की आयु 56 वर्ष ही है उसमे वृद्धि पर पर राज्य सरकार तभी विचार करेगी जब कि सस्था द्वारा इसक लिये सिफारिश की गई हो।

इन अपीलो क सबध मे एक उल्लेखनीय बात यह भी है कि अपने वकील क स्थान मे प्रबध समिति की ओर से उनके वर्तमान निदेशक श्री दत्तात्रय आर्य ने ही उपस्थित होकर स्वय बहस की थी।

## पारायण यज्ञो की विसंगति

—इन्द्रजित देव— यमुनानगर (हरियाणा)

पारायण यज्ञो की नई बीमारी से आर्यसमाज को सावधान करके आपने स्तुत्य कार्य किया है। चतुर्वेद पारायण यज्ञ करने-कराने वाले यह क्यो भूल जाते है कि गर्भाधान, अन्नप्राशन नामकरण, विवाह व अन्त्येष्टि आदि सस्कारा के अवसरो पर पढे जाने वाले मत्र भी वेदो मे हैं। तनिक वे विचार करके निष्कर्ष निकाले कि ऋग्वेद पारायण यज्ञ के अवसर पर वे अन्त्येष्टि सस्कार के मत्रो का पाठ करके कौन-सा पुण्य सङ्गत कार्य कर रहे होते हैं ? इसी प्रकार विवाह सस्कार के अवसर पर ऋग्वेद व अथर्ववेद के कुछ मत्र पढे जाते है परन्तु इन वेदो के पारायण यज्ञो के के अवसरो पर भी यजमान इन्हे बोलता है तो उसका क्या कल्याण सिद्ध होता है ? इस प्रकार अन्य सस्कारो के मन्त्रों को भी पारायण यज्ञो के यजमान व पुरोहित पढते हैं इससे कैसी सङ्गति बैठती है ?

राष्ट्र-कल्याण यज्ञ व विश्व शाति यज्ञ कराने वाले किंचित सोच कर बताए कि केवल यज्ञ सम्पन्न करा लेने से राष्ट्र का कल्याण व विश्व शाति कैसे स्थापित होगी ? दान, सगतिकरण व देवपूजा (श्रेष्ठ जनो का सम्मान) के बिना राष्ट्र का कल्याण व विश्व मे शाति कैसे स्थापित होगी ?

पुरोहित को यह अपेक्षित है कि थोडा परिश्रम करके विभिन्न सस्कारो के अवसरो पर पढे जाने वाले मत्रो को सवथा त्याग करके शेष मत्रो के पाठ सहित यज्ञ कराने के लिए यजमानो को प्रेरित कर व यज्ञ की मूल भावना अपने जीवनो मे ढाल कर स्वयम् सुखी बने व राष्ट्र-विश्व मे शाति व कल्याण को स्थापित करन के कर्त्तव्य की पूर्ति करे।


निदेशक दत्तात्रेय आर्य    प्रधान सपादक। रासासिह    सपादक वीरेन्द्र कुमार आर्य    कार्या. 21010

## सम्पादकीय

# देश में भावी निर्वाचन एवं आर्यसमाज

आर्यसमाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास मे तीन प्रकार की सभाओ का उल्लेख किया है (1) धर्मार्य सभा (2) विद्यार्य सभा (3) राजार्य सभा। इनमे से प्रथम दो प्रकार की सभाओ के अनुकूल तो आर्यसमाज मे कार्य होता रहा है परन्तु राजार्य सभा की ओर विशेष ध्यान नही गया। जबकि ऋषि के सत्यार्थ प्रकाश का छठा समुल्लास राजधर्म और राज्य व्यवस्था से ही सबंधित है। समय-समय पर यह आवाज भी उठती रही है कि आर्य समाज इस ओर कुछ प्रयास करे, अपनी एक राजनैतिक शाखा प्रारंभ करे। समय-समय पर इस प्रकार के प्रयास भी हुए। कभी भारतीय लोक समिति, कभी आर्यसभा आदि नामो से छुट-पुट प्रयास भी हुए परन्तु वे विशेष प्रभावी नही रहे और समय के साथ उनका अस्तित्व भी समाप्त हो गया। आर्य समाज ने अपने स्थापना काल मे ही अपने सगठन को राजनीति से पृथक रखकर केवल सामाजिक सांस्कृतिक धार्मिक एव शैक्षणिक क्षेत्र तक ही सीमित रखने का प्रयास किया है। यद्यपि समय-समय पर स्वामी श्रद्धानन्द लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द लाला हरदयाल जैसे महान राजनेता, रामप्रसाद बिस्मिल, भगतसिंह जैसे क्रांतिकारी और लाखो की सख्या मे स्वतन्त्रता सग्राम मे जूझने वाले सैनिक दिये और आजादी के पूर्व कांग्रेस या हिन्दूमहासभा के मंच से अथवा क्रान्तिकारी मार्ग से देश की राजनीति को प्रभावित करते रहे। पट्टाभि सीतारमैय्या द्वारा रचित 'कांग्रेस के इतिहास' मे यह स्पष्ट उल्लेख हुआ है कि किसी एक विचारधारा से अनुप्राणित होकर स्वाधीनता सग्राम मे भाग लेकर जेल जाने वालो मे यदि किसी संस्था के सर्वाधिक व्यक्ति थे तो वे थे महर्षिदयानन्द और उसके द्वारा सस्थापित आर्यसमाज की भट्टी मे तपकर निकले हुए लोग।

स्वाधीनता सग्राम के साथ-साथ आजादी से पूर्व निजामशाही के विरुद्ध हैदराबाद सत्याग्रह, गुरु का बाग सत्याग्रह सिन्ध मे सत्यार्थ प्रकाश पर पाबन्दी हटाने के सत्याग्रह मे आर्य समाजियो ने उत्साहपूर्वक बढ़-चढ़ कर भाग लिया था और विजय श्री हासिल कर अपने सगठन की धाक जमाई थी।

आजादी के बाद भी 1957 के पजाब के हिंदी रक्षा आदोलन तथा 1967 के गौरक्षा सत्याग्रह मे आर्यसमाज के हजारो लोगो ने जेलें भरी थी। आजादी के बाद आर्यसमाज ने अपने को राजनीति से तो पृथक ही रखा परन्तु इसके कई जाने माने नेता व्यक्तिगत रूप से कांग्रेस, जन सघ लोकदल आदि राजनैतिक दलो मे अथवा निर्दलीय के रूप से राजनीति को प्रभावित करने अथवा राजनीति मे भाग लेने का उपक्रम करते रहे। यद्यपि सामूहिक रूप से किसी एक दल या पार्टी का साथ नही दिया। परन्तु जो आर्यसमाज की सीढी पर चढ कर जिस दल मे भी गया वह आर्यसमाज का भला तो नही परन्तु वहां का ज्यादा हो गया। ऐसे नेताओ मे प० प्रकाशवीर शास्त्री, स्वामी रामेश्वरानन्द जी, स्वामी इन्द्रवेशजी अमरनाथजी विद्यालकार, रामगोपालजी शाल वाले, बलराज मधोक, ओम प्रकाश त्यागी, शिवकुमार शास्त्री, यज्ञदत्त शर्मा, यश रणवीर, आचार्य भगवानदेव, श्रीकरण शारदा रामचन्द्र विकल, ठाकुर यशपाल सिंह आदि के नाम उल्लेखनीय रहे है। ये सभी नेता सासद या विधायक के रूप मे अपने-अपने दलीय हितो को ही ज्यादा प्रमुखता देते रहे। चाह कर भी आर्यसमाज का विशेष हित नही कर पाये। इसका कारण यह था कि सब बटे हुए थे और कई मामलो मे एक दूसरे से दूर भी थे। राजनीति मे सामूहिक रूप से भाग न लेने अपनी सगठित शक्ति को नही पहचानने, सशक्त सगठन के रूप मे अधिक सीट लेने की सौदेबाजी करने की स्थिति मे नही होने, अलग-अलग बटे होने की परिस्थिति के कारण इस क्रान्तिकारी सगठन का राजनैतिक बाजार भाव कम होता चला गया। परिणाम स्वरूप आर्य सिद्धातो के अनुकूल राजनीति को प्रभावित करने की उसकी वर्चस्विता भी खत्म हो गई और इस दृष्टि से उसकी आवाज को कोई नही सुनता, सबका अच्छा बनने के चक्कर मे किसी का नही हो पाया। ऐसी स्थिति मे नक्कार खाने मे तूती की आवाज कौन सुनता है।

यद्यपि महर्षि दयानन्द जी महाराज ने सुराज्य से स्वराज्य से को कही अधिक महत्त्व प्रदान किया परन्तु उनकी मान्यता थी कि सर्वप्रथम समाज का सुधार हो और फिर स्वराज्य के लिये प्रयत्न हो। इसका कारण यह था कि स्वामी जी ने निकट से देखा और महसूस किया कि समाज के सब लोग कुरीतियो, अंध विश्वासो के दास बने हुए है, रूढियो के गुलाम बन गये हैं, आसमान के ग्रह नक्षत्रो पर फल के लिये अंधविश्वास कर रहे है, जाति पाति, छूआछूत के जाल मे जकड रहे हैं, बुद्धि और विवेक पर ताले पडे हुए हैं, यहा की हिंदू जाति जिंदो से तो डर रही है मुर्दो से भी भयभीत है, भूतप्रेत, डाकिन, चूडैल, गण्डे, ताबीज मे विश्वास कर रही है, आपसी फूट का शिकार होकर स्वार्थ देव के पुजारी हो रहे हैं, मूर्तियो पर भरोसा कर रहे हैं, और इसी के परिणामस्वरूप 1857 का प्रथम का स्वाधीनता सग्राम असफल रहा। इसलिये उन्होने समाज सुधार और सामाजिक कुरीतियो के उन्मूलन करने व्यक्ति का निर्माण करने हेतु वेद ज्ञान के प्रचार प्रसार पर जोर दिया। इसके विपरीत लोकमान्य बाल गगाधर तिलक मदन मोहन मालवीय आदि स्वराज्य पहले चाहते थे और समाज सुधार बाद में। आजादी तो मिल गई पर आज उस आजादी को हम सभाल नही पा रहे हैं। सामाजिक कुरीतियो और अंध विश्वासो, दकियानूसी रूढियो ने समग्र राष्ट्र को अपने मक्कड जाल मे जकड रखा है, जातिवाद, भाषावाद, प्रातीयतावाद सम्प्रदायवाद के नाग फुकारे मार रहे हैं हरिजनो की हत्याए हो रही है महिलाओ पर अत्याचार हो रहे है, बेटियां दहेज-दावानल मे जल रही है, चारित्रिक पतन हो रहा है गद्दारी पनप रही है, स्वार्थ बढ रहा है भ्रष्टाचार बढ रहा है इन्सानियत खत्म हो रही है, रिश्वत खोरी पनपती जा रही है, कर्त्तव्य पालन भूल रहे है, अधिकार प्राप्ति की होड लगी है जीवन मूल्यो का ह्रास हो रहा है, भोगवाद बढ रहा है। राजनीति जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे छा गई है और प्रभाव डाल रही है। ऐसे समय मे यदि आर्यसमाज जैसा सबल सशक्त और सक्षम सगठन तटस्थ रहकर मूक दर्शक बना रहा और राजनीति से नफरत करता रहा तो यह राजनीति उसे भी निगल लेगी। उसके अस्तित्व को खोखला कर देगी, वैदिक धर्म एव वैदिक सस्कृति को मिटा देगी।

ईसाई मिशनरी विदेशी पैसे के बल पर अराष्ट्रीय मुस्लिम पैट्रो-डालर के बल पर, देशद्रोही आतकवादी साम्राज्यवादी ताकतो के बल पर कम्युनिस्ट रूस और चीन के इशारो पर काशीराम वर्ग भेद के नाम पर हाजी मस्तान तस्करी के आधार पर, अपने ही लोग छूआछूत और ऊचे नीचे के नाम पर राष्ट्र की जडो को खोखला कर रहे हैं, तेजी से धर्मान्तरण हो रहा है, कई लैडो' का निर्माण हो चुका और कइयो का होने के लिये वातावरण बन रहा है। शराब की नदियां बह रही हैं, गौ की हत्या हो रही है। ऐसे समय वेद की बात, 'मनुर्भव'' की बात, कृण्वन्तो विश्वमार्यम्, "सत्य वद और धर्मंचर' की बात तथा सगच्छध्व, सवदध्व" "समानीव आकूति समाना हृदयानिव।" "समानो मन्त्र समिति समानी", भारत की बात, आर्यावर्त्त के जज्बातो की बात ऋषि मुनियो के धर्म की बात कौन कहेगा ? तदनुसार कौन देश को बनायेगा ? तदनुसार कौन व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का उत्थान करेगा ? उत्तर होगा केवल आर्यसमाज। आर्यसमाज और मात्र आर्यसमाज। काश ! आर्यसमाज अपने को पहचाने।

कुछ माह बाद देश मे लोकसभा के चुनाव होने वाले हैं जो आगामी पाच वर्षो के लिये देश के भाग्य का निर्धारण करेगे। साथ ही 17-18 विधान सभाओ के चुनाव भी होगे। ऐसी स्थिति मे आर्यसमाज को अपनी शक्ति एव सगठन पहचान कर सामूहिक शक्ति का सम्बल देकर भावी राजनीति को प्रभावित करने, अपने अनुकूल बनाने तथा उचित समय पर देशहित मे सही राष्ट्रवादी विचारधारा वाले, देश की एकता और अखण्डता की रक्षा करने वाले, भारतीय सस्कृति

(शेष पृष्ठ 4 पर)

आचार्य दत्तात्रेय आर्य का स्वामी आनंदबोध जी के नाम एक महत्वपूर्ण पत्र—

# क्या आर्यसमाज में भी हरिजन हैं ?

## जन्मगत जाति के आधार पर समाज के उपनियमो मे सशोधन उचित नहीं

आचार्य दत्तात्रेय जी ने अभी हाल ही मे सार्वदेशिक सभा की अन्तरग द्वारा स्वीकृत जन्मगत जातपात को बढावा देने वाले एक सशोधन पर, अपनी प्रतिक्रिया स्वरूप स्वामी आनन्द-बोध जी को एक पत्र लिखा है। पत्र मे व्यक्त विचारो की महत्ता को देखते हुए हम यहा उसे अविकल रूप मे प्रकाशित कर रहे है।

—सम्पादक

आदरणीय स्वामी जी,

सादर नमस्ते।

मुझे यह जानकर आश्चर्य और खेद हुआ कि सार्वदेशिक सभा की अन्तरग ने उपनियम क्रमाक 4 (क) मे एक सशोधन स्वीकार किया है, जिसमे आर्य सभासद के लिए निर्धारित शुल्क मे आय के शताश के नियम को हरिजन तथा जनजातियो के लिये शिथिल किये जाने का प्रावधान किया है।

हरिजन शब्द का उपयोग महात्मा गाधी जी ने हिन्दू समाज के अछूत या दलित समझ जाने वाले लोगो के लिए किया था। आर्य समाज जन्म से जातपात को नही मानता इसलिये उपनियमो मे इस प्रकार का प्रावधान आर्यसमाज के सिद्धान्तो के विपरीत है।

सरकार द्वारा हरिजनो के लिए जो विशेष अधिकार या रियायतें दी गई हैं, उनके कारण तो अनेक ब्राह्मण तथा अन्य द्विज समझ जाने वाले व्यक्ति भी राजनैतिक तथा आर्थिक लाभ के लिए अपने आपको हरिजन घोषित करने लगे है, और इस प्रकार जन्मगत आधार पर ही नही अपितु निहित स्वार्थ और प्रलोभन के कारण यह सामाजिक कलक अमिट और चिरस्थाई बनता जा रहा है। ऐसी स्थिति मे हरिजनो को मान्यता देकर उन्हे विशेष सुविधा देने का अर्थ यह है कि आर्य समाज भी न केवल जन्म से हरिजन या अछूत होने की बात स्वीकार करता है, अपितु उस कलक को मिटाने के स्थान मे उसे चिरस्थाई बनने के पक्ष मे है।

आर्यसमाज की सदस्यता के लिये सभा ने जो प्रतिज्ञा या प्रण स्वीकार किया है उसमे भी जन्मगत जात-पात या छूआछूत न मानने का स्पष्ट उल्लेख है। इसलिये भी उपरोक्त सशोधन स्वय सार्वदेशिक सभा के निश्चय के विपरीत होगा। यदि आर्थिक कठिनाई आदि के कारण किसी को सदस्यता शुल्क मे रियायत देनी हो तो यह उद्देश्य हरिजन और गरीब आदि आपत्तिजनक तथा हीनता के द्योतक शब्दो के बिना भी दिया जा सकता है। उदाहरण के लिय आर्यसमाज के वर्तमान नियम स 5 (ख) मे अभी भी यह प्रावधान है कि किसी विशेष हेतु से चन्दा न दे सकने अथवा शताश नही देने वाले को भी आर्य सभासद बनाया जा सकता है।

मुझे आशा है कि आप उपरोक्त तथ्यो को ध्यान मे रखकर प्रस्तावित सशोधन को निरस्त किये जाने पर आवश्यक कार्यवाही करेगे।

आपका

(दत्तात्रय आर्य)

---

## श्री प. सत्यकाम जी का अभिनन्दन

गत चार दशाब्दियो मे आर्य समाज मे कई कार्य ऐसे हुए हैं जिनसे समाज को बडी क्षति पहुची है। इसके साथ ही कुछ ऐसे कार्य भी होने लगे हैं जिनसे आर्यसमाज मे उत्साह व श्रद्धा पैदा हुई है। आर्य समाज का यश ऐसे कार्यो से निश्चित रूप से बढेगा।

महानगरी बम्बई के आर्यो ने श्री प. सत्यकाम जी विद्यालकार का भव्य अभिनन्दन करके एक प्रशसनीय कार्य किया है। पण्डित जी का परिचय देने की आवश्यकता नही है। सारा हिन्दी जगत् और मत्र वेद प्रेमी उनकेनाम नामी से परिचित हैं। हम श्री प. सत्यकाम जी को तो बधाई देते हो है साथ ही बम्बई के आर्यो को भी इस आयोजन के लिए बधाई देते है।

बम्बई के ही एक प्रबुद्ध श्री केप्टन देव रत्न जी आर्य ने अपने पूज्य पिता जी से प्राप्त शुभ सस्कारो से प्रेरित होकर अपने समाज से आर्य विद्वानो के सम्मान की पावन परम्परा चलाई, जो आज भारत भर मे प्रचलित हो रही है। इससे आर्य समाज को अच्छे-अच्छे सेवक व निष्ठावान विद्वान् मिलेगे। आर्य समाज ने पहले से यह परम्परा चलाई होती तो आज विद्वानो की कमी कभी न खलती। —जिज्ञासु

# पत्र और विचार

### महर्षि लेख का सुस्पष्ट विरोध क्यो छापा गया ?

अभी ७-५-८९ का आर्यमित्र पढने मे आया आर्य पुनर्गठन के विरुद्ध शब्दाडबर युक्त तथ्यहीन लेख पढकर मुझे भी इच्छा हुई कि अनेको मे से एक प्रसग लिख भेजू जो आर्यमित्र मे छपी सामग्री के बाबत मेरे आक्षेप से सबद्ध है। लगभग ३ वर्ष पूर्व प. शिवदयाल जी का एक योग विषयक लेख आर्यमित्र मे छपा था जिसमे अथर्ववेद के मत्र देकर १००० वर्ष तक की आयु होना सिद्ध किया गया था। मैंने सपादक जी को लिखा कि महर्षि ने स्पष्ट लिखा है कि १००० वर्ष की आयु कपोल कल्पना है—

ऐसी दशा मे आपका छापा हुआ लेख मानें या महर्षि का सुस्पष्ट लेख, इस पर रूखा उत्तर आया कि "आपको शका हो तो लेखक को लिखे, उनका पता यह है। इस पर मैंने फिर लिखा कि मेरी शका नहीं, जिज्ञासा है आप ने लेख छापा इसलिये आप असहमत नही हैं यह प्रकट है। आप ही उत्तर दें इत्यादि—फिर आज तक कोई उत्तर नही आया—कई स्मरण-पत्र भेजे वो व्यर्थ रहे। ऐसे कई प्रसग हैं जो विस्तार भय से सप्रति नही लिखे जा रहे है भविष्य मे कभी कुछ और लिखू गा। नमूना एक ही काफी है। किमधिकम।

—स्वामी ओ३म प्रेमी चतुर्थाश्रमी, होशगाबाद।

### पाठको को सूचना

15 जून के अक मे प्रकाशित 'आर्यमित्र या आर्यामित्र' के लेखक श्री धर्मवीर शास्त्री का पता निम्न है- बी-1/51 पश्चिम विहार नई दिल्ली।

---

'आर्य पुनर्गठन' आर्य समाज के सिद्धातो का प्रचारित-प्रसारित करने वाला एक श्रेष्ठ पाक्षिक है जिसका स्वागत सर्वत्र किया जाना सहज स्वाभाविक है। सपादकीय 'बातें तो बहुत छोटी परन्तु सिद्धातत खोटी ? मे बहुत माकूल प्रश्न उठाये गय है। यह जागरूक सपादक महोदय के कर्त्तव्य एव साहस का द्योतक है।

—डा स्वर्णकिरण
सोहसराय-803118
(नालदा)

आचार्य दत्तात्रय जी,

नमस्ते।

मै जब तक 'आर्य पुनर्गठन' को नही पढ लेता मुझे चैन नहीमिलता।

आर्य जगत् मे एक मात्र यही पत्र आर्य सिद्धातो की रक्षा कर रहा है और आर्यजनो को प्रेरणा दे रहा है।

आपके विचारो से आपकी सिद्धातनिष्ठ' और ऋषि भक्ति प्रकट होती है। "आर्यमित्र का दैवी चमत्कार पढकर प्रसन्न हुआ। सत्य बात कहने मे कभी नही घबराना चाहिए।

—शिवनाथ आर्य
39, चक्खूवाला
देहरादून (उ प्र)

---

आपने आर्यमित्र के सम्बन्ध मे ठीक लिखा।

—आचार्य वीरेन्द्र मुनि शास्त्री,
सपादक-वेदज्योति
लखनऊ (उ प्र)

# साहित्य समीक्षा

1 दि आयसमाज ए मोम्ट रिवो यूशनरी रिफाम मूवमेट आफ इण्डिया-ले प्रो दत्तात्रय आय (वाब्ले) प्रकाशक-सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा दिल्ली। मूल्य 5 रुपये।

आय समाज के प्रगतिशील तथा क्रान्तिकारी रूप का परिचय देने की दृष्टि से यो तो अब तक अग्रजी म अनेक पुस्तक लिखी गई हैं किंतु एक एसी पुस्तक की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी जो सक्षप मे इस सस्था के के धार्मिक सामाजिक राजनतिक तथा शक्षिक कायो की सम्यक समीक्षा करने के साथ साथ इनकी पथनिर्देशक भूमिका का भी निर्धारण करे। इतिहासक गो न भारत का सवतोमुखी क्राति म आय समाज के काय का महत्व निरूपण करते हुए कहा कही बहुत सकोच के साथ तो कही पूर्वाग्रह पूर्ण दृष्टिकोण से इस विषय का चर्चा की है। हष का विषय है कि आयसमाज के प्रबुद्ध चितक श्री दत्तात्रय वाब्ले न स्वल्प कलेवर की यह पुस्तक लिखकर आय समाज के सवतोभद्र स्वरूप का विश्लेषण किया है। इससे पव वे आयसमाज और प्रचलित हिंदू धम मे वचारिक साम्यता एव विषमता पर एक अन्य गम्भीर विवेचना युक्त ग्रथ लिख चुके हैं। आलोच्य पुस्तक उन लोगो को भी जाना चाहिए जो आयसमाज की एतिहासिक उपलब्धियो स अपरिचित है अथवा जानबूझ कर उसके महत्व को स्वीकार नही करते। पुस्तक का अधिकाधिक प्रचार होना चाहिए तथा आयसमाजो के पुस्तकालयो मे इसे रखा जाना चाहिए।

2 महर्षि दयानन्द पत्रो क दपण मे।

दयानन्द वदिक शोध पीठ का प्रकाशन दयानन्द कालेज अजमर मूल्य 50 रु

किसी व्यक्ति द्वारा लिखे गये पत्र उसके विचारो कार्यो सिद्धान्तो और मन स्थितियो का मुह बोलती तस्वीर होते है। यही कारण है कि महापुरुषो का जीवन चरित्र लिखते समय या उसकी आलोचना करते समय उनके पत्रो के कथ्य की भी समीक्षा की जाती है। प भगवद्दत्त तथा प युधिष्ठिर मीमासक जैसे शोध विद्वानो के महत परिश्रम तथा अध्यवसाय से स्वामी दयानन्द द्वारा लिखे पत्र बहुसख्या मे उपलब्ध हो चुके है यद्यपि यह नही कहा जा सकता कि सभी पत्र मिल ही गये हैं।

प्रसन्नता की बात है कि आय समाज के युवा विद्वान डा कृष्णपालसिंह ने स्वामीजी के पत्रो तथा उनके उत्तर ग्रथो के आधार पर इस महापुरुष की विचार धारा की एक सश्लेषणात्मक समीक्षा आलोच्य पुस्तक मे प्रस्तुत की है। (पुस्तक की प्रस्तावना आचाय दत्तात्रय जी ने लिखी है—स) 13 अध्यायो म विभक्त इस उपयोगी ग्रन्थ मे पत्रो के आधार पर स्वामी दयानन्द के ईश्वरोपासना विषयक विचार वेद और वदिक साहित्य विषयक उनके मन्तव्य सस्कृत भाषा के प्रचार प्रसार तथा पठन पाठन मे ऋषि की भूमिका पुराणो विषयक उनके विचार तथा हिंदू अथवा आय गृहस्थ धम राजधम समाज सुधार योग विभूति गोरक्षा तथा राजनीति जसे कतिपय अन्य विषयो पर ऋषि के विचारो को उन्ही के शब्दो मे प्रस्तुत किया है। इस प्रकार यह ग्रथ सक्षिप्त रूप म दयानन्द विचार कोश की सज्ञा प्राप्त कर सका है।

तथापि दयानन्द के पत्र एव विज्ञापन एक अथाह सागर के तुल्य हैं जिसम पत्र लेखक के विचारो के साथ साथ अनेक समकालीन व्यक्तियो घटनाओ प्रसगो आदि की चर्चा तो मिलती ही है। दयानन्द के निजी व्यक्तित्व (Persnol l fe) को स्फुट करने वाली रोचक किंतु दुलभ सामग्री भी उपलब्ध होती है। जीवन चरित्र लेखको न यद्यपि इस सामग्री का यथासाध्य उपयोग किया भी है किंतु अभी भी बहुत कुछ करणीय है। डा सिंह ने स्वामी जी के जर्मन शिक्षा शास्त्री ... डा वाइज से हुए पत्राचार को भी ... अपनी विवेचना मे सम्मिलित किया है। ज्ञातव्य है कि डा वाइज द्वारा स्वामी जी के नाम लिखे गये मूल अग्रजी पत्र हिंदी अनुवाद सहित ... समीक्षा लेखक द्वारा सम्पादित किये जाकर वेदवाणी के फरवरी 1989 के अक मे प्रकाशित किये जा चुके हैं। आलोच्य पुस्तक के अतिम ... अध्याय मे स्वामी दयानन्द की ... काव्य रचना को उजागर ... दृष्टि से उनके द्वारा प ... कृष्ण वर्मा को सस्कृत ... लिखे पत्र को उद्धत करना ... की उपयोगिता को बढा देता है। आशा है दयानन्द के विवेचनात्मक साहित्य मे इस ग्रथ का सुनिश्चित स्थान होगा।

—डा भवानीलाल भारतीय

## देश मे भावी निर्वाचन

(शेष पृष्ठ 4 का)

और धम की रक्षा करने वाले, राम और कृष्ण के बताये जीवन मूल्यो की रक्षा करने वाले दल को अपनी सहायता जोर-शोर से करने अपने प्रभावशाली राजनीति मे रुचि रखने वाले समाज सेवियो के लिये सीट आदि मागने का भरपूर सक्रिय प्रयास करना चाहिये अन्यथा आने वाला समय हमे कभी माफ नही करेगा। दूसरो के मुह की ओर ताकना होगा। दुनिया झुकती है झुकाने वाला चाहिये। ताकत पैदा करो फिर देखो।

कुछ लोग कहते हैं कि अब तो आयसमाज का कोई काय शेष नही रह गया भारतीय सविधान मे आयसमाज के सभी आदर्शों को स्थान मिल गया है उन सभी कायक्रमो को अपना लिया है ऐसे लोगो की आखो पर अज्ञान का पर्दा पड गया है बुद्धि पर ताला लग गया है। सरकार को उन कायक्रमो को तेजी से क्रियान्वित करने हेतु मजबूर करने के लिये भी अपनी शक्ति और वचस्वता का परिचय देना ही होगा और वह निर्वाचनो मे अधिकाधिक आयसमाजी विचारधारा के लोगो को प्रभावशाली दलो से जीतवाकर भेजने से ही सम्भव होगा सरकार मे भी अपने लोगो को बैठाना होगा।

इस बारे मे देश के आय नेतागण गभीरता से विचार कर रणनीति तय करें और एक मच पर बैठकर सही समय पर सही दिशा निर्देश कर और आयजगत का मागदशन कर। एक कवि के शब्दो मे —

उठो, जागो सचेत बनो खतरे का घटा बजता है।
अगर जरा भी सोये अब तो साज मौत का सजता है॥

—रासासिंह



स्वत्वाधिकारी आयसमाज अजमर के लिए प्रकाशक एव सपादक रासासिंह हेतु रतनलाल गग द्वारा श्री आय प्रिन्टस बाबू मोहल्ला कैसरगज अजमेर मे मुद्रित एव आय समाज भवन अजमेर से प्रकाशित।

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सदा उद्यत रहना चाहिए।
—महर्षि दयानन्द

ओ३म्

# आर्य पुनर्गठन

आर्य समाज, अजमेर का हिन्दी पाक्षिक पत्र

'आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म ॥'

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सकल जगत को आर्य बनाए।

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होनेवाली समस्याओ को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 6 रविवार, 30 जुलाई, 1989
अक 14 प स -43383/84

अभय मित्रादभयम अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ॥

श्रावण कृष्ण 30 सवत 2046
वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60 पैसे


## क्यों है आर्य समाज की कुंठित गति ? कारण है जाति और राजनीति

—आचार्य दत्तात्रेय आर्य—

हमारी जन्म मूलक जाति-प्रथा न केवल एक सामाजिक अभिशाप ही है, अपितु वर्तमान पौराणिक या हिन्दू धर्म की प्राय सारे धार्मिक अन्धविश्वासो और सामाजिक कुरीतियो की पोषशाला है जिसमे प्राय सारे अन्धविश्वास और सामाजिक कुरीतिया पनपती और बढती हैं।

**जाति और राजनीति :**

देश की स्वाधीनता के पश्चात हमारे राजनैतिक जीवन को भी जातिवाद के इस दीमक ने खोखला कर दिया है। आयसमाज के सस्थापक ऋषि दयानन्द की प्रेरणा से उत्पन्न देश प्रेम और देश भक्ति के जिस राजनैतिक आदोलन ने कभी आर्यसमाज के अनुयायियो को आकर्षित किया था वह भी स्वराज्य प्राप्ति के 40-50 वर्षों मे शनै-शनै केवल एक सत्ता की राजनीति बन गया है जिसके कारण आर्यसमाज द्वारा प्रतिपादित वह धार्मिक और सामाजिक क्राति भी प्राय ओझल होती जा रही है जिसे कभी हमारे राष्ट्रीय नेता पुनर्जागरण और स्वराज्य का आवश्यक आधार समझते थे।

आर्यसमाज की वर्तमान कुंठित गति का मुख्य कारण भी उसमे दिन प्रतिदिन बढने वाले जातपांत और राजनीति का यही प्रभाव है।

**सार्वदेशिक सभा का निर्णय**— आय समाज के भविष्य के सबध मे विचार करने और सुझाव देने के लिए सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा द्वारा नियुक्त उपसमिति ने इसीलिए अन्य अनेक महत्वपूर्ण सुझावो के साथ ये अभिशसा की थी कि आर्यसमाज का सदस्य किसी जातीय सगठन का सदस्य नही होना चाहिए। इसे सभा ने स्वीकार कर लिया है।

दूसरी अभिशसा यह की गई थी कि जो व्यक्ति किसी राजनीतिक द का पदाधिकारी या उसके द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि हो वह भी आर्यसमाज या उसके प्रातीय या सार्वदेशिक सगठन का पदाधिकारी नही होना चाहिए। इस पर सभा ने अभी तक कोई निर्णय नही लिया।

**आर्यसमाज का वास्तविक स्वरूप**—आर्यसमाज एक राष्टीय तथा अन्तर्राष्टीय सगठन होकर भी पूण रूप से एक धार्मिक और सामाजिक आंदोलन समझा जाता है इसलिए राजनीति मे सक्रिय व्यक्ति इसके सदस्य तो हो सकते हैं किंतु उसके पदाधिकारी नही होने चाहिए। इस प्रकार हम आयसमाज को दलगत राजनीति से पृथक रखकर उसके व्यापक सार्वभौम स्वरूप को सुरक्षित रख सकते हैं।

**प्रजातत्र की असफलता**—

दुर्भाग्य से ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज के सगठन को जिस प्रजातन्त्रात्मक आधार पर स्थापित किया था वह भी आज हमारे देश मे राजनैतिक प्रजातत्र के समान असफल हो गया है। जिस प्रकार देश की राजनीति मे जातपात और सत्ता की सकीर्ण राजनीति का वचस्व है उसी प्रकार आर्यसमाज के निर्वाचन भी प्राय: जातिवाद तथा दलीय राजनीति से प्रभावित हो गये हैं और परिणाम स्वरूप आर्यसमाज तथा उसकी सस्थाओ मे या तो किसी जाति विशेष के लोगो का एकाधिकार है या फिर किसी विशेष राजनीतिक दल के अनुयायियो का प्रभुत्व है। यही कारण है कि आयसमाज धीरे-धीरे अपनी धार्मिक और सामाजिक मान्यताओ के बारे मे भी समझौत की नीति अपनाने लगा है जिनके कारण उसमे और हिन्दुओ के अन्य सुधारवादी सगठनो मे कोई अन्तर दिखाई नही देता।

**जातीय सुधार**—जातीय सगठनो से जुडे हुए कुछ आय समाजी ये तक देते रहे हैं कि वे अपनी जाति मे रहकर या उससे जुडकर उनमे उन सुधारो को ज्यादा आसानी से मनवा सकते हैं जिनका आर्य समाज प्रचार व प्रसार करना चाहता है। किंतु गत 50 60 वर्षों के अनुभव से स्पष्ट है कि इस प्रकार के व्यक्ति कुछ छोटे मोटे सुधारो को छोडकर अपने तथाकथित उद्देश्य मे सफल होने के स्थान मे स्वय उन धार्मिक और सामाजिक

(शेष पृष्ठ 4 पर)

## आचार्य दत्तात्रेय अमेरिका के विश्वविद्यालय द्वारा आमंत्रित

अजमेर। अमेरिका के 'मार्शल विश्वविद्यालय'' नामक प्रख्यात विश्वविद्यालय ने आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान नेता आचार्य दत्तात्रेय आय को अगस्त,' 89 मे भारतीय अध्ययन से सबधित अपने विभाग मे विशेष व्याख्यान देने के लिए आमन्त्रित किया है। आचाय जी के व्याख्यानो का विषय "उन्नीसवी शताब्दी मे भारत के धार्मिक एव सुधार आन्दोलन' होगा।

यह भी उल्लेखनीय है कि सन 1956 मे भी आचाय दत्तात्रेय जी को अमेरिका सरकार व ब्रिटिश कौंसिल ने 'लीडर एक्सचज' (सास्कृतिक आदान-प्रदान) नामक कायक्रम के अतगत अमेरिका तथा इग्लैण्ड मे व्याख्यानो के लिए आमन्त्रित किया था। उस यात्रा के सबध मे लिखी उनकी पुस्तक 'टू वे ट्रैफिक' काफी चर्चित रही है।

आचाय दत्तात्रेय जी को "आर्यप्रतिनिधि सभा आफ साउथ अफ्रीका' ने भी सितम्बर, 89 मे अपने मुख्य समापन समारोह म निमन्त्रित किया है। आचार्य जी 3 अगस्त 89 को सपत्नीक अजमेर से अमेरिका के लिए रवाना होगे।


निदेशक दत्तात्रेय आर्य    प्रधान सपादक रासासिंह    सपादक वीरेन्द्र कुमार आर्य    ☎ कार्या 21010

सम्पादकीय

# आर्यसमाज पुन: लोकप्रिय कैसे हो ?

जिस संगठन के पीछे महर्षि दयानन्द की महान तपस्या और त्याग हो, जिस संगठन के पीछे स्वामी श्रद्धानन्द और प लेखराम का बलिदान हो जिस के पीछे लाला लाजपतराय और महात्मा हंसराज की सेवा का इतिहास हो, जिस संगठन का विस्तार देश-विदेश मे हुआ हो, जिस संगठन के हजारो कर्मठ सभासद हो, जिस संगठन के प्रति आस्था और विश्वास करने वाले लाखो लोग हो वह संगठन आज की वैषम्यपूर्ण परिस्थितियो मे कुछ 'यथा स्थितिवादी' या ''चलती का नाम गाडी'' वाला शिथिल संगठन बनकर रह गया है। हमारे नेताओ, पदाधिकारियो, उपदेशको, साधु सन्त महात्माओ, मनीषियों एव सन्यासियो को इस विषय पर गभीरता स विचार करने की आवश्यकता है।

आज छोटे-छोटे संगठन भी कभी आक्रामकता तो कभी आतकवाद तो कभी उग्रवाद, तो कभी अपने संगठन के बल पर, कभी विघटन के नाम पर, तो कभी वोट की शक्ति के बल पर या फिर बन्द, घेराव, हडताल, धरणे, सत्याग्रह आदि आदोलनो के माध्यम से सरकार पर दबाव डालते रहते हैं अथवा अखबारो की सुर्खियो मे छाये रहते हैं परन्तु आर्यसमाज एक राष्ट्रीय संगठन होने के बावजूद भी निष्क्रियता का शिकार रहता है, सामान्य जनता एव सरकार तथा राजनीतिज्ञो द्वारा सर्वथा उपेक्षित रहता है।

कहने को हम कह सकते हैं कि हम कट्टर राष्ट्रवादी हैं, देशभक्त हैं, राष्ट्र निर्माण मे मौन साधना से लगे हुए हं, पर इस दृष्टि से भी हमारी तुलना मे अन्य संगठनो की ही चर्चा ज्यादा रहती है, कोई माने या न माने—हम पीछे ढकेल दिये गये हैं।

सामाजिक और धार्मिक दृष्टि से भी हम विशुद्ध विवेक सम्मत, भारतीय संस्कृति के प्रबल पक्षधर एव वेदाधारित रह कर भी इस प्रकार के अन्य संगठनो से बहुत पीछे चले गये है। हमारा असली माल कोई लेने को तैयार नही और देश के बाजार मे नकली माल का ही बोलबाला हो रहा है। ज्वलन्त प्रश्नो पर राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ, विश्व हिंदू परिषद, नामधारी, निरकारी राधास्वामी, सतनामी अथवा अन्य पौराणिक मतमतान्तरो का ज्यादा बोलबाला और होहल्ला रहता है। उनके सत्सगो मे धार्मिक आयोजनो तथा जलसे जुलूसो मे बहुत भीड-भाड रहती है जबकि हमारे सब कार्यक्रम फीके होने लग गये है, सत्सगो वार्षिकोत्सव के जलसे जुलूसो की सख्या घटती चली जा रही है। यह अत्यन्त चिन्तनीय है।

अत आज हमे आत्म निरीक्षण करने की सख्त आवश्यकता है। परम आवश्यकता इस बात की है कि हम गहराई से सोचें।

जिस आर्य समाज का स्वाधीनता सग्राम मे योगदान रहा, जिसके वीर बाकुर सब से ज्यादा जेलो मे गये, अग्रेजो की लाठिया-गोलिया खाई, जिस समाज ने सामाजिक पुनर्जागरण मे सर्वाधिक योगदान दिया, जिस सस्था के बडे-बडे शास्त्रार्थ महारथियो ने तह तक जाने के लिये शास्त्रार्थों की धूम मचा दी थी। जिस सस्था के प्रकाण्ड विद्वानो के अकाट्य तर्कों के सामने अन्य धर्मों की बोलती बन्द हो जाती थी, जिसका लोहा सारा समाज और राष्ट्र मानता था, जिस सस्था के सपूतो ने अन्धविश्वासो एव सामाजिक कुरीतियो को मिटाने के लिये जान की बाजी तक लगा दी थी, खेद है कि आज वही सस्था अपनी चहारदीवारियो तक सीमित रह गई है। क्या यह परिस्थिति हम दयानन्द के नाम लेवाओ तथा झण्डाधारियो के लिय आत्मालोचन की नही है ?

मेरी राय में आर्यसमाज को पुन: पूर्व गौरवानुरूप प्रतिष्ठा तथा मान सम्मान एव लोकप्रियता प्राप्त करने के लिए निम्न उपाय बरतने चाहिए—

1 आर्यसमाज सेवाभावी प्रवृतियो-यथा एम्बुलेन्स, चिकित्सा, निराश्रितो की रक्षा, कोढियो की सेवा, उपेक्षितो को सहारा आदि प्रारम्भ करें।

2 आर्यसमाज सार्वजनिक हितकारी कार्यों के केन्द्र बनें। उनमें स्वाध्याय, सास्कृतिक शिक्षण, सस्कार निर्माण, योगाभ्यास, ध्यानकेन्द्र पुस्तकालय, वाचनालय, वेदाध्ययन, अध्यापन की प्रवृत्तिया सचालित हो।

3 आर्यसमाज में योग्य, निष्ठावान, सिद्धातनिष्ठ एव चरित्रवान तथा सेवाभावी आर्यों को ही प्रवेश मिले।

4 आर्यसमाज सस्थागत आधार ही न बनाकर जन्मगत आधार का निर्माण करे।

5 आर्यसमाज से पार्टी बन्दी, धडेबदी, गुटबन्दी, अफसरशाही, चौधराना पदलिप्सा, चुनाव प्रणाली की गदगी अविलब दूर होनी चाहिए।

6 आर्यसमाजियो मे प्रामाणिकता, विश्वसनीयता, सैद्धातिकता, चारित्रिक सुदृढ़ता हो।

7 आर्यसमाजियो की कथनी और करनी मे अन्तर न हो। वह सत्यवादी, साहसी, निर्भीक, सद्व्यवहारी, श्रद्धा एव तर्क मे सतुलन होकर व्यवहार करने वाला हो।

8 वेदोपनिषद तथा आर्यग्रथो एव ऋषि प्रणीत ग्रथो का निरतर स्वाध्याय हो।

9 स्वार्थ, लोभ, अर्थलिप्सा, पक्षपात का सर्वथा त्याग हो।

10. आर्यजन मनसा वाचा कर्मणा सचमुच ही आर्य हो अर्थात् सदाचारी, धर्मात्मा, ईश्वरभक्त एव परोपकारी हो। व्यक्ति से ही समाज का निर्माण होता है।

11 आर्यसमाज को वेदों के प्रचार प्रसार, सामाजिक कुरीतियो के उन्मूलन एव अन्धविश्वासो के मूलोच्छेदन की ओर सर्वाधिक ध्यान देना चाहिए। भजनोपदेश, प्रचारक चलते फिरते आर्यसमाज हो।

12 शास्त्रार्थों का पुन प्रचलन होना चाहिए। धर्मनिरपेक्षता एव साम्प्रदायिकता के नाम पर हमे हताश/निराश नही होना चाहिए। डके की चोट सही बात कहना चाहिए।

13 ज्वलत समस्याओ, राष्ट्रीय विषयो पर खुल कर अपना दृष्टिकोण व्यक्त करना चाहिए।

14 अपने परिवारो को आर्य बनाने के लिये पूरा-पूरा प्रयास करना चाहिए। आर्यसमाज के सत्सगो मे, कार्यक्रमो मे उन्हे भी साथ लाना ले जाना चाहिए।

15 हम अपने से प्रेम रखें। नैष्ठिक तपोनिष्ठ कार्यकर्त्ताओ को आगे बढाये। टाग खिचाई न हो तथा पदलोलुपता के शिकार न बनें।

16 आर्यसमाज मे युवको को अधिकाधिक आकर्षित करें। आर्य वीर दल, आर्य युवक परिषद, आर्य कुमार सभा आदि का गठन करे।

17 महिलाओ को भी आगे बढावें, सभी कार्यक्रमो मे उनका योगदान प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

18 आश्रम व्यवस्था का पूरा पालन होना चाहिए।

19. प्रात साय ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ आदि का पूर्णत पालन होना चाहिए।

20. आर्यजनो को स्वय कष्ट उठा कर भी दूसरो का भला करने का निरतर प्रयास करना चाहिए। परोपकार को कभी नही भूलना चाहिए।

—रासासिंह

# आर्य पत्रों का गिरता हुआ स्तर

—डा भवानीलाल भारतीय—

मैं गत 39 वर्षों से निरन्तर आर्यसमाज के पत्रो में लिखता आ रहा हूं। मेरा प्रथम लेख 1950 मे छपा था। प्राय सभी आर्य पत्र मेरे लेख छापते हैं तथा आर्यसमाज के सभी वर्तमान एव विगत सम्पादको से मेरे स्नेहपूर्ण सम्बन्ध रहे हैं। किन्तु मैं गत कुछ वर्षों से यह अनुभव कर रहा हूं कि आर्यसमाज की पत्र पत्रिकाओ का वैचारिक स्तर निरन्तर गिर रहा है। इसके कई कारण हैं। यथा

अधिकाश आर्य पत्र सभा सस्थाओ के गजट या सूचना पत्रक होते हैं। उनमे मौजूदा अधिकारियो की स्तुति या प्रशस्ति के अतिरिक्त बहुत कम पठनीय सामग्री होती है।

2 अधिकाश पत्रो की देख-रेख सभा के वैतनिक कार्यालय-इ चार्ज (हैड क्लर्क) के जिम्मे होती है व्यक्ति को पत्रकारिता का स्वरूप बोध भी नही होता। वतन दकर ।कता। योग्य व्यक्ति को पत्र का सम्पादन कार्य हमारी सभाये देती ही नही।

3 कुछ योग्य सपादक हैं किंतु या तो आर्यसमाज की विचारधारा से अनभिज्ञ हैं या उन पर हिन्दुत्व का भूत इतना अधिक सवार रहता है कि जाने अनजानेऐसी सामग्री छाप देते हैं जो आर्यसमाज के सिद्धातो के विपरीत होती है।ऐसे पत्र भी हैं जो यद्यपि हजारो पाठको तक पहुचते हैं किन्तु उनमे दयानन्द कीअपेक्षा वीर सावरकर, बलराज मधोक तथा विश्व हिन्दू परिषद के विचारो को ही प्रमुखता से छापा जाता है।

4 सम्पादक सर्वज्ञ नही होता किन्तु उससे अपेक्षा की जाती है कि वह सतर्क और सावधान होकर सामग्री आर्य अपने पत्र मे दे। पत्रो की कुछ भूलो का निर्देशन करना चाहता हू।

(अ) 'सार्वदेशिक' हमारी शिरोमणि सभा का मुख पत्र है। इसके गत ऋषि बोध रात्रि विशेषाक मे स्वामी दयानन्द का स्वय का लिखा एक लेख छपा है। उसका शीर्षक है-सदाचार। वस्तुत यह लेख आर्यसमाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द का लिखा नही है। इसके लेखक दयानन्द नामक एक सनातनी सन्यासी हैं जो बगाल के थे और 'स्वामी दयानन्द बी ए' के नाम से भारतधर्म महामण्डल (सनातनी सस्था) के प्रचारक थे। इन सनातनी दयानन्द के लेख को ऋषि दयानन्द के नाम से छापने की भूल पहली बार नही हुई है। 1959 मे जब ऋषि दयानन्द की दीक्षा-शताब्दी के अवसर पर सार्वदेशिक ने अपना विशेषाक छापा था, उसी मे पहली बार इस लेख को ऋषि का नाम देकर सगर्व प्रकाशित किया गया। उस समय सम्पादक मण्डल मे आचार्य विश्वश्रवा जी भी थे। किन्तु शीघ्र ही इस भूल का ज्ञान हो गया और सार्वदेशिक मे तत्काल स्पष्टीकरण दिया गया कि इस लेख के लेखक सनातनी दयानन्द है न कि ऋषि दयानन्द। यही गलती अब 30 वर्ष बाद सम्पादकीय प्रमाद के कारण पुन हुई है। आशा है सार्वदेशिक मे इसका स्पष्टीकरण कर दिया जायेगा।

(आ) सम्पादको को चाहिए कि वे सिद्धात विरोधी बात पर अपनी टिप्पणी अवश्य लगायें किन्तु असावधानी या अज्ञानवश ऐसा नही होता। एक प्रसिद्ध आर्य साप्ताहिक ने एक व्यक्ति का पत्र प्रकाशित किया जिससे यह ध्वनि निकलती है कि ऋग्वेद मण्डल 2सूक्त ७ मत्र 1 मे इस देश का नाम भारत वर्णित है। न तो लेखक को और न सम्पादक को ही इस बात का ध्यान रहा कि वेदो मे देश विशेष की चचा नही है। वेदो मे किसी देश या काल विशेष का उल्लेख नही होता।

आर्यसमाज के पत्रो के गिरते स्तर पर और भी बहुत कुछ लिखा जा सकता है, किन्तु अब तो मुझ जैसे सिद्धात निष्ठ लेखक की सत्य बातो को पढने से भी कइयो को झुझलाहट होती है। कई पत्र तो मेरे लेख छापने भी नही यद्यपि हमसे कम गुणवत्ता वाले नौसिखुओ की रचनायें छाप देते है। किन्तु मुझे भी आर्य पत्रो मे लिखन का मज है। चालीस साल की आदत छूटती भी तो नही। कभी-कभी तो अनुभव होता है कि इन पत्रो मे सामयिक लेखन के फेर मे पड़कर मैं गम्भीर लेखन की उपेक्षा कर रहा हू। यह बहुत अश मे सत्य भी है किन्तु कलम घिसने का भी एक नशा होता है जो इतना जालिम है कि कम्बख्त छूटता भी नही। 'आर्य पुनगठन' अल्पकाय होते हुए भी आर्य सिद्धातो के प्रति कट्टर निष्ठा रखता है अत यह पत्र साधुवाद का पात्र है।

# जातीय श्रेष्ठता का दंभ

—वीरेन्द्र कुमार आर्य—

गत दिनो राजस्थान के अलवर जिले के एक गाव मे सवर्णों ने एक हरिजन बारात के दूल्हे को घोडी पर नही चढने दिया। इसके लिए उन्होने हरिजनो से दुर्व्यवहार भी किया। इस घटना के समाचार को जानकर समाज के सभी प्रगतिशील व्यक्तियो को दु ख हाना स्वाभाविकहै।

आजादी के इतने वर्ष बाद भी एक दूल्हे को जन्मगत जाति के तथाकथित अहम् के नाम पर घोडी पर न बैठने देना, स्वतन्त्र भारत के तमाम बुद्धिजीवियो, समाज सुधारको और राजनेताओ की योग्यता पर प्रश्न चिह्न लगाता है। आखिर इतने समय मे भी हम समाज के वर्ग विशेष को उनका समानता का अधिकार नही दिला पाए है।

राजस्थान के मुख्यमत्री श्री शिवचरण माथुर व उनके जैसे विचार रखने वाले राज्य के अन्य राजनेताओ से भी यह पूछा जा सकता है कि जब अग्निवेश ने नाथद्वारा के मदिर मे हरिजनो को प्रवेश कराने की बात की थी तो उन्होने किस आधार पर हरिजनो के प्रति समानता का व्यवहार होने का दावा किया था। क्या उनके दावे की पोल को अलवर के इस काड ने पूरी तरह उजागर नही कर दिया है।

अलवर मे हरिजनो के साथ हुए दुर्व्यवहार की यह कोई एक मात्र घटना नही है। राजस्थान मे इसी वर्ष ऐसी ही एसी दो घटनाए पहले भी हो चुकी हैं। लेकिन आरक्षण का चारा फेककर वोटो की फसल काटने की कोशिश मे लगी किसी भी राजनीतिक पार्टी ने इस सबध मे कुछ भी करने की कोई आवश्यकता नही समझी है। (सभी वोटो की राजनीति जो करते है।)

हरिजनो से हो रहे दुर्व्यवहार के बीच ही एक ओर केन्द्र की इका सरकार चुनावो के नजदीक होने के कारण अनुसूचित जाति एव अनुसूचित जनजाति के रिक्त आरक्षित पदो को शीघ्र भरने की मुहिम चला रही है। क्या इसके इस अभियान को भी अपरोक्ष रूप मे वर्गभेद भडकाने का दोषी नही कहा जा सकता? यो आरक्षण का विरोध करने वाले व्यक्ति बहुत कम मिलेंगे, लेकिन जिस तरह स इन आरक्षित रिक्त पदो को भरने की धुआधार मुहिम चलायी जा रही है, उससे कथित सवर्णों के मन मे हरिजनो के प्रति एक नाराजगी का उत्पन्न कोई अस्वाभाविक नही है। लेकिन क्षुद्र स्वार्थों में जकडी सरकार क्या इसे कभी समझ सकती है? नही, वह इस तथ्य को नही समझेगी। सत्य यह है कि आज जो काशीराम इका का सिरदर्द है, वह उसी नीतियो का फल है और यदि भविष्य मे यदि सवर्णो मे काशीराम उभरता है तो वो भी सरकार की गलत नीतियो की उपज ही होगा।

अलवर मे हरिजन दूल्हे के साथ हुए दुर्व्यवहार ने देश के सभी राजनेताओ, बुद्धिजीवियो एव समाज के सभी जागरूक लोगो को जातिवाद एव अस्पृश्यता की समाप्ति के विषय मे नए सिरे से विचार करने की पुन प्रेरणा दी है और इसका लाभ उठाया जाना चाहिए।

# दयानन्द शोधपीठ को मान्यता

अजमेर विश्वविद्यालय ने गत कई वर्षों से आचार्य दत्तात्रेय आर्य के निर्देशन मे सचालित दयानन्द शोधपीठ को मान्यता प्रदान कर दी है। यह जानकारी शोधपीठ के एक प्रवक्ता ने दी।

प्रवक्ता ने बताया कि विश्वविद्यालय ने एम फिल पी एच डी और विद्या वारिधि की शोध उपाधियो के लिए मान्यता प्रदान की है। अब शोधपीठ के शोधछात्र इन उपाधियो के लिए शोधकार्य कर सकेंगे।

प्रवक्ता ने अपनी विज्ञप्ति मे बताया है कि अभी तक शोधपीठ कई उच्च स्तरीय शोध ग्रथो का प्रकाशन कर चुकी है और निकट भविष्य मे ही श्री दत्तात्रेय के निर्देशन मे लिखित 'वैदिक धर्म की सार्वभौमिकता' नामक एक महत्त्वपूर्ण शोध ग्रथ का प्रकाशन होने जा रहा है।

पत्र और विचार

## 'आर्य मित्र' का सिद्धान्त विरोध

'आर्यमित्र' के ... विषयक लेख पर मैंने सपादक को पत्र ... कर विरोध व्यक्त किया था। ... पर आर्यमित्र के प्रबन्ध सपादक श्री इन्द्रदेव पाठक का उत्तर आया कि वर्तमान हिन्दू धर्म ही वैदिक धर्म है। वस्तुत ऐसा उत्तर कोई विश्व हिन्दू परिषद का व्यक्ति ही दे सकता था। मैंने इस पत्र के विरोध स्वरूप पत्र के सपादक को लिख भेजा ... में आपके पत्र का ग्राहक नहीं ... रहना चाहता।

वास्तव में श्री इन्द्रराज का हिन्दुत्व के प्रति मोह जग जाहिर है, तभी वे स्वामी अग्निवेश की पुरा महादेव की पाखण्ड विरोधी पदयात्रा मे भी सम्मिलित नहीं हुये थे। जबकि वह स्थान उनके गृह जिले मेरठ में ही स्थित है।

—इन्द्रजित् देव
यमुनानगर (हरियाणा)

## क्यो है...

शेष पृष्ठ 1 का

कुरीतियों के शिकार हो जाते हैं जिनका आर्यसमाज विरोध करता रहा है। इतना ही नही वे स्वय अपनी जाति के सदस्यो के बल पर निर्वाचित होकर आर्यसमाज म भी उन सुधारो के सबध मे ढुल-मुल नीति अपनाते हैं।

**आर्यसमाज और राजनीति**—यही स्थिति उन आर्यसमाजियो की भी है जो ऋषि दयानन्द की राजार्य सभा की मान्यता की दुहाई देते हैं अथवा स्वाधीनता आदोलन मे आर्य समाज के योगदान और उसके राष्ट्रीय स्वरूप की बात करते हैं। स्वामी जी ने राजार्य सभा का आर्य राज्य व्यवस्था के एक अग के रूप में प्रतिपादन किया है न कि दलगत राजनीति के लिये उसका उपयोग करने के लिए। जहा तक आर्य समाज के राष्ट्रीय स्वरूप और स्वाधीनता आदोलन मे योगदान का प्रश्न है, यह कहने की आवश्यकता नही है कि इन दोनो क्षेत्रो मे भी आज आर्यसमाज का नेतृत्व नहीं है और न ही विशेष प्रभाव। जो आर्य समाजी विधानसभा या मन्त्रिमण्डल आदि मे स्थान प्राप्त करते हैं उन्हे भी अपने राजनीतिक दल की इन मान्यताओ के कारण आर्यसमाज के सिद्धातो की उपेक्षा करने पर विवश होना पड़ता है। जब ऐसे आर्य नेता या सासद मदिरो, दरगाहो तथा तीर्थ स्थानो मे जाकर पूजा अर्चना या जियारत करते हैं तो उनसे यह कैसे आशा की जा सकती है कि वे सक्रिय राजनीति मे रहकर आर्यसमाज की मान्यताओ और सगठन को प्रभावशाली बनाने मे कोई सहयोग दे सकेंगे।

**धर्म निरपेक्ष या सर्वधर्म सापेक्ष राज्य**—वस्तुत महात्मा गाधी के नेतृत्व मे हमारी देश की राजनीति ने एक ऐसा मोड ले लिया कि जिसके कारण विशुद्ध भारतीय राष्ट्रीयता के स्थान मे हिंदू मुस्लिम आदि के धार्मिक मतभेदो की अराष्ट्रीय विचार धारा का उसमे समावेश हो गया है। रही सही कसर सर्वधर्म सापेक्षता के रूप मे धर्म निरपेक्षता के विकृत रूप ने पूरी कर दी है। एक धर्म के नाम पर होने वाले अन्धविश्वासो और दकियानूसी रीति रिवाजो से राज्य व्यवस्था को मुक्त रखने के प्रशसनीय उद्देश्य के स्थान मे अब राज्य द्वारा सब धर्मों के अन्ध विश्वासो तथा समाज तथा राष्ट्र विरोधी मान्यताओ तक का समर्थन किया जाने लगा है।

**असफल प्रयोग**—स्वय आर्य समाज के नाम से जब कभी कोई 'आर्य सभा' या प बुद्धदेव जी की कल्पना का 'वर्णाश्रम सघ' जैसा राजनीतिक सगठन बनाने का प्रयत्न किया गया तो वह बुरी तरह से असफल रहा। आज यह कल्पना करना भी कठिन है कि केवल आर्य समाज के नाम पर कोई व्यक्ति राजनीतिक चुनाव जीत सकेगा। ऐसी स्थिति में कुछ लोगों की महत्वाकाक्षा या स्वार्थसिद्धि के लिये आर्य समाज के नाम का दुरुपयोग नहीं करने दिया जाना चाहिये। आर्य समाज के नाम पर चुनावो मे इस प्रकार की बुरी असफलता केवल उसकी निर्बलता और प्रभाव हीनता का ही दयनीय प्रदर्शन होगा।

**राजनीति से हानि**—राजनीतिक दलो के अनुयायी जब आर्य समाज मे सक्रिय होने लगते हैं तो वे राजनीति को आर्यसमाज से प्रभावित करने के स्थान मे आर्यसमाज को ही अपने राजनीतिक विचारो से प्रभावित करने का प्रयत्न करते हैं। यही कारण है कि भिन्न-भिन्न राजनीतिक विचारधाराओं के व्यक्ति आर्यसमाज मे भी ऐसे मतभेदों और दलबन्दी को जन्म देते हैं, जिनका आर्य समाज की मान्यताओ से कोई सम्बन्ध नही होता। इसलिये राजनीति के प्रतिकूल क्षेत्र के स्थान में यदि आर्यसमाज अपने धार्मिक और सामाजिक स्वाभाविक क्षेत्र में अपनी स्थिति को मजबूत करता है तो न केवल उसमे सफलता ही मिलेगी बल्कि वह अप्रत्यक्ष रूप से अपनी शक्ति और सगठन का उपयोग राजनेताओं को आर्यसमाज के कार्यों में सहयोग देने के लिए प्रेरित और प्रभावित करने के लिए कर सकता है। ऐसी स्थिति मे आर्यसमाज मे राजनीतिक नेताओं के पीछे भागने की आवश्यकता नहीं रहेगी बल्कि राजनेता स्वय आर्यसमाज के पीछे भागेंगे।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि यदि आर्यसमाज को अपनी दयनीय स्थिति से उभर कर पुन: एक शक्तिशाली क्रांतिकारी आन्दोलन बनना है तो उसे जातपात और राजनीति के इन दोनो कुप्रभावों से सुरक्षित रखना होगा।



स्वत्वाधिकारी आर्यसमाज अजमेर के लिए प्रकाशक एव सपादक रासासिंह हेतु रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्य प्रिन्टर्स बाबू मोहल्ला केसरगज, अजमेर में मुद्रित एव आर्य समाज भवन, अजमेर से प्रकाशित।

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने मे सदा उद्यत रहना चाहिए।
—महर्षि दयानन्द

ओ३म्

# आर्य पुनर्गठन

आर्य समाज, अजमेर का हिन्दी पाक्षिक पत्र

'आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म॥'

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सकल जगत को आर्य बनाए।

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होनेवाली समस्याओ को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 6 मगलवार, 15 अगस्त, 1989
अक 15 प स -43383/84

अभय मित्रादभयम अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात्।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु॥

श्रावण शुक्ला 13 सवत 2046
वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60 पैसे

## जन्म जयन्ती पर विशेष

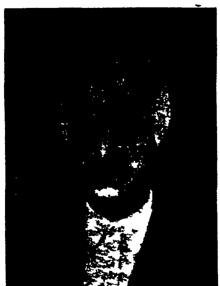
# सेवा और संघर्ष के पुरोधा : कर्मवीर पं. जियालालजी

—रासासिह—

**सेवा और सघर्ष के पुरोधा, दयानन्द कालेज अजमेर के सस्थापक, आर्य समाज अजमेर के उन्नायक एवं विस्तारक, हिन्दी-हिंदू-हिंदुस्तान के रक्षक एव प्राणाधार, अदम्य साहसी एव निर्भीक आर्य नेता कर्मवीर प. जियालाल जी का जन्म श्रावणी पूर्णिमा सम्वत् 1946 वि. तदनुसार सन 1889 ई मे बुलन्दशहर (उत्तर प्रदेश) मे हुआ था।**

उनकी कर्म एव सेवास्थली अजमेर और राजस्थान बना। अक्टूबर, 1908 ई मे वे नौकरी हेतु अजमेर आये और फिर वे सदा के लिये यहीं के ही गये। 19 दिसम्बर 1961 ई को इस महान साहसी, कमठ, आर्य नेता के देहान्त से अजमेर के सार्वजनिक जीवन और सेवा भाव का एक युग समाप्त हो गया। 53 वर्ष का अजमेर मे बीता यह लम्बा समय उनके अदम्य उत्साह, तजस्वी व्यक्तित्व, असाधारण लगन और अनुकरणीय आत्मसमर्पण का एक ऐसा इतिहास है जिसका उदाहरण अब हमारे सार्वजनिक जीवन म मिलना कठिन है।

सार्वजनिक काय और सेवा उनका पेशा' नहीं बल्कि धुन और लगन तथा आर्य समाज के प्रति अनन्य निष्ठा परिणाम था। अपनी जीविका अथवा व्यक्तिगत आवश्यकता के लिए उन्होंने जनता के एक पैसे का भी कभी उपयोग नहीं किया यद्यपि सार्वजनिक कार्यो के लिए उनके द्वारा लाखो रुपये का सग्रह हुआ।



ऋषि दयानन्द के मिशन के प्रति उनकी लगन और श्रद्धा इतनी अटूट थी कि वे अपने आपको दयानन्दी और दयानन्द का अन्ध भक्त कहा करते थ। एक निर्भीक आर्यसमाजी के नाते देश की स्वाधीनता के राष्ट्रीय आदोलन के साथ उनकी सहानुभूति स्वाभाविक रूप से थी और अपने निष्कपट तथा दृढ स्वभाव के कारण राष्ट्रीय कायकर्ताओ, नेताओ तथा क्रातिकारियो को सक्रिय सहयोग भी देते थे किन्तु कट्टर अहिंसा और साम्प्रदायिक तुष्टिकरण की गाधीजी की नीति से उनका मतभेद रहा।

बाबूजी के नाम से विख्यात कर्मवीर प जियालाल जी के सार्वजनिक जीवन की एक और विशेषता थी कि वे एक बार जिस कार्य को करने का सकल्प कर लेते थे उससे वे कभी पीछे नहीं हटते थ। हैदराबाद के आय सत्याग्रह अथवा पजाब के हिंदी आदोलन मे जहा देश के अन्य स्थानो से व्यक्ति या जत्थे गए वहा प डित जी ने स्पेशल ट्रेन सत्याग्रहियो की भेजी। छूआछूत को मिटाने के लिये अजमर मे आनासागर की बारादरी पर बडे-बडे प्रीतिभोजो का आयोजन किया जिसमे ब्राह्मण और हरिजन साथ बैठकर भोजन करत थे।

उन्होने 1939-40 मे युद्धजन्य विषम परिस्थितियो मे अजमेर मे दयानन्द कालेज की स्थापना करने की घोषणा की और जी-जान से जुट गये।

उनके साथियो के पैर डगमगाने लग गये तथा अजमेर के आर्य सामाजिक जगत मे दलबन्दी भी अपनी चरम सीमा पर थी परन्तु धुन के धनी, साधारण पढे लिखे उस साहसी, सघर्षशील व्यक्तित्व के धनी ने रात दिन एक कर दिया और विशाल भूभाग प्राप्त कर आर्य जगत् के तत्कालीन मूर्धन्य सन्यासी वीतराग श्री स्वामी सर्वदानन्द के पवित्र कर—कमलो से दयानन्द कालेज की स्थापना करवा दी। आज यह कालेज एक लघु विश्वविद्यालय बन गया है और उनकी कीर्ति का यश स्तम्भ है।

कर्मवीर प जियालाल जी गरीबो और दीन दुखियो की सहायता को सदैव तत्पर रहते थे। उनकी कार्य शक्ति, प्रबन्ध शक्ति योजना शक्ति एव नेतृत्व क्षमता अनुपम थी। उनका तन, मन, धन, आर्यसमाज को अर्पित था। राजस्थान के आर्य सामाजिक इतिहास मे कर्मवीर प जियालालजी जैसी अमर विभूति का नाम सदैव चिरस्मरणीय रहेगा। 'आर्य पुनर्गठन' परिवार की ओर से इस महान आर्यनेता को विनम्र श्रद्धांजली।

निदेशक दत्तात्रेय आर्य    प्रधान सपादक रासासिह    सपादक वीरेन्द्र कुमार आर्य    ☎ कार्या 21010

## सम्पादकीय

# 'योगक्षेमो नः कल्पताम्'

हमारा देश 15 अगस्त 1947 ई को अग्रजो की पराधीनता से मुक्त हुआ। यह दिन स्वतन्त्रता दिवस के रूप मे हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। भारत लगभग 700 वर्ष तक आपसी फूट अनेकता सम्प्रदायिक वितण्डावाद, केन्द्रीय सत्ता के अभाव मे पराधीनता की बेड़ियो मे जकड़ा रहा। अंतिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान की मोहम्मद गौरी के हाथो छलकपट मे हुई पराजय के कारण 1192 ई से हा पराधीनता के अकुर पनपे थे। अंतिम विदेशी शासक अंग्रेज थे। परन्तु इस देश की मूल राष्ट्रीय धारा ने कभी भी अन्तरात्मा से इस गुलामी को स्वीकार नहीं किया था।

कभी महाराणा प्रताप कभी छत्रपति शिवाजी कभी गुरु गोविन्द सिंह हेमू बन्दा बैरागी राव तुलाराम झांसी की रानी लक्ष्मीबाई तात्या टोपे बहादुरशाह जफर आदि के रूप मे समय समय पर स्वतन्त्रता की चिनगारी प्रज्वलित होती रही।

1875 ई में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना की तथा अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश मे प्रथम बार स्वराज्य शब्द का प्रयोग किया महर्षि ने स्पष्ट उदघोषणा की थी कि अन्य देश वासी राजा हमारे देश मे न रहे तथा हम पराधीन कभी न रहे। कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि सर्वोत्तम होता है अथवा मत मतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये के पक्षपात से शून्य प्रजा पर माता पिता के समान कृपा न्याय और दया के साथ भी विदेशियो का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं हो सकता।

1885 ई मे कांग्रेस की स्थापना हुई। 1927 में कांग्रेस के मंच से पूर्ण स्वराज्य के ध्येय की घोषणा की गई और 1929 ई मे स्वराज्य प्राप्ति के लिये संघर्ष की घोषणा की गई जो 26 जनवरी 1930 ई मे प्रस्ताव के रूप मे पारित हुई और फिर आजादी का संघर्ष जोर शोर से छिड़ा। 1916 मे लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है की उदघोषणा की थी। 1920 21 मे महात्मा गांधी के नेतृत्व मे असहयोग आन्दोलन अहिंसात्मक सत्याग्रह 9 अगस्त 1942 से प्रारम्भ करो या मरो एव अंग्रेजो भारत छोडो आन्दोलन क्रातिकारियो के अदभुत बलिदानो आजाद हिन्द फौज के संघर्ष नाविक विद्रोह आदि की चरम परिणति स्वाधीनता के रूप मे चरितार्थ हुई तथा 15 अगस्त 1947 ई को भारत स्वतन्त्र हुआ।

आजादी के इस पावन यज्ञ मे सर्वाधिक योगदान और बलिदान महर्षि दयानन्द की विचारधारा से अनुप्राणित आर्य-समाज की विचार धारा के लोगो ने दिया। स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय शहीद भगतसिंह रामप्रसाद बिस्मिल भाई परमानन्द लाला हरदयाल वीर विनायक दामोदर सावरकर श्याम जी कृष्ण वर्मा आदि का उल्लेख भारतीय स्वाधीनता संग्राम के इतिहास मे अविस्मरणीय है।

भारत को स्वाधीन हुए 42 वर्ष हो गये। राष्ट्र के नवनिर्माण एकता और अखण्डता की रक्षा विघटनकारी एव आतंकवादी देश द्रोही ताकतो का शमन चरित्र निर्माण भारतीय अस्मिता एव संस्कृति की रक्षा वैदिक ज्ञान के प्रचार प्रसार शिक्षा अस्पृश्यता उन्मूलन मानव निर्माण योजना हिंदी हिंदू हिन्दुस्तान की रक्षा संस्कृत एव हिंदी का संरक्षण आदि राष्ट्रीय कार्यो मे आर्यसमाज अपना शक्ति सामर्थ्यानुसार निरन्तर प्रयत्नशील है परन्तु फिर भी अभी बहुत कुछ करना बाकी है।

सर्वधर्म समभाव अल्प संख्यकों के तुष्टिकरण वोट की राजनीति स्वार्थ एव सत्तालोलुपता आदि के कारण आज देश मे घोर निराशा का वातावरण है ऐसे समय आर्य समाज के आदोलन की महती आवश्यकता स्पष्ट है।

वेद के इस सदेश को घर घर हमे पुनः पहुचाना होगा कि "माताभूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या (अर्थात् भूमि मेरी माता है और मैं इसका पुत्र हूँ) एव यतेमहिस्वराज्ये (हम स्वराज्य के लिये निरन्तर प्रयत्नशील रहे तथा वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता (राष्ट्र के अग्रगण्य नेता लोग निरन्तर जाग्रत और सजग रहें)। तभी वयं जयेम अर्थात् हम विजयी होगे यह आशा की जा सकती है।

यजुर्वेद के 22 वे अध्याय के 21 वे मन्त्र म जो वैदिक राष्ट्रगीत दिया हुआ है— ओ३म आ ब्रह्मन ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम योगक्षेमो न कल्पताम उसमे व्यक्त भावना हमे चरितार्थ करनी होगी जिसका काव्यानुवाद निम्नप्रकार से हमे प्रेरणा देता है—

ब्रह्मन ! स्वराष्ट्र मे हो द्विज ब्रह्म तेजधारी।<br>
क्षत्रिय महारथी हो अरिदल विनाशकारी।<br>
होवे दुधारू गौए पशु अश्व आशु वाही।<br>
आधार राष्ट्र की हो नारी सुभग सदा ।।<br>
बलवान सभ्य योद्धा यजमान पुत्र होवे ।<br>
इच्छानुसार वर्षे पर्जन्य ताप धोवे ।।<br>
फलफूल से लदी हो औषध अमोघ सारी।<br>
हो योग क्षेम कारी स्वाधीनता हमारी ।।

—रासासिंह

## आर्यसमाज के गौरव का अनूठा अध्याय

आज से 50 वर्ष पूर्व सन 1939 ई मे आर्यसमाज ने दुनिया के सब से धनी मानी और निरंकुश एव बडे शासक निजाम हैदराबाद के अत्याचारो से पीडित आर्य हिंदू जनता की मुक्ति और कल्याण के लिये, वैदिक संस्कृति के मूल्यो की रक्षा के लिये आर्य सत्याग्रह का बिगुल बजाया था जो आर्यसमाज के इतिहास का एक गौरवपूर्ण अनूठा अध्याय रहा है। तभी तो एक ऋषिभक्त कवि ने लिखा है कि

'तेरे दीवाने जिस घडी दक्षिण दिशा को चल दिये।<br>
हैरत मे लोग रह गये दुनिया का दिल हिला दिया ।।<br>
धन्य है तुझको ए ऋषि तूने हमे जगा दिया।<br>
सो सो के लुट रहे थे हम तूने हमे बचा दिया ।।

आर्यसमाज के शिरोमणि संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्वावधान मे हैदराबाद का यह धर्मयुद्ध (आर्य सत्याग्रह) लगभग 8 माह तक चला। यह दुर्धर्ष सत्ता एव कठमुल्ले धर्मान्ध शासको के विरुद्ध धार्मिक एव सामाजिक अधिकारो की प्राप्ति के लिये धर्मयुद्ध था। लगभग देश के सभी भागो से इस आर्य सत्याग्रह म 10569 आर्यवीरो ने भाग लिया और निजाम जेलो मे जुल्म सहे। 2000 सत्याग्रही सत्याग्रह समाप्त होने के समय जेल जाने की प्रतीक्षा मे थे। इस प्रकार कुल 12569 सत्याग्रही थे। इस अहिंसक सत्याग्रह मे निजाम की जेलो मे रहकर जीवन की आहुति देने वाले बलिदानी वीरो की संख्या तीस से भी अधिक थी। इस सत्याग्रह के संचालन मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का लगभग 8 लाख रुपये का व्यय हुआ। लगभग इतना ही व्यय अन्य व्यक्तियो और आर्यसमाजो आर्यसंस्थाओ द्वारा भी हुआ।

अजमेर तथा विशेषत आर्यसमाज अजमेर का भी इस धर्म युद्ध मे कर्मवीर प जियालाल जी के नेतृत्व मे अनुपम योगदान रहा। सत्याग्रहियो के जत्थे धन स्पेशल ट्रेन भेजने मे आर्यसमाज अजमेर अग्रणी रहा। विजय नामक तत्कालीन आर्यसमाज अजमेर के मुखपत्र ने जन जागरण मे विशेष भूमिका निभाई तथा हैदराबाद सत्याग्रह विशेषांक भी प्रकाशित हुआ।

सार्वदेशिक सभा द्वारा इस बार इस हैदराबाद सत्याग्रह की स्वर्ण जयन्ती मनाने का आह्वान हुआ है। हर्ष का विषय है कि सभा के प्रयत्नो से इस महान सत्याग्रह को स्वाधीनता संग्राम का अंग मान लिया गया है और कई जीवित धर्मयोद्धाओ को स्वाधीनता सेनानी पेंशन भी मिलने लगी है इसके लिये सार्वदेशिक सभा तथा आर्यनेतागण बधाई के पात्र हैं।

—रासासिंह

# पन्द्रह अगस्त आया, क्या खोया, क्या पाया ?

—बुद्धिप्रकाश आर्य—

15 अगस्त, स्वतन्त्रता के स्वर्णिम विहान की स्मृति को ताजा करने के लिये फिर आया और औपचारिकताओ के साथ, एक वर्ष पुन आने के लिए गत हो जायेगा। पर्वो की गतानुगतिकता के समान ही 15 अगस्त का स्वरूप बन चुका है। स्वतन्त्रता प्राप्ति मे जिन राष्ट्र-भक्तो और बलिदानियो ने सर्वस्व स्वाहा कर डाला, हंस-हंसकर मृत्यु का वरण किया 15 अगस्त को उन्ही शहीदो की आत्माओ को कचोटने वाली थोथी औपचारिकताओ को पूरा करके हम अपनी इतिकर्त्तव्यता मान कर सतुष्ट हो लेते है। खेल-कूद मार्चपास्ट, सारहीन भाषण, मिठाइयो और तालियो की गड-गडाहट के बीच स्वतन्त्रता का दर्द भरा इतिहास, सिसकिया भरता हुआ दयनीय भारत माता का हृदय, सब कुछ, स्मृति पथ से ओझल हो जायेगा। युवा पीढी तो इसे छुट्टी का तथा मौजमस्ती उडाने का दिन मान बैठी है। गाधी, जवाहर, सुभाष, लालबहादुर जैसे देश के सपूतो को तो वह रामायण, महाभारत कालीन पात्र मानकर उनके त्याग और बलिदानो को काल्पनिक मान बैठी है। क्या होगा इस देश का ? प्रश्न बडा गम्भीर और चिन्तनीय है। आज की युवा पीढी का कौनसा युग धर्म है ? उनका गन्तव्य क्या है, लक्ष्य क्या है ? उनकी नैतिक पृष्ठ भूमि मे कुछ भी ऐसा बचा है जिससे राष्ट्र रक्षा, अस्तित्व रक्षा तथा भारतीय आत्मा की रक्षा की आशा की जा सकती है ? इसका निर्णयात्मक उत्तर तो कोई आपस्तम्ब जैसा ऋषि ही दे सकता है। देश के नेताओ की स्थिति भी किसी से छिपी नही है। कुर्सी उनका धर्म, पैसा उनका ईश्वर एव मन वचन कर्म की भिन्नता उनका ईमान बन चुका है। इन नेताओ ने प्रजातन्त्र जैसी आदर्श व्यवस्था को कुर्सी तन्त्र किंवा भीड तन्त्र का भौडा स्वरूप दे डाला है। आज के शासको ने इब्राहीम लिंकन द्वारा निर्धारित प्रजातन्त्र की परिभाषा को विकृत करके जो रूप दे डाला है वह निम्न वाक्य मे दृष्टव्य हैं Democracy is the government of the people for the people, by the people. सचमुच वोट के लिये आज का नेता सौदा करता है और वोट लेकर जनता से दूर होकर स्वार्थ का नगा नाच नाचने लगता है। जन सेवा का नारा एक ढोंग बन गया है।

आज के गिने चुने, पुरानी पीढी के सच्चे-पक्के राष्ट्र भक्त 15 अगस्त के दिन चिता की ज्वाला मे जलने लगते हैं, वे पुरानी स्मृतियो के साकार होने पर सोचने को विवश हो उठते है कि राष्ट्र की स्वतन्त्रता के इस महान बोझ को, क्या नैतिक मूल्यो से हीन आज की युवा पीढी के दुर्बल कन्धे उठा सकेंगे। क्या इस स्वतन्त्रता का अस्तित्व इनके हाथो मे सुरक्षित रह सकेगा ? यह राष्ट्र इन अन्तहीन समस्याओ का अभिशाप कब तक भोगेगा ? विकृत प्रजातन्त्र मे आतकवाद, भाई-भतीजावाद, भाषा व प्रात वाद, अलगाववाद तथा स्वार्थवाद को जन्म देकर राष्ट्र को भयकर भ्रष्टाचार के क्रूर पजो मे जकड कर रख दिया है। धर्म निरपेक्षता, धर्महीनता अर्थात् सदाचार विहीनता बन गई है। अल्प सख्यक वर्ग ने राष्ट्र की स्थिति साप, छछून्दर जैसी बना डाली है। अग्रेजी भाषा और पश्चिमी सभ्यता के व्यामोह ने भारतीय सस्कृति के अस्तित्व नाश का खतरा उत्पन्न कर दिया है। आज से 42 वर्ष पूर्व जिस भारतीय जनता मे गाधी, नेहरू तथा लालबहादुर जैसे महामानवो का चयन करने का विवेक विद्यमान था, वह विवेक वोट खरीदने की पैंतरेबाजी ने नष्ट करके रख दिया है। आज स्थिति यह है कि हम दुखी हैं, बेरोजगार हैं, प्रशासन की भ्रष्टाचारी नीति से सन्त्रस्त है तथा सरकार को, शासन को गालिया देते है फिर भी बहुमूल्य कहा जाने वाला वोट उन्ही की मत-पटियो मे गिराया जाता है। विकल्पहीन प्रजातन्त्र अराजकतावाद की ओर बढ रहा है। 15 अगस्त इन्ही समस्याओ के चिन्तन का महापर्व है। इन्ही समस्याओ पर खुलकर वार्ता करने का महोत्सव है। सुधार लाने का सकल्प लेने का त्यौहार है। 15, अगस्त राष्ट्र भक्ति का प्रण लेने का पर्व है। युवा पीढी को सुसस्कृत, राष्ट्र भक्त तथा भारतीयता से ओतप्रोत बनाने की व्यवस्था जुटाने का पवित्र दिन है। 15 अगस्त के पावन पर्व पर हमे सकल्प लेना है कि प्रजातन्त्र की पवित्रता पुन कायम करेंगे तथा धूर्त, लम्पट व भ्रष्ट तत्वो से इसे मुक्त करायेंगे जो शासन मे पैसे के बल घुसे हुए हैं। यह पर्व क्रान्ति का शख फूकने का पर्व है जिसकी पवित्र ध्वनि से राष्ट्र द्रोहिता का प्रदूषण विरोहित हो सके।

इतनी विडम्बनाओ को देख सुनकर व अनुभव करके भी यदि हम नही जागते हैं तो समझिये कि हम विनाश, महानाश को आमन्त्रण दे रहे हैं। 15, अगस्त अतीत के लेखे जोखे का चिन्तन करने तथा क्या खोया ? क्या पाया ? का निर्णय करने का दिन है। यदि हमने इस ओर ध्यान नही किया तो निश्चय मानिये कि "विनाशकाले विपरीत बुद्धि" के कथन को ही सार्थक कर रहे हैं।

# ये सदियों से अपनी मां को रो रहे हैं

—सैन्नी अशेष—

एक बार एक सैलानी परिवार उत्तर भारत मे सैर करने निकला, ये लोग आधी रात को एक होटल मे सो रहे थे तो उनका पाच वर्षीय बालक बगल के मकानो से आने वाले लाउडस्पीकरी शोर शराबे को सुनकर उठ बैठा।

"ये लोग इतने जोर से 'मा मा क्यो चिल्ला रहे है, मा ?" उसने अपनी मा से पूछा।

ऐसा बाल सुलभ सवाल पूछने वाले बालक आज उत्तर भारत मे शायद नही रहे। यहा बालक बोलना सीखने से पहले जगराते सीखते है। जिस बालक को साफ सुथरा वातावरण दिया जाए, वह जरूर पूछगा क्या ऐसी भी कोई मा होती है जो जगराते करने पर आती है ? क्या वह शोरशराबा पसद करती है ? कीर्तन करने वालो की असली माए क्यों कुछ नही कर पाती ? लाउडस्पीकर से मा का क्या रिश्ता है ? गीत सगीत को इस चीख पुकार के लिए क्यो इस्तमाल किया जाता है ? इस मा को बुलाने मे ठीक-ठाक माओ पिताओ और उनकी सतानो की ऐसी तैसी क्यो की जाती है ?"

जिस बालक का जन्म धर्म के ऐसे शोर शराबो मे हुआ हो, वह भी प्राय सोचता तो होगा—"वह मा अपने इन बच्चो के मुह मे अपना स्तन क्यो नही डाल जाती ?" ये इतना पुकारते है, रोते हैं, गिडगिडाते है, मा के उपकारो के उदाहरण देते है और उसे खबर नही ये सदियो से रो रहे है, और उसके कान पर जू भी नही रेंगती। कई अपने बाप (परमपिता) को भी रोते है, जो इनके दुखो को दूर नही करता। इस ओर एक लाउडस्पीकर रोता है तो उस तरफ एक साथ चार रोने लगते हैं। मा और ईश्वर को इन खुदगर्ज लोगो ने कितना सस्ता, बेहूदा और रिश्वतखोर समझ लिया है।

## महासम्मेलन

बिहार राज्य आर्य समाज प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे बिहार की राजधानी पटना के श्रीकृष्ण स्मारक हाल मे 9 एव 10 सितम्बर 1989 को विशाल वैदिक धर्म (आर्य) महा सम्मेलन का आयोजन होगा। सम्मेलन मे देश के उच्च कोटि के सन्यासी, महोपदेशक एव राष्ट्रीय नेता भाग लेंगे। उक्त अवसर पर आकर्षक स्मारिका प्रकाशित की जायेगी। —प्रधान

## वार्षिकोत्सव

आर्य समाज ब्यावर (अजमेर) अपना वार्षिक उत्सव 8 व 9 अक्टूबर, 1989 को मना रहा है। प युधिष्ठर मीमासक व सावित्री वेदाचार्या पधार रही हैं।

—सत्यप्रकाश झंवर

(मन्त्री)

पत्र और विचार

## आर्यो जागो !

महर्षि दयानन्द ने हमारे देश मे फंसते पाखण्ड एव मूर्ति पूजा के खडन के लिये अपना सर्वस्व न्यौछावर कर आर्य समाज की स्थापना की थी व आज समूचे भारत मे आर्य समाज खुले हुवे जरूर है मगर सक्रिय नही होकर कुभकर्ण की नीद ले रहे हैं। सार्वदेशिक एव आर्य प्रतिनिधि सभाओ के पदाधिकारी गए सिर्फ समाचार पत्रो के माध्यम स ही अपना वर्चस्व कायम कर रहे है। इन दोनो ही सभाओ मे आय समाज के प्रचार-प्रसार के लिये कोई भी उपाय नही तो किया है न भविष्य मे ऐसा करन का इरादा है। समाचार पत्रो मे सिर्फ लेख एव व्याख्यान प्रसारित कर देने से ही प्रचार-प्रसार नही होता। इन पदाधिकारियो को चाहिए कि वे अपने अपने क्षत्र मे जो समाज बद पडा है या उसमे शिथिलता आ गई है उन्हे जाग्रत करे। हमारे समाजो मे राजनैतिक एव राष्ट्रीय स्वय सघ के कार्यकर्ता सदस्य बनकर समाज मे घुस आये है। सभा के सदस्य एक-दूसरे पर आरोप एव प्रत्यारोप कई प्रकार के लगाते हैं, यह कहा तक सत्य एव झूठ है वह ता उच्च श्रेणी के ही लोग जानते है। अगर ऐसा हमेशा के लिये होता रहा तो एक दिन आर्य समाज की पताका रसातल मे चली जावेगी।

आर्य समाज के सदस्य आज भी मंदिर, मूर्ति पूजा, प्रसाद, श्राद्ध आदि मे विश्वास कर हवन, सध्या, वेदपाठ को करना भूल कर स्वय एव समाज दोनो को धोखा दे रहे हैं। इस प्रकार यह काय भविष्य मे अगर यू ही चलता रहा तो निश्चय ही आय समाज पुस्तको तक सीमित रह जायेगा।

—नेमीचन्द दाधीच, मन्त्री,
आर्य समाज, मेडता।

# श्रावणी पर्व और हम आर्यजन

श्रावणी पर्व प्रतिवर्ष आता है और चला जाता है। हम भी पर्व का आयोजन कर अपन कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। परन्तु अब हमे इस लकीर से हटना होगा। श्रावणी पर्व का ज्ञान और स्वाध्याय से अत्यन्त सबध है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है। हमारे पूज्य ऋषिवर महर्षि दयानन्द ने हमे सदेश दिया है कि "वेद सब सत्य विद्याओ की पुस्तक है, वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।"

हमें श्रावणी पर्व पर समाजो मे पर्व मनाने के साथ-साथ अपने-अपने घरो मे भी ज्ञानाग्नि प्रज्जवलित करनी होगी। और वह वेद के स्वाध्याय तथा प्रचार प्रसार एव चिन्तन मनन से ही होगी। हम आर्यसमाज के महगे सौदे वाले कार्यक्रमो को एक ओर रखकर केवल "वेदप्रचार" के एक सूत्री कायक्रम को ही हाथ मे लेकर सकल्पबद्ध एव दृढ प्रतिज्ञ होकर जुट जावें तो उससे व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व का निर्माण और कल्याण होगा, वैदिक धर्म और सस्कृति की दुन्दुभी बजेगी, अनार्य विचार धाराओ और राक्षसी दुष्प्रवृतियो का ह्रास होगा। वेद की ज्योति जलने लगेगी, ओइम् की पताका फहराने लगेगी। धर्म की जय होगी, अधर्म का नाश होगा।

—रासासिह

दयानन्द उवाच

# वृक्ष-वनस्पतियों में जीव

**—डॉ. बाबूराम शास्त्री—**

**जिज्ञासु :** स्वामी जी! क्या वृक्ष-वनस्पतियो मे भी जीव है? यदि हा तो उन्हे कूटने, पीसने और खाने से क्या हिसा नही होती है?

**दयानन्द :** वृक्ष वनस्पतियो मे भी जीव है। मनु ने कहा है कि जो मनुष्य तमोगुणी होते है - जिन्हे धर्म-धम, सत यावतत्य का विवक नही है—जिनके कर्म निन्दित हैं—जिनका आचरण कलुषित है—वे मरणोपरान्त स्थावर—वृक्ष-वनस्पति कृमि, कीट, मत्स्य, सर्प, कच्छप, पशु और मृगो की योनि म जन्म लेत है। और शरीर के द्वारा किए गए निन्दित कर्मों के फलस्वरूप मनुष्य स्थावर—वृक्ष-वनस्पति के रूप मे जन्म लेना है। वस्तुत जो व्यक्ति विवेकहीन है—दुष्ट स्वभाव व दुष्कर्मी है, जो हिंसक है—लम्पट है पर पीडा मे रत है—प्रकृति उन्हे ज्ञानेन्द्रियो और कर्मेन्द्रियो से रहित कर, स्थावर-योनि मे डाल देनी है ताकि वे पूर्व कर्मो का फल भोगे और प्रायश्चित करे। यह बात छान्दोग्य और वृहदारण्यक मे और स्पष्ट की गयी है। वहा पचाग्नि विद्या के माध्यम से आत्मा की सम्पूर्ण जीवनयात्रा का वर्णन है। इसके अनुसार श्रद्धा पद वाच्य आप का हवन जब द्युलोक की अग्नि मे होता है तो "सोम" की उत्पत्ति होती है सोम का हवन जब 'पर्जन्य" रूपी अग्नि मे होता है तो "वर्षा" की उत्पत्ति होती है, वर्षा का हवन जब "पृथिवी' रूपी अग्नि म होता है तो अन्न वृक्ष-वनस्पतियो की उत्पत्ति होती है, अन्न का हवन जब "पुरुष" रूपी अग्नि मे होता है तो वीर्य की उत्पत्ति होती है और जब वीर्य की आहुति योषा रूपी अग्नि मे दी जाती है तो—पुरुष की उत्पत्ति होती है अर्थात् जीवात्मा अपने पूर्ण विकास को प्राप्त कर मनुष्य योनि मे पहुँचती है। वृक्ष—वनस्पतिया भी जीवात्मा के पडाव हैं—उनमे जीवात्मा सुषुप्तावस्था मे होती है, बाह्य सज्ञा न होने स उसे सुख-दुख की अनुभूति भी नही होती। अत उन्हे कूटने, पीसने, पाने, पकाने से कोई हिसा नही होती।

## आर्य समाज अजमेर द्वारा प्रकाशित साहित्य

### प्रो. दत्तात्रेय आर्य द्वारा लिखित पुस्तकें

1 देश, धर्म और हिन्दू समाज को आर्य समाज की देन—मूल्य 0 50 पैसे
2 हमारी राष्ट्रीयता का आधार-मूल्य रु 1 00
3, विद्यार्थियो के लिए आचार सहिता—मूल्य 0 50 पैसे
4 दी आर्यसमाज हिन्दू विदाउट हिन्दु इज्म (अंग्रेजी)—विशेष रियायती दर रु 75 00
5 आर्यसमाज हिन्दू धर्म का सम्प्रदाय नही-मूल्य—50 रु
6 आर्यसमाज दी मोस्ट पावरफुल मुवमेट (सा दे सभा द्वारा प्रकाशित)—5.00 रु

### दयानन्द शोधपीठ के प्रकाशन

1. दयानन्द कथा सग्रह मूल्य रु —3 00
2 महर्षि दयानन्द पत्रो के दर्पण मे मूल्य रु —50 00

### अन्य प्रकाशन

1 धर्म शिक्षा (भाग 1 से 11 तक) पूरे सैट का मूल्य रु 32 00
2 परिचय निर्देशिका (समस्त देश-विदेश की आर्य शिक्षण सस्थाओ का परिचय)—मूल्य रु 12 00
3 आर्य समाज (हिन्दी) मूल्य सजिल्द 20 00 रु अजिल्द 16 00
ले लाला लाजपतराय

## सत्यार्थ-प्रकाश ग्रन्थ माला 15 भाग

(प्रत्येक समुल्लास पर स्वतत्र ट्रैक्ट)

1-ईश्वर एक नाम अनेक
2-आदर्श माता-पिता
3-शिक्षा और चरित्र निर्माण
4-गृहस्थाश्रम का महत्व
5-सन्यासी कौन और कैसा हो?
राज्य व्यवस्था
7-ईश्वर और वेद
8-जगत् की उत्पत्ति
9-स्वर्ग और नरक कहा है?
10-चौके चुल्हे मे धर्म नही
11-हिन्दू धर्म की निर्बलता
12-बौद्ध और जैनमत
13-[illegible]
14-इस्लाम और वैदिक धर्म
15-सत्य का अर्थ तथा प्रकाश

विशेष—सभी ट्रैक्ट आर्य जगत के चोटी के विद्वानो के द्वारा लिखित है एव ग्रन्थमाला का सम्पादन आय समाज अजमेर के प्रधान प्रो दत्तात्रेयजी आर्य ने किया है। ग्रन्थमाला के सैट का मूल्य 8/ रुपये है।

स्वत्वाधिकारी आर्यसमाज अजमेर के लिए प्रकाशक एव सपादक रासासिह हेतु रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्य प्रिन्टस बाबू मोहल्ला केसरगज, अजमेर मे मुद्रित एव आर्य समाज भवन, अजमेर से प्रकाशित।

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

ओ३म्

# आर्य पुनर्गठन

आर्य समाज, अजमेर का हिन्दी पाक्षिक पत्र
'आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म॥'

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सकल जगत को आर्य बनाए।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सदा उद्यत रहना चाहिए।
—महर्षि दयानन्द

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होने वाली समस्याओ को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष . 6 बुधवार, 30 अगस्त, 1989
अंक 16 प स -43383/84

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात्।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु॥

भाद्रपद शुक्ला 1 संवत 2046
वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60

# पाश्चात्यों का अन्धानुकरण उचित नहीं

**—स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती—**

प्रोफेसर वेदव्यासजी के नेतृत्व में डी ए वी प्रबन्ध समिति नई दिल्ली ने महर्षि दयानन्द और आर्य-समाज की मान्यताओ के विरुद्ध प्रचार करने का अभियान छेड रखा है। उसकी ओर से 'The Young World' नामक एक अंग्रेजी पत्रिका प्रकाशित होती है। प्रतिमास प्रकाशित होने वाली यह पत्रिका डी ए वी पब्लिक स्कूलो मे पढने वाले लाखो विद्यार्थियो को बाटी जाती है। उसके मार्च 1989 के अंक मे एक लेख प्रकाशित हुआ है जो इस प्रकार है—

Early Aryan Culture

The original habitat of early Aryans must have been somewhere around the Cancasus in North-West Asia Being better equipped than the Dravadians and the aborigines the Aryans drove them south and east The earth, sun, dawn, fire and the wind were there deities and they prayed to them Society in Rigvedic times had not been fragmented according to professions Later on they composed the three other Vedas the Sama Veda, the Yajur Veda and Atharva Veda and the Upanishads

A little later the Ramayana of Valmiki and the Mahabharata of Vyasa came to be composed The Vedas and the epics give a picture of the society of the time The Aryans were not as yet divid d into Varias (castes) Rituals and animal sacrifices were given prominance by the Brahmans

अर्थात्—'आर्यों का मूल निवास पश्चिमोत्तर एशिया मे कही काकेशस के आसपास था। द्रविड आदि भारत के आदिवासियो की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली होने के कारण आर्यों ने उन्हे दक्षिण और पूर्व की ओर खदेड दिया। पृथ्वी, सूर्य, ऊषा, अग्नि, वायु आदि आर्यों के देवता थे जिनकी वे उपासना करते थे। ऋगवेद के समय मे समाज का पेशो के आधार पर विभाजन नहीं हुआ था। बाद मे उन्होने सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद तथा उपनिषदो की रचना की। कुछ समय बाद उन्होने वाल्मीकि रामायण तथा व्यास ने महाभारत नामक महाकाव्य की रचना की। वेदो तथा महाकाव्यो मे तत्कालीन समाज का वर्णन हुआ है। तब तक आर्यों मे वर्णव्यवस्था का प्रचलन नही हुआ था। ब्राह्मणो ने पशुबलि को महत्व दिया।'

इससे पूर्व 15 नवम्बर 1987 को डी ए वी आन्दोलन के प्रमुख प्रो. वेदव्यास जी को एक अभिनन्दन ग्रथ भेंट किया गया था। Felicitations नामक इस ग्रन्थ मे प्रो वेदव्यास जी ने लिखा है—

Iran was the homeland of the Aryans (P. 115) They invaded India. A coordinated study of the hymns of the Rigveda reveals that the struggle for dominance over Harappa was spread over six generations from Divodasa to Sudas, the grand son of the great grand son of Divodasa page 105). Both sides were fighting under the guidance of Rishies (P 105)

Sudasa, the grand son of the great grand son of Sudasa composed the Rigveda (Page 107). Some of the Vedic hymns were composed by Asura Rishies (Page 108) King Dasaratha of Ayodhya was a contemporary of Divodasa Atithigva (Page 113) The Rigveda mentions a large number of tribes which developed into Mahajanapadas of Buddhist and Pre-Mauryan period leading to the establishment of Mauryan Empire in the 4th Centaury B C (Page 106).

अर्थात्—'आर्य मूलत ईरान के रहने वाले थे। उन्होंने भारत पर आक्रमण किया था। ऋग्वेद के अध्ययन से पता चलता है कि हड़प्पा पर अधिकार करने के लिए आर्य लोग यहा के मूल निवासियो के साथ दिवोदास से सुदास तक छह पीढियो तक लडते रहे। दिवोदास अतिथिग्व (गोमास खिलाने वाले की बहुमानास्पद उपाधि) के पडपोते के पोते सुदास ने ऋग्वद की रचना की। ऋग्वेद के कुछ मत्र असुर ऋषियो ने भी लिखे थे। अयोध्या का राजा दशरथ दिवोदास का समकालीन था। ऋग्वेद मे ऐसे अनेक कबीलो का उल्लेख हुआ है जो बौद्धकाल और मौर्यकाल से पहले इतने उन्नत हो गये थे कि उन्होंने कुछ काल के बाद ईसा से चार सौ वर्ष पूर्व मौर्य साम्राज्य की स्थापना की।'

इस प्रकार प्रो वेदव्यासजी और उनके यहा (डी. ए वी.) से प्रकाशित होने वाले पत्र-पत्रिकाओ के अनुसार—

1 आर्य लोग विदेशी आक्रान्ता के रूप मे पश्चिमोत्तर एशिया अथवा ईरान से भारत आये।

2 यहा के मूल निवासियों को युद्ध मे परास्त कर इस देश के स्वामी बन बैठे।

(शेष पृष्ठ 4 पर)

# आचार्य दत्तात्रेय के अमेरिकी विश्वविद्यालय में भाषण

**अजमेर। अमेरिका के 'मार्शल विश्वविद्यालय' में वरिष्ठ शिक्षाविद् आचार्य दत्तात्रेय आर्य के भारतीय संस्कृति पर भाषण प्रारम्भ हो गये हैं।**

**अजमेर आर्यसमाज से मिली जानकारी के अनुसार आचार्यजी के प्रथम भाषण का विषय "भारतीय राष्ट्रीयता के सांस्कृतिक सूत्र" था। उनके आगामी भाषणो का विषय भी भारतीय संस्कृति ही होगा। आचार्य जी के ये भाषण सितम्बर के द्वितीय सप्ताह तक चलेंगे।**

**श्री दत्तात्रेय आर्य सितम्बर के अंतिम सप्ताह में स्वदेश लौटेंगे।**

निदेशक दत्तात्रेय आर्य     प्रधान सपादक · रासासिह     सपादक वीरेन्द्र कुमार आर्य     ☎ कार्या . 21010

## सम्पादकीय

# साप्ताहिक सत्संगों मे बहार कैसे आये ?

आर्य समाज के कार्यक्रमो मे साप्ताहिक सत्सगो का महत्वपूर्ण स्थान है। दैनिक सत्सग मे तो कार्यव्यस्तताओ, दूरवर्ती स्थान आदि के कारण प्रत्येक आर्य सदस्य का उपस्थित होना सम्भव नही परन्तु साप्ताहिक सत्सग मे प्रत्येक सदस्य महानुभाव के लिये एक अनिवार्य कर्त्तव्य है कि वह उपस्थित होवे।

जिस प्रकार से एक मुसलमान के लिये जुम्मे को नमाज मे उपस्थित होना आवश्यक है, जिस प्रकार से एक ईसाई के लिये रविवारीय प्रार्थना हेतु गिरजे मे उपस्थित होना आवश्यक है और एक सिक्ख के लिये गुरुद्वारे मे जाना आवश्यक है उसी प्रकार प्रत्येक आर्य पुरुष के लिये समाज भवन मे साप्ताहिक सत्सग मे उपस्थित होना आवश्यक है।

आर्यसमाज के क्षेत्र मे भी सत्सगो का अत्यधिक महत्व है। इससे सदसंस्कारो के साथ-साथ सामूहिकता, पारस्परिक सौहार्दता, पारिवारिकता तथा एकता की भावना का विकास होता है। सामूहिक यज्ञ सध्या, प्रार्थना, भजन-गान तथा प्रवचन आदि के कार्यक्रमो से मानसिक वृत्तियो का परिष्कार, सात्विकता की वृद्धि, परोपकार की भावना का विकास आस्तिकता के प्रति श्रद्धा, आर्यत्व के प्रति आस्था और विश्वास को बल मिलता है। सेवा भावना का प्रचार-प्रसार होता है। व्यावहारिकता एव शिष्टता भी बढती है।

आर्य का अर्थ है श्रेष्ठ जो सदाचारी, धर्मात्मा, ईश्वर भक्त परोपकारी हो उसे आर्य कहते है। वेद ने हमे जो आदेश दिया है कि 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" अर्थात् सारे ससार को आर्य बनाओ। इसकी पात्रता प्राप्त करने के लिये पहले स्वयमार्यम्' का पाठ पढना होगा। तभी वेद के इस आदेश की अनुपालना हो सकेगी कि "अहं भूमिम् अददाम् आर्याय" अर्थात् यह भूमि श्रेष्ठजनो के लिये प्रदान की गई है" इस आर्यत्व के पाठ को सीखने की महत्वपूर्ण पाठशाला या प्रयोगशाला आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्सग ही हैं।

सगठन सूक्त का पाठ, देश विदेश विशेषत आर्यजगत् की गतिविधियो की सूचना स्वाध्याय हेतु आर्य पुस्तकालय से पुस्तको का लेनदेन समाज अथवा सस्थाओ की प्रगति सबधी मत्रणा, पर्वों, उत्सवो आदि का आयोजन सत्सग विसर्जन के पश्चात् अनौपचारिक मिलन, सुखदुख मे सहभागिता आदि भी व्यक्तिगत एव सामाजिक सबधो को बढावा देने वाले है। आर्यसमाज के छठे नियम की भी पूर्ति होती है कि 'ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक एव सामाजिक उन्नति करना।"

आज आर्य समाज के सत्सगों मे उपस्थिति बहुत कम रह गई है। यज्ञ के समय तो चार व्यक्ति भी मुश्किल से आ पाते है। बाद मे भी वृद्ध आयु वाले व्यक्तियो की भरमार रहती है। युवको के दर्शन नही होते।

सख्या की दृष्टि से तो हाल और भी बुरा है। रही सही कसर पहले तो रविवार को प्रसारित होने वाली रामायण की टी वी. सीरियल ने और अब महाभारत की सीरियल ने पूरी कर दी है। कई समाजो ने तो 'रामायण' और 'महाभारत' के चक्कर मे अपने समय बदल दिय हैं। वैसे भी उपस्थिति अपर्याप्त रहती है। समाज के पदाधिकारी तथा अतरग सभासद भी कई बार सत्सगो मे नही आ पाते अथवा उनमे से कई तो सप्ताहो तक भी सत्सगो मे नही आते। हा यदि समाज का वार्षिक निर्वाचन होना हो अथवा और कोई विवाद अथवा सस्था का प्रबन्धक, मत्री आदि बनने के अवसरो पर बरसाती आर्यों की भीड उमड पडती है। राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त की भारत भारती मे लिखित ये पक्तिया सहज ही स्मरण हो जाती है "हम क्या थ ? क्या हो गये ? और क्या होंगे अभी। आओ मिलकर विचारें देश की समस्याए सभी।"

एक जमाना था जब आर्यसमाज के सत्सगों मे भीड उमडती थी समाज मन्दिरो मे बैठने को जगह नहीं मिलती थी, आर्य विद्वानो और उपदेशो के प्रवचनो का अमृत पान करने एव भजनीको के प्रेरणादायी भजन सुनने को श्रद्धालु जन बेताब रहते थे। परन्तु अब स्थिति सर्वथा विपरीत हो गई है। कार्यक्रम सब पूर्ववत् होते हैं पर कोरा लकीर पीटना रह गया है। परम्पराओ का निर्वाह मात्र रह गया हैं। वह जिन्दादिली, वह जोश वह मर्दानगी और वह करिश्मा अब नहीं रह गया।

मेरी दृष्टि मे पूर्व के आर्यजन विद्वान कहते कम करते ज्यादा थे। उनकी कथनी करनी मे अन्तर नही होता था। वे मनसा, वाचा कर्मणा एक जैसे थे। सत्यपूत चरित था उनका, वाणी मे माधुर्य था ओज था और तपस्या, त्याग, पुरुषार्थ एव स्वाध्याय की पृष्ठ भूमि थी। आज अधिकाश उपदेशक अथवा प्रवचनकर्त्ता कोरे लिफाफिया हैं जिनकी कथनी करनी मे आकाश पाताल का अन्तर हैं, वे 'मिशनरी' के स्थान पर 'मरसीनरी' हो गये हैं व्यावसायिक वृत्ति के हो गये हैं। वे केवल बोलते ही बोलते है, तोलते नही हैं तथा कही हुई बातो से उनका दूर का भी रिश्ता नही रहता अत उनका प्रभाव अत्यल्प ही रहता है। भजनीको की भी वैसी साधना नही रही। फिल्मी धुनो पर गीत बनाने लग गये। सच्चे स्वाध्यायशील उपदेशक और शास्त्रार्थ महारथी विद्वान भी न रहे। धर्म निरपेक्षता। धर्म सापेक्षता अथवा सर्वधर्म समभाव हमारे ऊपर भी हावी हो गया है अत हम खरी बातें कहने से ही कतराते हैं। प्रधान या मत्री नाराज न हो जायें, सत्ता की आलोचना न हो जाये इसका भी ध्यान रखना पडता है।

आर्य सामाजिक सत्सगो को प्रभावशाली बनाने हेतु निम्न उपायो को काम मे लेना चाहिये।

1 समाज मदिरो की पवित्रता बनाई रखी जानी चाहिये।

2. समाज मदिरों मे सत्सगों का निश्चित समय होना चाहिये।

3 श्रद्धा एव प्रभावमयता के लिये प्रभावशाली कार्यक्रम होने चाहिये।

4. प्रामाणिक विद्वानो एव प्रभावशाली भजनीको की सेवायें प्राप्त की जानी चाहिये।

5 प्रत्येक पदाधिकारी, अतरग सभासद एवं आर्य पुरुष के लिये सपरिवार उपस्थिति आवश्यक होना चाहिये।

6. हमारे कार्यक्रमो मे युगानुसार परिवर्तन की भी गुंजायश हो।

7. सदाचार, सच्चरित्रता, पुरुषार्थ को बढावा मिले।

—रासासिंह

## जिधर देखो उधर, हाल बेहाल हो रहा है। लीडर बनने को हर तरीका इस्तेमल हो रहा है।

ज्यो-ज्यो आम चुनाव का समय नजदीक आ रहा है, त्यों-त्यों हमारे देश के रहनुमा भाग-भागकर सतमहात्माओं, आचार्यों की शरण मे जा रहे हैं, बड़े-बड़े मन्दिरो, मस्जिदों, दरगाहो मे सिजदे करने को बेताब हो रहे हैं, धार्मिकता का सैलाब उमड रहा है। देश को इक्कीसवीं शताब्दी की ओर ले जाने वाले, कम्प्यूटर और टी वी का जाल फैलाने वाले लोग ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण का त्यागकर कर्मफल के सिद्धान्त को भूलकर अपने पापो से भयभीत होकर, हार के अज्ञात भय से तान्त्रिकों से अनुष्ठान, यज्ञ और महायज्ञ करवाकर जत्र-मन्त्र, गण्डे तावीजों के सस्ते तरीकों का उपयोग कर चुनाव वैतरणी को पार करना चाहते हैं। यदि उन्होने निष्ठा पूर्वक राष्ट्र की सेवा की है तो फिर उन्हे इतनी चिन्ता क्यो सता रही है ? परन्तु उन्हे मालूम है कि जो कुछ हमने किया है, उसका फल तो हमे भुगतना ही पडेगा। इसलिये झख मार कर वे मुल्ला, मौलवियो पडे पुजारियो और तान्त्रिकों की शरण ग्रहण कर रहें हैं।

दुख होता है यह पढकर कि अर्जुनसिंह जैसे लोग देवरहा बाबा के पैर को अपने सिर पर आशीर्वाद हेतु धारण करवा रहे है और यहा तक कि देश के प्रधानमन्त्री को भी कानपुर के तान्त्रिक भूपेन्द्र बहादुरसिंह बन्देल के यहा 31 दिन की गुप्त पूजा का आयोजन करवाना पड रहा है और एन टी. रामाराव जैसे लोगों को अपने मार्ग के रोडे हटाने हेतु तथा 'विश्वामित्र' फिल्म की सफलता हेतु 'गायत्री महायज्ञ' का आयोजन करवाना पड रहा है। जब बडे-बडे नेता ही चन्द्रास्वामी जैसे तान्त्रिको के मोह जाल मे फसे हैं, तो आम आदमी की क्या मनोदशा होगी ? ये अन्धविश्वास इस देश को कहा ले जायेंगे ? यही कहना पडेगा कि—

"तेरे रहते लुट रहा चमन ए बागवा, मैं कैसे मानूं कि तेरा इशारा नहीं"

—रासासिंह

# पारायण यज्ञों पर आक्षेप ठीक नहीं

—जगदीश, व्याकरण, दर्शन, साहित्याचार्य—

श्री रासासिंह जी ने 'आर्य पुनर्गठन' मे वेद-पारायण यज्ञ का विरोध किया है, कि ये यज्ञ कराने वाले लोग आर्यसमाज को गुरुडम मे लपेट रहे हैं। वेद-पारायण-यज्ञ, चतुर्वेद यज्ञ, ऋग्वेद यज्ञ, गायत्री यज्ञ कराते हैं, और मोटी-मोटी राशिया ली जाती हैं।

हम यहा उनके लेख पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर रहे हैं।

वेद पारायण यज्ञो मे वेदपाठ होता है। इससे लोगो की वेद मे श्रद्धा बढती है। वेद की रक्षा होती है, वेद के क्रय-विक्रय की माग बढती है। पाठ करने का अभ्यास होना है। वेद पाठ पुण्य है, अपराध नही।

इसमे वेद विरुद्ध, धर्म विरुद्ध आर्यसमाज की मान्यताओ के विरुद्ध कुछ भी नही हैं। अपितु धर्म, आस्तिकता, श्रद्धा तथा वेद की मान्यताओ का बढावा मिलता है और विद्वानो का सत्कार होता है।

मनुष्य की पहले भावना बनती है फिर उसके अनुसार कर्म करता है, और जिस भावना से कर्म करता है वैसा ही उस कर्म का प्रभाव होना है। यदि कोई, विश्व मे शाति हो इस भाव से यज्ञ करता है तो इसमे क्या दोष है!

मनुष्य जिस बात को सुनता है उसका मन पर अच्छा या बुरा प्रभाव होना है और उस पर विचार भी करता है। आयसमाज वेद प्रचार लोगो के भावो को बदलने के लिए ही तो करता है। आर्य अपने प्रत्यक उत्सव यज्ञादि के पश्चात् शाति पाठ करते हैं। क्या उसका कोई लाभ नही है, नही है तो यह व्यर्थ हो जाना है। सब कार्यों मे भाव की ही प्रधानता होती है। भावना ही कार्यों को अच्छा या बुरा बनाती है।

आर्य समाज के सभी कार्यों मे ससार का भला हो, ससार मे शान्ति हो और इससे सब लोग सुखी रहे। सभी कार्यों मे यही भावना ओत-प्रात है। वेद पारायण-यज्ञो मे भी यही भावना है।

जिस बात, जिस कार्य से लोग प्रभावित हो उसके लिए लोग धन देते हैं।

आर्यसमाज जो कुछ कहता है वह सब सत्य है, ठीक है किंतु इतना ही पर्याप्त होता तो लोग अन्य मतो मे क्यो जाते। अन्य मतो के धर्म-स्थान जनता से भरे हुए हैं। और आर्य समाज मन्दिरो मे रौनक हम देखते ही हैं! इसलिए आर्य समाज के हितचिन्तको को चिन्ता है। जिसका प्रकाश व्याख्यानो लेखो मे प्राय आजकल होता रहता है। और आप भी देखते रहते हैं। केवल इन वेद पारायण-यज्ञो मे रौनक दिखती है। इन यज्ञो ने ही श्रद्धालु आर्य नर-नारियो तथा अन्य लोगो को थामा, रोका हुआ है। इन यज्ञो को बद कर दे तो जो थोडी रौनक है वह भी न रहेगी। जो लोग आयसमाज की मान्यताओ से दूर रहते हैं, वे लोग भी इन पारायण यज्ञो मे बडी श्रद्धा से सम्मिलित होते हैं, तथा आयसमाज के समीप आ जाते हैं। उनका भय और द्वेष दूर हो जाता है।

पाकिस्तान बनने से पूर्व, लाहौर आर्यसमाज का बडा केन्द्र होता था। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का कार्यालय गुरुदत्त भवन मे था। इस सभा के पास उपदेशको और भजनिको की एक बडी सख्या थी। जिनके द्वारा उस समय के बडे पजाब और पजाब के बाहर के प्रान्तो मे वैदिक धर्म का प्रचार होता था। कराची, बम्बई, कलकता तक की आर्यसमाजो के उत्सव तथा शास्त्रार्थ इस सभा के उपदेशको द्वारा होते थे। आर्यसमाज के शिरोमणि विद्वान वैदिक-सिद्धातो के पूर्ण ज्ञाता पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज उपदेशक विद्यालय के आचाय थे। स्वामी वेदानन्द जी तीथ प बुद्धदेव जी विद्यालकार, प प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति, प सुखदेव जी वेदालकार दर्शनाचार्य, प ईश्वर चन्द्र जी दर्शनाचार्य ये सभी विद्वान गुरुदत्त भवन तथा लाहौर मे रहते थे। महर्षि के अनन्य भक्त प ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु जो प्राचीन व्याकरण के अद्भुत विद्वान थे, अपने विद्यार्थियो सहित रावी नदी के समीप अपने आश्रम मे निवास करते थे।

लाहौर आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव गुरुदत्त भवन के विशाल मैदान मे हुआ करता था। इन सभी विद्वानो के व्याख्यान उपदश होते और गुरुदत्त भवन की यज्ञ शाला मे प्रतिवर्ष वेद पारायण-यज्ञ नियम पूर्व होता था। यदि वेद पारायण-यज्ञ का करना सिद्धात विरुद्ध होता तो ये विद्वान जो वही रहते थे उसे तुरन्त बद करने का आदेश देते और फिर किसी को वेद पारायण-यज्ञ करने का साहस न होता।

उपर्युक्त बातो से यह प्रामाणित होता है कि वेद पारायण-यज्ञ, गायत्री-यज्ञ करना किसी भी दशा मे आर्य समाज की मान्यताओ के विरुद्ध अथवा धर्म विरुद्ध कर्म नही है।

सस्कार विधि मे महर्षि ने यज्ञ कुण्ड का परिमाण लिखा है, यदि एक लाख आहुति देनी हो, 50 हजार आहुति देनी हो, 25 हजार आहुति देनी हो, तो इतना-इतना बडा यज्ञ कुण्ड बनावे। किंतु यह नही लिखा कि इतने बडे यज्ञ कुण्ड मे किन मन्त्रो से कौन सा यज्ञ कर सकेंगे। किसी यज्ञ का नाम और उसकी विधि भी नही लिखी। किंतु सत्यार्थ-प्रकाश' के तृतीय समुल्लास मे ऋषि लिखते हैं कि अग्निहोत्र के प्रत्येक मन्त्र को पढकर एक-एक आहुति देवे।

और जो अधिक आहुति देनी हो तो – विश्वानि देव ... इस मन्त्र से और पूर्वोक्त गायत्री मन्त्र से आहुति देवे।

जब महर्षि स्वय लिखते हैं कि गायत्री मन्त्र से आहुति देवे, तो आप कैसे रोकते हैं। आपकी यह अनाधिकार चेष्टा है। आप यह लिख सकते थे कि वेद-पारायण-यज्ञो के विषय मे आर्य विद्वानो तथा आर्य सभाओ को विचार करना चाहिए कि ये वेद पारायण-यज्ञ गायत्री-यज्ञ उचित हैं कि नही।

जब तक कोई बडे यज्ञ की सुगम विधि लोगो के सामने न रखी जाये तब तक लोग इन वद पारायण यज्ञो को ही करेंगे। इन्हे बन्द करने का एक मात्र उपाय यह है कि यज्ञ प्रेमियो का किसी बडे और सुगम विधि वाले यज्ञ की विधि बताई जाये।

पत्र और विचार

## कहीं पुनः वैसा न हो !

कुछ समय पूर्व एक 'पत्र' मे एक प्रख्यात आर्य सन्यासी की खुली चिट्ठी प्रकाशित हुई थी। उन्होने इसमे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्तमान प्रधान से 16-17 प्रश्न किए हैं उनमे से सबसे महत्त्वपूर्ण मुझको यही लगा कि—

"सन 1984 के निर्वाचन मे आपने यह आदेश निकाला था कि सब आर्य समाजी कांग्रेस को वोट दें, इस आदेश के लिए सार्वदेशिक सभा के किस तारीख के किस नम्बर वाले प्रस्ताव से आपको अधिकृत किया गया था ?"

आर्य सन्यासी के उक्त प्रश्न का उत्तर मुझे अभी तक कही पढने को नही मिला, अत आशका हो रही है कि कही इस बार के आम चुनावो मे भी ऐसा ही न हो!

— स्वामी ओहम् प्रेमी चतुर्थाश्रमी,
गुरुकुल परिसर
होशगाबाद (म प्र)

## संशोधन तो अच्छा मगर..

उपसमिति के सुझाव पर आर्य समाज के प्रवेश-पत्र मे सभासदो के लिए जोडा गया सशोधन तो काफी अच्छा है, मगर परिणाम तो दृढता से लागू करने से ही निकल सकता है। अन्यथा वही ढाक के तीन पात रहते हैं।

—सत्यवीरसिंह
चकरौता रोड
सहारनपुर (उ प्र)

## प्रेमभिक्षु के प्रवचन

आर्य समाज खण्डवा के तत्वावधान मे दिनाक 27/7/89 को प्रेम भिक्षुजी द्वारा प्रात कालीन यज्ञ टैगोर कॉलोनी मे सपन्न कराया गया एव दोपहर पोलोटेकनिकल कॉलिज मे "विज्ञान एव धर्म के सबध" विषय पर सारगर्भित भाषण हुआ।

—मन्त्री

## पाश्चात्यो का अन्धानुकरण...

(शेष पृष्ठ 1 का)

3 आर्य लोग ईश्वर की नहीं, प्रत्युत अग्नि वायु, सूर्य आदि प्राकृतिक पदार्थों की उपासना करते थे।

4 वे पशुओ की बलि देते थे।

5 वेद ईश्वरीय ज्ञान न होकर मनुष्यकृत ग्रन्थ हैं।

6 ऋग्वेद की रचना गोहत्यारे दिवोदास के पडपोते के पोते सुदास ने की। कुछ मत्र असुरो ने भी बनाये।

7 ऋग्वेद का प्रादुर्भाव सृष्टि के आदि मे नही हुआ। उनकी रचना अयोध्या के राजा दशरथ के छह पीढी बाद तथा मौर्य साम्राज्य की स्थापना से कुछ समय पहले हुई।

8 पहले ऋग्वेद बना, फिर शेष तीन वेद बने।

9 वेदो के साथ ही उपनिषद भी बने।

10 वेदो मे वर्णव्यवस्था का उल्लेख नही।

11 रामायण और महाभारत काल मे भी चार वर्णों में समाज का विभाजन नही हुआ था।

12 ऋग्वेद मे कबीलो की लडाइयो का ही वर्णन है। इनके अतिरिक्त हडप्पा पर अधिकार करने के लिए छह पीढियो तक चलने वाले आर्यों तथा यहा के मूल निवासियो के युद्ध का उल्लेख है।

उपर्युक्त सभी मान्यताए महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की मान्यताओ के सर्वथा विरुद्ध है परन्तु डी ए वी सस्थाए जन जन तक इन्ही मान्यताओ को पहुँचाने के लिए कृतसकल्प हैं। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए डी ए वी शताब्दी के उपलक्ष मे एक ऐसे सस्थान की स्थापना करने का निश्चय किया गया है, जो इस प्रकार के साहित्य का निर्माण और प्रकाशन करे। प्रो वेदव्यासजी के शब्दो मे—

'Establishment of a full-fledged Publication Division to publish 500 books by eminent scholars on Vedic religion Aryan Culture and Indian history on the model of what has been achieved by Bharatiya Vidya Bhawan under the inspiring leadership of K M Munshi" — Felicitations, P 117

अर्थात्—डी ए वी का एक लक्ष्य श्री कन्हैयालाल मुशी द्वारा स्थापित तथा सचालित भारतीय विद्या भवन के आदर्शों पर एक प्रकाशन सस्थान खोलना है जहा से प्रमुख विद्वानो द्वारा वैदिक धर्म, सस्कृति तथा भारतीय इतिहास पर लिखी ५०० पुस्तके प्रकाशित की जायेगी।

भारतीय विद्या भवन द्वारा क्या काम हो रहा है, इसकी जानकारी स्वय कन्हैयालाल द्वारा लिखित तथा भवन द्वारा प्रकाशित पुस्तक के एक उदाहरण द्वारा मिल जाती है। प्राचीन आर्यों के जीवन के सम्बन्ध मे कन्हैयालाल मुशी ने लिखा है—

"इनकी भाषा मे अब भी जगली दशा के स्मरण मौजूद थे। मास भी खाया जाता था और गाय का भी। अतिथि को गोमास खिलाने वाले को बहुमानास्पद उपाधि थी। ऋषि सोमरस पीकर नशे मे चूर रहते और लोभ तथा क्रोध का प्रदर्शन करते थे। वे जुआ खूब खेलते थे। सर्वसाधारण सुरा पीकर नशा करते थे। ऋषि युद्धक्षेत्र मे हजारो का सहार करते थे। वे रूपवती स्त्रियो को आकर्षित करने के लिए वेदमत्रो की रचना करते थे। कुमारी से उत्पन्न बच्चे पतित नही माने जाते थे। कई ऋषियो का पता न था। प्राय भेडियो की तरह लोभी थे। वीभत्सता या अश्लीलता का कोई विचार न था। आत्मा का कोई खयाल न था, ईश्वर की कल्पना नही, मान्यता नहीं आर्य भारत वर्ष के निर्विनिमयपूर्वक सम्वासी थे।"

प्रो वेदव्यास ने इसी प्रकार के विचारो का प्रचार करने की घोषणा की है। पुस्तक की भूमिका मे श्री मुशी ने लिखा था कि अपनी पुस्तक मे उन्होने जो कुछ लिखा है वह ऋग्वेद के आधार पर लिखा है। पत्र लिखकर उनसे उन वेदमत्रो को उद्धृत करने का आग्रह किया गया जिनके आधार पर उन्होने यह सब लिखा था तो उन्होने स्वामी विद्यानन्द सरस्वती (तब श्री लक्ष्मीदत्त दीक्षित) को लिखे अपने पत्र दिनाक 2 फरवरी 19 0 में लिखा—

"I believe the Vedas to have been composed by human beings in the very early stage of our culture and my attempt in this book has been to create an atmosphere which I find in the Vedas as translated by westren scholors and as given in Dr. Keith's Vedic Index. I have accepted their view of life and conditions in those days"

अर्थात्—'मैंने जो कुछ लिखा है उसका आधार पाश्चात्य विद्वानो द्वारा किया गया अनुवाद है। मैंने उस समय के लोगो के जीवन के सबध मे उनको प्रमाण माना है।'

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रो वेदव्यास जी के वही विचार हैं जो कन्हैयालाल मुशी के। प्रो वेदव्यास ने जगह-जगह श्री कन्हैयालाल की नकल की है और कन्हैयालाल ने घोषणापूर्वक जानबूझकर वेदो और वैदिककालीन आर्यों को बदनाम करने के उद्देश्य से लिखने वाले पाश्चात्य विद्वानो की।

एक प्राचीन सभा के लिए ऐसा करना सर्वथा अनुचित है और आर्यसमाज के लिए विघातक।

## आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन

30 सितम्बर से 2 अक्टूबर 1989 तक दिल्ली में आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। डा प्रशान्त वेदालकार ने एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा है आर्यसमाज को नई गति और दिशा देने के लिए विवेकशील आर्यसमाजी इस समागम में सम्मिलित होगे। इस सम्मेलन मे सगठन को गति देने की क्रातिकारी योजनाओ पर विचार किया जायेगा। देश के प्रबुद्ध आर्य विद्वान् अपनी रचनात्मक योजना प्रस्तुत करेंगे और पूरे देश के प्रतिनिधि इस योजना को अपने-अपने प्रदेश में क्रियात्मक रूप देने का सकल्प करेंगे। इस अवसर पर एक स्मारिका प्रकाशित होगी जिसमे देश भर के विद्वानो से आये सुझाव प्रकाशित होगे। आप प्रतिनिधि के रूप मे सम्मेलन मे भाग लें और अपने सुझाव आगे लिखे पते पर भेजें—डा प्रशान्त वेदालकार, ७/२ रूपनगर, दिल्ली।

## आर्य युवा साईकिल रैली

केन्द्रीय आर्ययुवक परिषद् नई दिल्ली के तत्वावधान मे 26 सितम्बर 1989 को प्रात 8 बजे आर्य समाज कबीर बस्ती दिल्ली—7 से आर्य युवा नेता श्री राजसिंह आर्य के नेतृत्व में 25 आर्य युवको की एक विशेष साईकिल रैली गुरुकुल एटा के लिए रवाना होगी। मार्ग मे पडनेवाले ग्रामो, कस्बो एव नगरो मे वैदिक साहित्य वितरण, भजन, उपदेश और प्रवचनो द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार किया जायेगा।

## श्रावणी उपाकर्म पर्व (रक्षाबन्धन) तथा कर्मवीर पं. जियालाल—जन्म-जयंती

श्रावणी उपाकर्म पर्व (रक्षाबन्धन) तथा कर्मवीर स्वर्गीय पण्डित जियालालजी की जन्म जयन्ती 17 अगस्त 89,गुरुवार को प्रात 8 बजे से आर्य समाज भवन (केसरगज) मे बडे समारोह पूर्वक मनायी गई।

— मन्त्री



स्वत्वाधिकारी आर्यसमाज अजमेर के लिए प्रकाशक एव सपादक रासासिंह हेतु रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्य प्रिन्टर्स बाबू मोहल्ला केसरगज, अजमेर मे मुद्रित एव आर्य समाज भवन, अजमेर से प्रकाशित।

ओ३म्

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सदा उद्यत रहना चाहिए।
—महर्षि दयानन्द

# आर्य पुनर्गठन

आर्य समाज, अजमेर का हिन्दी पाक्षिक पत्र

'आर्य हमारा नाम है वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म॥'

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सकल जगत को आर्य बनाए॥

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होने वाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 6 शुक्रवार, 15 सितम्बर, 1989
अंक 17 प स.-48383/84

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभयं परोक्षात्।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु॥

भाद्रपद शुक्ला 15 संवत 2046
वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60

## अध्यापक समर्पित भाव, निष्ठा एवं लगन से अध्यापन करें-रासासिंह

5 सितम्बर, 89 शिक्षक दिवस के उपलक्ष मे राज्य स्तर पर श्रेष्ठ शिक्षक के रूप मे सम्मानित डी ए वी सीनियर उ मा विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री रासासिंह का मानना है कि यदि अध्यापक समर्पित भाव, निष्ठा एव लगन से अध्यापन करें तो छात्रो मे अनुशासनहीनता की भावना नही आ सकती। एक भेट मे श्री सिंह ने कहा कि बच्चो को इस बात का अहसास होना चाहिये कि अध्यापक जो कुछ कह रहे हैं और कर रहे हैं वह सब उनके हित मे ही है। उनमे यह भावना नहीं होनी चाहिये कि सिर्फ काम करना है बल्कि यह सोच होना चाहिये कि वह भविष्य को तराश रहे है।

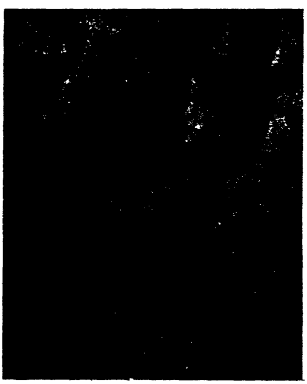
श्री रासासिंह ने एम ए, हिंदी व सस्कृत, एल एल बी, अग्रजी साहित्य मे बी ए व विद्या वाचस्पति की डिग्रिया ली हैं। 6 जुलाई 1963 को उन्होने अप्रशिक्षित अस्थाई शिक्षक के रूप मे डी ए वी स्कूल मे अध्यापन कार्य शुरू किया था फिर 1965 मे ए जी आफिस मे नौकरी की लेकिन मन मे अध्यापन करने मे ही लगा रहा। वर्ष 1965 मे विरजानन्द स्कूल मे तथा 1970 से 1974 तक डी ए वी मे अध्यापक रहे, सन् 1974 से 1976 तक डी ए वी महाविद्यालय मे हिंदी के व्याख्याता तथा 1976 से 1981 तक विरजानन्द स्कूल के प्रधानाध्यापक रहे। सन् 1981 से 83 तक वे डी ए वी स्कूल के प्रधानाध्यापक रहे। फिर वहीं पर उनकी पदोन्नति प्रधानाचार्य पद पर हुई जिस पर वे अभी भी कार्यरत हैं।

श्री रासासिंह ने नए विचारो को अगीकार करके, शैक्षिक एव सह-शैक्षिक प्रवृतियो तथा नैतिक मूल्यो के आधार पर बच्चो को जागरूक, जिज्ञासु और सस्कारित बनाने मे भागीरथ प्रयास किया है। श्री रासासिंह सृजनशील रचनाकार हैं तथा अपने लेखन व सम्पादन से जन चेतना का सचार करते रहे हैं। उनकी सहृदयता, मिलनसारिता, सेवा भावना व अनुशासन के प्रति प्रतिबद्धता ने डी ए वी स्कूल को इतनी लोकप्रिय बना दिया है कि हर अभिभावक अपने बच्चो को वहा प्रवेश कराने की बात सोचने लगे हैं। अपने कार्यकाल मे उन्होने शाला में काफी नया निर्माण कराया तथा खेलकूद व साहित्यिक गतिविधियो को बढ़ावा दिया है। अनेक सस्थाओ से जुड़े श्री रासासिंह आर्य समाज

(शेष पृष्ठ 4 पर)



श्री रासासिंह को पुरस्कृत करते हुए राज्यपाल श्री सुखदेव प्रसाद



श्री रासासिंह का स्वागत करते नगर के सम्भ्रात नागरिक

## आर्य समाज अजमेर द्वारा अभिनन्दन

डी ए वी सीनियर उ. मा विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री रासासिंह का आर्य समाज अजमेर द्वारा सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् एव आर्य समाज शिक्षा सभा अजमेर के मत्री श्री कृष्णराव जी वाल्ले की अध्यक्षता एव राजस्थान विधानसभा के उपाध्यक्ष श्री किशन मोटवानी के मुख्यातिथ्य में सम्मान समारोह केसरगज स्थित आर्य समाज भवन मे आयोजित हुआ।

इस अवसर पर श्री ज्ञानेश्वरप्रसाद निर्मल श्री त्रिलोक गोयल का काव्यपाठ तथा डा बाबूराम शास्त्री, श्री रमेशचन्द्र गुप्ता पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी अजमेर, प्रो बुद्धिप्रकाश आर्य, श्री रामबाबू शुभम्, श्री भवरलाल जी शर्मा, डा कृष्णपाल सिंह, श्री जे ज टिलवानी आदर्श शिक्षण सस्था, प्रो महेशनारायण निगम उपाचार्य, दयानन्द कालेज अजमेर आदि अनेक वक्ताओं ने

(शेष पृष्ठ 4 पर)

निदेशक दत्तात्रेय आर्य
प्रबन्ध सम्पादक : रासासिंह
सम्पादक : वीरेन्द्र कुमार आर्य
कार्या. 21010

सम्पादकीय

# वेद प्रचार साईकिल यात्रा

दिल्ली के आर्य युवक गत कुछ वर्षों से वेद प्रचार साईकिल यात्राओं का आयोजन करते आ रहे हैं। इस वर्ष भी दिल्ली के युवक-युवतियां ऐसी ही एक यात्रा का आयोजन कर रहे हैं।

साईकिल यात्राओं से प्रचार का अपने आप में प्रभावशाली तरीका है। रास्ते में आने वाले ग्रामों-कस्बों के व्यक्ति इन यात्रियों की बातों को विशेष उत्सुकता से सुनते हैं।

वेदों को समझने में जहां बड़े-बड़े विद्वानों को पसीने आते हैं वहां युवकों द्वारा वेद-प्रचार की बात कुछ जचती नहीं। मेरी अपनी सम्मति में यदि इन साईकिल यात्राओं का नाम 'आर्य समाज प्रचार' रख दिया जाए, तो सार्थक रहेगा।

अभी तक प्रचार साईकिल यात्राओं का आयोजन युवक ही करते रहे हैं। खेद है कि आज के समय में धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में युवकों की भूमिका को विशेष गम्भीरता से नहीं लिया जाता। युवकों की छवि ही कुछ ऐसी बन गई है।

यह प्रसन्नता का विषय है कि इस वर्ष 2 से 6 अक्टूबर तक दिल्ली से हरिद्वार तक की साईकिल यात्रा एक कर्मठ आर्य युवती कु० आभा आर्या के नेतृत्व में आयोजित की जा रही है।

निश्चित रूप से वर्तमान में जब आर्यसमाज के कर्णधार अपने निहित स्वार्थों में लिप्त होकर आपसी संघर्ष में रत हैं, ऐसे में प्रचार यात्राओं के आयोजक विशेष बधाई के पात्र हैं। हर ऋषि भक्त आर्यजन को इन लोगों का आभारी होना चाहिए।

मेरी सभी आर्य संस्थाओं-आर्य समाजों व आर्यजनों से अपील है कि वे इस प्रचार-यात्रा को सफल बनाने के लिए आयोजकों को यथाशक्ति आर्थिक सहायता देकर सहयोग करें। यह सहायता 'वेद-प्रचार साईकिल यात्रा समिति' कार्यालय-आर्यसमाज, बी-ब्लाक, जनकपुरी नई दिल्ली-58 के नाम से भेजी जा सकती है। —वीरेन्द्र आर्य

## मेरे प्रेरणा-स्रोत, मेरे मार्ग-दर्शक

श्री क्षितीश वेदालंकार की मेरे पत्रकार जीवन में विशेष भूमिका रही है। वस्तुतः पत्रकारिता के क्षेत्र में मुझे लाने के पीछे उन्हीं की प्रेरणा रही है और आज इस क्षेत्र में मेरा यदि कुछ भी स्थान है, वह सब उन्हीं की प्रेरणा और मार्गदर्शन का परिणाम है।

मैं क्षितीश जी के लेख जब से मैंने होश संभाला, तभी से पढ़ता आ रहा हूं। स्वाध्यायी आर्य समाजी पिता के पुस्तकालय में आने वाली पत्र-पत्रिकाओं में मैं सबसे पहले इन्हीं के लेख को पढ़ता था। बाद में उनकी लेखनी का यही आकर्षण मुझे पत्रकारिता के क्षेत्र में भी ले आया। न मैं उनके लेख पढ़ता न मेरी पत्रकारिता में रुचि होती।

पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश करने के प्रथम दिन से ही क्षितीश जी का मुझ पर वरद हस्त रहा है। मेरे तीन चार वर्ष के सक्रिय पत्रकार जीवन में जब-जब भी मेरे सामने कोई कठिनाई आई तो उन्होंने आगे बढ़कर मेरा मार्गदर्शन किया और उससे मुझे बाहर निकाला है। कई बार अत्यन्त विषम परिस्थितियों में उन्होंने उदारतापूर्वक मुझे संकट से उबारा है। उनके मेरे जैसे तुच्छ व्यक्ति के प्रति इस स्नेहभाव को देखकर अनेक लोगों को मुझसे ईर्ष्या होनी स्वाभाविक ही है। आखिर ऐसे महापुरुषों का ऐसा स्नेह सबको कहां मिलता है।

पत्रकारिता और साहित्य के क्षेत्र में श्रद्धेय क्षितीश जी का स्थान बहुत ऊंचा है। साहित्य की अनेक विधाओं में उन्होंने लिखा है और वह सारा का सारा उल्लेखनीय है। पर्यटन, इतिहास, पुरातत्व आदि विषयों पर उन्होंने जो कुछ लिखा वह उपेक्षणीय नहीं है। व्यंग्य लेखन में भी वे सिद्धहस्त हैं। ललित निबन्ध के लेखन में तो वे मुझे अद्वितीय लगते हैं। इसके अतिरिक्त 'स्वेतालाना' नाम का एक उपन्यास भी उन्होंने लिखा है। जो लोकप्रियता की चरम सीमा छू गया है।

पंजाब पर लिखी क्षितीश जी की पुस्तक "तूफान के दौर से पंजाब" ने तो उन्हें देश के मूर्धन्य पत्रकारों की अग्रिम पंक्ति में ला खड़ा किया है। इस दौर में पंजाब समस्या पर लिखी गई सभी पुस्तकों में उनकी पुस्तक सबसे श्रेष्ठ है और समस्या जैसा विशद विवेचन किसी अन्य पुस्तक में नहीं मिलता।

दैनिक हिंदुस्तान में लम्बे समय तक कार्य करने और उससे अवकाश ग्रहण करने के उपरान्त क्षितीश जी ने साप्ताहिक 'आर्यजगत्' का सम्पादन भार संभाला। अपने दस वर्ष के इस अवकाशोत्तर सम्पादन काल में इस लड़खड़ाते पत्र को उन्होंने आज आर्यसमाज का सबसे लोकप्रिय पत्र बना दिया है, आर्य समाजी क्षेत्र से बाहर के लोगों में भी इसका सम्मानजनक स्थान है। आर्य समाजी समाचार-पत्रों के इतिहास में यह अपने आप एक उदाहरण है।

क्षितीश जी मेरे गुरु हैं, मार्गदर्शक हैं, जहां इस बात से मुझे गर्व का अनुभव होता है, वहीं एक दायित्व बोध भी मुझे घेरता है। यह दायित्व बोध मुझे निरन्तर प्रेरणा देता है कि मैं एक मूर्धन्य पत्रकार का शिष्य हूं, स्नेहभाजन हूं, और उनके इस स्नेह की लाज रखना मेरा कर्त्तव्य है।

क्षितीश जी सितम्बर, 89 में अपने जीवन के 74 वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। इस अवसर पर मैं यही कामना कर सकता हूं कि वे स्वस्थ एवं दीर्घ सुखी जीवन जीते हुए मुझे इसी प्रकार अपने आशीर्वाद का पात्र बनाए रखें।

—वीरेन्द्र आर्य

(सद्य प्रकाशित पुस्तक 'राष्ट्रीय पत्रकारिता के पुरोधा' का सम्पादकीय)

## पत्रकारिता का गिरता स्तर!

अब वह समय आ गया है जब हमें पत्रकारिता के गिरते स्तर की ओर ध्यान देना चाहिए और पतन की ओर तेजी से जा रही पत्रकारिता को सही दिशा देनी चाहिए।

आज भारत में पत्रकारिता खासकर हिन्दी व अन्य राष्ट्रीय भाषाई पत्रकारिता बड़े ही नाजुक दौर से गुजर रही है। राष्ट्रीय पत्रों से लेकर मझोले एवं लघु स्तर के पत्र इसकी चपेट में हैं। स्वतन्त्रता के बाद जैसे ही पत्रकारिता ने एक व्यवसाय का रूप लिया तो तभी से उसके बुरे दिन शुरू हो गए। आज स्थिति ये है कि देश के सभी प्रमुख राष्ट्रीय पत्रों के मालिक व्यावसायी हैं और वे अपने इन पत्रों को भी व्यवसाय की तरह ही चलाते हैं। समाज हित-देशहित से बड़ा उनके लिए ही व्यवसाय है। यही नहीं अपने अन्य व्यवसायजनित हितों को देखते हुए ये पत्र सरकार तक को प्रभावित करते हैं।

मझोले और छोटे स्तर के पत्रों का हाल और भी गया-गुजरा है। वस्तुतः इन पत्रों में पत्रकारिता में रुचि रखने वाले लोग तो नाम भर को हैं, अन्यथा सभी स्वार्थी एवं अन्य कोई भी रोजगार पाने में असमर्थ लोगों का जमावड़ा ही अधिक है। ये लोग वैसे भी कोई स्तरीय 'पत्र' नहीं निकाल सकते और यदि प्रयास भी करें तो आधुनिक मुद्रण प्रणाली के अभाव में ये सामान्य जनता के बीच अपना स्थान नहीं बना सकते। क्योंकि महंगी फोटो कम्पोजिंग के द्वारा मुद्रित पत्रों के मुकाबले ये 'पत्र' बहुत ही घटिया नजर आते हैं और आज साधारण जनता स्तरीय सामग्री से पूर्ण 'पत्र' की चमक-दमक देखती है।

ऐसे में अपनी स्थिति सुधारने के लिए इन समाचार-पत्रों को पीत-पत्रकारिता का सहारा लेना पड़ता है। अब जो पत्र और पत्रकार यही सब करने के लिए आए हैं, उन्हें तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। व्यक्ति विशेष या संगठन विशेष को ब्लैकमेल करने से लेकर ये सरकार को भी चूना लगाते हैं। अपने क्षुद्र स्वार्थ के लिए ये किसी का भी प्रशस्ति-गान या विरोध कर

( शेष पृष्ठ 3 पर )

हिन्दी दिवस पर विशेष

# राष्ट्रभाषा हिंदी और हम

—वि सा विद्यालंकार—

आज देश का, स्वाधीन देश का शासक वर्ग ब्रिटिश शासको द्वारा अभिषिक्त और यूरोपीय चिन्तन सस्कार भाषा मे बधा हुआ है। यह उतना ही रूढिवादी और कट्टरपथी है जितना कि मुल्ला मौलवी और पोप-पथी। इसे वह आधुनिकता कहता है। इस वर्ग के लिये आधुनिकता का अर्थ है स्वय बिना चिन्तन किए, बिना देश काल-स्थिति-परिवेश की चिन्ता किए केवल यूरोपीय चिन्तको के निष्कर्षों को देश पर लाद देना, पूर्व शासको के चरणो में बैठकर उनकी भाषा का अभ्यास कर और उन्ही की भाति देश की भाषाओ को तिरस्कृत कर, सविधान और उसकी व्यवस्थाओ को ताक पर रख अग्रेजी (इडियन समाज) को ही राजभाषा के रूप में देश पर लादे रखना। सामान्य भाषा मे जो मात्र अनुकरण है, नकल है, वही हमारे शासको के लिए आधुनिकता है। क्योकि प्रबुद्ध वर्ग भी इसी समुदाय और वर्ग से जुडा है, इसलिये देश की प्रत्येक भाषा की प्रत्येक विधा पर यूरोपीय चिन्तन अपने अपरिष्कृत रूप मे लद गया है, शिल्प पूजनीय रूप मे ही अनुकरणीय वस्तु है, आयातित कला ही समादृत होती है, देश की कला तो मात्र सग्रहालयो और प्रद-र्शनियो मे सुरक्षित रखी जाती है। विज्ञान के क्षेत्र मे अनुसधान और नव प्रयोगो के लिये धनराशि उपलब्ध नही होती, परन्तु आयात करने के लिये अपरिमित धनराशि उपलब्ध हो जाती है क्योकि उसका कुछ अश विदेशी बैंको में सुरक्षित रखने का अवसर प्राप्त हो जाता है।

('प्रकर' से)



फूल-मालाओ से लदे श्री रासासिंह

# आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

बिहार राज्य आर्य समाज प्रतिनिधि सभा एव पटना जिला आर्य सभा के तत्वावधान मे पटना के एतिहासिक स्थल-श्रीकृष्ण स्मारक हाल मे विशाल वैदिक धर्म (आर्य) महासम्मेलन, जो 9 एव 10 सितम्बर 1989 को सोल्लास सम्पन्न हुआ। राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, महिला जागरण सम्मेलन हिन्दू एकता सम्मेलन एव सामाजिक न्याय सम्मेलन का उद्घाटन क्रमश आचार्य भग-वान देव, सम्पादक योम मदिर नई दिल्ली, श्रीमती प्रभावती गुप्त, सासद, पूर्व मत्री बिहार सरकार, प्रो बलराज मधोक, राष्ट्रीय अध्यक्ष, जनसघ और श्री भोला प्रसाद सिंह, पूर्व मत्री एव वर्त-मान अध्यक्ष टेक्स्ट बुक निगम ने की। सामाजिक न्याय सम्मे-लन के मुख्य वक्ता के रूप मे स्वामी अग्निवेश राष्ट्रीय अध्यक्ष बन्धुआ मुक्ति मोर्चा ने हरिजन गिरिजन, पिछडा और महिलाओ की क्राति को तेज करने तथा किसान मजदूर आदोलन चलाने की प्रबल आवश्यकता पर बल दिया।

अनेक प्रमुख वक्ताओ ने अवैध ढग से गठित बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा नया टोला पटना-4 और उसके प्रधान एव मत्री सर्वश्री भूप नारायण और योगेन्द्र नारायण के भ्रष्ट, अमा-नवीय एव निकृष्ट कार्यों की भर्त्सना की तथा सम्मेलन मे एक प्रस्ताव पारित कर बिहार के समस्त आर्य समाजो और आर्य शिक्षा सस्थाओ से आग्रह किया गया कि उक्त प्रतिनिधि सभा से सबध विच्छेद करे, उसके सारे कार्यों मे असहयोग करे और आगामी निर्वाचन में उन्हे अप-दस्थ करे।

—महामन्त्री



अजमेर आर्य समाज द्वारा श्री रासासिंह के किए गए अभि-नदन समारोह मे बोलते हुए श्री नवीन कुमार शर्मा, मच पर बाए से दाए – श्री कृष्णराव वाल्ले, श्री किशन मोटवानी व श्री रासासिंह।

## दरबारी लाल और सहगल बाढ़ पीड़ित क्षेत्रो के दौरे पर

नई दिल्ली—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के कार्यकर्ता प्रधान एव डी. ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के सगठन सचिव श्री दरबारी लाल तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री राम नाम नाथ सहगल आध्रप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र आदि राज्यो मे सभा द्वारा सचालित बाढ राहत केन्द्रो का निरीक्षण करने जा रहे हैं। अपने साथ अच्छी राशि भी ले जा रहे हैं। जो भी राशि, खाद्य सामग्री तथा कपडे आदि प्राप्त हो रहे हैं, वे बाढ राहत केन्द्रो पर भिज-वाये जा रहे हैं।

यदि आप खाद्य सामग्री, कपडे, वस्तुए एव धन राशि सीधी भिज-वाना चाहे तो महाराष्ट्र मे श्री पी एन. सहगल, मन्त्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा महाराष्ट्र, 25-ए, पुष्पा पार्क, मलाड (ईस्ट) बम्बई-400 97 के पते पर भेज सकते हैं।

## पत्रकारिता का...

( शेष पृष्ठ 2 का )

सकते हैं और इन सबके बीच पिसना पडता है ईमानदार पत्रकारो और निष्पक्ष 'पत्रो' को। निष्पक्ष पत्र कभी किसी सर-कार का झूठा प्रशस्तिगान नही कर सकता, इसलिए उसे विज्ञापन एव अन्य सरकारी सहायता से हाथ धोना पडता है। एक ओर पर्याप्त पूजी के अभाव मे जनता के बीच ऐसे 'पत्र' ऐसा स्थान नही बना सकते कि आत्मनिर्भर हो सकें, द्वितीय इन्हे अपनी ईमानदारी के कारण सरकारी विज्ञापन भी नही मिल पाते। ऐसे मे वे अकाल ही दम तोड जाते हैं।

पत्रकारिता को सही दिशा देने के लिए क्या समाज के प्रबुद्ध व्यक्ति अपना उत्तरदायित्व अनुभव नहीं करते ?

# पं. शिवकुमार शास्त्री दिवंगत

आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वान पण्डित शिवकुमार शास्त्री का 3 सितम्बर को प्रात नई दिल्ली स्थित अपने निवास स्थान पर हृदय गति रुक जाने से प्राणांत हो गया। उनकी आयु लगभग 74 वर्ष थी।

वे पिछले कुछ दिनो से अस्वस्थ चले आ रहे थे। कुछ दिन अस्पताल में रहने के बाद घर पर ही उनका इलाज चल रहा था।

आर्य समाज के अनेक सगठनो और सभाओ क पदाधिकारी रहने क साथ साथ वे चौथी और पाचवी लोकसभा क सदस्य भी रहे। वे जहा भी रहे, समाजसेवा ही एकमात्र उनका ध्येय रहा।

शास्त्री जी एक कुशल वक्ता थे। विद्वता और पाण्डित्य के साथ उनके व्याख्यानो मे ऐतिहासिक कथाओ और शेरो-शायरी की भी पुट रहती थी जिससे जनता उनक व्याख्यानो को आतुर रहती थी।

आर्य पुनगठन' परिवार दिवगत की आत्मा की शाति के लिए प्रभु से प्रार्थना करता है और उन्हे अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करता है।

## शुभ सूचना

'काश गाधी जी ने कुरान पढी होती तो हिंदू मुस्लिम भाई-भाई नहीं कहते।

इस पुस्तक को 2 वर्ष पहले भारत सरकार ने जब्त करके पुस्तक के लेखक बिशन स्वरूप गोयल पर केस चलाया जिसे माननीय मजिस्ट्रेट श्री चतुर्वेदी जी ने 29 नवम्बर सन 88 को खारिज कर दिया। जो सज्जन यह पुस्तक मगवाना चाहे वे 1) रुपए प्रति मगवा सकते हैं। वितरण करने वालो को 50) रु मे सौ प्रति भेजी जायेंगी।

—वेद प्रचारक मण्डल,
60/13 रामजस रोड,

# अध्यापक

(शेष पृष्ठ 1 का)

अजमेर के मन्त्री हैं तथा राजनीति में भी सक्रिय हैं। श्री रासासिंह का एकमात्र ध्येय विद्यालय का सर्वांगीण विकास है। श्री सिंह की लोकप्रियता का इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि 6 सितम्बर को प्रात मेल से अजमेर पहुंचने पर नगर के सम्भ्रान्त नागरिको आर्यसमाज के पदाधिकारियो, शिक्षा क्षेत्र से जुड़े लोगो व डी ए वी. स्कूल के छात्रो न भव्य स्वागत किया। स्टेशन से खुली जीप मे उन्हें मोनिया इस्लामिया सी. उ मा वि में लाया गया। वहां शिक्षा विभाग द्वारा श्री सिंह का सम्मान किया गया। कार्यक्रम अजमेर के जिला-शिक्षा अधिकारी श्री सोहनलाल सिसोदिया एव स्कूल के प्रधानाचार्य श्री श्यामलाल वर्मा के संयोजन मे हुआ। इसके बाद डी ए वी स्कूल के प्रागण मे श्री सिंह का एक भव्य समारोह मे अभिनन्दन किया गया। राज्य सरकार ने उन्हे उनके सम्मान स्वरूप 3001/- का एक एक चैक, एक शाल व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया है।

## वेद-प्रचार सप्ताह मनाया

आर्य समाज अजमेर के तत्वावधान मे रक्षा बन्धन से लेकर जन्माष्टमी पर्व तक वेद प्रचार सप्ताह क अन्तर्गत विभिन्न आर्य परिवारो क निवास स्थानो पर सत्सग, प्रवचन भजन आदि क कार्यक्रम समारोहपूर्वक सम्पन्न हुए।

आर्य समाज के मन्त्री श्री रासासिंह ने इन सभी महानुभावो, प्रवचनकर्ताओ, भजनीको एव सहयोगियो क प्रति समाज की ओर से हार्दिक आभार व्यक्त किया है।

## अभिनन्दन...

(शेष पृष्ठ 1 का)

श्रीसिंह की कार्यप्रणाली एव कर्तव्यनिष्ठा की भूरि-भूरि प्रशसा की।

मुख्य अतिथि श्री किशन मोटवानी ने श्री सिंह के भावी जीवन की सफलता की कामना करते हुए उन्हें श्रेष्ठ व कर्मठ कार्यकर्ता तथा अध्यापक बताया।

समारोह के अध्यक्ष श्री कृष्णराव जी बाब्ले ने श्री रासासिंह की कर्तव्यनिष्ठा व समर्पण भाव की प्रशसा करते हुये उनकी कार्यशैली को अन्य कार्यकर्ताओ को ग्रहण करने की सलाह देते हुये उनके दीर्घायु तथा भावी जीवन की सफलता की कामना की।

इस अवसर पर अनेक प्रतिष्ठित नागरिक, शिक्षाविद् एव पत्रकार उपस्थित थे। कई महानुभावो ने, विशेषकर शिक्षाविदो ने बधाई-पत्र भेजकर उनकी प्रशसा की है।

समारोह का सचालन श्री गोविन्दसिंह ने किया।

## कोटा के साम्प्रदायिक दंगो पर चिंता व्यक्त

आर्य समाज अजमेर के तत्वावधान में रविवार को सम्पन्न इस सभा ने सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव द्वारा कोटा में हुए भयकर दगो पर घोर चिन्ता व्यक्त की है तथा हिन्दुओं के अनन्त चतुर्दशी के जुलूस पर अन्य वर्ग द्वारा हमला और पथराव किये जाने की कडी भर्त्सना की है। दगों में मरने वाले व्यक्तियो के निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त करते हुये राज्य सरकार से दगा पीड़ितों को समुचित सहायता देने तथा अपराधी असामाजिक तत्वो के विरुद्ध अविलम्ब कड़ी कार्यवाही करने की माग की है।

राज्य सरकार से अल्पसख्यको के तुष्टिकरण की नीति को त्याग कर साम्प्रदायिक तत्वो से कडाई से निपटने का अनुरोध किया है। इस आशय के सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव की प्रतियां राजस्थान के राज्यपाल, मुख्यमन्त्री तथा गृहमन्त्री एव जिलाधीश को भी प्रेषित की गई है।

—मन्त्री

## आर्य समाज अजमेर द्वारा प्रकाशित साहित्य

### प्रो. दत्तात्रेय आर्य द्वारा लिखित पुस्तकें

1 देश, धर्म और हिन्दू समाज को आर्य समाज की देन—मूल्य 0 50 पैसे
2 हमारी राष्ट्रीयता का आधार-मूल्य रु. 1 00
3, विद्यार्थियों के लिए आचार संहिता—मूल्य 0 50 पैसे
4 दी आर्यसमाज हिन्दू विदाउट हिन्दु इज्म (अंग्रेजी)—विशेष रियायती दर रु 75 00
5 आर्यसमाज हिन्दू धर्म का सम्प्रदाय नहीं-मूल्य—50 रु
6. आर्यसमाज दी मोस्ट पावरफुल मुवमेंट
(सा दे सभा द्वारा प्रकाशित)—5 00 रु

### दयानन्द शोधपीठ के प्रकाशन

1. दयानन्द कथा सग्रह मूल्य रु—3 00
2 महर्षि दयानन्द पत्रो के दर्पण मे मूल्य रु—50 00

### अन्य प्रकाशन

1 धर्म शिक्षा (भाग 1 से 11 तक) पूरे सेट का मूल्य रु 32 00
2 परिचय निर्देशिका (समस्त देश-विदेश की आर्य शिक्षण सस्थाओ का परिचय)—मूल्य रु 12 00
3 आर्य समाज (हिन्दी) मूल्य सजिल्द 20.00 रु अजिल्द 16 00
ले लाला लाजपतराय

## सत्यार्थ-प्रकाश व्याख्या माला 15 भाग

(प्रत्येक समुल्लास पर स्वतन्त्र ट्रैक्ट)

1-ईश्वर एक नाम अनेक
2-आदर्श माता-पिता
3-शिक्षा और चरित्र निर्माण
4-गृहस्थाश्रम का महत्व
5-सन्यासी कौन और कैसा हो ?
राज्य व्यवस्था
7-ईश्वर और वेद
8-जगत् की उत्पत्ति
9-स्वर्ग और नरक कहा है ?
10-चौके चुल्हे में धर्म नही
11-हिन्दू धर्म की निर्बलता
12-बौद्ध और जैनमत
13-यहूद और ईसाई मत
14-इस्लाम और वैदिक धर्म
15-सत्य का सर्वतथा प्रकाश

विशेष—सभी ट्रैक्ट आर्य जगत के चोटी के विद्वानों के द्वारा लिखित हैं एव ग्रन्थमाला का सम्पादन आर्य समाज अजमेर के प्रधान प्रो. दत्तात्रेय जी आर्य ने किया है। ग्रन्थमाला के सैट का मूल्य 8/ रुपये है।

## वेदार्थ पारिजात् खण्डनम्

प्रस्तुत पुस्तक विश्व वेद परिषद्, वेद सदन सी-817 लखनऊ से प्रकाशित की गई है। लेखक श्री वीरेन्द्रमुनि शास्त्री एम०ए० काव्य-तीर्थ, मूल्य 20) रुपये, पृष्ठ सख्या 138 है।

इस पुस्तक मे आचार्य वीरेन्द्र मुनि के अतिरिक्त अनेक आर्य विद्वानो के लेख हैं। जिनमे स्वामी करपात्री के वेदार्थ पारिजात् का खण्डन किया गया है।

[illegible]
बाबू मोहल्ला केसरगंज, अजमेर मे मुद्रित एव आर्य समाज भवन, अजमेर से प्रकाशित।

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है ।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सदा उद्यत रहना चाहिए ।
—महर्षि दयानन्द

ओ३म्

# आर्य पुनर्गठन

आर्य समाज, अजमेर का हिन्दी पाक्षिक पत्र

'आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म ।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म ।।'

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सकल जगत को आर्य बनाए ।

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होने वाली समस्याओ को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है ।

वष 6 शनिवार, 30 सितम्बर, 1989
अक 18 प स -43383/84

परोक्षात् ।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ।।

आश्विन सु 1 सवत 2046
वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60


आर्य जनों के लिए विचारणीय विषय

## विश्वनाथ प्रतापसिंह भी उर्दू की वकालत करते हैं !

—वीरेन्द्र कुमार आर्य—

हाल ही के अपने राजस्थान दौरे के दौरान जनता दल के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रतापसिह और हरियाणा के मुख्यमन्त्री देवीलाल अजमर भी आए थे । 29 सितम्बर की प्रात 8 अजमेर के सर्किट हाउस मे विश्वनाथ प्रतापसिह के लिए एक सवाददाता-सम्मेलन का आयोजन किया गया था । प्राय सवाददाता सम्मेलनो मे मैं जाता नही हू-लेकिन इस बार मुझे किन्ही कारणो से जाना पडा ।

अभी पिछले दिनो हिन्दी भाषी उत्तर प्रदेश मे उर्दू को द्वितीय राजभाषा का दर्जा दिया गया है मैं उस पर एव 'राम जन्म भूमि बनाम बाबरी मस्जिद विवाद पर देश के भावी प्रधानमत्री माने जाने वाले व्यक्ति के विचार जानना चाहता था । क्योकि मेरे सामने उर्दू के विषय मे इका का पक्ष तो पूरी तरह स्पष्ट था । वह तो उर्दू को द्वितीय राजभाषा का दर्जा दे रही है, बस अब इस पर जनता दल का पक्ष और जानना था ।

मेरे लिए विस्मय के साथ साथ यह खेद की भी बात रही कि जहा 'राम जन्म भूमि' के मुद्दे पर जनता दल अध्यक्ष स्वय बोलने के लिए उत्सुक थे वही उर्दू के विषय मे किसी भी सवाददाता ने प्रश्न नही किया । बहरहाल मुझे ही इस सबध मे उनसे प्रश्न करना पडा ।

राम जन्मभूमि बनाम बाबरी मस्जिद विवाद पर विश्वनाथ प्रतापसिंह का कहना था कि बिना मन्दिर या मस्जिद तोडे दोनो पक्षो के लिए स्वीकार्य समाधान निकाला जा सकता है और ऐसा समाधान उनके पास है । हालाकि पूछने पर उन्होने वह समाधान नही बताया ।

उर्दू को उत्तर प्रदेश मे द्वितीय राजभाषा बनाने के फैसले के वे प्रशसक हैं मेरे इस विषय मे पूछने पर विश्वनाथ प्रतापसिह का कहना था कि मैं तो अपने मुख्यमन्त्रित्व-काल मे ही इस काय को करना चाहता था, लेकिन किन्ही कारणो से तब यह सभव नही हो सका । उनकी सम्मति मे यह कार्य बहुत पहले हो जाना चाहिए था । इका ने चुनाव पूर्व इसकी घोषणा करके वोटो की राजनीति की है । (इका पर वोटो की राजनीति करने का आरोप लगाने वाले जनता दल की स्वय यह भाषायी नीति क्या वोट की राजनीति से नही प्रेरित है ! )

आम चुनाव सन्निकट है । आर्य समाज के सर्वोच्च सगठनो के लिए यह समय बहुत ही महत्त्व का है । इका व जनता दल दोनो की नीति आर्य जना की भावनाओ के विपरीत है । ऐसे मे आर्यसमाज को तय करना है कि चुनावो मे वह किस प्रकार किस दल के समर्थन मे अपनी भूमिका निभाए ?

मैंने बिना अपनी किसी टिप्पणी के सारी स्थिति आर्य जनता के समक्ष रख दी है । इस पर आगे बहस चलाना और कोई निर्णय लेना अब उसी के हाथ मे है ।

## आचार्य दत्तात्रेय आर्य की अमेरिका में भाषणमाला

सयुक्त राज्य अमेरिका के हटिंग्टन नगर मे स्थित अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन के केन्द्र मार्शल विश्वविद्यालय की विभिन्न कक्षाओ मे तथा विश्वविद्यालय के ही छोट-छोटे अनौपचारिक समूहो मे दयानन्द कालेज अजमेर के पूर्व प्राचार्य एवं अजमेर के प्रसिद्ध आर्य विद्वान एव प्रमुख शिक्षाविद दत्तात्रेय आर्य के भारतीय सस्कृति और राजनीति के सदर्भ मे एक अतिथि विद्वान (विजिटिंग स्कोलर) के रूप मे एक सितम्बर से ही नियमित भाषण हो रहे है जो अक्टूबर के प्रथम सप्ताह तक चलेंगे ।



मार्शल विश्वविद्यालय के अधिकारी डा ऐलन बी गोल्ड ने आचार्य जी का स्वागत करते हुए कहाकि 'हमारे विश्वविद्यालय के प्रागण मे आप जैसे सक्षम विद्वान को पाकर हमे प्रसन्नता है । आपके विचार हमारे विद्यार्थियो और सकायो के लिए मूल्यवान होगे ।
इसके लिये उन्हे सबधित विश्वविद्यालय द्वारा समस्त आवश्यक सुविधाये भी प्रदत्त की गई है ।''

आचार्य जी अक्टूबर के तीसरे सप्ताह मे स्वदेश लौटेंगे ।

## दहेज : कुछ विचार

आधे से अधिक, शायद 90%, विवाहो मे दहेज लिया दिया जाता है । किंतु यदि सभी अभिभावक अनिच्छापूर्वक और विवशतामे देतहैं तो दहेज मागने के अपराधी अभिभावक और दूल्हे कौन से हैं ? क्या ये सभी किसी दूसरे ग्रह के निवासी है ? या ये कन्या-पक्ष के वही बेचारे मजबूर नही हैं, जो वर-पक्ष बनते ही दहेज-दानव हो जाते हैं ? यदि ये वे ही महानुभाव हैं, तो हम किसके लिए अपनी सहानुभूति की अश्रुनदी बहा रहे हैं ? यदि वर पक्ष और वधू पक्ष दो अलग-अलग ग्रहो के निवासी नही हैं, तो वधू पक्ष की हाय-तोबा और चीख पुकार को कितनी गम्भीरता से लिया जाए?

इससे तो यह निष्कष निकलता है कि हमसब पाखडी और दो मुहे हैं। इसे हम कहा तक सत्य मानें ? कहीं ऐसा तो नही कि विवशता और अनिच्छा का हमारा आकलन ही त्रुटिपूर्ण हो और इसका प्रतिशत उतना बडा न हो ? दहेज से जुडे कुछ और महत्वपूर्ण बिंदु है । समाज मे ऐसे अभिभावको की बहुत बडी

(शेष पृष्ठ 4 पर)

निदेशक दत्तात्रेय आर्य प्रधान सपादक । रासासिह सपादक वीरेन्द्र कुमार आर्य ☎ कार्या 21010

## सम्पादकीय

# "न खंजर उठेगा, न तलवार इनसे ये बाजू मेरे आजमाये हुए है ।"

आर्यसमाज की शिथिलता को दूर करने, इस महान सगठन को पुन प्रखरता, तेजस्विता तथा क्रान्तिकारिता प्रदान करने के लिये, इसे अपनी शक्ति का साक्षात्कार कराने तथा राष्ट्रीय मूलधारा मे वर्चस्विता प्रदान करने हेतु विगत कुछ समय से निरन्तर प्रयास हो रहे हैं। प्रयास होने भी चाहिये। हम तो परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि "प्रभु ! इन आर्यजनो को पुन प्रबुद्ध करो, उठाओ, जगाओ, आगे बढाओ।"

हमारा राष्ट्र वर्तमान मे जिन परिस्थितियो के दौर से गुजर रहा है ऐसे समय मे राष्ट्र की एकता, अखडता, अस्मिता की रक्षा हेतु, राष्ट्रीय मानको की परिपालना हेतु, साम्प्रदायवाद, भाषावाद, प्रान्तीयतावाद, क्षेत्रीयतावाद, आतकवाद और पृथकतावाद की आधी को रोकने हेतु, प्रत्येक क्षेत्र मे अनुशासन, संस्कार तथा चरित्र के निर्माण हेतु आर्यसमाज का दायित्व अत्यधिक बढ गया है। सब इसकी ओर निहार रहे हैं। सभवत यही एक ऐसा राष्ट्रव्यापी सगठन है जो एक हाथ मे वेद का सदेश एव दूसरे हाथ मे सत्य धर्म की दुहाई लेकर बुद्धि एव श्रद्धा का समन्वय लेकर वैज्ञानिक एव प्रगतिशील दृष्टिकोण लेकर सर्वजन हिताय कुछ करने की सामर्थ्य रखता है। परन्तु जागे हुए को उठाना और कर्तव्य पथ पर अग्रसर करना आसान है परन्तु कुम्भकर्णी निद्रा मे सोये हुए को उठाना और उसे अपनी शक्ति से परिचित कराना अत्यन्त दुष्कर है।

1975 ई मे 'आर्यसमाज स्थापना शताब्दी समारोह' अत्यन्त धूमधाम से सम्पन्न हुआ। सारे देश के समाचार पत्रो मे इस सगठन के इतिहास गौरव, सेवा कार्यो, सगठन, सिद्धान्तो आदि के बारे मे बहुत कुछ छपा। बडे-बडे सम्मेलन आयोजित हुए। करतल ध्वनियो के बीच क्रान्ति का सचार करने वाले बडे-बडे महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित हुए। आर्य जगत् ने सोचा कि अब कुछ जरूर होगा, जरूर बनेगा। पर समारोहो की समाप्ति पर पूर्णाहुति कर शान्ति-शान्ति का पाठ कर सब कुछ शान्त हो गया। स्थिति गई आई हो गई। फिर श्रद्धानन्द शताब्दी समारोह फिर 1983-84 मे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित 'महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह" और भी अधिक हर्षोल्लासमय वातावरण मे धूमधडाके से सम्पन्न हुआ। कही 'आर्य विचार मच' का गठन हुआ तो कही बडे-बडे बुद्धिजीवी सम्मेलन, वेद सम्मेलन, आदि आयोजित हुए। आर्यसमाज म पुन जान फूकन के जोर शोर से प्रयास हुए। पर फिर स्थिति वही 'ढाक के तीन पात' रही। परिवर्तन का नाम जपा गया, काम छोड दिया गया। पिछले दिनों दिल्ली मे विद्वान मनीषी प्रशान्त वेदालकार जी ने पुन नवीन कार्यक्रम का निर्धारण करने के लिए पूरे भारत के 'बुद्धिजीवी आर्यजनो" का का सम्मेलन आहूत किया। 8-9-10 अक्टूबर को श्री गगानगर मे भी ऐसा ही एक आर्य महासम्मेलन आयोजित होने जा रहा है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने भी पिछले दिनो एक त्रिसूत्री कार्यक्रम राष्ट्र की आर्य समाजो के सम्मुख प्रस्तुत किया है जिसके अनुसार 'गौरक्षा, शराबबन्दी तथा अग्रेजी हटाओ" आन्दोलन प्रारभ करने का शखनाद किया यद्यपि ये तीनो कार्यक्रम अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। परन्तु पुराने घिसेपिटे कार्यक्रम है फिर इनको करने के लिये और भी कई सगठन और सस्थाए हैं। यदि थोडी देर के लिये इन्ही त्रिसूत्री कार्यक्रमो को ही हाथ मे ले तो इसके लिए कोरी विज्ञप्तियो, अखबारी वक्तव्यो अथवा केवल दिल्ली मे थोडा बहुत हा-हू करने मात्र से कुछ काम नही चलेगा। पहले कार्यक्रम तय हो, साधन जुटे, आर्यसमाजें सक्रिय हो, जन चेतना पैदा की जाय। समितिया बनें, जन जागरण हो, अन्य संगठनो को जोड़ा जाय और सोच विचार के बाद फिर प्रभावशाली कार्यक्रम प्रारम्भ किया जाय तभी सरकार के कानो पर जू रेंगेगी अन्यथा नक्कार खाने मे तूती की आवाज कौन सुनेगा। पहले हम घर में तो झाक लें ! तथा कथित बडे-बडे आर्य जनो के पुत्र अग्रेजी माध्यम के मिशन स्कूलो मे जाते हैं, आर्यसमाज के ही सैकडो डी ए वी पब्लिक स्कूल्स खुले हुए हैं जहा अग्रेजी का वर्चस्व है, पजाब मे तो कई आर्यसमाजी विचारो के पदाधिकारियो की शराब की ठेके की दुकानें हैं। गौरक्षा, गौसवर्धन, गौशालाओ के निर्माण आदि के लिए हम कितने सचेष्ट हैं? पहले घर की सफाई करो।

हम चाहते हैं कि सम्मेलन हो, चिन्तन हो, मन्थन हो, आन्दोलन भी हो पर लक्ष्यबद्ध, सुव्यवस्थित एव आर्यसमाज के गौरव के अनुरूप ऊर्जस्वित कार्यक्रम हो। दुनिया झुकती है, झुकाने वाला चाहिए। शक्तिशाली को सब नतमस्तक होते हैं, कमजोर का साथी कोई नहीं होता है। "दुनिया मन्दी जोरा नू लख लानत है कमजोरा नू।" हम निराश भी नही हैं। कुछ नही से कुछ होना ज्यादा अच्छा है। पर अब कोरे घिसटने से काम नही चलेगा। कुछ करके दिखाना होगा नही तो हमारा विश्वास उठ जायेगा।

"जिसने मरना सीख लिया है, जीने का अधिकार उसी को।
जो कांटो के पथ पर आया, फूलो का उपहार उसी को॥"

—रासासिंह

## 'श्राद्ध' ने अभी पीछा नहीं छोड़ा

देश इक्कीसवीं सदी की ओर आगे तेजी से बढ रहा है, समस्त विश्व एक परिवार जैसा होने लग गया है, प्रगतिशील एव वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी पनपने लगा है, पुरुषो तथा महिलाओ मे शिक्षा का प्रचार प्रसार भी बढने लगा है, आर्थिक स्तर भी समुन्नत हुआ है, टी वी. सभ्यता का भी तेजी से प्रचार प्रसार हो रहा है परन्तु इन सबके बावजूद सामाजिक कुरीतियो और अन्ध विश्वासो ने हमारा पीछा नही छोडा है। जहा दहेज, पर्दा, मृत्युभोज, वैवाहिक आडम्बर आदि कुप्रथायें सुरसा के मुख की भाति बढती चली जा रही हैं, वही पर श्राद्ध तर्पण, पिण्डदान, आदि अवैदिक क्रियाए भी अन्ध श्रद्धा और परम्पराओ के पालन के नाम पर चलती ही जा रही हैं। रुकने के स्थान पर बढती ही जा रही हैं। कहा तो महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज का यह मन्तव्य तेजी से प्रचारित तथा प्रसारित हुआ था कि "जीवित माता पिता की श्रद्धापूर्वक सेवा करने का नाम श्राद्ध है।" तथा 'सन्तानो द्वारा अपने श्रेष्ठ आचरण, सेवा तथा सुकार्यों से मा बाप को तृप्त करने का नाम ही तर्पण है।" आर्यसमाज के सभा सम्मेलनो, उत्सवो तथा जुलूसो मे आर्य भजनोपदेशक जोर शोर से यह प्रचारित करने मे गौरव अनुभव करते थे कि "जीवित पिता तो लट्ठमलट्ठा अबश दगमदगा—मर जावे तब बहाये गगा"। लोग इन बातो से बहुत प्रभावित होते थे। परन्तु पौराणिकता के मकडजाल से छूटना बहुत कठिन होता है। पुरुष आर्य समाजी विचारो का हो तो भी महिलाए अन्ध श्रद्धा का शिकार हो जाती हैं। देखा देखी, पडौस की नकल होती है। दुनिया दिखावा करती है। लोकाचार के नाम पर सब कुछ निभाना पडता है। इसी आधार पर कई आर्य परिवारों मे भी श्राद्ध पक्ष की तिथियो में ही पुण्य स्मृति के नाम पर यज्ञ-हवन आदि करने करवाने एव साधु सन्तो, ब्राह्मणो को जिमाने की परम्परा भी छद्म वेश मे चलने लग गई है जो 'नमक की खान ही बनने" की उक्ति को चरितार्थ कर रही है।

हम ध्यान रखें कि "श्राद्ध का अर्थ है—श्रद्धापूर्वक अपने पितरों की सेवा करना। तर्पण का अर्थ है—अपने कर्मों से अपने पितर लोगो को तृप्त करना अर्थात् सुख युक्त करना।"

पितर अपने माता-पिता, दादा दादी, नाना-नानी, सास-ससुर आदि कुटुम्बी, विद्वान, देवपुरुष और विद्यादान करने वाले ऋषि तुल्य आचार्य लोग। श्राद्ध और तर्पण केवल एक दिन ही नही होता अपितु सदैव करते रहने के लिये ही पच महायज्ञो मे एक यज्ञ पितृ-यज्ञ रखा गया है। इस प्रकार के श्राद्ध और तर्पण जीवित महानुभावो के प्रति ही हो सकते हैं, मृतकों के नही। मृतको के नाम पर श्राद्ध-तर्पण की परिपाटी सर्वथा निरर्थक है।

—रासासिंह

# मारीशस में आर्य समाज

—डा आनन्द प्रकाश—

इस वर्ष 1। जून से 27 जुलाई तक मारीशम देश मे मे तीसरी बार आकर आर्यसमाज का प्रचार कार्य करने का सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ। मारीशस, हिन्द महासागर स्थित एक टापू है, जिसकी जनसख्या 12 लाख और क्षेत्रफल 4,60,800 एकड है। इसकी अनुपम प्राकृतिक सुन्दरता के कारण ही इसे हिन्दमहासागर का सर्वश्रेष्ठ मोती भी कहा जाता है। भारत और नेपाल के अतिरिक्त तीन देश और हैं, जहा पर हिन्दुमो का बहुमत है। मारीशस, फिजी तथा ब्रिटिश गायना। पर बहुमत रहते हुए भी, फिजी तथा ब्रिटिश गयना मे शासन की बागडोर हिन्दुओ के हाथो से निकल चुकी है। मारीशस की कुल आबादी मे हिन्दुओ का प्रतिशत 52 है। सन् 1971 मे हिन्दुओ की जनसख्या का प्रतिशत 52 53 था और 1911 मे 56 50। आर्यसमाज की स्थापना वहा पर सन् 1910 मे हुई है। पिछले 78 वर्षों के अपने कार्यकाल मे आर्यसमाज ने प्राय। सभी राजनैतिक तथा सुधारवादी आन्दोलनो का नेतृत्व किया और हिन्दुओ के बहुमत तथा आजादी के उपरात हिन्दुओ की सत्ता को बनाये रखने मे प्रमुख भूमिका अदा की। इस छोटे देश में 400 के लगभग आर्यसमाज की इकाईया हैं। इनकी शिरोमणि संस्था, आर्यसमाज सभा का राजधानी, पोर्ट लुइस मे विशाल भवन है। जिस मार्ग पर यह भवन स्थित है, उस मार्ग का का नाम "महर्षि दयानन्द स्ट्रीट" है।

मैंने मारीशम मे यह पाया कि आर्यसमाज के सिद्धात प्रचार और यज्ञ के प्रति, वहा के आर्य बन्धुओ म बहुत लगन है। इस बार का वेद प्रचार का कायक्रम 19 जुलाई से ही प्रारम्भ हो गया जो 23 अगस्त तक चलेगा। अलग-अलग स्थानो पर सप्ताह पर्यन्त चलने वाले कार्यक्रम जिसमे यजुर्वेद पारायण यज्ञ, भजन व वेद-प्रवचन होते हैं, अत्यत उत्साह और समारोह के साथ आयोजित किये जात हैं। 5-6 आर्य पुरोहित सस्वर मन्त्र पाठ करते हैं और सभी यजमान भारतीय परिधान मे ही उपस्थित होते हैं।

मारीशस का रेडियो प्रति रविवार को प्रात काल 6 बजे से 15 मिनट का एक कार्यक्रम "वैदिक वाणी" के नाम से प्रसारित करता है। इस "वैदिक वाणी" कार्यक्रम का आयोजन, आर्य सभा मारीशस की ओर से किया जाता है। इस कार्यक्रम को मारीशस में प्राय सभी आर्य भाई-बहिन सुनते हैं आर्य समाज के बाहर भी इस कार्यक्रम की प्रसिद्धि है। अपने देश मे, रेडियो अथवा टेलीविजन से आर्य समाज के विचारो का प्रचार करने वाला कोई भी कार्यक्रम प्रसारित नही होता। इस "वैदिक वाणी" कार्यक्रम मे चार सप्ताह मेरे प्रवचन हुये।

आर्यसभा के सगठन का ढाचा बहुत ही व्यवस्थित है। मास के चारो सप्ताह के लिये कार्यक्रम प्राय पूर्व निर्धारित रहते हैं। प्रत्येक शनिवार को कोई न कोई बैठक होती है। मास मे एक बार अतरग सभा, उपदेशक मडल, विद्या समिति तथा महिला मडल की बैठक अवश्य होती है। यह कार्य पद्धति, एक जीवन्त और सशक्त सगठन की निशानी है। आर्य सभा का मुख पत्र, आर्योदय-पाक्षिक, हिन्दी का सबसे प्राचीन एव सर्वश्रेष्ठ पत्र है। यह सुन्दर और प्रभावशाली पत्र नियमित रूप से प्रकाशित हो रहा है। "श्रद्धानन्द प्रेस" के नाम से सभा का अपना प्रिंटिंग प्रेस है। आर्य सभा के अन्तर्गत् एक डी ए वी कालेज और तीन अन्य विद्यालयो तथा एक आर्य अनाथालय का सचालन सुचारु रूप से किया जा रहा है।

इस बार के प्रवास मे, आर्यसभा के मुख्य केन्द्र के अतिरिक्त काचे मिलेतेर, माहेबर्ग, त्रिपोले, फ्लाक बेल रोज गा बुआ, वाक्वा, रोज बेल आदि प्रमुख स्थानो पर आर्य समाजो द्वारा आयोजित कार्यक्रमो मे भाषण हुये। अनेक उच्च पदाधिकारियो मत्री परिषद के सदस्यो विधानसभा सदस्यो सामाजिक सस्थाओ के प्रतिनिधिओ से मिलन तथा आर्य समाज के दृष्टिकोण को प्रस्तुत करने का अवसर प्राप्त हुआ।

—काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ प्र)

## क्षितीश वेदालंकार अभिनन्दन समारोह 15 अक्टूबर को

'नया युगपुरुष' के तत्वावधान मे होने वाला सपादक-प्रवर क्षितीश वेदालकार का अभिनन्दन समारोह 15 अक्टूबर को होना निश्चित हुआ है।

समारोह मे सवाद समिति 'भाषा' के सम्पादक डा वेद प्रताप वैदिक, दैनिक हिन्दुस्तान के समाचार सम्पादक डा विश्वमित्र उपाध्याय, बाल-पत्रिका 'नन्दन' के सम्पादक जयप्रकाश भारती, भारत सरकार के प्रकाशन विभाग के निदेशक डा श्याम सिह शशि, वरिष्ठ पत्रकार दत्तात्रेय तिवारी, स्वतन्त्रता सेनानी लेखक विराज विद्यालकार आमन्त्रित वक्ता होगे।

इसी अवसर पर वीरेन्द्र आर्य द्वारा सम्पादित क्षितीश जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर आधारित पुस्तक 'राष्ट्रीय पत्रकारिता के पुरोधा' का भी विमोचन होगा।

अभिनन्दन-समारोह के स्वागताध्यक्ष वरिष्ठ पत्रकार मोहनराज भण्डारी और सयोजक युवा पत्रकार-कवि अनिल लोढा होगे।

4 अक्टूबर को जन्म दिवस पर विशेष

## ऐसे थे प. श्याम जी कृष्ण वर्मा

जिन दिनो श्याम जी आक्सफोर्ड मे पढते थे, तो वहा एक बार इग्लैंड के तत्कालीन प्रधानमन्त्री ग्लेडस्टन का वहा आना हुआ। मि ग्लेडस्टन ने श्याम जी से पूछा कि क्या भारत वसी अग्रेजी शासन से खुश हैं। इसके उत्तर मे श्याम जी ने जो कुछ कहा उसे सुनकर ग्लेडस्टन भौचक्के रह गए। श्याम जी ने मि ग्लेडस्टन का उत्तर दिया कि 'हा, मुसलमानी शासन की तुलना मे तो आपके राज्य में हमे कुछ सुविधाए ही प्राप्त हैं। यदि मुसलमान हमारी पीठ पर लात मारते थे तो अग्रेज हमारे पेट पर प्रहार कर रहे हैं।"

## प्रकाश दत्त भार्गव के निधन पर शोक व्यक्त

आर्यसमाज अजमेर ने दिल्ली की आर एस एस शाखा के प्रान्तीय सचालक एव सुप्रसिद्ध वकील श्री प्रकाशदत्त भार्गव के निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त किया है एव उनकी आत्मा की चिरशान्ति की प्रभु से कामना की है।

उल्लेखनीय है कि स्व श्री भार्गव अजमेर की आर्य शिक्षण सस्थाओ के हितैषियो मे एक थे। — मन्त्री

# कोटा का साम्प्रदायिक दंगा

कोटा शहर पिछले कुछ दिनो से साम्प्रदायिक दगो की आग मे झुलस रहा है। अनेक लोगो की जाने इस दगे के दौरान जा चुकी है और करोडो रुपये की सम्पत्ति स्वाहा हो चुकी है। लेकिन इसके बावजूद अभी तक शहर मे पूरी तरह शाति स्थापित नही हो पाई है।

साम्प्रदायिक दगे होते क्यो हैं, आखिर इनकी मानसिकता क्या है? इसे बहुत आसानी से समझा जा सकता है। सम्प्रदायो की भीड ने जिस कट्टरता को जन्म दिया है, उसी के टकराव का नतीजा ये दगे हैं। सम्प्रदाय से ही तो साम्प्रदायिकता का जन्म हुआ है। धर्म और सम्प्रदाय पर्याप्त नहीं हैं। धर्म तो मानव-मात्र का एक ही है।

साम्प्रदायिक दगो की पीछे काम करती मानसिकता के दो उदाहरण पेश हैं। कोटा के दगे की प्रतिक्रिया में अजमेर के एक कथित हिंदू पक्षधर सगठन द्वारा जुलूस निकला गया। यह जुलूस विश्व प्रसिद्ध दरगाह के पास पहुँचा और वहा इसमे सम्मिलित लोगों द्वारा आपत्तिजनक नारे लगाए गए। दूसरी घटना मे अजमेर मे अन्यत्र एक मुसलमान फकीर द्वारा एक स्कूली छात्रा का गला घोटने की कोशिश की गई। इन घटनाओ का अर्थ क्या निकलता है?

देश के कथित धार्मिक सगठनो व राजनीतिक दलो की भूमिका तो इन दगो मे सदर्भ मे सबसे घटिया रहती है। बिना दगो का कारण जाने ये सगठन और राजनीतिक दल अपने विरोधियो को दोषी ठहराना शुरू कर देते हैं। आखिर इन्हे तो अपनी राजनीति चलाने से ही मतलब जो है।

ऐसे मे प्रगतिशील और शाति के उपासको का दायित्व कही अधिक बढ जाता है।

—वीरेन्द्र आर्य

# अगर विश्व में समा सको!

दीप झिलमिला उठें,
फूल खिलखिला उठे,
हृदय से अगर कभी हृदय तुम मिला सको।
साज झनझना उठें,
गीत गुनगुना उठे,
बोल प्यार के मधुर, दो अगर सुना सको।
रोम सुगबुगा उठें,
प्राण जगमगा उठे,
देह से अगर सही नेह तुम लगा सको।
[illegible]महा उठें,
विहग चहचहा उठें,
जिंदगी सुकर्म से अगर [illegible] सको।
चाद चमचमा उठे,
सूर्य दमदमा उठे,
ज्ञान-ज्योति बन अगर विश्व मे समा सको।

—बाल कृष्ण गर्ग (आहटे नई सदी)

# आवश्यक सूचना

'आर्य पुनर्गठन' के पाठको से निवेदन है कि जिन सदस्यो ने वार्षिक वार्षिक शुल्क अभी तक कार्यालय मे नही भिजवाया है वह कृपया शीघ्र वार्षिक शुल्क भेजकर सहयोग प्रदान करे। मनी आर्डर भेजते समय अपना पूरा पता लिखने का कष्ट करे। वार्षिक शुल्क 25) रुपय है।

बार-2 वार्षिक शुल्क भेजने की परेशानी से बचने का सरल उपाय, एक बार 150) रुपए भेजकर 'आर्य पुनर्गठन' के आजीवन सदस्य बन सकते हैं।

—व्यवस्थापक

# दहेज कुछ ...

(शेष पृष्ठ 1 का)

सकता है जिनकी दो या तीन लड़कियाँ ही है और जो प्रत्येक के विवाह पर न्यूनतम 40-50 हजार या इससे अधिक रुपया खर्च करने के इच्छुक हैं। बल्कि इतनी राशि तो वे बारात की खातिर, प्रीतिभोज, बाजे-गाजे तथा पडाल की सज्जा मे ही लगा देते हैं, उनके लिए कानूनन दहेज को प्रतिबधित करना कहा तक उचित, न्यायसगत, अथवा प्रभावपूर्ण ही होगा? क्या उनके लिए यह सभव है कि वे अपनी बचत अथवा सपत्ति में से बेटियों को पूरी तरह बेदखल कर दें और सब कुछ बेटो को ही दें? बेटिया खाली हाथ घर से निकाल दी जाए और बेटे सपत्ति का एकछत्र सुख भोगें? ऐसी स्थिति मा-बाप, बेटी, बेटा—किसे सुखी करेगी?

और यदि सब सतानें बेटिया ही हो तो? तो भी माता-पिता की मत्यु तक उनका धन बेटियो के लिए निरुपयोगी बना रहे? यह भी सभव है कि बेटा (या बेटे) जुए बाज या आवारा व निकम्मे हो तो बेटा भले बाप की होली जलाता रहे, लेकिन कन्या को दहेज देने पर बाप को मुजरिम बना दिया जाए?

बेटी तो कपडे जेवर तथा दूसरे घरेलू सामान को तरसती रहे, लेकिन डिस्को, कव्वाली, आरकेस्ट्रा, जगराता आदि पर 5-10 हजार रु फूक दिया जाए, मडप की सज्जा, बैंड-बाजे और दावत मे 20-40 हजार खर्च हो . यह स्थिति क्या बहुत शोभनीय है? इस प्रदर्शन और अपव्यय के विरुद्ध कानून बनाने की माग हमारे दहेज विरोधी वीर कम ही करते है।

हमारा अभिप्राय दहेज या किसी भी बुराई का समर्थन करना नहीं है। निवेदन केवल इतना हैं कि कहानी लघु कथा या निबधो मे जब तक हमारी दृष्टि उथली रहेगी तब वह लेखन बेकार हैं, जैसा कि वह सिद्ध होता रहा हैं। ये रहे मागने वाले वे रहे देने वाले, यह इधर दड सहिता है। और उधर हथकडी खनखनाता सिपाही ऐसी सोच हमे कहीं नही ले जाएगी।

(शुभतारिका से)

—आर्योपप्रतिनिधि सभा वाराणसी के साधारण सभा की बैठक दि 23 7 89 को आर्यसमाज आनन्द बाग, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी मे सपन्न हुई जिसमे वर्ष 89-90 के लिये निम्नलिखित पदाधिकारीगण चुने गये। मत्री

## पत्र और विचार

# राष्ट्रभाषा के हत्यारे!

जिस समय भारत के सविधान का निर्माण हुआ था उस समय सविधान मे सर्वसम्मति से मातृ भाषा हिंदी को राष्ट्रभाषा घोषित किया गया था।

किन्तु आज 40 वर्षो के बाद भी राष्ट्रभाषा की ऐसी स्थिति? दिल्ली जैसे महानगरो मे कुछ समय पूर्व शासन द्वारा चयन किए हुए राज्यपाल द्वारा हिंदी के नाम-प्लेटों एव वाहनो के नम्बरों पर भी आपत्तिजनक कार्यवाही की गई थी। यह तो सर्वविदित है ही। मैं पूछना चाहता हू कि अग्रेजी में कौन सी अच्छाई है, जो इस प्रकार राष्ट्रभाषा हिंदी का महान अपमान किया जा रहा है। अग्रेजी भाषा का न कोई व्याकरण न कोई नियम। कुछ लिखा जाता है तो कुछ पढा जाता है। कही 'से' "क" निकलता तो कही "स्" की ध्वनि। ऐसी मुर्दा भाषा को मान्यता देकर अपनी परम पवित्र शुद्ध भाषा का अपमान करना क्या देशद्रोह नही है?

वर्तमान भारत के प्रधानमन्त्री से से जब कभी विदेशी देशो के शासनाध्यक्ष मिलने आते हैं तब विदेशी शासनाध्यक्ष तो अपने देशो की राष्ट्र भाषा का प्रयोग करते है किंतु हमारे देश को 21 वी सदी म मुखामी की ओर ले जाने वाले युवा प्रधानमत्री अग्रेजी मे टर्राते हैं। क्या यह प्रधानमत्री का देशद्रोह नही है? क्या यह भारतमाता का अपमान नही है?

आर्यो! यदि राष्ट्र को बचाना चाहते हो, यदि दयानन्द के सपनो को साकार करना चाहते हो तो हिन्दी रक्षा के लिए प्राणप्रण से जुट जाओ तभी हिन्दी भाषा का उद्धार होगा। तभी भारत की एकता अखण्डता स्थिर रह सकेगी।

—आचार्य राजदेव शर्मा,
प्राचार्य, आर्य गुरुकुल ऐरवा कटरा,
इटावा (उ प्र)

स्वत्वाधिकारी आर्यसमाज अजमेर के लिए प्रकाशक एव सपादक रासासिंह हेतु रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्य प्रिन्टर्स बाबू मोहल्ला केसरगज, अजमेर मे मुद्रित एव आर्य समाज भवन, अजमेर से प्रकाशित।

वेदोऽखिलोधर्ममूलम् ।
वेद ही समस्त धर्म का मूल है ।

ओ३म्

# आर्य पुनर्गठन

आर्य समाज, अजमेर का हिन्दी पाक्षिक पत्र

'आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म ।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म ।।'

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सकल जगत को आर्य बनाए ।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सदा उद्यत रहना चाहिए ।

—महर्षि दयानन्द

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एवं भविष्य मे पैदा होने वाली समस्याओ को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है ।

वर्ष 6 रविवार, 15 अक्टूबर, 1989
अक 19 प स -43383/84

अभय मित्रादभयम अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात ।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ।।

आश्विन सु 1 सवत 2046
वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60

आचार्य दत्तात्रेय आर्य के बारे मे अमेरिकी अखबार ने लिखा

## 81 वर्ष की आयु प्राप्त करने के बाद भी सक्रिय

**—जैक बैली—**

अधिकतर लोग सेवा निवृत्त होते के बाद, 65 की आयु प्राप्त करने तक ही वे सब तरफ से अपने आपको थका हारा सा अनुभव करते हैं एव सब कर्मों से विमुख हो जाते हैं लेकिन 81 वष की आयु प्राप्त करने के बाद भी प्रो बाल्ले ने हमारे विश्वविद्यालय के कैम्पस मे अपने उदगार व्यक्त करते हुए कहाकि बिना काय एव परिश्रम किये मनुष्य का जीवन बेकार है जबकि मैं अपने जीवन मे कभी भी बिना सक्रियता के काय किय नहीं रहा हूँ ।

बाल्ले जी राजनीति एव इतिहास शास्त्र के प्रख्यात प्राफसर हैं जो आजकल हमारे विश्वविद्यालय के इतिहास एव राजनीति शास्त्र की कक्षा के छात्रों को आमन्त्रित विद्वान् प्रवक्ता के रूप मे तत्सबधी विषय पर विशेष व्याख्यान एव विचार व्यक्त कर रहे हैं ।

श्री बाल्ले ने कहा कि उन्होन भारत म ही कई वर्षो तक शिक्षा प्राप्त की है तथा वर्तमान मे अजमेर मे कालेज के प्रधान पद पर कायरत



हैं । साथ ही वे भारत के प्रतिष्ठित पदो पर निर्वाचित हुए है जिसमे नगर परिषद के अध्यक्ष जो कि एक पार्षद के समान पद है । श्री बाल्ले जी की सयुक्त राज्य अमेरिका की यह तृतीय यात्रा है और पिछली दो यात्राओं में उन्होंने भारत के इति- एव धम हिन्दू धम क बारे मे अनेक सारगर्भित व्याख्यान दिये हैं । साथ ही उन्होने अपनी इस यात्रा से सम्बधित तीन पुस्तकें लिखी हैं । मैंने जब श्री बाल्ले जी से अमरिका के समाज एव समुदाय के बारे मे पूछा तो उन्होने कहाकि अमेरिका के लोग काफी खुले हुए है और स्वतन्त्र विचारो के व्यक्ति हैं । यद्यपि बाल्ले जी ने 81 वष की आयु पूरी कर ली है फिर भी वे बहुत सक्रिय जीवन व्यतीत कर रहे हैं । जैसा कि आज भी वे कालज प्रधान पद का कार्य कर रहे हैं तथा विद्यालयो पर भी पूरा नियत्रण है एव सुराक्षात्मक काय करते है ।

य विचार मार्शल विश्वविद्यालय मे 2000 छात्रो के मध्य उन्होने विचार व्यक्त किय । श्री बाल्ले जी के कालेज के प्रधान होने के साथ हिन्दू धर्म के एक प्रमुख नेता हैं । उन्होंने ~~कहा कि अधिकतर~~ लोग यह नही समझते कि हिन्दू भ भी क्रिश्चियन धम की तरह एक अल्प सख्यक समुदाय के लाग हैं । इसका मै हिन्दुओ के समर्थक क रूप म पूरा विरोध करता हूँ ।

उन्हान कहा कि अमेरिका के मार्शल विश्व विद्यालय से आने के बाद वे भारतीय दूरदशन पर प्रसारण का कार्य करगे । तथा अपनी इस पूरी यात्रा स सम्बधित एक पुस्तक और भी लिखग ।

क्षितीश वेदालकार का अभिनन्दन

## पीड़ित मानवता को जुबान देना ही पत्रकारिता

अजमेर । विख्यात पत्रकार और स्वतन्त्रता सेनानी क्षितीश वेदालकार का मानना है कि पीड़ित मानवता की जुबान देकर ही पत्रकारिता को सार्थक बनाया जा सकता है ।

आज यहा सूचना केन्द्र मे शहर के प्रमुख अखबार नया युगपुरुष' की ओर से आयोजित अपन अभिनन्दन समारोह मे बोलत हुए श्री वेदालकार न कहा कि पत्रकार की कलम से उसके पाठक का मनोबल बढना चाहिए यही पत्रकार की पूजी हाती है । उन्होने कहा-पत्रकार या साहित्यकार अपनी कृति के जरिए ही अमर बनता है और शब्द को अनन्त बनाने की शक्ति कृतिकार मे ही होती है ।



डा.स ओंढाकर क्षितीश वेदाल कार का सम्मान करते हुए डॉ क्षमि । पास ही बैठे है डा उपाध्याय ।

समारोह की अध्यक्षता भारत सरकार क प्रकाशन विभाग के प्रमुख डा श्यामसिंह 'शशि' ने की । उन्होने बदलते परिप्रक्ष्य मे सार्थक पत्रकारिता की जरूरत प्रतिपादित की ।

हिन्दी हिन्दुस्तान' के वरिष्ठ समाचार सम्पादक विश्वमित्र उपाध्याय ने मौजूदा समय मे पत्रकारो मे समर्पण-भावना की कमी पर क्षोभ जताते हुए कहा कि पत्रकारिता मे आज काफी ऐसा घट रहा है जिस पर शर्म आती है । स्वतन्त्र होते हुए पत्रकारिता पर बधन और बडिया कसती हैं । उन्होने पत्रकारिता को जनता जनादन की पत्रकारिता बनाने

(शेष पृष्ठ 4 पर)

निदेशक । दत्तात्रेय आर्य प्रधान सपादक । रासासिंह सपादक वीरेन्द्र कुमार आर्य ☎ कार्या 21010

# कल्प-पुरुष महर्षि दयानन्द

— डॉ. आनन्द प्रकाश —
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005

महर्षि दयानन्द का जीवन इतना महान था कि कोई भी विशेषण उनके व्यक्तित्व और कृतित्व की महानता को पूरी तरह व्यक्त नही कर सकता। साथ ही, उनके कार्यों की तुलना किसी भी अन्य महापुरुष से करना उचित नही लगता क्योंकि पिछले पाच हजार वर्षों मे अन्य किसी ने भी पूर्ण जीवन दर्शन का सन्देश नही दिया। उन्होने वेद प्रतिपादित मानव धर्म, मानवतावादी सस्कृति और वैज्ञानिक चिन्तन को सम्पूर्ण विश्व के कल्याण के नीचे पुन. स्थापित किया। देव दयानन्द की शिक्षाओ एव सर्वहितकारी कार्यों का सूचीबद्ध विवरण बनाकर उनसे लाभ ग्रहण किया जा सकता है, उनकी राजधर्म की परिकल्पनाओ को अगीकार कर समस्त भूमण्डल के राष्ट्र अपना कल्याण कर सकते है और उनके सम्बन्ध मे उच्च कोटि की पुस्तके लिखकर इतिहास की धरोहर मे अभिवृद्धि की जा सकती है, परन्तु यह सब मिलकर भी दयानन्द का पूर्ण मूल्याकन करने मे समर्थ नही है। उस महामानव को तो युगपुरुष या कल्प—पुरुष ही कहना होगा जिसने इस युग की समस्त चिन्तन धारा को नई दिशा प्रदान की और कल्प-सृष्टि के समान वेद ज्ञान की पुन: स्थापना की।

वैसे तो महर्षि दयानन्द के बहु-आयामी व्यक्तित्व पर सदियो तक यथावत प्रकाश डाला जाता रहेगा, परन्तु उनके सार्वजनीन सन्देश को भूमण्डल मे प्रसारित करने की दृष्टि से 'चक्रवर्ती आर्य साम्राज्य" की कल्पना पर विचार करते रहना आवश्यक है। आर्याभिविनय" मे महर्षि दयानन्द ने स्थान-स्थान पर "आर्यो का समस्त भूमण्डल पर अखण्ड पर सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य" स्थापित होने की कामना की है। इस प्रकार की प्रार्थना मे कोई साम्राज्यवादी विचार निहित नही है अपितु धर्म, नैतिक मूल्यो तथा मानव गरिमा पर आधारित व्यवस्था द्वारा श्रेष्ठ पुरुषो का शासन, पूरे विश्व मे स्थापित हो सके, यह कामना की गयी है। आज के सन्दर्भ मे, विश्व शाति और मानव एकता के लिये इस प्रकार का नैतिक अनुशासन अनिवार्य है और कुछ सीमा तक सयुक्त राष्ट्र सघ तथा अन्य अन्तर्राष्ट्रीय मच इसकी पूर्ति कर रहे हैं। महर्षि दयानन्द के कार्यक्रम का लघु भाग भी यदि विश्व मे लागू हो जावे तो मानवता की रक्षा की जा सकती है।

मानवीय गुणो यथा धैर्य, क्षमा, सहनशीलता आदि का धारण, मनसा-वाचा कर्मणा सत्य का व्यवहार, शारीरिक-मानसिक-आत्मिक शक्तियो का विस्तार, ज्ञान की उपासना तथा प्रकाश—मार्ग की रक्षा-धर्म का यही स्वरूप भविष्य का मानव धर्म बनेगा। महर्षि दयानन्द ने मानव मात्र के हित के लिये इसी मानव धर्म की ओर पुन प्रेरित किया है। आइये, महर्षि दयानन्द के निर्वाण पर्व पर, समस्त ससार से अधकार को दूर भगाने का सकल्प दुहरावे तथा आत्म चिन्तन और आत्म निरीक्षण करते हुये, महर्षि दयानन्द के सत्धर्म के प्रचार के लिये दिये गये महान बलिदान का स्मरण करे।

# दिव्यतम संस्कृति तुम्हारी

--राधेश्याम आर्य--

बन रहा इतिहास नूतन
सो रहे हैं हम सभी, पर।
सामने है या खडा-
असुर दल मुख खोलकर
घूमते है अब चतुर्दिक,
राक्षसी प्रवृति चर।

पख फैलाकर कटुकमय-
मनुजता उपहास का स्वर
दनुजता अब आ रही है।
दिव्यतम सस्कृति तुम्हारी ! लुप्त होती जा रही है।

दम्भ-मिथ्या--द्वेष से हैं-
भूमि मण्डल का पता।
धर्म की महती पराजय-
से मगन है हाफता।
नित्य प्रति झूठी विजय को-
असुर दल है मापता।

मनुजता निजसत्व को-
करके कही पर लापता-
आर्त अश्रु बहा रही है।
दिव्यतम सस्कृति तुम्हारी ! लुप्त होती जा रही है।

दयानन्द के वीर सैनिक।
कमर कस रणक्षेत्र आओ!
जागरण का शख वीरो!
आज निर्भय हो बजाओ!
धरणि पर मत-वाद फैला,
तुम इसे बढ कर हटाओ।

पाप की आधी बुझा कर-
वेद का ध्वज लहलहाओ।
कटु चुनौती आ रही है।
दिव्यतम सस्कृति तुम्हारी ! लुप्त होती जा रही है।

# अजमेर में भव्य ऋषिमेला

4, 5, व 6 नवम्बर 1989 को प्रतिवर्ष की भाति महर्षि दयानन्द सरस्वती के 106 वें निर्वाण दिवस के अवसर पर अजमेर मे विशाल समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर स्वामी सत्यप्रकाशजी सरस्वती, महात्मा आर्य भिक्षु जी महाराज ज्वालापुर, धर्माचार्य प उदयवीरजी शास्त्री प्रो शेरसिंहजी पूर्व राज्य मन्त्री भारत सरकार एव प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, डा. भवानीलाल भारतीय चण्डीगढ, श्री सत्यपाल सरल आदि विद्वान, महात्मा, आर्यनेता पधार रहे हैं। डा शिवपूजनसिह कुशवाहा का अभिनन्दन समारोह भी सम्पन्न होगा।

वेदगोष्ठी—'वेद और कर्म काण्डीय विनियोग' नामक विषय अन्तर्राष्ट्रीय वेदपीठ द्वारा एक वेदगोष्ठी का आयोजन भी ऋषि मेले के अवसर पर होगा।

—मन्त्री

# हैदराबाद आर्य सत्याग्रह अर्ध शताब्दी

शोलापुर मे हैदराबाद आर्य सत्याग्रह अर्धशताब्दी समारोह का कार्यक्रम बहुत तेजी चल रहा है। यह शताब्दी समारोह 4 5, 6 नवबर 1989 को मनाया जायेगा। इस समारोह के सरक्षक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एव डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के प्रधान प्रो वेद व्यास जी होगे और इसकी अध्यक्षता स्वामी सर्वानन्दजी महाराज दयानन्द मठ, दीनानगर, पजाब करेगे। इस समारोह मे राष्ट्रीय युवा सम्मेलन शिक्षा सम्मेलन, तथा हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियो का अभिनन्दन समारोह आदि कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे है।

—रामनाथ सहगल

इस समारोह मे आध्रप्रदेश के राज्यपाल श्रीमती कुमुदबेन जोशी, महाराष्ट्र के वित्तमन्त्री श्री सुशील कुमार शिन्दे तथा अन्य सन्यासियो एव विद्वानो को आमन्त्रित किया गया है।

# उत्सव

आर्यसमाज, नागौरी गेट, हिसार का वार्षिक उत्सव 3, 4 व 5 नव को मनाया जावेगा। डा भवानी लाल भारतीय, आचार्य प्रेम भिक्षु, रामनिवास भजनोपदेशक आदि विद्वानों के प्रवचन-भजन होगे। इसी अवसर एक स्मारिका का विमोचन भी होगा।

—मन्त्री

—आर्यसमाज, ब्यावर उत्सव 8, 9, 10, 11 अक्टूबर, 1989 को समारोह पूर्वक सम्पन्न। प युधिष्ठर मीमासक का इस अवसर पर सम्मान किया गया।

सत्यप्रकाश भ वर
(मन्त्री)

—आर्यसमाज राजगढ (अजमेर का उत्सव 13, 14, 15 अक्टूबर को मनाया गया। विभिन्न विद्वानो के प्रवचन हुए।

—मन्त्री

एक विचारणीय लेख

# आर्यसमाज का ढहता संगठनात्मक ढांचा

—प्रतापसिंह शास्त्री, पत्रकार—

आर्य समाज एक आन्दोलन है, वैदिक सिद्धातो एव मान्यताओ पर अडिग रहने वाला, ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित दस नियमो को मानने वाला श्रेष्ठ पुरुषो का एक अनुशासित सगठन है । भले पुरुषो की एक पचायत है । वेद के आधार पर चलने चलाने की प्रेरणा देने वाला वेद का प्रचारक 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का नारा लगाने वाला यही एक मात्र सार्वभौम सगठन है जिसका ध्वज भी "ओ३म्" है ।

भारत वर्ष के लगभग सभी प्रान्तो मे आर्यसमाज की आर्य प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाए है । भारत वर्ष के कोने-कोने मे शिक्षण सस्थाए, आर्यसमाज मन्दिर, विश्व विद्यालय मेडिकल कालेज, आर्य पब्लिक स्कूल, डी ए वी पब्लिक स्कूल व कालेज तथा गुरुकुलो, कन्या पाठशालाओ आदि सस्थाओ के कारण आर्यसमाज आज एक शक्ति के रूप मे दिखाई देता है । अरबो रुपयो की आर्य समाज की सम्पत्ति है । करोडो रुपयो का आर्यसमाज की उक्त सकेत की गई सस्थाओ का वार्षिक बजट है । लाखो परिवार को आर्यसमाज ने रोजगार दिया है । इस सक्षिप्त परिचय के बाद विचारणीय प्रश्न केवल यह है कि सगठन की दृष्टि से लगभग सभी प्रान्तो मे सभी जगह आर्यसमाजो मे बडे झगडे है, मतभेद है । इनका एक मात्र कारण है मजबूत सगठन का अभाव । आर्यसमाजो मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा समय-समय पर सशोधित सविधान, नियमावली को लागू न कर पाना भी मतभेदो का एक कारण है । आर्यसमाज का सही निर्माण एक प्रकार से आन्दोलनो से हुआ, वैचारिक क्रांति से हुआ । आज आर्यसमाज 20-25 वर्ष से कोई राष्ट्रव्यापी, प्रान्तीय स्तर का कोई आन्दोलन नही कर सका । वैचारिक क्राति भजनोपदेशक, प्रचारक, व सस्ते या निःशुल्क साहित्य के माध्यम से होती है । आर्यसमाज के पास आज यह माध्यम सशक्त रूप मे नही है । जिला स्तर तक नगरो मे आर्यसमाजें हैं किन्तु गावो मे आर्यसमाज की इकाई न के बराबर हैं । स्थानीय आर्य समाजो की सख्या कम है । इन स्थानीय आर्य समाजो मे सदस्य सख्या भी बहुत कम है कहीं-कही तो आर्यसमाज के सविधान के नियम उपनियमो को लागू ही नही किया जा रहा । कोई पूछने वाला नहीं । एक ही पूजीपति, सेठ, साहूकार, एक ही राजनैतिक नेता निजी स्वार्थ हेतु 15 या 20 रुपये की राशि सदस्यता शुल्क कहकर 100 व्यक्तियो, 50 व्यक्तियो के नाम से भर कर उन नामो का रोजगार कार्यालय की भांति हर वर्ष चुनाव से पूर्व नवीकरण करवा लेते हैं ताकि उनका अपना ही आर्यसमाजो पर कब्जा बरकरार रहे । सगठन कैसे होता है, सगठन कितना आवश्यक है, सगठन क्या है, इस विषय मे मुझे कुछ कहना है ? गीता मे एक श्लोक आता है—

अधिष्ठान तथा कर्ता,<br>
करण च पृथग्विधम् ।<br>
विविधाश्च पृथक चेष्टा:<br>
दैव चैवात्र पचमम् ॥

अधिष्ठान का अर्थ है हमारा ध्येय । हम क्या सिद्धि चाहते हैं ? कार्य सिद्धि के लिए स्वामीजी इन पांच कारणो को प्रमुख मानते हैं । जो मनुष्य का, सगठन का, कार्य का ध्येय है उसका पहला कारण स्थानीय परिस्थितियां ही हैं ।

(1) हमारा गन्तव्य क्या है (2) कर्ता अर्थात् कार्यकर्ता (3) पृथक-पृथक प्रकार के साधन (4) नाना प्रकार की अलग-अलग चेष्टा (5) देव या प्रयत्न । अधिष्ठान (कृण्वन्तो विश्वम आर्यम्) हम आर्यों का ध्येय भी है आधार भी है । कार्य मे ओत-प्रोत अधिष्ठान कार्य करने की प्रेरणा देना है । जिन आर्य समाजो मे झगडे हैं उनका अधिष्ठान क्या है वे स्वय सोचे ? शायद उनका अधिष्ठान है पद प्राप्ति, नेतागिरी, या आर्यसमाज से निजी स्वार्थ की पूर्ति करना । अधिष्ठान अच्छा चाहिए, कर्ता और उपकरण अच्छे चाहिए । ऐसा श्री कृष्ण जी ने गीता मे कहा है । जो आर्यसमाज का कार्यकर्ता, सदस्य, अपने दोष नही पहचानता वह अच्छा कार्यकर्ता, अच्छा आर्यसमाज सदस्य नही हो सकता । जो दूसरो के ही दोष देखता रहता है वह भी चार लोगो को साथ लेकर नही चल सकता । दूसरो के दोष देखना सरल होता है किन्तु अपने दोषो की ओर देखना कठिन । इसलिए कार्यकर्ता को आत्म चिन्तन करते रहना चाहिए ।

इस तरह सगठन का कार्य तभी हो सकता है जब आर्यसमाज के कार्यकर्ता पहले अपने दोष देखने की आदत डालें और दूसरो के दोषो के प्रति उदार दृष्टिकोण अपनाए । जिस कार्यकर्ता से कोई ऊबता नही और जो स्वय दूसरो के साथ काम करने से ऊबता नही, वही पुरुष आदर्श आर्य हो सकता है । ऐसी ही योग्यता आर्यसमाज के कार्यकर्ता मे होनी चाहिए । कुछ लोग ऐसे होते हैं जो अकेले मे रहना अच्छा समझते हैं अगर उनके पास कोई आता है तो समझते हैं कि कोई बला आ गई । ऐसे व्यक्ति आर्यसमाज का सगठन नही कर सकते । सगठन कर्ता तो ऐसा होना चाहिए कि उससे जो भी मिलने आये वह आत्मीयता पूर्ण व्यवहार पाये ।

अनुशासन सगठन के लिए आवश्यक है । (यत्न और नियन्त्रण) यह हो सकता है ।

भारत देश के अनुशासन का आदर्श है शिष्य की समझदारी का स्तर ऊपर उठाना कि जिससे शिष्य सही मार्ग पर चल सके । लेकिन न आज कोई कृष्ण है न अर्जुन । फिर भी हमे ऋषि दयानन्द के आदेश को गुरु का आदेश समझते हुए और स्वय को ऋषि शिष्य मानते हुए अपना स्तर ऊपर उठाकर आर्यसमाज मे अनुशासन कायम रखना चाहिए । याद रखो ऋषि ने मेरठ से राजस्थान प्रस्थान करने से पूर्व कहा था—"मै सन 1885 नही देख सकूंगा क्योकि यह शरीर कार्य करने योग्य नही रहेगा । आर्य बन्धुओ ! आज तुम्हारी अवस्था बडी शोचनीय है । तुम छोटी-छोटी बात पर भी मुझ पर निर्भर रहते हो, तुम्हे कोई शास्त्रार्थ के लिए ललकारता है तो तुम मुझे तार पर तार देते हो । तुम मे आपस मे मतभेद होता है तो मुझे आकर तुम्हे समझाना पडता है । प्रिय बन्धुओ ! मैं सदा नही रहूंगा, मेरा यह शरीर न जाने कब नष्ट हो जाये अब तुम स्वय स्वाध्याय करके इस योग्य बनो कि स्वय शास्त्रार्थ कर सको, स्वय अपनी समस्याओ को सुलझा सको, स्वय आत्मनिर्भर बनकर वेद का प्रचार कर सको, वैदिक मान्यताओ को घर-घर पहुंचा सको ।"

अफसोस ! आज उस प्यारे ऋषि की आर्यसमाजें सगठन की दृष्टि से गैर आर्य समाजियो के चुगल में फसती जा रही हैं । आर्यसमाजो मे व व्यक्ति बहुमत मे हैं जिन्हे सध्या, आर्यसमाज के 10 नियम और ऋषि की जीवनी भी याद नही । सगठन के निर्माण मे सच्चे आर्यों की दिलचस्पी व सख्या नगण्य होती जा रही है । दिशा निर्देश करने वाला आर्यसमाज कही स्वय भटका है । दूसरे भटक न जाए, यह खतरा बढता जा रहा है ।

# वैदिक परिवार साधना शिविर पुष्कर

शिविरार्थियों को योग साधना सिखाने के साथ-साथ नियम, आसन, प्राणायाम प्रत्याहार, धारणा ध्यान समाधि विवेक वैराग्य का अभ्यास, जपविधि ईश्वर समर्पण जैसे अनेक सूक्ष्म आध्यात्मिक विषयो पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला जायेगा ।

शिविर एव गायत्री महायज्ञ की समुचित व्यवस्था प्रबन्ध तथा भोजन व जलपान शुद्धता का ही होगा । आवासीय सुव्यवस्था वैदिक सत्सग आश्रम पुष्कर की ओर से होगी । शिविर शुल्क प्रति व्यक्ति 60 रुपया होगा । शिविर मे भाग लेने वाले सज्जनो से विनम्र निवेदन है कि अपनी योग्यता तथा व्यवसाय सहित आवेदन-पत्र प्रबन्धक वैदिक सत्सग आश्रम पुष्कर के पते पर दि 25 अक्टूबर, 89 तक जमा कराना आवश्यक है । —मन्त्री

रजिस्ट्रार महोदय,
गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय हरिद्वार



पत्र और विचार

# आगामी चुनाव और आर्यसमाज

— बाबूलाल आर्य —

आपने अपने प्रतिष्ठित पत्र के अक 18 दिनांक 31-9-89 के माध्यम से आर्य जनो का ध्यान इस महत्वपूर्ण प्रश्न की ओर खींचा है कि आगामी लोक सभा एव विधान सभाओ के निर्वाचनो मे वे किस राजनीतिक दल का समर्थन करें। उत्तर स्पष्ट है। जब से हमारा देश स्वतन्त्र हुआ है हमारे देशवासियो का चारित्रिक ह्रास दिन प्रतिदिन बड़ी तीव्र गति से होता आया है। यदा-कदा किसी महानुभाव ने इसकी ओर सकेत तो किया है परन्तु एक भी राजनीतिक दल ने इस महारोग को मिटाने अथवा कम करने हेतु प्रयत्न करना तो दूर रहा इसकी हानिकारिता भी अनुभव की हो ऐसा प्रतीत नहीं होता। राजनीतिक दगलो के अखाड़े बाजों ने वातावरण इतना दूषित बना दिया है कि किसी भी सच्चरित्र देश हितैषी को सासद, विधायक, जनपद अथवा नगर निगम के निर्वाचित सदस्य के रूप मे देश सेवा करना प्राय. असम्भव हो गया है। ऐसी स्थिति में निष्ठावान आर्यजनो का केवल एक ही कर्तव्य है कि वे मतादाताओ एव प्रत्याशियों को उनके कर्तव्य का बोध कराए।

प्रत्येक मतदाता को प्रेरित किया जावे कि वह—

(1) सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने हेतु सदैव तत्पर रहेगा।

(2) अपना समस्त कार्य धर्मानुसार अर्थात सत्य पर आधारित ही करेगा।

(3) सब से प्रीति पूर्वक, यथायोग्य और पक्षपात रहित होकर व्यवहार करेगा।

(4) स्वार्थान्ध न होकर इस प्रकार अपना हितसाधन करेगा जिस से अन्य किसी सज्जन का अहित न हो सके।

लोक सभा, विधान सभा, नगर निगम अथवा नगर पालिका समिति आदि की सदस्यता का अभिलाषी जब किसी आर्य समाजी मतदाता से अपने समर्थन हेतु याचना करे तब उससे पूछा जावे कि अभिलषित स्थान हेतु निर्वाचित हो जाने पर क्या वह उक्त सदन की कार्यवाही मे पूर्ण मनोयोग एव नि:स्वार्थ भाव से भाग लेगा?

(2) सार्वजनिक व्यय पर अभिलषित स्थान पर कार्य सम्पादन हेतु जो साधन एव सुविधाए उसको उपलब्ध होगे उनका उपयोग वह उपर्युक्त कार्य सम्पादन करते समय ही करेगा और ऐसे समस्त उपयोगों का विवरण वह सदैव अपने पास रखेगा?

(3) अभिलषित सदन के समक्ष जब-जब कोई विशेष महत्व का प्रकरण विचारार्थ अथवा निर्णयार्थ उपस्थित होगा तब-तब वह पूर्व से ही अपने निर्वाचको का स्पष्ट मत जानने का यत्न करेगा और उचित अवसर पर उपर्युक्त मत को असदिग्ध रूप से प्रकट करेगा?

(4) उसके निर्वाचको का दो तिहाई भाग जब सार्वजनिक रूप से घोषणा कर देगा कि उसको अभिलषित सदन की सदस्यता त्याग देनी चाहिये तब वह पन्द्रह दिवस के भीतर उपयुक्त सदन की सदस्यता त्याग देगा?

(5) मतदाता के रूप में जो प्रतिज्ञाए वह पूर्व ही कर चुका है उन का पालन वह अभिलषित सदन का सदस्य रहते हुए असदिग्ध रूप से करता रहेगा?

(6) दूध देने वाले तथा कृषि कार्य हेतु उपयोगी पशुओ के सरक्षण एव सुधार हेतु वह सदैव प्रयत्नशील रहेगा?

बहुत्तर, ग्वालियर की प्राचीनतम आर्य समाज लश्कर ने मतदाताओ एव प्रत्याशियो को प्रेरित करने का अभियान पूर्व से ही आरम्भ कर दिया है। मतदाताओ तथा प्रत्याशियो से इसी आशय के प्रतिज्ञा-पत्र भरवाए जा रहे हैं।

किसी भी प्रत्याशी के प्रतिज्ञाबद्ध न होने की स्थिति मे भी यदि आर्यजन अपने मत का प्रयोग करना ही चाहें तब जो प्रत्याशी उनको (1) सब से कम भ्रष्ट दिखाई दे, (2) सब से अधिक योग्य प्रतीत हो, (3) सासद, विधायक अथवा अभिलषित अन्य सदन की कार्यवाही में भाग लेने हेतु सर्वाधिक समय दे सके उसके पक्ष मे आर्यजन अपने मत का प्रयोग कर सकते हैं। —लश्कर

ग्वालियर

( शेष पृष्ठ 1 का )

पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि मूल्यो के क्षरण के इस युग मे भी कुछ सकल्पित पत्रकार हैं, जो सन्तोष की बात है।

समारोह को आर्गेनाइजर अखबार के पूर्व व्यवस्थापक वीरेन्द्रसिंह पवार, दिल्ली प्रशासन के पूर्व प्रचार निदेशक सुर्याव विद्यालकार, रासासिंह, श्री धर्मवीर व डा बाबुराम शास्त्री आदि ने भी सम्बोधित किया। "नया युगपुरुष" के प्रकाशक नवीन शर्मा ने श्री वेदालकार का परिचय दिया।

डा शशि ने श्री वेदालकार को दुशाला ओढ़ाकर, श्री वीरेन्द्र सिंह ने अगवस्त्र, श्री विद्यालकार ने श्रीफल और श्री नवीन शर्मा ने प्रतीक चिन्ह भेंटकर उनका अभिनन्दन किया। श्री उपाध्याय ने अभिनन्दन ग्रथ का विमोचन किया। समारोह-आयोजक वीरेन्द्र आर्य ने अन्त मे सबका आभार दर्शाया।



स्वत्वाधिकारी आर्यसमाज अजमेर के लिए प्रकाशक एव सपादक रासासिंह हेतु रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्य प्रिन्टर्स बाबू मोहल्ला केसरगज, अजमेर मे मुद्रित एव आर्य समाज भवन, अजमेर से प्रकाशित।

ओ३म्

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने मे सदा उद्यत रहना चाहिए।
—महर्षि दयानन्द

# आर्य पुनर्गठन

आर्य समाज, अजमेर का हिन्दी पाक्षिक पत्र

'आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म॥'

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सकल जगत को आर्य बनाए।

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होनेवाली समस्याओ को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 6 सोमवार, 30 अक्टूबर, 1989
अक 19 प स -43383/84

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात्।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु॥

कार्तिक सु 1 सवत 2046
वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60

# भारतीय राजनीति का घिनौना स्वरूप

—वीरेन्द्र कुमार आर्य—

इधर जब से लोकसभा व पाच विधानसभाओ के चुनावो की घोषणा हुई है तब से ही नेताओ के साथ-साथ पत्रकारो की व्यस्तता भी बढ गई है। दिन-रात भाग-दौड करनी पड रही है। इसी भागदौड के दौरान मुझे भारतीय राजनीति का जो घिनौना रूप देखने को मिला उसके दर्शन आपको भी करा रहा हू।

जयपुर – राजस्थान की राजधानी। प्रदेश भाजपा के सर्वेसर्वा भैरोसिह शेखावत का दरबार। टिकटार्थियो की भीड। एक युवा भाजपाई द्वारा अपनी उम्मीदवारी का दावा प्रस्तुत करने पर श्री शेखावत व्यग्यपूर्वक उनसे उनकी जाति पूछते हैं। (समझदार को इशारा काफी होता है। युवा नेता एक अल्पसख्यक जाति का प्रतिनिधित्व करते हैं।)

दिल्ली के एक प्रमुख राष्ट्रीय दैनिक का मुख्यालय। पत्रकारो की चुनावी विचार गोष्ठी। एक वरिष्ठ पत्रकार भैरोसिह शेखावत को जातीय राजनीति के लिए कोस रहे हैं "सभी पूर्व महाराजाओ को उम्मीदवार बना दिया। कई अन्य छुटभय्ये स्वजातीयो को टिकट दे दिए। आखिर क्यो भाजपा का सर्वनाश करने पर तुले हो।"

जनता दल अध्यक्ष विश्वनाथ प्रतापसिह ने अपने समर्थक पत्रकार एव 'चौथी दुनिया' के सम्पादक सतोष भारतीय को उत्तर प्रदेश से लोकसभा का उम्मीदवार बनाया है। 'जब तोप मुकाबिल हो ' का नारा लगाने वाले श्री भारतीय को अपनी भक्ति के रूप में यह प्रसाद मिला है। पत्रकारो को अपना पिछलग्गू बनाने की नेहरू से विरासत मे मिली यह परम्परा इन्दिरा, चरणसिह व राजीव को प्रभावित करती हुई विश्वनाथ प्रतापसिह तक पहुची है।

क्या यह स्वच्छ पत्रकारिता के लिए अशुभ नही है?

हमारे एक परिचित को मिला उनके एक मित्र का पत्र उत्तर प्रदेश के अमुक स्थान से विधानसभा का चुनाव लड रहा हूँ। यहा आपकी जाति के काफी लोग हैं। यदि एक सप्ताह के लिए प्रचार के लिए आ सको तो आभारी रहूगा।

## आचार्य दत्तात्रेय आर्य की रासासिह को जिताने की अपील

अजमेर। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के वरिष्ठ उपप्रधान आचार्य दत्तात्रेय आर्य ने अजमेर जिले की समस्त आर्य समाजो से लोकसभा चुनावो मे रासासिह को जिताने की अपील की है।

सोमवार को जारी अपनी प्रेस विज्ञप्ति मे आचार्य जी ने कहा कि रासासिह को हमे पार्टी विशेष के स्तर पर नहीं बल्कि उनके चरित्रवान व्यक्तित्व के कारण समर्थन देना चाहिए। आपने कहा कि यह ठीक ही है कि आर्य समाज कोई राजनैतिक दल नही है इसलिए उसके किसी प्रत्याशी का खडा होने का प्रश्न ही नही उठता। लेकिन विचारधारा की दृष्टि से श्री रासासिह हमारे सबसे निकट हैं। उनकी सोच पूरी तरह राष्ट्रीय है और एक ईमानदार और कर्मठ व्यक्ति हैं। इन्ही गुणो को देखते हुए हम श्री सिह को विजयी बनाना चाहिए।

आचार्य जी ने आगे कहा कि हमे विभिन्न पार्टियो के घोषणा-पत्र को नही बल्कि उम्मीदवारो के व्यक्तिगत चरित्र को देखना चाहिए और अच्छे शासन के लिए ईमानदार एव सशक्त व्यक्तियो को चुनकर लोकसभा मे भेजना चाहिए।

# क्रांति के अग्रदूत महर्षि दयानन्द

कविवर शकर' ने एक स्थान पर क्या ही सुन्दर बात कही है— "आनन्द सुध सार दया कर पिला गया, भारत को दयानन्द दुबारा जिला गया।" एक अन्य कवि के शब्दो मे "धन्य है तुझको ए ऋषि तूने हमे जगा दिया सो-सो के लुट रहे थे हम तूने हमे बचा लिया। "अधो को आखे मिल गई, मुर्दों मे जान आ गई--जादू सा क्या चला दिया अमृत--सा क्या पिला दिया।" आशय यही कि महर्षि दयानन्द सरस्वती सर्वतोमुखी समग्र क्राति के अग्रदूत थे। यह उस अकेले साहसी व्यक्ति का ही कमाल था कि जीवन मे अनेको बार विषपान करने, विरोधियो द्वारा कई बार अपमानित करने के प्रयासो के बावजूद सत्य के मार्ग से नही डिगा और बडी से बडी चुनौती का भी हसते-हसते निर्भीकता से मुकाबला किया।

सोये हुए भारतीयो मे स्वाभिमान पैदा करने को आत्म-गौरव की याद दिलाने प्रताडित एव पददलित हिंदुओ मे आत्मविश्वास फूकने, अग्रेजो के विरुद्ध जनजागरण कर स्वतन्त्रताका मत्र फूकने सामाजिक कुरीतियो पाखण्डो, अधविश्वासो तथा बुराईयो पर कठोर प्रहार करने तथा सृजनात्मक जीवन एव समाज का निर्माण करने हेतु मार्ग दर्शन करने का जो कार्य महर्षि दयानन्द ने किया है, वह न भूतो न भविष्यति के आधार पर अब तक कोई व्यक्ति नही कर सका है। उपदेश दे देना, धर्म का प्रचार कर देना तो एक सामान्य बात है परन्तु उन उपदेशो से पूर्व अपना व्यक्तिगत जीवन शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक एव आत्मिक दृष्टि से तदनुकूल बनाकर एक आदर्श प्रस्तुत करना धर्म प्रचार की व्यस्तता होते हुए सतत साहित्य साधना करते हुए वेदो का भाष्य करना तथा सत्यार्थ प्रकाश जैसे अमर ग्रथ का निर्माण करना अपने अकाट्य तर्कों एव प्रबल, पाण्डित्य से पौराणिकों को शास्त्रार्थों मे निरुत्तर कर देना, सपूर्ण समाज मे वैचारिक क्रान्ति उत्पन्न कर सोचने को विवश कर देना उस महान ऋषि का ही प्रताप था। अपने बाद भी क्राति की सुधा धारा निरन्तर प्रवाहमान करने हेतु आर्य समाज जैसे क्रातिकारी

( शेष पृष्ठ 4 पर )

निदेशक दत्तात्रेय आर्य    प्रधान सपादक रासासिह    सपादक वीरेन्द्र कुमार आर्य    ☎ कार्या 21010

# राम जन्मभूमि और आर्यसमाज

**—डा. भवानी लाल भारतीय—**

हिन्दू स्वभाव से ही मूर्ति पूजक हैं और इस्लाम का अर्थ ही है बुतशिकनी मूर्ति को तोडना। पैगम्बर साहब ने काबा के धर्म स्थान पर रखी विभिन्न देवताओ की मूर्तियो को वहा से हटवा दिया। अब वहा केवल सग असवत ही रह गया है, जिस हज के समय प्रत्येक हाजी मुसलमान चूमता है। हिन्दुओ के मन्दिर निर्माण की कोई सीमा नही, गली, गली, चौराहो, रास्तो पेडो के नीचे पर्वतो की चोटियो गुफाओ, खेतो और खलिहानो मे उसने मन्दिर बनाये और बनाता जा रहा है। प्रभुदत्त ब्रह्मचारी ने हनुमान की एक विशाल पवनकाय प्रस्तर मूर्ति बनवाई है और उसके निर्माण पर लाखो रुपये भी खर्च किये है। मुसलमान की बुतशिकनी की भी कोई इन्तिहा नही उसने हिन्दुओ के मठो मन्दिरो, धर्मस्थानो और पूजास्थलो पर स्थापित मूर्तियो को तोडा, उनको धराध्वस्त किया। शायद वह समझता था कि ऐसा करने से ही दुनिया से मूर्ति पूजा हटाई जा सकेगी। किन्तु मूर्ति बनाना इन्सानी फितरत है, उसे तोडना मनुष्य की जहालत का सूचक है।

स्वामी दयानन्द का दृष्टिकोण भिन्न प्रकार का है। न वे मूर्तिपूजक है और न मूर्तिभजक।

अवतार के सिद्धात के पनपने के पश्चात ही राम, कृष्ण आदि अवतारी पुरुषो के मन्दिर बने। भारत मे मूर्तिपूजा का चलन जैनो से आरम्भ हुआ।

मूर्तियो और उनसे सम्बद्ध चमत्कारो का कोई अन्त नही है। ये चमत्कार दिन प्रतिदिन बढते ही जा रहे है और अच्छे खासे समझदार लोग भी इन पर सहज भाव से विश्वास कर लेते हैं। मथुरा मे कृष्ण जन्मस्थान का मोहल्ला कटरा केशवदेव कहलाता है। वहा भी एक विशाल मस्जिद बनाई गई। बिडला ने इसके पीछे कृष्ण की जन्मस्थली का पुर्ननिर्माण कराया और उसे एक भव्य स्मारक का रूप दिया।

जैसा कि मैं निवेदन कर चुका हूँ आर्य समाज मूर्तिपूजा का विरोधी है, अत, वह किसी स्थान या जडवस्तु को परमात्मा का प्रतीक मानकर उसकी उपासना करने का समर्थन नही कर सकता। हिंदू मन्दिरो मे प्रचलित जड प्रतिमाओ की पूजा अर्चा वैदिक मन्तव्यो के नितान्त विपरीत है।

आज अयोध्या स्थित राम जन्मभूमि का विवाद प्रत्येक भारतवासी को आदोलित कर रहा है राजनैतिक पार्टिया इसे एक अहम मुद्दा बना रही हैं और जन सामान्य की भावनाओ को भडका रही है। उधर सरकार ने इस सारे विवाद को न्यायालय के सुपुर्द कर दिया है और बडी मासूमियत से कह रही है कि दोनो पक्षो को न्यायालय के फैसले का स्वीकार कर लेना चाहिए। किन्तु क्या स्वय सरकार ने ही अतीत काल में साम्प्रादायिक मुद्दो से जुडे सवेदनशील प्रश्नो पर अदालत के फैसलो को सदा स्वीकार किया है। शाहबानो को गुजारा भत्ता देने के मामले मे सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को न केवल ठुकराया बल्कि सविधान मे ही सशोधन कर तलाकशुदा मुसलमान महिलाओ के भरण पोषण के लिये उत्तरदायी व्यक्ति को तो सर्वदा मुक्त ही कर दिया। एक बात यह भी है कि वृहत मानव समूहो की भावनाओ से जुडे प्रश्नो पर अदालती फैसले थोपना कभी कभी हानिकर सिद्ध होता है। अच्छा तो यही रहता है कि आपस की सूझबूझ और सुलह सफाई से ऐसे पेचीदे सवालो का उत्तर खोजा जाय।

यदि अयोध्या के राम जन्मभूमि स्थल को एक ऐतिहासिक स्मारक का रूप दिया जाता है, तब तो आर्य समाज उसका समर्थन करेगा। अन्यथा यदि देश के अन्य लाखो मन्दिरो की भाति उसे भी केवल मूर्तिपूजा का ही अड्डा बनाया जाता है तो कम से कम आर्यसमाज तो इस कार्य को जडपूजा को बढावा देना ही मानेगा। भारत की काग्रेसी सरकार सदा से ही अपनी मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति के कारण कुख्यात रही है। उसके नेतागण हिन्दुओ को तो शाति, सौमनस्य, भ्रातृभाव और साम्प्रदायिक सौहार्द्र की सीख देते हैं, किंतु सैयद शहाबुद्दीन और अब्दुल्ला बुखारी जैसे वाचाल फिर्कापरस्तो की नाक मे नकेल डालने की जुर्रत उनमे नही है।

अब राम जन्मभूमि का मसला विश्व हिन्दू परिषद ने अपने हाथ मे लिया है। इस सस्था का इरादा विवादस्पद स्थान पर 25 करोड की लागत का एक भव्य मन्दिर बनाने का है। इसके शिलान्यास की तिथि निश्चित कर दी गई है।

क्या आर्य समाज भी ऐसे शिलापूजन का समर्थन करेगा, क्या वह भी 25 करोड लागत से बनने वाले राम मन्दिर को सैद्धातिक दृष्टि से ठीक मानता है?

जैसा कि मैं लिख चुका हू, आर्य समाज के नेताओ से हम कुछ अधिक विवेक तथा तर्क युक्त दृष्टिकोण की उपेक्षा रखते है। आर्यसमाज हिन्दुओ के अन्धविश्वासो से भरे विशाल महासागर मे डूबने के लिये अस्तित्व मे नही आया है उसकी अपनी एक परम्परा है, उसका प्रत्येक समस्या पर सूझबूझ से युक्त निजी दृष्टिकोण होता है। वह न तो गतानुगति को ही अनुसरण करता है और न हिन्दुओ की प्रत्येक मूढ धारणा एव अन्ध आस्था का ही पोषण करता है। राम जन्मभूमि के पुनरुद्धार मे उसका सहयोग कैसे रहे यह तो सोचने की बात है, वह तो स्वय अपने सस्थापक ऋषि दयानन्द के जन्मस्थान का भी उद्धार नही कर सका वह स्थान भी एक जैन भाई के कब्जे मे है।

हमारे हिन्दू भाइयो की भी एक खूबी है। वे किसी सार्वजनिक प्रश्न पर एकमत होना और उसके लिये सघर्ष करना तो जानते ही नही।

जो कुछ भी हो हमे सनातन धर्म सभा या महावीर दल के इस रवैये से कोई आश्चर्य नही हुआ। कारण कि सनातनी हिन्दू तो सदा से ही मुहूर्त, ज्योतिष और दिशाशूल का गुलाम बना हुआ है। मन्दिरो की स्थापना की तो बात ही क्या, उसके मान्य फलित ज्योतिष के आचार्यों ने तो जुआ खेलने, चोरी करने यहा तक की वारागना को कृतार्थ करने तक के मुहूर्त निकाल रक्खे हैं। फिर भला यदि सनातनी नेताओ ने दक्षिणायन मे राम मन्दिर के शिलान्यास पर आपत्ति की हो तो आश्चर्य ही क्या? खैर, यह तो झगडा उनके ही घर का है और वे ही इसे सुलझायेंगे। अभी तक इन विश्व हिंदू वादियो के मान्य चारो शकराचार्यों की भी राम जन्मभूमि के बारे में कोई स्पष्ट सम्मति सामने नहीं आई है।

मेरे विचार मे आर्य समाज को अपनी एतद् विषयक धारणा निम्न बिन्दुओ के रूप मे व्यक्त करनी चाहिए।

(1) राम जन्म स्थान को एक ऐतिहासिक स्मारक के रूप मे स्थापित या विकसित किया जावे।

(2) इसके लिये जहा पारस्परिक सुलह सफाई से काम लिया जाये, वहा अनावश्यक तुष्टिकरण को हरगिज सहन न किया जाये।

(3) शिलापूजन तथा इसी प्रकार की अन्य मूर्तिपूजा को प्रोत्साहित करने वाले कार्यक्रमो को निरुत्साहित किया जाये।

(4) मुहूर्त आदि को लेकर बखेडा करने वाले पौराणिको का पूरा पर्दाफाश किया जाये।

# पूर्ण नशाबन्दी क्यों ?

—भगवान देव "चैतन्य"—

नशे और पागलपन की स्थिति मनुष्य के लिए लगभग एक जैसी ही होती है। आम तौर पर देखा गया है कि पागलों मे मुख्य रूप से यही बात देखने मे आती है कि उनकी बुद्धि और विवेक नष्ट हो गये होते हैं। उन्हें यह भी ज्ञान नही रहता है कि उनके लिए क्या करना उचित है और क्या अनुचित। इस बात का का निर्णय बुद्धि और विवेक ही करता है कि मनुष्य के लिए क्या करने योग्य है और क्या नही। शराब का नशा भी सीधा प्रहार मनुष्य की बुद्धि और विवेक पर ही करता है। यही कारण है कि शराब के नशे मे सभ्य तथा सुशिक्षित मानव भी ऐसे जघन्य और अक्षम्य अपराध कर बैठता है जिन पर सहज ही मे विश्वास कर पाना भा कठिन हो जाता है। नशे मे मदमस्त होने वाल मनुष्य के हाथो ऐस कार्य भी होत देखे गए है जिन्हे सामान्य स्थिति मे कोई भी मनुष्य नही कर सकता। बुद्धि और विवेक को हर लेने वाला नशा मानवता का एक एसा शत्रु है, जिससे मनुष्य को अवश्य ही मुक्ति पा लेनी चाहिए।

प्रत्येक मनुष्य के अन्दर अच्छी और बुरी दो प्रकार की भावनाए होती है। मनुष्य को चाहिए कि वह अपने अन्दर की बुरी भावनाओ की निरन्तर अवहेलना करता चला जाए। ज्यो ज्यो मानव बुरी भावनाओ को नजर अन्दाज करता चला जाता है अच्छी भावनाओ का स्वत ही विकास होता चला जाता है। ज्यो ज्यो बुरी भावनाए समाप्त होनी चली जाती हैं, त्यो त्यो अच्छे विचारो को पनपने का अवसर मिलता चला जाता है। मगर इस प्रकार मनुष्य का अपनी भावनाओ पर नियन्त्रण तभी हो सकता है जब वह पूर्णरूप से चैतन्यता मे हो। नशे मे धुत्त मनुष्य अपनी भावनाओ को कदापि दिशा नही दे सकता। बल्कि उस स्थिति मे तो उसका अपनी भावनाओ पर थोडा बहुत नियन्त्रण भी शिथिल पड जाता है, दिशा देने की बात तो दूर रही। यही कारण है कि नशे की स्थिति मे मनुष्य अधिक अपराध करता है क्योकि नशे से उसकी बुरी भावनाओ को बल मिलता है तथा अच्छी भावनाए धीरे धीरे मृतप्राय ही हो जाती हैं। बुरी भावनाए फिर इतनी प्रबल हो जाती हैं कि वह नशा करने वाला मनुष्य अपनी साधारण अवस्था मे भी उस प्रकार के अमानवीय व्यवहार करता रहता है। यदि मनुष्य स्वय में मानवीय गुणो का विकास करना चाहता है तो उसे शराब जैसी बुरी वस्तु को अविलम्ब त्याग देना चाहिए।

भ्रष्टाचार एक ऐसा अभिशाप है जो राष्ट्र व समाज की प्रगति पर कुठाराघात करता रहता है। बहुत से राष्ट्र और समाज इसी भ्रष्टाचार के कारण नष्ट होते देखे गए हैं। हम यदि गहराई मे दृष्टिपात करे तो भ्रष्टाचार के मूल मे भी नशे का ही प्रमुख हाथ है। यह नशा ही है जो निरन्तर भ्रष्टाचार को पालता और पोषता रहता है। जैसा कि पूर्व कहा गया कि बुद्धि और विवक तथा मनुष्य की मानवीय भावनाए नशे के कारण समाप्त हो जाती हैं। जहा ये गुण समाप्त हुए वही भ्रष्टाचार जन्म लेता है। यह एक ध्रुव सत्य है कि भ्रष्टाचार मानव और किसी देश को पतन के गहरे गर्त मे फैंक देता है। भ्रष्टाचार को जडमूल से उखाड फैंकने के लिए नशीली वस्तुओ का बहिष्कार परमावश्यक है। जब तक भ्रष्टाचार समाप्त नही होता तब तक राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य की कामना करना ओस से प्यास बुझाने के समान ही है और यदि यह भ्रष्टाचार समाप्त हो जाए तो राष्ट्र की उन्नति स्वत ही होगी।

भारतवर्ष के लिए नैतिकता का गुण सदा ही प्रमुख रहा है। इसी गुण के कारण यह राष्ट्र कभी धर्मगुरु के स्थान पर था। यही वह गुण है जिसके कारण हमारी चारो ओर जय-जय कार होती थी। यही एक गुण था जिसके कारण हमारे देश को सोने की चिडिया तक कहा जाता था। नैतिकता के कारण ही यहा पर दूध की नदिया बहती थी तथा रामराज्य की स्थापना थी। इस गुण की जडो का भारत से हिलना एक अत्यधिक शोचनीय बात है। नैतिकता का मूलाधार धर्म है। वैदिक धर्म जिस सिद्धान्त को मानता है वह केवल इस लोक की ही नही बल्कि परलोक की उन्नति का भी आधार है। पाच विकार मुख्य रूप से धर्म के मार्ग के बाधक माने जाते हैं। इसीलिए इनसे बचने का सदा आदेश दिया जाता है। इन्हे त्यागे बिना कोई भी मनुष्य धार्मिक नही कहला सकता है। ये विकार हैं—काम, क्रोध लोभ, मोह और अहकार। बस धर्म और नैतिकता के यही सबसे प्रबल शत्रु हैं। यही पाच विकार हैं जो मानव को दानव बना देते हैं और इनका सबसे अधिक पालन पोषण करने वाला नशा ही होता है। नशा मनुष्य के भीतर इन पाँच विकारो का का विकास करता है। नशे से ये नियन्त्रित होने के स्थान पर फलते और फूलते है। यह प्रत्यक्ष देखने की बात है कि नशा करने वाले मनुष्य मे इन विकारो की अधिकता होती है। नशे की हालत मे व्यक्ति इन विकारो के पूर्णरूप से वशीभूत हो जाता है। इसीलिए नशे की हालत मे व्यक्ति अधिक कामी, क्रोधी, लोभी आसक्त तथा अहकारी हो जाता है। नशे की दशा मे किसी भी व्यक्ति का परीक्षण करके इस तथ्य की पुष्टि की जा सकती है। इसलिए धर्म और नैतिकता को जीवित रखने के लिए निश्चित रूप से शराब आदि नशो का परित्याग करना चाहिए।

मनुष्य की प्रसन्नता व खुशहाली के लिए उसका स्वस्थ रहना परम आवश्यक है। अस्वस्थ मनुष्य जीवन का आनन्द नही ले सकता है। उसके लिए तो जीवन एक अभिशाप बनकर रह जाता है। नशा केवल मानसिक विकृति ही पैदा नही करता बल्कि यह तो वैज्ञानिक परीक्षणो द्वारा सिद्ध हो चुका है कि शराब व्यक्ति के शरीर को अस्वस्थ व विकार ग्रस्त बनाकर खोखला कर देती है। नशे मे एक ऐसा जहर होता है जो स्वस्थ शरीर को भी धीरे धीरे बेकार कर देता है। ऐसा शरीर बीमारियो से लडने की क्षमता खो बैठता है। विशेष रूप से नशा जिगर को खराब कर देता है। पाचन शक्ति को सुचारू रूप से चलने के योग्य नही रहने देता। इसके पीने से फेफडो की नाजुक झिल्ली कमजोर होती चली जाती है। शराब एक नही बल्कि अनेक रोगो की जड है। इसका सेवन करने वालो को ब्लड प्रैशर, हार्टअटैक आदि भयानक बीमारिया लग जाती हैं। बहुत नशा करने वालो को टी बी जैसे रोग भी लग जाते है। पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए मनुष्य को नशा पूर्ण रूप से त्याग देना चाहिए। हमारे पूर्वज पूरी स्वस्थ तरह एव निरोग रहकर सौ वर्ष तक तथा इससे भी लम्बी आयु का जीवन जीते थे जिसका कारण नशो से दूर रहना ही था।

मनुष्य के सस्कार ही उसे देवता या राक्षस बना देते है। जैसे हमारे कर्म होगे वैसे ही ही सस्कार होगे और वैसा ही हमारा जीवन बनता चला जाएगा। हम यदि बच्चो पर अच्छे सस्कार डालना चाहते हैं तो हमे पहले स्वय अच्छा बनना पडेगा। यदि हम उनसे यह अपेक्षा करते हैं कि वह बडा होकर शराब या सिगरेट न पीए तो हमे पहले स्वय ये दुर्गुण त्यागने होगे। नशा करने वाले का परिवार कभी भी अच्छे सस्कार प्राप्त नही कर सकता है क्योकि वहा पर तो आपसी सहानुभूति, प्यार एव सद्व्यवहार ही समाप्त हो जाता है। इसके विपरीत वहा तो अक्सर मारपीट, गाली गलौच और ऐसे ही अन्य अमानवीय कार्य देखने को मिलते हैं। ऐसे वातावरण मे बच्चो तथा परिवार के अन्य लोगो पर क्या सस्कार पड सकते हैं। सस्कारो का महत्व तो केवल इस लोक के लिए ही नही अपितु पुनर्जन्म से भी सम्बन्ध रखता है। जिसके इस जन्म के सस्कार ही अच्छे नही उसके अगले जन्म के सस्कार भी पड सकते हैं। सस्कार भी कैसे अच्छे बन सकते हैं। नशा करने वालो का यह जन्म तो दुखो और कष्टो से भरपूर होना ही है, उसका परलोक भी बिगड जाता है। वह परिवार के लोगो से कभी भी सहानुभूति, प्यार एव सम्मान प्राप्त नही कर सकता। अत शराब जैसी बीमारी से अपने आप को एकदम दूर रखने वाला व्यक्ति ही बुद्धिमान है।

उपर्युक्त विवेचन से हमारे समक्ष यह स्पष्ट हो गया कि बुद्धि और विवेक की रक्षा के लिए, मानवीय व्यवहार के लिए, भ्रष्टाचार की समाप्ति के लिए, नैतिकता की रक्षा के लिए, सुसस्कारो की प्राप्ति के लिए, परलोक को सुधारने के लिए तथा पूर्णस्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए पूर्ण नशाबन्दी परमावश्यक है। तभी मानव का अपना जीवन परिवार का

(शेष पृष्ठ 4 पर)

## आज से 114 साल पूर्व
## महर्षि दयानन्द ने सबसे पहले

● नमक के कर का विरोध किया था।

● न्यायालयों में प्रार्थना--पत्रों के लिए स्टेम्प-पेपर का विरोध किया था।

● अनिवार्य और नि शुल्क शिक्षा को आवश्यक दर्शाया था।

● आपात स्थिति मे अनिवार्य सैनिक-शिक्षा पर बल दिया था।

● देश की अखडता के लिए हिन्दी को सम्पर्क भाषा बनाने का पक्ष लिया था।

● देश की सभी भाषाओं के लिए नागरी लिपि को अपनाने की प्रेरणा दी थी।

● वेदो का सबसे पहले हिन्दी म भाष्य किया था।

● हिन्दी में सबसे पहले आत्म चरित लिखा था।

● हिन्दी को राज भाषा बनाने के लिए लाखो-हस्ताक्षरो से सरकार क पास मेमोरण्डम भेजने का कार्य प्रारम्भ किया था।

* गोरक्षा का अन्दोलन प्रारम्भ किया था।

* गोरक्षा के लिए सब से पहले 'गोरक्षिणी सभा" स्थापना की थी। और उस का सविधान भी बनाया था।

● देशी वस्त्रो और देश मे बनी वस्तुओ के प्रयोग की प्रेरणा दी थी।

* औद्योगिक उन्नति और अन्तर्राष्ट्रीय-व्यापार की देश वासियो को प्रेरणा दी थी और शिक्षित युवको का औद्योगिक उच्च-शिक्षा के लिए जर्मनी भेजने की व्यवस्था की थी।

* स्वराज्य को ही पूर्णता सुखदायक घोषित किया था।

❈ साम्प्रदायिकता का विरोध किया था।

❈ जन्म के आधार पर बनी जातियो का विरोध किया था।

❈ किसी भी धर्मावलम्बी को वैदिक धम मे सम्मिलित करने का अर्थात् शुद्धि का मार्ग प्रशस्त किया था।

❈ समाज के सभी स्त्री-पुरुषो को वदो के पढने-पढाने और सुनने-सुनाने का अधिकार दर्शाया था।

—कृष्ण दत्त, हैदराबाद

## आचार्य दत्तात्रेय आर्य की विदेश प्रवास संबंधी भाषणमाला

आर्य समाज, अजमेर के प्रधान आचार्य दत्तात्रेय आर्य अपने तीन माह के विदेश प्रवास से सकुशल वापिस आ गये हैं। उल्लेखनीय है कि श्री आर्य अमेरिका के मार्शल विश्वविद्यालय से प्राप्त निमत्रण पर एक आमन्त्रित भारतीय विद्वान के रूप मे विश्वविद्यालय के विद्यार्थियो के समक्ष भारतीय सस्कृति एव सभ्यता पर भाषणमाला प्रस्तुत करने के लिए गये थे।

श्री आचार्य जी, अनेक सज्जनो के अनुरोध पर रविवार दिनाक 12 नवम्बर 89 ई स आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्सग के समय अपने विदेश प्रवास के सस्मरण धारावाहिक रूप से सुनना प्रारम्भ करेंगे।

12 नवम्बर, 89 ई से शीत कालीन साप्ताहिक सत्सग का समय प्रात 9 बजे से 11 बजे तक रहेगा।

—मन्त्री

## ऐसे भी आर्यसमाजी हैं।

दैनिक ट्रिब्यून मे यह समाचार पढकर बडी हैरानी और दुख हुआ कि सोनीपत की एक आर्यसमाज मे एक आर्यसमाजी विद्वान ने राम-शिलाओं को वेद मन्त्रो के पाठ और यज्ञ से पवित्र किया और विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्त्ताओ को सौपा। क्या आर्यसमाज की यही मर्यादा और सैद्धांतिक निष्ठा है कि वह मूर्तिपूजा से भी निकृष्ट पत्थर पूजा को प्रोत्साहित करती है। वेदमन्त्रो और यज्ञ से पत्थर की शिलाओ को पूजना और पवित्र करना क्या आर्य समाज को शोभा देता है? क्या यह ऋषि दयानन्द की शिक्षाओ का खुला उपहास नही है। ऐसा लगता है कि इस नये उभरे हिन्दुवाद मे आर्यसमाज भी पूर्णतया विलुप्त हो जायेगा। और उसका क्रातिकारी चरित्र, अन्धविश्वासो तथा रूढिवाद पर प्रहार करने वाली छवि भी नष्ट हो जायेगी। क्या प्रबुद्ध आर्यसमाजी अब भी नही चेतेंगे?

—भवानीलाल भारतीय

## क्रान्ति के अग्रदूत

( शेष पृष्ठ 1 का )

सगठन का निर्माण किया। अनेक महापुरुषो ने ऋषि के इस क्रातिकारी स्वरूप को मुक्त कठ से सराहा है।

महर्षि दयानन्द के क्रांतिकारी व्यक्तित्व और कृतित्व ने तो हमे स्वामी श्रद्धानन्द पडित लेखराम शहीदे आजम भगतसिंह, शेरे पजाब लाला लाजपतराय महात्मा हसराज, क्राति शिरोमणि श्री प रामप्रसाद बिस्मिल, स्वामी दर्शनानद, स्वामी सत्यानन्द, गुरुदत्त, महात्मा नारायण स्वामी जैसे अनेक तपःपूत, त्यागी तपस्वी कर्मठ नेता और क्रातिकारी दिये परन्तु आज उसी ऋषि दयानन्द और उसके आर्य समाज की झलकती हुई आब क्यो धूमधुमिल हो गई है। यह हम सब के लिये विचारणीय है। आज आर्यसमाज मे भी असली सिक्कों के स्थान पर "नकली सिक्कों" का धडल्ले से प्रचलन हो रहा है। फलस्वरूप हमारी प्रतिष्ठा कम हो रही है। नकली सिक्को के प्रचलन को बद करना होगा। कागजी शेरो से सावधान रहना होगा।

अत ऋषि निर्वाण दिवस मनाते वक्त हमे अपने स्वय के तथा आर्य समाज के उस क्रातिकारी स्वरूप को उजागर करने का सकल्प लेना होगा। हमे पहले सच्चा, तेजस्वी आर्य बनना होगा। हमे दरबारी और "सरकारी" तथा पदलोलुपी के स्थान पर क्रातिकारी वीर दयानन्दी और निर्भीक आर्य बनना होगा।

—रामसिंह

## आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन

महात्मा हसराज कालेज दिल्ली के सभागार मे आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन राष्ट्रीय, राजनीतिक, सामाजिक आर्थिक क्रान्ति के लिए सकल्प लेकर समाप्त हुआ। यह सम्मेलन 30 सितम्बर स 2 अक्टूबर तक चला जिसमे अनेक विषयो पर सम्मेलन आयोजित किये गये। इस सम्मेलन का आयोजन डा प्रशान्त वेदालकार ने किया।

इस अवसर पर डा प्रशान्त वेदालकार, प क्षितीश वेदालकार द्वारा सम्मेलनों के निर्णयो को सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी के सामने रखने का निर्णय लिया गया। एक समिति का भी गठन किया गया जो उन निर्णयो को क्रियान्वित कराने मे सक्रिय भूमिका का निर्वाह करेगी।

इस सम्मेलन मे देश के प्राय प्रत्येक प्रदेश से लगभग 500 प्रतिनिधि आये थे। इस सम्मेलन की विशेषता यह रही कि इसमे विश्वविद्यालय के प्राध्यापक, पत्रकार तथा लेखक आदि बडी मात्रा मे थ।

—डा प्रशान्त वेदालकार
सयोजक

## पूर्ण नशाबन्दी...

(शेष पृष्ठ 3 का)

जीवन, सुखमय हो सकता है। सामाजिक सुव्यवस्था और राष्ट्र की समुचित उन्नति के लिए नशाबन्दी एक प्रशसनीय और अनिवार्य कार्य है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा है-'जो राष्ट्र शराब की आदत का शिकार है, कहना चाहिए कि उसके सामने विनाश मुह बाए खडा है, इतिहास मे इस बात के कितने ही प्रमाण हैं कि शराब के कारण कई साम्राज्य मिट्टी मे मिल गए। प्राचीन भारतीय इतिहास से हम जानते हैं कि वह पराक्रमी जाति जिसमे श्रीकृष्ण ने जन्म लिया था इसी बुराई के कारण नष्ट हो गई थी। रोमन साम्राज्य के पतन का एक सहायक कारण निस्सदेह यही बुराई थी।' गांधी जी शराब को सब बुराईयों की जड मानते थे। इसीलिए उन्होंने यह भी घोषणा की थी-"यदि मुझे एक घण्टे के लिए भारत का डिक्टेटर बना दिया जाय तो मेरा पहला काम यह होगा कि शराब की दुकानो को बिना मुआवजा दिये बन्द करा दिया जाए।"

## आवश्यक सूचना

पाठकों से निवेदन है कि जिन सदस्यों ने वार्षिक शुल्क अभी तक कार्यालय में नहीं भिजवाया हैं, वह कृपया शीघ्र वार्षिक शुल्क भेजकर सहयोग प्रदान करें। मनीआर्डर भेजते समय अपना पूरा पता लिखने का कष्ट करे। वार्षिक शुल्क 15) रुपये हैं।

बार बार वार्षिक शुल्क भेजने की परेशानी से बचने का सरल उपाय एक बार-150) रुपए भेजकर आजीवन सदस्य बन सकते हैं।

स्वत्वाधिकारी आर्यसमाज अजमेर के लिए प्रकाशक एव सपादक रासासिह हेतु रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्य प्रिन्टर्स बाबू मोहल्ला केसरगज, अजमेर मे मुद्रित एव आर्य समाज भवन, अजमेर से प्रकाशित।

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सदा उद्यत रहना चाहिए।

-महर्षि दयानन्द

ओ३म्

# आर्य पुनर्गठन

आर्य समाज, अजमेर का हिन्दी पाक्षिक पत्र

आर्य हमारा नाम है वेद हमारा धर्म।
ओ३म हमारा देव है सत्य हमारा कर्म।'

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सकल जगत को आर्य बनाए।

हमारा उद्देश्य . समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होनेवाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 6 सयुक्तांक अक्टूबर 1989 अभय मित्रादभयम अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात। संवत 2046
अंक 20-21 प स -4338/84 अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु। वार्षिक मू 15/ एक प्रति 60


# रासासिंह एक लाख मतों से जीते

अजमेर नवम्बर। आर्यसमाज अजमेर के मन्त्री और इसी समाज द्वारा सचालित डी ए वी सी उच्च माध्यमिक विद्यालय अजमेर के प्रधानाचार्य रासासिंह ने अजमेर लोक सभा सीट जीत ली है। वे भाजपा उम्मीदवार थे। उन्होंने अपने निकट तम प्रतिद्वन्द्वी काग्रेस (आई) के वन मन्त्री गोविन्द सिंह गुजर को एक लाख आठ हजार 39 मतो से हराया श्री सिंह को कुल तीन लाख आठ हजार 254 व श्री गुजर को दो लाख 215 मत मिले।

श्री रासासिंह को सर्वाधिक बढत ब्यावर विधानसभा क्षत्र से 21 हजार 659 मतो का और सबसे कम बढत नसीराबाद क्षत्र से पाच हजार 438 मतो की मिली। श्री रासासिंह मत गणना के सभी चौदह दौर मे अपने प्रतिद्वन्द्वी से आगे रहे। उनकी बढत मतगणना के हर दौर के साथ बढती रही।

पहले दौर मे श्री रासासिंह को 8 हजार 894 मतो की बढत मिली। इस दौर मे भाजपा को 25 हजार 137 व काग्रेस को 16 हजार 243 मत मिले। दूसरे दौर मे भाजपा को 24 हजार 440 व काग्रेस को 13 हजार 423 मत तथा बढत 19 हजार 910 रही। तीसरे दौर मे रासासिंह को 25 हजार 265 चौथे मे 36 हजार 534 पाचवे मे 45 हजार 762 छठे मे 54 हजार 537 सातवे मे 58 हजार 426 आठवे मे 64 हजार 242 नवे मे 70 हजार 833 दसवे मे 78 हजार 992 ग्यारहवे मे 86 हजार 97 बारहवे मे 97 हजार 47 तेरहवे मे एक लाख 3 हजार 370 व अन्तिम विजयी बढत एक लाख 8 हजार 38 मतो की रही।



श्री रासासिंह को अजमेर पूर्व विधानसभा क्षत्र से 16 हजार 625 अजमेर पश्चिम से 11 हजार एक किशनगढ से 11 हजार 314 नसीराबाद मे 5 हजार 438 मसूदा मे 16 हजार 82 पुष्कर मे 10 हजार 922 ब्यावर मे 21 हजार 659 तथा भिनाय मे 14 हजार 911 मतो की बढत मिली थी।

अजमेर पूर्व मे श्री रासासिंह को 45 हजार 959 व गुजर को 29 हजार 344 पश्चिम मे 33 हजार 115 व 22 हजार 114 किशनगढ मे 39 हजार 345 व 28 हजार 30 नसीराबाद मे 33 हजार 540 व 28 हजार 102 मसूदा मे 37 हजार 609 व 21 हजार 527 पुष्कर मे 40 हजार 897 व 29 हजार 963 ब्यावर मे 42 हजार 650 व 20 हजार 991 तथा भिनाय मे श्री सिंह को 34 हजार 811 तथा श्री गुजर को 19 हजार 900 मत मिले।

विधानसभा क्षत्रो के अनुसार हुई मतगणना के दौरा मे पाच छः बार छोडकर कभी भी काग्रेस को कहीं से बढत नही मिल पाई।

# यह मेरे तमाम साथियों की जीत है—रासासिंह

अजमेर ससदीय क्षत्र से नव निर्वाचित सासद भाजपा के रासासिंह अपनी जीत के प्रति आश्वस्त तो थे किन्तु इतने भारी मतो से विजयी होने की उन्हे उम्मीद नही थी।

## आचार्य दत्तात्रेय से आशीर्वाद प्राप्त किया

अजमेर ससदीय क्षत्र के नए सासद रासासिंह ने अपनी जीत के उपलक्ष्य मे 27 नवम्बर की प्रात निकाले जा रहे विजयी जुलूस के दौरान आर्य समाज भवन के सामने रुक कर आर्यसमाज के प्रधान और अपने सरक्षक आचार्य दत्तात्रेय आर्य के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

सासद चुने जाने के पश्चात एक मुलाकात मे श्री रासासिंह ने कहा कि सही मायने मे यह जीत उनकी उनके तमाम साथी-सहयोगियो की हैं जिन्होंने चुनाव के दौरान दिन रात एक कर दिया। श्री रासासिंह ने जिले के नागरिको का हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए कहा कि जिस उम्मीद से नागरिको ने उन्हे विजयी बनाया है। वह उनकी उम्मीदो को गत सांसदो की तरह निराशा मे नही बदलने देगे। एक प्रश्न के जवाब मे नए सासद ने कहा कि केवल ससदीय सत्र को छोडकर बाकी सभी दिन वे अजमेर मे निवास करना पसद करेगे।

श्री रासासिंह ने अपने चुनावी वादो को दोहराते हुए कहा कि वे सब

(शेष पृष्ठ 3 पर)

निदेशक दत्तात्रय आर्य प्रधान सम्पादक रासासिंह सम्पादक वीरेन्द्र कुमार आर्य कार्या 21010

## एक आर्य पत्र का सम्पादकीय

# यह उर्दू का समर्थन है या विरोध ?

—डा भवानीलाल भारतीय

उत्तर प्रदेश मे उर्दू को द्वितीय राजभाषा के स्वीकार करने का सर्वत्र विरोध हुआ है। संविधान के अनुसार जिस राज्य मे किसी भाषा के बोलने वाले 30 प्रतिशत या अधिक हो वही पर उस भाषा को द्वितीय राजभाषा का दर्जा दिया जा सकता है। उत्तर प्रदेश मे उर्दू भाषियो का सख्या दस ग्यारह प्रतिशत से अधिक नही है। विभिन्न पत्रो ने अपने सम्पादकीय लेखो मे उर्दू को इस प्रकार देश के एक सबसे बड़े प्रान्त का द्वितीय राजभाषा बनाने का विरोध किया और इसे एक चनावी स्टण्ट बताया। अल्पसख्यको के मत प्राप्त करने की यह एक विनाशकारी प्रवृत्ति है जो आगे चल कर देश के विखण्डन की प्रक्रिया को जन्म दे सकता है।

किन्तु हमे आश्चर्य तो तब हुआ जब हमने देखा कि आर्यसमाज की एक शिरोमणि सभा के साप्ताहिक मुखपत्र ने उर्दू को लेकर कुछ ऐसी बाते लिखी जो उत्तर प्रदेश की सरकार के इस कार्य के समर्थन मे लिखी गई प्रतीत होती हैं। इस सम्पादकीय की कतिपय असगत बातो का नमूना देखे। क्या यह आर्यसमाज की पत्रकारिता के गौरव को बढ़ाती है ?

1 नारायणदत्त तिवारी ने उर्दू को दूसरी राजभाषा का दर्जा देकर काग्रेस द्वारा किये गये वादे को पूरा किया है।

2 उर्दू लिपि अरबी लिपि का सरल रूप है। सचाई यह है कि उर्दू को फारसी लिपि मे लिखा जाता है न कि अरबी लिपि मे।

3 आम हिन्दुस्तानी संस्कृत का कोई श्लोक नही समझ सकता।

4 उर्दू मे लिखा वह (भारतवासी) समझ सकता है।

5 उर्दू लिपि का विरोध सिर्फ उसमे अरब वर्णमाला के अक्षर होने के कारण किया जाता है।

6 उर्दू विरोध की आड़ मे वास्तव मे मुस्लिम विरोध है। क्या उर्दू का विरोध करने वाले सचमुच मुसलमानो के विरोधी है ?

7 कुछ ऐसे कट्टर पंथी अभी भी है जिन्हे मुसलमान इस देश मे फूटी आँख भी नही सुहाते।

इस कथन से तो सभी उर्दू विरोधी कट्टर पंथियो की श्रेणी मे आ जायेगे। जब कि उस भाषा का विरोध न होकर उर्दू को अनावश्यक राजनैतिक प्रश्रय देने का विरोध सभी विचारवान व्यक्तियो द्वारा किया जा रहा है।

8 'उर्दू सिर्फ मुसलमानो की बपौती नही है। बात तो यह ठीक है किन्तु सवाल यह है कि फिर उर्दू के प्रश्न पर मुसलमानो को ही परेशानी क्यो होती है ? क्या उन्होने अपने धर्म के साथ उर्दू को जोड़ नही लिया है ?

9 भारत मे उर्दू लोक भाषा बनती गई। यह लिख कर तो सम्पादक ने हिन्दी के लोकभाषा होने के अधिकार को ही चुनौती दे दी

10 उर्दू पढ़ने पर लोग राष्ट्रीय धारा से कैसे कट जायेगे इसका उत्तर सीधा सा है। पाकिस्तान बनाने का आन्दोलन उत्तर भारत के उर्दू भाषा मुसलमानो ने ही आरम्भ किया था जब कि अन्य भारतीय भाषाओ को बोलने वाले मुसलमानो ने पाकिस्तान की योजना का कभी समर्थन नही किया। यह कौन भूल सकता है कि विभाजन के पहले उर्दू भाषा का गढ़ अलीगढ़ मुस्लिम विश्व विद्यालय पाकिस्तान के समर्थको का अड्डा था जहा के छात्रो ने मौलाना आजाद जैसे राष्ट्रीय नेताओ का सदा अपमान किया।

11 अगर उर्दू भाषा उर्दू लिपि मे लिखी जाये तो इसमे हर्ज क्या है ? यह पंक्ति लिखने वाला नागरी लिपि की वैज्ञानिकता को नजर अन्दाज कर ही रहा है वह उन सभी भाषा शास्त्रियो लिपि विशेषज्ञो तथा राष्ट्रभक्त नेताओ के इस सम्मति की भी अवहेलना कर रहा है जिन्होने समस्त भारतीय भाषाओ को नागरी लिपि मे लिखने का समर्थन किया था

12 — सम्राट भाषा नहीं है यह वाक्य लिखने वाला यह भूल गया कि उर्दू के लेखक और कवि अरबी फारसी मे व्यक्त जन जीवन और संस्कृति से प्रेरणा लेते है। वे अर्जुन और भीम के साथ पर सोहराब और रुस्तम को याद करते हैं। कमल और भ्रमर के स्थान पर वे गुलोबुलबुल को तरजीह देते है।

# 'हम वोट किसको दें ?

—क्षितीश वेदालंकार

**यूनान के महान् दार्शनिक प्लेटो ने कहा है—**

जो बुद्धिमान लोग शासन चलाने मे स्वय भाग लेने से इन्कार कर देते हैं उन्हे दुष्ट मनुष्यो द्वारा शासित होने का दण्ड भोगना पड़ता है। इसलिए राजनीति को कीचड़ दलदल छल कपट गुण्डागिरी या निहित स्वार्थों का जमघट आदि कुछ भी कहकर कितनी ही गाली क्यो न दे लो परन्तु न तो उससे बचने का कोई रास्ता है और न ही उसका फल भोगने से बचने का। भले ही आप राजनीति से कितनी ही नफरत क्यो न करे और यह भी भले ही कहते रहे प्रक्षालनाद्धि पंकस्य दूरादस्पर्शनं वरम्—कीचड़ को धोने से बेहतर है कि पहले ही उसके स्पर्श से बचे रहे पर कीचड़ आपको बिना स्पर्श किए नही छोड़ना चाहे कितने ही बच बच कर चलते रहे।

पिछले दिनो कुछ पर्यावरण विशेषज्ञो ने कहा कि भारत की राजधानी दिल्ली अन्य महानगरो की अपेक्षा पर्याप्त कम प्रदूषण वाली है फिर भी जिसे तर्ज से प्रदूषण बढ़ता जा रहा है उसका परिणाम यह है कि इस समय हर दिल्ली वासी को कम से कम तीन सिगरेट जितना धुआ रोज पीना पड़ता है। अब आप भले ही सिगरेट से कितना ही परहेज करे पर यदि दिल्ली मे रहते हे और वहा की हवा मे सास लेते है तो बिना चाहे भी तीन सिगरेट रोज पीनी ही पड़ जाती हैं अर्थात उतना प्रदूषण तो झेलना ही पड़ता है। यह बात राजनीति की भी है। आप कितना ही उसे अछूत समझते रहे पर उसकी छूत तो छूत के रोग की तरह आपको कभी अछूता नही छोड़ेगा।

फिर जब से राष्ट्रो ने राज्यो का रूप लिया है और वे राज्य सत्ता के इस कदर केन्द्र बन गए हैं कि ग्रामो और कस्बो की स्वायत्तता की बात तो जाने दीजिए व्यक्ति भी स्वायत्त नही रहा स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद राज्य की यह अधिनायकता जनता की सरकारापेक्षी वृत्ति के कारण और चरम पर पहुच गई है यह ठीक है कि लोकतन्त्र मे अधिनायकवाद की अपेक्षा व्यक्ति की गरिमा कही अधिक सुरक्षित रहती है इसीलिए अधिनायकवादी देश लोकतन्त्र के लिए तरसते हैं पर जब लोकतन्त्र पर माफिया हावी हो जाए तो ?

तभी प्लेटो के उक्त कथन की सार्थकता अनुभव होती है यदि किसी परिस्थिति विशेष को आप पसन्द नही करते तो आपको यह भी सोचना होगा कि उस परिस्थिति को पैदा करने मे आपका कितना हाथ है आप कह सकते है कि हम तो मुंडेर पर खड़े तमाशा देखते रहे और हमारे सामने से कारवा गुजरता रहा। हा आपका यह तटस्थ होकर तमाशा देखते रहना भी उस परिस्थिति को पैदा करने मे बहुत बड़ा सहायक है उसके लिए आप भी उतने ही जिम्मेदार हैं जितने कारवा मे शामिल होकर नारे लगाने वाले। इसीलिए कहा जाता है कि लोकतन्त्र मे हम वैसी ही सरकार मिलती है जिसी सरकार के हम पात्र होते है। मतदान के रूप मे हमे ऐसा ब्रह्मास्त्र प्राप्त है। जिसके द्वारा हम स्वय हमारे भाग्य का निर्णय करने वालो का चुनाव कर सकते हैं। हमारा वोट कितना शक्तिशाली है जरा इसकी कल्पना तो करिए। पर यदि आप इस ब्रह्मास्त्र का प्रयोग नही करते सही समय और सही स्थान पर प्रयोग नही करते तो आपके पास उस अभागे व्यक्ति की तरह पश्चाताप के सिवा पीछे क्या बचेगा जिसे कड़ी तपस्या के बाद पारसमणि प्राप्त हुई थी पर उसने उसे मामूली पत्थर समझकर तालाब मे फेंक दिया था। आपका वोट जहा आपका ब्रह्मास्त्र है वहा आपकी पारसमणि भी है कभी उसको मामूली और व्यर्थ की वस्तु मत समझिए

जब हम आपके वोट को ब्रह्मास्त्र और पारसमणि कह रहे हैं तब यह भी आपको समझना होगा कि यह अहस्तान्तरणीय है केवल आपके लिए है कहीं किसी भय या प्रलोभन से या किसी के बहकाने से किसी ऐरे गैरे को झोली मे मत डाल देना—उसी जौहरी की झोली मे डालना जो उसका सही मूल्य पहचानता हो और ईमानदारी से उसका मूल्य चुकाने को तैयार हो

शायद आप कहे कि ऐसा फिरा कर इधर उधर की बाते करने से क्या फायदा ? सीधी साफ बात क्यो नही कहते। आखिर आप कहना क्या चाहते हैं। लीजिए सीधी बात ही कहते है।

चुनावो का घमासान प्रारम्भ हो गया है। इतना बड़ा लोकतन्त्रीय

(शेष पृष्ठ 3 पर)

## हम ...

(शेष पृष्ठ 2 का)

चुनाव संसार मे और कही नही होता। विभिन्न राजनीतिक दलो के उम्मीदवारो के अलावा निर्दलीय उम्मीदवारो की संख्या भी कम नही है। अंधाधुंध पैसा बहाया जा रहा है। लगता है लोकतन्त्र के बजाय पूंजीतन्त्र का महारास हो रहा है। थैलीशाहो की थैलियां खुली हुई हैं। और विदेशो से भी निहित स्वार्थों के लोग पैसा भेजने मे और यहां के लोग उसे प्राप्त करने में पीछे नही है। सरकार का कहना है कि चुनाव पर लगभग 130 करोड रुपये खर्च होगा। पर जानकर इस खर्च का अंदाज 3000 करोड अर्थात तीस अरब रुपये लगाते हैं। फिर जवाहर रोजगार योजना और पंचायती राज के नाम से जो रेवडियां बांट रही हैं वे भी कहीं आसमान से थोडी टपकंगी? करोडो रुपये की दलाली बहुराष्ट्रीय कम्पनियो का विनियोग और नित्य बढती महगाई से होने वाली कमाई भी और कब काम आएगी।

पर प्रश्न फिर वही का वही है। किस पार्टी को वोट दे कोई पार्टी हमारी कसौटी पर खरी नही उतरती। इसलिए किसी पार्टी को वोट देने की बात हमारी समझ मे नही आती। हरेक पार्टी मे भले बुरे दोनो तरह के लोग है। हमारा दृष्टि मे पार्टी के बजाय आप व्यक्तियो पर ध्यान दीजिए। यह मत सोचिए कि अमुक व्यक्ति के जीतने की उम्मीद है इसलिए इसी को वोट देना चाहिए। जीतने की उम्मीद के पीछे अपने सिद्धान्तो और मान्यताओ की अवहेलना मत कीजिए। जय और पराजय गौण बात है। मुख्य बात है—देश का प्रशासन ऐसे व्यक्तियो के हाथो मे आना चाहिए जो अल्पसंख्यको का बहुसंख्यको के हितो को हानि पहुंचा कर भी तुष्टि न कर जो स्वयं भ्रष्टाचार से मुक्त हो और शासनतन्त्र को भ्रष्टाचार से मुक्त कर सके जो साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन न दे और न साम्प्रदायिक दलो से समझौता करे जो देश के सब नागरिको के लिए समान आचार संहिता के पक्षपाती हो जो न दलाली खाए न खाने दे जो भारतीय संस्कृति के मूल तत्वो की रक्षा के लिए सन्नद्ध हो जो देश की एकता और रक्षा के लिए सदा सजग हो जो अपने व्यवहार से जाति प्रथा के उन्मूलन के लिए कटिबद्ध हो और अनुचित आरक्षण को प्रश्रय न दे जो संख्या के बजाय व्यक्तिगत गुणो का और योग्यता को महत्व दे जो दलीय स्वार्थों के स्थान पर निस्वार्थ भाव से राष्ट्र के प्रति समर्पित हो जो देश को पश्चिम का नकलची बनाने के बजाय भारतीय अस्मिता का संचालक बना सके जो विलासिता और नाना व्यसनो में लिप्त होने के बजाय सादगी के जीवन जीने के अभ्यासी हो—आदि आदि।

इस प्रकार यह सूची और काफी लम्बी हो सकती है। सूची को और लम्बा करने की आवश्यकता नही है। मुद्दे का कुछ बात हमने गिना दी हैं आर्यसमाज शुरू से ही मानवीय श्रेष्ठता का अर्थात आर्यत्व का उपासक रहा है। इसलिए अब भी उसे पार्टी के बजाय श्रेष्ठ और सदाचरण वाले व्यक्ति को ही प्राथमिकता देनी चाहिए। सार्वदेशिक सभा ने देश के सामने त्रिसूत्री कार्यक्रम प्रस्तुत किया है—गोहत्याबंदी शराबबंदी और अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी का समर्थन। इन सूत्रो मे आप कुछ और जोड सकते है। जैसे वर्तमान सरकार ने संस्कृत को शिक्षा नीति मे से निष्कासित करने का कुत्सित षड्यन्त्र किया है। अल्पसंख्यकों को आरक्षण के नाम पर नया वर्गभेद पैदा किया है। अल्पसंख्यक आयोग बनाकर समान मानवाधिकार के सिद्धान्त का उल्लंघन किया है। साम्प्रदायिकता को भडका कर स्थान स्थान पर साम्प्रदायिक दंगे करवाए। भ्रष्टाचार और महगाई बढ़ाई है काले धन को प्रश्रय दिया है। नैतिक मूल्यो का अवमूल्यन किया है यह सूची भी कही और लम्बी न हो जाए इसलिए हमारा कहना यही है कि ये कुछ कसौटियो की बात हम कह रहे हैं उन पर हा की मुहर भी लगाएंगे। पर ऐसा तो अभी तक हरेक चुनाव मे होता आया है आप उम्मीदवार के वायदो पर मत जाइए। अपनी कसौटी पर कस कर देखिए हो सकता है कि सभी कसौटियो पर कोई भी उम्मीदवार खरा न उतरे। अब आपको ऐसे व्यक्ति को वोट देना चाहिए जो आपके सिद्धान्तो के अधिक से अधिक अनुकूल हो और जिसके व्यक्तित्व पर आपको सचमुच सत्य और ईमानदारी की छाप दिखाई दे वही व्यक्ति आपके वोट का हकदार है। अन्य नही।

## आर्यसमाज द्वारा रासासिंह को 51 हजार रुपये की थैली भेंट

### गजानन्द आर्य द्वारा पांच हजार रुपये का सहयोग

अजमेर संसदीय क्षेत्र के विजयी प्रत्याशी व आर्यसमाज अजमेर के मन्त्री श्री रासासिंह को अजमेर आर्यसमाज के प्रधान आचार्य दत्तात्रेय आर्य द्वारा चुनाव प्रचार के समय मतदान से पूर्व 51 हजार रुपये राशि भेंट की गई। यह राशि आर्यसमाज के कार्यकर्ताओ द्वारा एकत्र की गई थी। इस राशि मे परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री गजानन्द आर्य का पांच हजार रुपये व आचार्य दत्तात्रेय आर्य का एक हजार रुपये की राशि भी सम्मिलित है।

इस धन संग्रह मे श्री शिवचन्द व श्री किशनलाल शर्मा ने विशेष सहयोग किया।

## आर्य समाज का विरोध क्यो करें ?

मुझे अनेक पत्रो मे यह पढ कर बडा आश्चर्य और दुख हुआ कि दिल्ली मे आयोजित एक गोष्ठी मे स्वामी अग्निवेश ने मनु और उनकी स्मृति का घोर विरोध किया मेरी सम्मति मे मनु का विरोध स्वामी दयानन्द का विरोध करना है क्योकि स्वामी जी ने मनु को धर्म निर्णय मे प्रमाण माना हैं। अन्य शास्त्र भी एक स्वर से कहते हैं— यत् किंचित मनुरवदत् तद् भेषजं अर्थात जो कुछ मनु ने कहा है वह तो औषधि के तुल्य गुणकारी है।

—भवानीलाल भारतीय पंचकूला

## इसाईयो का परावर्तन

पं० कृष्णकान्त आर्य प्रचारक आर्य राष्ट्र शुद्धि समिति रोहतक के प्रयत्नो से 15 वर्ष पूर्व प्रलोभन मे फंसाकर दो चूडा परिवार के आठ सदस्यो को पुनः वैदिक धर्म मे दीक्षित करके इन्हें उनके पूर्व नाम प्रदान किये। आर्य समाज गांधी नगर रोहतक मे सम्पन्न इस कार्य की सर्वत्र सराहना की गई।

—मन्त्री

## ज्वालापुर मे नेत्र चिकित्सा शिविर

श्री आसानन्द भजनीक एवं श्री भगवन्त राय मलिक के प्रयास एवं महाशय धर्मपाल के सौजन्य से दिल्ली के माता चनन देवी नि शुल्क नेत्र चिकित्सालय के नेत्र विशेषज्ञो के पुरुषार्थ से दिनांक 19 10 89 से 26 10 89 तक आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर मे नि शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर सम्पन्न हुआ। उक्त शिविर का उद्घाटन महात्मा आर्य भिक्षु तथा अध्यक्षता श्री हरीशचन्द्र श्रीवास्तव आई ए एस नेकी मुख्य चिकित्साधिकारी थे इस शिविर मे कुल 678 रोगियो के नेत्रो की जांच की एवं 85 रोगियो की सफल शल्य चिकित्सा हुई।

—मन्त्री

## साथियो की जीत

(शेष पृष्ठ 1 का)

प्रथम जिले को पानी की समस्या से छुटकारा दिलाने का प्रयास करेंगे। उन्होने कहा कि किसानो के दस हजार रुपये तक के कर्जे माफ कराए जाने का वायदा भी वे पूरी तरह निभायेंगे। जिले भर मे स्कूल व कालेज शिक्षा की ओर विशेष ध्यान देने अजमेर मे राजकीय छात्रा महाविद्यालय व इंजीनियरिंग कालेज खुलवाने के अतिरिक्त अजमेर विश्वविद्यालय के विस्तार एवं विकास के लिये सतत प्रयत्न करेंगे। श्री रावत ने अजमेर रेजीमेंट (44) को पुन शुरू करवाने का वचन दिया है।

गत दिनो नसीराबाद मे हुए एक दंगे के बाद बन्दी बनाए गए भाजपा के जिला उपाध्यक्ष एडवोकेट वीर कुमार सहित करीब 26 कार्यकर्ताओ के सम्बन्ध मे पूछे जाने पर उन्होने कहा कि प्रशासन या उन्हें बिना शर्त रिहा कर दे अन्यथा मुझे धरने पर बैठना पडेगा।

श्री रासासिंह के विजयी होने मे पूर्व ही उनके निवास स्थान पर बधाई देने पहुंच रहे स्कूली छात्रो को वह गुड बांट कर मुंह मीठा करा रहे थे। मौहल्ले की महिलाएं श्रीमती रासासिंह को बधाई देने उमड पडी।

# रासासिंह आर्य द्वारा दरगाह की जियारत

अजमेर से लोक सभा के विजयी प्रत्याशी तथा डी ए वी सीनियर उच्च तम विद्यालय के प्रधानाचार्य और आर्य समाज के म त्री श्री रासासिंह जी द्वारा अपने चुनाव अभियान के समय यहा की प्रसिद्ध ख्वाजा साहब की दरगाह मे जियारत करने का समाचार पढकर आर्य समाज से सम्बन्धित तथा अन्य अनेक व्यक्तियो द्वारा आश्चर्य और विरोध प्रकट किया गया। और यह माग की गई कि आर्य समाज के प्रधान तथा डी ए वी आदि लगभग एक दर्जन शिक्षण सस्थाओ के निदेशक श्री दत्तात्रेय आय जिनका रासासिंह को सदा से सरक्षण प्राप्त रहा है, इस सबध मे अपनी स्थिति स्पष्ट करे। अत आचार्य दत्तात्रेय ने एक वक्तव्य जारी करके यह स्पष्ट किया है कि वे स्वय इस घटना से अप्रसन्न हैं और सूचित किया कि श्री रासासिंह से मागे गए स्पष्टीकरण के उत्तर मे उन्होंने यह स्वीकार किया है कि चुनाव की विवशता मे उनके द्वारा यह भूल हुई है जिसका उन्हे खेद है।

इस पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए प्रधान दत्तात्रेय आर्य ने कहा कि उन्हे आशा है भविष्य मे रासासिंह जी ऐसा कोई कार्य नही करेंगे जिससे आर्यसमाज और उनके स्वय के बारे मे आक्षेप करने का अवसर उत्पन्न हो और साथ ही आशा व्यक्त की कि आर्य समाज जैसे प्रथम राष्ट्रीय तथा धार्मिक और सामाजिक क्रान्तिकारी आन्दोलन की भट्टी मे तपे हुए रासासिंह जैसे योग्य नवयुवक राजनीति के इस नवीन और व्यापक क्षेत्र मे भी अपनी निष्ठा और ईमानदारी का परिचय देंगे और देश व समाज सेवा का एक उदाहरण प्रस्तुत करेंगे।

निर्वाचनो के समय इस प्रकार के धार्मिक स्थानोंका दुरुपयोगकिये जाने की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि जहा तक उनकी जानकारी है स्वय भारतीय जनता पार्टी की भी यह नीति नही है कि उसके उम्मीदवार कोई ऐसा कार्य किये जाने के लिए विवश किए जाये जो उनकी अपनी धार्मिक मान्यता के विपरीत हो धर्म निरपेक्षता के सही सिद्धान्त को विकृत कर के काग्रेस ने साम्प्रदायिक तुष्टिकरण की जो परम्परा प्रारम्भ की है उसका भारतीय जनता पार्टी के प्रबुद्ध नेताओ ने अभी तक अनुकरण नही किया है। यही कारण है कि अटल जी जैसे उदार नेता भी यहा आने पर दरगाह नही गए और न श्री भैरोसिंह शेखावत जैसे नेताओ ने अपने अजमेर के दौरो मे कभी ऐसा करने की आवश्यकता अनुभव की। आचार्य दत्तात्रेय जी के अनुसार इस प्रकार की जियारत वैसे भी गुनाह बेलज्जल है। रासासिंह जी जिस बडे बहुमत से विजयी हुए है उससे स्पष्ट है कि दरगाह जाने न जाने का उनकी सफलता पर कोई असर नही पडता। अनेक वर्षों से काग्रेस के बडे बडे नेताओ की मिन्नतो के उपरान्त भी ख्वाजा साहब के क्षेत्र तक मे उनकी असफलता इस बात का प्रमाण है।

मुस्लिम मतदाता भी ऐसे नादान नही है कि अपनी धार्मिक और राजनैतिक मान्यताओ के स्थान में वे इस प्रकार के हथकण्डो से प्रभावित हो जाय। उन्होने आगे कहा कि वस्तुत ख्वाजा साहब के प्रति आस्था रखने वालो की दृष्टि से भी यह उन जैसे सूफी सन्तो का अपमान है कि उनसे या उनके मजार मे यह आशा या अपेक्षा की जाय कि परस्पर विरोधी उम्मीदवारो की मिन्नतो मात्र से प्रभावित होकर व किसी एक राजनैतिक दल का पक्षपात पूण समर्थन कर सकते हैं।

स्वाधीनता के बाद और विशेषकर स्व पण्डित नेहरू जी के बाद धर्म निरपेक्षता के स्थान म सर्व धर्म सापेक्षता की इस राजनैतिक होड के कारण ही आज इक्कीसवी शताब्दी मे प्रवेश करने का ढिंढोरा पीटने वाला हमारा यह देश ज्योतिष, मुहूर्त तन्त्र मन्त्र और यहा तक कि नरबलि और नकली भगवानो के दिन प्रतिदिन बढने वाले दकियानूसी और बुद्धिविहीन अन्धविश्वासो के कारण पुन मध्ययुग के उस अन्धकार मे प्रवेश करने लगा है जिसस हम मुक्त करन के लिय अ ग्रेजी शिक्षा और पश्चिमी सभ्यता से अछूते रहकर भी ऋषि दयानन्द ने सबसे पहले प्रयत्न किया था।

## 'उठो उठो हे आर्य सपूतों !'

पथ पर विचलित आज हुआ
जाता क्यो आर्य – समाज ?
जिस पर प्यारी भरत भूमि को,
एक दिन था अति नाज।

सोचो पुन दयानन्द जी ने,
क्यो कर इसे बनाया था ?
त्याग - तपस्या प्रेम धर्म से
सुन्दर इसे सजाया था।

तिमिर धरा का दूर भगाने,
का था, अति उद्देश्य महान।
वेद पथो पर चल कर निखरे
मानव जीवन के प्रतिमान।

दूर दर्द हो जन्म भूमि के
धर्मशील हो प्यारा देश।
दानवता के पद चिन्हो का
भू पर बचे नही अवशेष।

लोभ-मोह मद-मत्सर छूटे—
काम क्रोध का शक्ति विहीन
द्रोह दनुजता नष्ट प्राय हो
जग हो पाखण्डो से हीन।

वेद-भानु की रश्मि उदित हो,
सौम्य तथा सम्यक स्निग्ध।
अभिषिक्तित हो पुण्यधरा यह,
जो है आज अनल सी दग्ध।

वेद ज्ञान की पुण्य पताका
महि मण्डल पर लहराए।
वैदिक धर्म पुन जाग्रत हो,
अवनी का तम दूर भगाए।

मानव मानवता से पूरित
मानवता का रक्षक हो।
साम्य प्रसून खिले भारत मे
मनुज धर्म का रक्षक हो।

वर्णाश्रम की पुण्य व्यवस्था
पुन व्यवस्थित हो जाए।
जाति-पाति का, छूआ-छूत का
दनुज यहा से भग जाए।

बिना किसी भी भेद भाव के,
सबको सम अधिकार मिले।
पावन हो धरती का कण कण
मानवता के पुष्प खिलें।

ऋषिवर का है आर्यसमाज
यह, अपने पथ पर भटक रहा
लोभ-मोह सत्ता लिप्सा के
झगडो मे है अटक रहा।

गद्दी धारी बने आर्य जन,
स्वार्थ हितो ने घेरा है।
आर्य समाजो के घर मे ही
देखो आज अन्धेरा है।

सारे जग को आर्य बनाने
का है लक्ष्य हुआ विस्मृत।
दानवता का नर्तन होता—
लोभ मोह है अति विस्तृत।

दयानन्द के अमर सैनिको,
निद्रा त्यागो! जागो अब।
दानवता के पद चिन्हो हो।
भूमण्डल से भागो अब।

शौर्य-शक्ति-साहस से शोभित
आर्य जनो हे! आज बनो।
राम-कृष्ण के वशज! जागो,
भागो तम के घोर घनो।

उठो! उठो हे आर्य सपूतो।
धरती स्वर्ग बनाना है।
ऋषिवर दयानन्द के स्वप्नो
को साकार कराना है॥

स्वत्वाधिकारी आर्यसमाज अजमेर के लिए प्रकाशक एव सपादक रासासिंह हेतु रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्य प्रिन्टर्स बाबू मौहल्ला केसरगज, अजमेर मे मुद्रित एव आर्य समाज भवन, अजमेर से प्रकाशित।

ओ३म्

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सदा उद्यत रहना चाहिए।

—महर्षि दयानन्द

# आर्य पुनर्गठन

आर्यसमाज, अजमेर का हिन्दी पाक्षिक पत्र

आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सकल जगत् को आर्य बनाएं।

हमारा उद्देश्य :
समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होनेवाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष : 6 शुक्रवार 15 दिसम्बर 1989 अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात्। संवत् 2046

अंक : 22 प स -4338/84 अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु। वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60

## आखिर आरक्षण का विरोध कितना सही है ?

—वीरेन्द्र कुमार आर्य—

उत्तरप्रदेश के एक नगर में चला आरक्षण विरोधी आन्दोलन एक सप्ताह से भी कम समय में कई प्रदेशों की सीमाओं को लांघ गया है। यह पंक्तियां लिखे जाने तक उत्तर प्रदेश के अतिरिक्त राजस्थान व बिहार में आरक्षण विरोधी आन्दोलन उग्र रूप धारण कर चुका है और प्राप्त समाचारों के अनुसार आगामी सप्ताह में अन्य कई प्रदेशों में भी आरक्षण विरोधी आन्दोलन के जोर पकड़ने की पूरी संभावना है।

देश के स्वतन्त्र होने पर जातीय आधार पर एक विशेष उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए दस वर्ष के लिए अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के लोगों के लिए आरक्षण की व्यवस्था की गई थी लेकिन बाद में राजनेताओं ने क्षुद्र स्वार्थों के लिए आरक्षण के इस मुद्दे के नाम पर अपनी रोटियां सेंकनी आरम्भ कर दी। मतलब ये कि क्षुद्र राजनीति के खेल में हर राजनीतिक पार्टी और नेता एक दूसरे को पीछे छोड़ने की कोशिश में रहा और आरक्षण की निर्धारित दस वर्ष की अवधि हर बार आगामी दस वर्ष तक के लिए बढ़ती रही। इस बीच किसी भी राजनैतिक दल पार्टी या इनके नेता विशेष ने कुछ भी सोचने का विचार नहीं किया। किसी ने ईमानदारी से आरक्षण नीति के सम्बन्ध में विचार करने की आवश्यकता महसूस नहीं की। जबकि आरक्षण के प्रथम बीस वर्षों के तुरन्त बाद इसकी अवधि बढ़ाने जाने से पूर्व गम्भीरता पूर्वक विचार विमर्श किए जाने की महती आवश्यकता थी।

यह सत्य है कि लम्बे समय तक देश की तथाकथित सवर्ण जातियों ने पिछड़े वर्गों की जातियों का सामाजिक एवं आर्थिक शोषण किया और स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद उसे आरक्षण द्वारा आगे बढ़ने का विशेष अवसर दिया जाना पूर्णतया उचित था। यों निर्धारित आरक्षण नीति को दोषरहित नहीं कहा जा सकता। लेकिन बाद में आरक्षण की इस नीति की कालावधि बढ़ी ही देश व समाज में उभरी जातीय विषमता की जनक है।

यह भी एक विशेष उल्लेखनीय तथ्य है कि जातीय विषमता की खाई को चौड़ा करने में आरक्षण नीति का प्रमुख हाथ रहा है। समानता के नाम पर असमान करने की यह अपने आप में एक मिसाल है। अब वोटों की राजनीति करने वालों को इतना सब सोचने की फुर्सत कहां है।

सन् 1981 में अहमदाबाद के बी. जे. मेडिकल कालेज में कुछ पोलियो ग्रसित छात्रों के प्रवेश को लेकर एक छोटा-सा विवाद हुआ था जिसने आगे चलकर विकराल जातीय युद्ध का रूप ले लिया। इसके फलस्वरूप भड़के दंगों से 42 व्यक्ति अपनी जान गवा बैठे, सैकड़ों घायल हुए। शनैः शनैः यह जातीय युद्ध गुजरात ही नहीं, अपितु अन्य प्रदेशों जैसे राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र तथा मध्यप्रदेश में भी फैल गया। मेडिकल कालेज के छात्रों ने उन नियमों के विरुद्ध आन्दोलन छेड़ दिया, जिनके तहत मेडिकल कालेज में केवल 'आरक्षित समुदाय' के छात्रों का ही प्रवेश हो रहा था। यह आन्दोलन प्रदेश की सभी शिक्षण संस्थाओं एवं कुछ सम्बन्धित राजकीय संस्थाओं में भी प्रभावी हो गया जिसमें आरक्षण कानून के नियमों के अन्तर्गत ही प्रवेश या अन्य कार्य सम्पन्न होते थे। छात्रों ने दंगे, आगजनी, बलात्कार, तोड़फोड़, हड़ताल बन्द आदि माध्यमों से 182 दिन तक इस जातीय दंगे का ताण्डव जारी रखा।

× × × × ×

वर्तमान समय में विभिन्न शिक्षा, सरकारी तथा अन्य संस्थानों में केवल जाति विशेष को अतिरिक्त अधिकार दिये गये हैं। विभिन्न प्रदेशों में इन वर्गों के लिए 2 प्रतिशत से लेकर 80 प्रतिशत तक आरक्षण दिया जाता है। महाराष्ट्र में 80 प्रतिशत, तमिलनाडु में 50 प्रतिशत, केरल में भी 58 प्रतिशत, कर्नाटक में 66 प्रतिशत, गुजरात में 31 प्रतिशत, आन्ध्रप्रदेश में 30 प्रतिशत, पंजाब में 25 प्रतिशत, जम्मू-कश्मीर में 50 प्रतिशत, बिहार में 26 प्रतिशत, उत्तर प्रदेश में 15 प्रतिशत, हरियाणा में 12 प्रतिशत, हिमाचल-प्रदेश में 5 प्रतिशत।

आज आरक्षण नीति पर पुनर्विचार की आवश्यकता है। सामाजिक आधार पर आरक्षण देना समाज के तथाकथित उच्च वर्ग के साथ तो अन्याय है ही साथ ही कृपाराम पूनिया व स्व जगजीवनराम जैसों के वंशजों को अनुसूचित जाति व अनुसूचित जाति के कमजोर लोगों से पक्षपात करने का अधिकार प्रदान करता है। आज पिछड़ी जातियों के लाखों संख्या में ऐसे व्यक्ति हैं जो आरक्षण का भरपूर उपयोग कर उच्च वर्ग की पात्रता प्राप्त कर चुके हैं और साथ ही कथित उच्च वर्ग के लाखों लोग पिछड़े वर्ग का कहलाने की स्थिति में पहुंच चुके हैं।

ऐसी अवस्था में सभी राजनैतिक दलों को समस्या की वास्तविकता को समझते हुए आरक्षण नीति को सामाजिक आधार के स्थान पर आर्थिक आधार पर निर्धारित करना चाहिए। यह तय है कि ऐसे फैसले से एकबारगी कांशीराम जैसे तथाकथित दलित नेता को बल मिलने का खतरा है लेकिन देश और समाज हित में सभी राजनीतिक पार्टियों को इस खतरे से डरना नहीं चाहिए। बेहतर तो यह रहेगा कि स्वयं आरक्षण का लाभ उठाने वाली जातियों के अन्दर ही इसमें परिवर्तन के समर्थन में जनमत बनाया जाए।

निदेशक : दत्तात्रेय आर्य प्रबन्ध सम्पादक : रासासिंह सम्पादक : वीरेन्द्र कुमार आर्य [illegible] कार्या 21010

कुरीति दहेज

# नारी की शत्रु क्या नारी नहीं है ?

—प्रेमकपूर

घटना बहुत पुरानी नहीं है, जब कानपुर में तीन बहनों ने सामूहिक आत्महत्या कर ली। यही घटना एक बार फिर चण्डीगढ में दोहराई गई। पिछले साल केवल पश्चिम बंगाल मे 629 युवतियो की हत्या कर दी गई। और इन सारी हत्याओं-आत्महत्याओं का कारण था—दहेज। आये दिन पत्र-पत्रिकाओं मे देश के विभिन्न हिस्सो मे ऐसी खबरे आती रहती है और सुर्खियो मे छपती रहती हैं।

बुरहानपुर (मध्य प्रदेश) मे तो एक ऐसा हादसा हुआ जिसने पूरी मानवता को ही कलंकित कर दिया। 5 वर्ष पूर्व निर्मला का विवाह अशोक जायसवाल से हुआ था। विवाह के वक्त पर वर पक्ष ने दहेज की माग की थी। जिसे निर्मला के पिता मुन्नालाल जायसवाल ने पूरा करने का आश्वासन दिया था। सयोग से इस बीच बुरहानपुर ताप्ती मिल्स मे आग लग जाने के कारण उन की नौकरी जाती रही। निर्मला साल भर ससुराल रही, जहा उसने एक पुत्र राहुल को जन्म दिया। माग पूरी न होने के कारण उसे ससुराल से निकाल दिया गया। चार साल वह अपने पिता के घर रही। बाद मे समाज से कुछ लोगो के बीच बचाव से उसे वापस ससुराल भेज दिया गया। ससुराल मे उसे तो यातनाये दी ही जाती रही उसके पुत्र राहुल जो सम्पत्ति का वारिस था को राह से हटाने की तरकीबे की जाने लगी। गत 15 जुलाई को कहते है अशोक जायसवाल ने अपने अबोध शिशु पुत्र राहुल को जहर देकर मार डाला।

यह और ऐसी ही अन्य घटनाये हमे सोचने को विवश करती हैं कि यह कैसी रीति है जो व्यक्ति को मनुष्य से पिशाच बना देती है, छीन लेती है उस की मानव जनित सवेदना।

सुनते आये थे कि मनुष्य वही है जो दूसरो के लिये जिये और मरे। विपरीत इसके दहेज के इस दानव ने मनुष्य को इतना आत्म और अर्थ केन्द्रित कर दिया है कि वह मनुष्य ही नही रहा निरा पशु हो गया है।

कहने को हमने बहुत प्रगति कर ली है, दहेज लेने और देने के खिलाफ कानून भी बना दिये है। बावजूद इसके दहेज एक गलित कुष्ठ की तरह हमारे समाज मे विद्यमान है। हमारी प्रगति पर प्रश्नचिन्ह लगा रहा है। जो कुरीति दो सौ तीन सौ साल पहले दूर हो जानी चाहिये थी हम आज भी उसे ढोये जा रहे हैं। आज भी पुत्र-जन्म पर कासे के थाल बजाये जाते है और पुत्री होने पर मातम मनाया जाता है क्योकि पुत्री का अर्थ है विशाल दहेज की राशि।

स्त्री जब तक पिता, पति व पुत्र के त्रिकोण की शरणार्थी बनी रहेगी, यो ही जलती रहेगी, आत्महत्या करती रहेगी। इसलिये आज स्त्री को अपनी अस्मिता, अपनी पहचान खोजनी होगी। आर्थिक रूप से आत्म-निर्भर होना होगा। अपनी अस्मिता को प्रतिष्ठित करना होगा। यह सही है कि आज के सन्दर्भो मे भारतीय नारी जागृति का शखनाद करने लगी है परन्तु यह प्रक्रिया अभी अधूरी है। यदि पूर्ण हो गई होती तो दहेज जैसे कोढ से समाज मुक्ति पा चुका होता।

दुर्भाग्य तो इस बात का है कि दहेज के खिलाफ नारी के सघर्ष मे कही कही स्वय नारी ही बाधक है। वधू-दहन के जितने भी मामले प्रकाश मे आये लगभग प्रत्येक मे बहू को जलाने मे सास ने अहम भूमिका निभाई। यह एक ऐसा तथ्य है जिस पर नारी वर्ग को गम्भीरता से सोचना है। सास यह क्यो भूल जाती है कि वह स्वय भी एक नारी है।

दहेज सरीखे अभिशाप के विरुद्ध समाज के युवको की भूमिका पर दु:ख भी होता है और आश्चर्य भी। यह सही है कि कुछ प्रगतिशील युवक हैं जो नीतिगत रूप से दहेज लेना और देना उचित नही मानते और अपने परिवारो पर दहेज लेने और देने के खिलाफ दबाव डालते है। किन्तु ऐसे युवको की सख्या बडी सीमित है। अधिकतर युवक अपने शादी-विवाह पर आज्ञाकारी बालक बन जाते हैं और अपने माता-पिता द्वारा दहेज की माग पर कोई आपत्ति नही उठाते। दरअसल पहल इस युवक वर्ग को ही करनी होगी।

हम अपनी रुग्ण मानसिकता को त्यागने को जब तक तत्पर नही होंगे, तब तक यह कोढ समाज से दूर नही किया जा सकता और तब तक कानपुर हो या चण्डीगढ की बहनो की सामूहिक आत्महत्या हम एक मूक दर्शक बनकर देखते व सुनते रहेगे। हमे एक व्यापक सघर्ष करना होगा समाज से, समाज के ठेकेदारो से और कभी-कभी स्वय अपने आपसे भी।

साथ ही नारी वर्ग को भी आत्महत्या जैसे घृणित मार्ग से निकल कर अबला की जगह सबला बनना होगा। अपने सम्मान व गौरव की रक्षा के लिये समाज से जूझना होगा। दहेज के लोभियो व सफेदपोश दरिंदो को सबक सिखाने के साथ ही इनका सामूहिक सामाजिक बहिष्कार करना होगा अन्यथा दहेज की बलिवेदी पर चढाई जाने वाली बहनो की हत्याओ मे आप और हम सभी परोक्ष रूप से हिस्सेदार होगे।

## दहेज की नई जननी : आज की शिक्षा

लेखक दहेज के खिलाफ और स्त्री के पक्ष मे बहुत लिखते हैं, लेकिन आज की शिक्षा और प्रमाणपत्रो के पीछे वे स्वय पागल रहते है। आज की शिक्षा निरन्तर बोझिल, पाखडी और खर्चीली होती जा रही है। मा बाप अनापशनाप तरीको से अपनी सतान को पढाना, नौकरी मे लगाना या पढाई का केवल आर्थिक लाभ उठाना चाहते हैं। फलत पढाने और पढने वाले सभी पाखडी होते जा रहे हैं। पब्लिक स्कूलो मे तो फीसो, वर्दियो, दिखावो मे बहुत पैसा लगता है। यह पैसा भ्रष्ट तरीको से आता है। ये लोग दहेज जैसी पारम्परिक चीज को पाखड या कुरीति कैसे मान सकते हैं ? डाको मे व्यस्त समाज चोरी का विरोध क्यो करे ? क्या लेखक इस समाज के ढकोसलो मे प्राय सहयोगी नही है ? •—अशेष

## स्वामी सत्य प्रकाश जी का आपरेशन सफल

आर्य समाज के मूर्धन्य सन्यासी श्री स्वामी सत्य प्रकाश जी अकस्मात पेशाब रुक जाने के कारण तजानिया का कार्यक्रम बीच मे छोडकर विमान से सितम्बर को सीधे बम्बई आ गए थे। वहा के प्रसिद्ध हिन्दूजा अस्पताल मे उन्हे भरती करवा दिया गया। बम्बई के प्रसिद्ध सर्जन डा श्रीनिवास ने उनकी पौरुष ग्रन्थि का सफलता पूर्वक आपरेशन किया। स्वामी जी अभी कुछ दिन तक अस्पताल मे ही रहेगे। बम्बई की सभी आर्यसमाजो और स्वामी के भक्त आर्यजन तन, मन धन से उनकी सेवा मे लगे है।

पत्र व्यवहार आर्यसमाज सान्ता-कुज बम्बई-54 के द्वारा किया जा सकता है।

ओकारनाथ आर्य, प्रधान
—आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई

## दयानन्द सेवाश्रम बरबतपुर मध्य प्रदेश मे गायत्री-महायज्ञ सम्पन्न

दिनाक 5-10-89 से 15-10-89 तक आदिवासियो के बीच एक महान यज्ञ का आयोजन ब्रह्मचारी जितेन्द्र के सयोजन मे किया गया जिसके ब्रह्मा ब्रह्मचारी सीकरत वाचस्पति थे। यह स्थान ईसाई बाहुल्य का क्षेत्र है जहा जनवरी 86 से ब्रह्मचारी जितेन्द्र शुद्धि कार्य मे लगे हैं।

## आर्यसमाज भिवडी के बाल मदिर का उद्घाटन

दिनाँक 1-9-89 को थाने जनपद (महाराष्ट्र) का उपनगर भिवडी के आर्यसमाज द्वारा आयोजित बाल मन्दिर का शुभारम्भ यज्ञ के द्वारा प ब्रह्मानन्द जी "आजाद" के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ। इस शुभ कार्य हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई ने आर्य समाज भिवडी को जो कि सभान्तर्गत है 1500 रुपये की सहायता राशि प्रदान की।

—धर्मवीर गुलाटी (मन्त्री)

**मेरी अमेरिका यात्रा के संस्मरण**

# हवाई यात्रा की आशंकाएँ और आनन्द

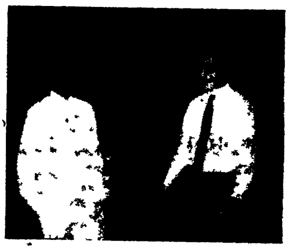
—दत्तात्रेय वाब्ले

**आर्यसमाज अजमेर के प्रधान, शिक्षाविद् दत्तात्रेय जी ने अमेरिका के मार्शल विश्वविद्यालय के निमन्त्रण पर लगभग तीन माह का विदेश प्रवास किया। इस अंक से हम उनके यात्रा सस्मरणों का धारावाहिक रूप से प्रकाशन आरम्भ कर रहे हैं। —स**

11 अगस्त से 14 अक्टूबर सन् 1989 तक मैं वेस्ट वर्जीनिया नामक अमेरिका के एक पूर्वी राज्य के मार्शल विश्वविद्यालय मे 'विजिटिंग स्कोलर' अर्थात् निमत्रित विद्वान के रूप मे गया था।

ये मेरी तीसरी अमेरिका यात्रा थी। सबसे पहले सन 1956 मे मैं भारत और अमेरिका के बीच तत्कालीन सास्कृतिक आदान-प्रदान समझौते के अन्तर्गत वहा की सरकार के निमत्रण पर गया था। उसकी सारी व्यवस्था और व्यय अमेरिकन सरकार ने ही वहन किया था।

तीन महीने मे अधिक की यात्रा मे मुझे अमेरिका जैसे विशाल देश के [पूर्व पश्चिम, उत्तर और दक्षिण सब स्थानो पर जाने का अवसर मिला। लौटने पर मैंने अपने सस्मरणो के आधार पर अग्रेजी म पुस्तक "The Two Way Traffic" नाम से प्रकाशित की थी। इसी प्रकार वहा के विश्वविद्यालयो धार्मिक और सामाजिक सगठनो तथा अन्य जहा-जहा भी मेरा कार्यक्रम निर्धारित किया गया था, वहा मैंने भारत तथा उसकी तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक स्थिति के सम्बन्ध मे जो कुछ विचार व्यक्त किये जिनका मुख्य आधार, ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज] की] विचार धारा था, उनका सकलन उन्हे मेरी दूसरी अग्रेजी पुस्तक 'Introduction To Modern India" मे प्रकाशित किया गया था। अमेरिका जाने वाले भारतीयो और विशेषकर विद्यार्थियो के लिये उन दोनो पुस्तको की उपयोगिता के कारण देहली स्थित अमेरिका दूतावास के सूचना विभाग ने इन दोनो पुस्तको की अनेक प्रतिया खरीदकर उन्हे वितरित किया था। दुर्भाग्य से गत 33 वर्षों की अवधि के बाद अब ये पुस्तके बिक्री के लिये उपलब्ध नही रही।



आचार्य दत्तात्रेय वाब्ले के साथ उनकी यात्रा व उनके कार्यक्रम के प्रायोजक एव मार्शल विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष श्री डेन मेन।

## दूसरी यात्रा

दूसरी बार मैं सन् 1983 मे अपनी पृथ्वी प्रदक्षिणा 'Round the World") यात्रा कार्यक्रम मे यूरोप होता हुआ अमेरिका गया और दो महीने वहा के अनेक राज्यो शिक्षण सस्थाओ आदि मे कार्यक्रम पूरा करने के बाद जापान, थाईलैण्ड, हागकाग और सिंगापुर आदि देशो म थोडे समय ठहरकर लौटा। इच्छा होने पर भी अपनी इस दूसरी यात्रा के सस्मरण व्यस्तता के कारण मैं प्रकाशित नही कर सका।

## वर्तमान तीसरी यात्रा

मैं इस लेखमाला मे केवल अपनी तीसरी यात्रा के ताजा सस्मरण का ही उल्लेख करना चाहता हू —

### (1) हवाई यात्रा की आशकाएँ

आजकल वायुयान से यात्रा और विशेषकर विदेश म, एक साधारण सी बात समझी जाती है। हमारे देश मे काफी सख्या मे लोग वायुयान से यात्रा करते हैं। किन्तु जिन्हे वायुयान से यात्रा करने का अवसर नही मिला है, उन्हे इन यात्राओ की कठिनाईयो शकाओ और अच्छे-बुरे अनुभव के बारे मे जानने की उत्सुकता रहती है। सन् 1956 मे स्वय मुझे भी अनेक प्रकार की आशकाओं और अप्रत्याशित अनुभवो का सामना करना पडा। वायुयानो की दुर्घटनाओ के समाचार अन्य रेल आदि वाहनो की यात्राओ मे हुई दुर्घटनाओ से अधिक विभत्स और भयभीत करने वाले होते हैं। मेरे मित्रो और सम्बन्धियो ने इसीलिये जब मेरी सुरक्षा के सम्बन्ध मे अनेक चिन्ताएँ प्रकट की तो उसकी प्रतिक्रिया मुझ पर भी हुई और क्योकि मेरी यह पहली हवाई यात्रा थी इसलिये मैंने यथासभव प्रयत्न किया कि कम से कम अमेरिका पहुचने के बाद वहा की यात्राएँ मुझे वायुयान द्वारा न करनी पडे। किन्तु मेरे कार्यक्रमो और यात्राओ का आयोजन करने वालो न मुझे सचेत किया कि ऐसी स्थिति म मैं अमेरिका जैसे विशाल देश को देखने वहा आयोजित कार्यक्रमो म भाग लेने म सफल नही हो सकता। परिणाम स्वरूप उन तीनो महीनो की यात्रा भी मुझे वायुयान से ही करनी पडी और धीरे-धीरे हवाई यात्रा सबधी मेरी आशकाओ की स्मृति धूमिल होती गई और मैं तब से एक बार हवाई जहाज मे बैठने के बाद इस सबध मे सर्वथा निश्चिन्त होकर हवाई यात्रा की विचित्रता विशेषता और आनन्द को अनुभव करने का आदी हो गया हू। वैसे प्रत्येक यात्रा से पूर्व हवाई अड्डो पर दुर्घटना की सम्भावना को ध्यान म रखकर जीवन बीमा कराने का प्रबन्ध होता है। विदेशो मे वो सर्वथा और सरल यान्त्रिक प्रणाली से किया जाता है और नाम मात्र की राशि देकर हजारो लाखों रुपये या डालरा के बीमा के कागजात प्राप्त किय जाते हैं। उदाहरण के लिये मशीन के अन्दर भिन्न-भिन्न राशियो की पालिसियाँ रखी हुई होती है और 5 डालर से लेकर 20-25 डालर के नोट उस मशीन म डालकर अपेक्षित छोटी या बडी राशि की पालिसी मशीन मे से निकलकर आपके हाथ मे आ जाती है। उसे उसी समय वहा स्थित लेटर बॉक्स मे अपने सम्बन्धियो को भेजने की भी व्यवस्था होती है।

### (2) विस्फोट और हाईजेकिंग

गत कुछ वर्षों से हवाई जहाजो मे बम विस्फोट तथा आतकवादियो द्वारा पिस्तौल की नोक पर उसे अन्यत्र ले जाये जाने की घटनाये हम अक्सर समाचार पत्रो मे पढते है। इससे पूर्व भी वायुयान की खराबी अथवा चालक की भूल के कारण ऐसी दुर्घटनाओ मे प्राय समस्त यात्रियो को जान से हाथ धोना पडा है। मुझे स्मरण है कि मेरी ऐसी ही वायुयात्रा के अवसर पर हवाई जहाज म जो समाचार पत्र पढने को दिये गये उनमे वहा के प्रसिद्ध ग्राड केनियन के ऊपर से आने वाले दो हवाई जहाजो की टक्कर का साधारणत अनहोना समाचार पढने को मिला। उस समय मैंने देखा कि मेरे कई सहयात्री आख मीचकर प्रार्थना या ईश्वर स्मरण करने लग गये। अस्तु।

### अज्ञात यात्री

इस बार भी इस प्रकार की घटनाऐ घटी है। मैं देहली से 9 अगस्त 1989 ई को अपनी धर्मपत्नी सहित ब्रिटिश ऐयरवेज के वायुयान मे इस आश्वासन से बैठा कि समय के अन्तर के आधार पर मैं 10 तारीख की प्रात ही लन्दन पहुच जाऊ किन्तु जैसे ही वायुयान न उडान भरने के लिय अपने दरवाज बन्द किये वैसे ही लाउडस्पीकर पर यह घोषणा की गयी कि वायुयान मे कोई ऐसा व्यक्ति बैठा है जिसन अपना सूटकेस बिना जाच कराये विमान मे रखा है। अत वह कृपया विमान चालक से फौरन मिल।

किन्तु बार-बार की घोषणा के बाद भी कोई व्यक्ति उठकर नही गया। अन्त मे सब यात्रियो को विमान मे उतारा गया और जिस-जिस न अपने सूटकेस आदि को स्वीकार किया उन्हे बारी-बारी से दुबारा यान म रखे जाना लगा और जो सूटकेस सदिग्ध पाया गया या किसी ने नही पहचाना उसे पुलिस को सौंप दिया गया। इस सारी प्रक्रिया मे जहा अनेक यात्रियो म भय और शकाये उत्पन्न हुई वही हमारा वायुयान लगभग चार घन्ट देरी से रवाना हो सका।

(क्रमश)

# वैदिक शोध कार्य के लिए अपील

श्रीमद् दयानन्द वेद विद्यालय गुरुकुल गौतमनगर के वार्षिकोत्सव में 26 नवम्बर को गुरुकुल के संस्थापक श्री स्वामी सच्चिदानन्द योगी के अभिनन्दन के अवसर पर स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती ने गुरुकुल में एक सक्षम शोधपीठ की स्थापना के लिए 50 लाख रु की स्थिर निधि के लिए अपील की। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज और वैदिक वाङ्मय के यत्रतत्र बिखरे शोधकार्यों को एक स्थान पर केन्द्रित करके 5 विद्वानों को उचित मानदेय देकर रखा जाए और उसी केन्द्र की ओर से ग्रन्थ प्रकाशित हों। इसके लिए उन्होंने अपना पुस्तकालय और एक लाख रु देने की घोषणा की। स्वामी ओमानन्द जी और स्वामी दीक्षानन्द जी ने भी भरपूर सहयोग देने की घोषणा की।

3 दिसम्बर को अथर्ववेद के मन्त्रों से महायज्ञ की पूर्णाहुति हुई। दिल्ली की अनेक आर्यसमाजें उपस्थित थी। इसी अवसर पर स्वामी आनन्दबोध जी ने प्रसिद्ध पत्रकार, आर्य विद्वान प क्षितीश वेदालंकार द्वारा सम्पादित **"आर्य परम्परा के गौरव-गुरु : स्वामी सच्चिदानन्द योगी"** अभिनन्दन ग्रन्थ का विमोचन किया।

## आर्यसमाज शिक्षा सभा, अजमेर

### आवश्यकता

(1)

विरजानन्द सीनियर हायर सैकण्ड्री विद्यालय हेतु एक व्याख्याता (स्कूल शिक्षा) नागरिक शास्त्र-योग्यता—एम ए (राजनीति शास्त्र) तथा बी एड वेतन श्रृंखला 1490-3050 तथा देय महगाई भत्ता। आवेदन मन्त्री के नाम 10/- के निर्धारित प्रपत्र पर शीघ्र प्रस्तुत करें।

### आवश्यकता

(2)

सूर्यदेव सैकण्डरी विद्यालय हेतु एक द्वितीय ग्रेड गणित अध्यापक—योग्यता—बी एस सी (गणित विषय सहित) तथा बी. एड.—वेतन श्रृंखला 1140 से 2250 तथा देय महगाई भत्ता। अनुभवी तथा उच्च योग्यताधारी को प्राथमिकता। आवेदन 10/- के निर्धारित प्रपत्र पर मन्त्री के नाम शीघ्र प्रस्तुत करें।

### आवश्यकता

(3)

स्टेनोग्राफर एक—योग्यता हायर सैकण्डरी तथा किसी मान्यता प्राप्त संस्थान से आशुलिपि में डिप्लोमा। वेतन श्रृंखला 1140 से 2250 तथा देय महगाई भत्ता। आवेदन 10/- के निर्धारित प्रपत्र पर मन्त्री के नाम शीघ्र प्रस्तुत करें।

### आवश्यकता

(4)

विरजानन्द प्राईमरी विद्यालय हेतु दो सहायक अध्यापक-योग्यता-हायर सैकण्डरी व एस टी सी वेतन वेतन श्रृंखला—880 से 1680 तथा देय महगाई भत्ता। अनुभवी को प्राथमिकता। आवेदन 10/- के निर्धारित प्रपत्र पर मन्त्री के नाम शीघ्र प्रस्तुत करें।

### आवश्यकता

(5)

संगठन सचिव—योग्यता स्नातक एवं कम से कम पाच वर्ष का वरिष्ठ लिपिक का अनुभव। वेतन श्रृंखला—1400 से 2825 तथा देय महगाई भत्ता। उच्च योग्यताधारी एव अनुभवी को प्राथमिकता। आवेदन मन्त्री के नाम 10/- के निर्धारित प्रपत्र पर शीघ्र प्रस्तुत करें।

## समाचार

### वैदिक परीक्षाओं की उपाधियां वितरित

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट करतारपुर की ओर से संचालित वैदिक परीक्षाएं 30 सितम्बर 1989 को आर्ष सम्मेलन में महाविद्यालय के आचार्य के तत्वावधान में सम्पन्न हुई। एक छात्र का यजुर्वेदी' तथा पाच छात्रों का पाणिनीय' उपाधियां, पुरस्कार एव कम्बल प्रदान किये गये। ये उपाधियां और पुरस्कार प्रतिवर्ष वेद संहिताओं तथा अष्टाध्यायी कण्ठस्थ करने वाले छात्रों को दी जाती हैं।

### टंकारा में निर्वाणोत्सव

महर्षि दयानन्द सरस्वती का 106 वा निर्वाण दिवस उनके जन्मस्थान टंकारा में 28 अक्टूबर 1989 को सोत्साह मनाया गया। इस अवसर पर उपदेशक महाविद्यालय टंकारा के छात्र, अध्यापक एव अन्य अनेक मान्य विद्वान् उपस्थित थे। महर्षि को श्रद्धांजलि अर्पित की गई और अगले दिन गुजरात की परम्परा के अनुसार स्नेह मिलन का आयोजन किया गया।

### यजुर्वेद ब्रह्मपारायण यज्ञ

12 नवम्बर से 3 दिसम्बर 1989 तक गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली में स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन हुआ। इस अवसर पर योग साधना शिविर का आयोजन भी किया गया।

### वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज ऊना का वार्षिकोत्सव 8-9-10 दिसम्बर 1989 को डी ए वी स्कूल ऊना के प्रांगण में मनाया गया है। इस महोत्सव पर वेदों के तथा आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान पधार कर अपने मनोहर प्रवचनों द्वारा सार्वजनिक रूप से सम्बोधित किया।

### श्री देवीदास आर्य का सफल आपरेशन

प्रख्यात महिला उद्धारक केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य के रीढ़ की हड्डी का लखनऊ में सफल आपरेशन होने के पश्चात [illegible] मोतीझील कानपुर में भव्य स्वागत किया गया।

सम्पूर्ण की अध्यक्षता श्रीमती लीलावती ग्रोवर (प्रधाना) ने की।

—मन्त्री, केन्द्रीय आर्य सभा, कानपुर

### दयानन्द बाल सदन, अजमेर
## आचार्य की आवश्यकता

दयानन्द बाल सदन अजमेर जिसमें 150 बालक-बालिकाएं हैं, उसके लिये एक निष्ठावान 45 से 55 वर्ष आयु के आर्य विद्वान आचार्य की आवश्यकता है। प्रारम्भिक वेतन 1445/-, वेतन श्रृंखला 1120-2050 नि शुल्क आवास तथा बिजली पानी की सुविधा। आवेदन मन्त्री के नाम शीघ्र प्रस्तुत करें।

## आर्यसमाज अजमेर द्वारा प्रकाशित साहित्य

### प्रो. दत्तात्रेय आर्य द्वारा लिखित पुस्तकें

1 देश, धर्म और हिन्दू समाज को आर्यसमाज की देन—मूल्य 0 50 पैसे
2 हमारी राष्ट्रीयता का आधार—मूल्य रु 1 00
3 विद्यार्थियों के लिए आचार संहिता—मूल्य 0 50 पैसे
4 दी आर्यसमाज हिन्दू विदाउट हिन्दुइज्म (अंग्रेजी)—विशेष रियायती दर रु 75 00
5 आर्यसमाज हिन्दू धर्म का सम्प्रदाय नही-मूल्य—50 00 रु
6 आर्यसमाज दी मोस्ट पावरफुल मूवमेंट (सा दे सभा द्वारा प्रकाशित)—रु 5 00

### दयानन्द शोधपीठ के प्रकाशन

1 दयानन्द कथा संग्रह मूल्य रु 3 00
2 महर्षि दयानन्द पत्रों के दर्पण में रु मूल्य 50.00

### अन्य प्रकाशन

1 धर्म शिक्षा (भाग 1 से 11 तक) पूरे सैट का मूल्य रु 32 00
2 परिचय निर्देशिका (समस्त देश-विदेश की आर्य शिक्षण संस्थाओं का परिचय)—मूल्य रु 12,00
3 आर्यसमाज (हिन्दी) मूल्य सजिल्द रु 20 00 अजिल्द रु 16.00 ले. लाला लाजपतराय

## सत्यार्थ-प्रकाश ग्रन्थ माला 15 भाग

(प्रत्येक समुल्लास पर स्वतन्त्र ट्रैक्ट)

1—ईश्वर एक नाम अनेक
2—आदर्श माता-पिता
3—शिक्षा और चरित्र निर्माण
4—गृहस्थाश्रम का महत्व
5—सन्यासी कौन और कैसा हो ?
6—राज्य व्यवस्था
7—ईश्वर और वेद
8—जगत् की उत्पत्ति
9—स्वर्ग और नरक कहा है ?
10—चौके चूल्हे में धर्म नहीं
11—हिन्दू धर्म की निर्बलता
12—बौद्ध और जैन मत
13—वेद और ईसाई मत
14—इस्लाम और वैदिक धर्म
15—सत्य का अर्थ तथा प्रकाश

विशेष—सभी ट्रैक्ट आर्य जगत् के चोटी के विद्वानों के द्वारा लिखित हैं एव ग्रन्थमाला का सम्पादन आर्यसमाज अजमेर के प्रधान प्रो दत्तात्रेय जी आर्य ने किया है। ग्रन्थमाला के सैट का मूल्य 8/- रुपये है।

स्वत्वाधिकारी आर्यसमाज अजमेर के लिए प्रकाशक एव संपादक रासासिंह हेतु रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्य प्रिन्टर्स बाबू मोहल्ला केसरगंज, अजमेर में मुद्रित एव आर्य समाज भवन, अजमेर से प्रकाशित।

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सदा उद्यत रहना चाहिए।

-महर्षि दयानन्द

ओ३म्

# आर्य पुनर्गठन

आर्यसमाज, अजमेर का हिन्दी पाक्षिक पत्र

'आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म।।'

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सकल जगत् को आर्य बनाए।

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होनेवाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष · 6 शनिवार 30 दिसम्बर 1989 अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात्। सवत 2046
अक 23 प स -4338/84 अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु। वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60 पैसे

बलिदान दिवस पर विशेष

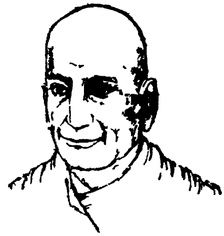
## राष्ट्रमूर्ति श्रद्धानन्द

—क्षितीश वेदालंकार—

सन् 1857 की प्रथमक्रान्ति को विफल करने मे जिन लोगो ने अंग्रेजो का साथ दिया था, उसके बारे मे तत्कालीन शासको की यह धारणा बनी कि भविष्य मे यही लोग भारत मे अंग्रेजी हकूमत को कायम रखने के दृढ स्तम्भ बनेंगे। इसलिए अंग्रेजो ने जहा विद्रोहियो को नृशसतापूर्वक दण्डित किया, वहा सहयोगियो को अपनी ओर से पुरस्कृत करने मे भी कसर नही छोडी। देश-विभाजन के बाद जो हिस्सा पश्चिमी पाकिस्तान कहलाया, उस भूखण्ड पर अंग्रेजो की कृपादृष्टि तभी से चली आ रही है। पाकिस्तान के प्रति जिस कोमल भाव के कारण उस प्रदेश को कभी कम्यूनिज्म से लडने के नाम पर और कभी भारत-विरोध की प्रच्छन्न मनोवृत्ति के कारण शस्त्रास्त्रो से लैस किया जाता रहा है, उसकी पूर्व-पीठिका इसी साम्राज्यवादी कूटनीति में देखी जा सकती है।

परन्तु अंग्रेजो की इस कूटनीति को भापकर उसका प्रतिकार करने का प्रयत्न यहा कभी बन्द नही हुआ और ऐसे तेजस्वी पुरुष इस देश मे निरन्तर पैदा होते रहे जो भारतीय राष्ट्रवाद को अपनी प्राण-धारा से सींचते रहे। यो समस्त उत्तर भारत मे, पर खास तौर से पजाब मे इस साम्राज्यवादी षड्यन्त्र को विफल करने का श्रेय जिन व्यक्तियो को दिया जा सकता है, उनमे अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द अग्रगण्य हैं।

ऋषि दयानन्द की क्रान्तिकारी विचारधारा से प्रभावित होकर उन्होने इस तथ्य को हृदयगम कर लिया था कि अंग्रेजी शासन से भी अधिक खतरनाक वह अंग्रेजियत है जो विदेशी भाषा, विदेशी आचार-विचार और विदेशी सस्कृति के माध्यम से इस देश की सन्तति को मानसिक दृष्टि से गुलाम बना रही है। मन



अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

गुलाम होने पर तन की गुलामी भी नही अखरती। देश मे केवल राजनैतिक पराधीनता को समाप्त करने का स्वप्न देखने वाले भी बहुधा इस मानसिक पराधीनता की उपेक्षा करते रहे। परन्तु मानसिक पराधीनता से मुक्ति पाए बिना केवल राजनीतिक स्वाधीनता कारगर नही हो सकती। स्वतन्त्र होने के पश्चात् भी यदि 'तन्त्र' दूसरो का ही चलता रहे, तो क्या लाभ ?

विदेशी शिक्षा-दीक्षा, विदेशी चिंतन, विदेशी वेश, विदेशी भाषा और विदेश-पलायन का मोह आज भी कम नहीं है। वह सुविधा-परस्ती का रास्ता है। पर राष्ट्र के कल्याण का राजमार्ग तो त्याग-तपस्या और कष्टो की गलियो से गुजरता है। युवा-पीढी को सस्कारवान चरित्रवान और भारतीय सस्कृति से अनुप्राणित बनाने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का पुनरुद्धार किया, समाज मे व्याप्त कुरीतियो का निवारण करने के लिए स्वय अपने घर-परिवार से पहल की और देश के स्वातत्र्य-सग्राम मे अदभुत निर्भीकता का परिचय दिया। धार्मिक, सामाजिक, शैक्षिक और राजनीतिक क्षेत्र मे कदम-कदम पर उनकी स्वभावगत वीरता के दर्शन होते हैं।

'हम' शब्द की व्याख्या उन्होने की थी—ह अर्थात् हिन्दू और म अर्थात मुसलमान—वह हिन्दू-मुस्लिम एकता की एक नई परिभाषा ही नही थी बल्कि इसे जिस रूप मे उन्होने चरितार्थ करके दिखाया था—वह भी इतिहास की अद्वितीय घटना है।

स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन का मूल सूत्र था—श्रद्धा। सत्य मे श्रद्धा ही उनके जीवन की नियामक शक्ति थी। इसी श्रद्धा ने उन्हे विकट परिस्थिति से जूझने की शक्ति दी थी। रवि बाबू ने लिखा है— 'विधाता जब दुःख को हमारे पास भेजता है तब वह अपने साथ एक प्रश्न लेकर आता है। वह पूछता है—तुम हमे किस भाव से ग्रहण करोगे ? जब उद्धार का कोई उपाय नजर नही आता तब उस विपद के साथ व्यवहार के ढग पर ही इस प्रश्न का उत्तर निर्भर होता है। हम उससे डरे या उसके सम्मुख छाती तानकर खडे हो जाए।' विपद के सम्मुख छाती तानकर खडे होने की यह शक्ति बिना अखण्ड श्रद्धा के नही आती।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

### कट्टर सिद्धान्तवादी

**स्वामी श्रद्धानन्द जी कट्टर सिद्धान्तवादी व्यक्ति थे, कभी भी अपने किसी व्यक्तिगत स्वार्थ हित सिद्धान्तों की बलि नहीं देते थे। अपनी इसी सिद्धान्तप्रियता के कारण ही उन्हें महात्मा गांधी एवं कांग्रेस दोनों का त्याग करना पड़ा था।**

**प्रसिद्ध गोभक्त लाला हरदेवसहाय जी ने एक बार स्वामी जी से कहा, "नित्य आपको मारने की धमकियां मिलती हैं। गांधी जी जैसे नेता भी आपसे रुष्ट हैं।" इसके उत्तर मे स्वामी जी ने गरज कर कहा—**

**"क्या हुआ जो गांधी जी रुष्ट हैं ? क्या हुआ जो धमकी भरे पत्र आते हैं ? जब परमात्मा मेरे पास हैं, उनका वरदहस्त मेरी पीठ पर है और जब मेरा पक्ष सत्य है तो मुझे किसका भय ? मैं देश धर्म के कल्याण के लिये हर प्रकार के विरोध का सामना करूं गा।"**

निदेशक : दत्तात्रेय आर्य प्रधान सम्पादक ' रासासिंह सम्पादक वीरेन्द्र कुमार आर्य फोन न कार्या 21010

# युगपुरुष श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज

—प्रो रामप्रसाद वेद
आचार्य एवं कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

वह दिन भारतीय सांस्कृतिक जागरण के इतिहास में सदैव याद किया जाएगा जिस दिन महर्षि दयानन्द के प्रथम दर्शन और सत्संग का लाभ महात्मा मुन्शीराम जी को मिला। स्वामी दयानन्द की अपूर्व तार्किक युक्तियो ने मुन्शीराम जी की सदेह और अनास्था की शिला को चूर चूर कर दिया था पर परमेश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करना उनके लिए दूभर हो उठा था। हतप्रभ मुन्शीराम जी ने निवेदन किया महाराज! आपकी तर्कणा शक्ति बडी प्रबल है आपने मुझे चुप तो करा दिया परन्तु यह विश्वास नही दिलाया कि परमेश्वर की कोई हस्ती है। महाराज पहले हसे फिर गम्भीर स्वर मे बोले—देखो तुमने प्रश्न किए मैंने उत्तर दिए —यह युक्ति की बात थी। मैंने कब प्रतिज्ञा की थी कि मैं तुम्हारा विश्वास परमेश्वर पर करा दूगा। तुम्हारा परमेश्वर पर विश्वास उस समय होगा जब वह प्रभु स्वय तुम्हे विश्वासी बना देगे। स्वामी जी महाराज उपनिषद की इस धारणा को— यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूं स्वाम्। अपने चिन्तन मे दृढता के साथ आबद्ध कर चुके थे। अत मुन्शीराम जी को उन्होने कहा—श्रद्धा की वेदी पर विश्वास का दीपक जलाओ परमेश्वर का साक्षात्कार होगा। मुन्शीराम जी को इस मानसी दीक्षा ने उन्हे श्रद्धानन्द बना दिया। तब से लेकर बलिदान होने तक उन्होंने श्रद्धा की अगुली कभी नही छोडी। विपरीत से विपरीत परिस्थितियो मे भी वह इसी सम्बल के कारण विचलित न हुए। आस्तिक होने का प्रमाण है निर्भयता। काग्रेस और स्वाधीनता का क्षेत्र हो या आर्यसमाज और शुद्धि सभा का गुरुकुल का काय हो या हिन्दू समाज का निर्भयता उनके मन की प्रचण्ड शक्ति के रूप मे उनके साथ रही। जलियावाला बाग काण्ड के तुरन्त बाद अमृतसर काग्रेस का अधिवेशन उनके आत्मबल के कारण ही सफलता के साथ सम्पन्न हो सका। उन्ही के तेजस्वी और लोकप्रिय व्यक्तित्व के कारण अग्रेज फौजी अफसरो के आतक दमन और अत्याचार के बावजूद त्रस्त जनता भारी सख्या मे अधिवेशन मे उपस्थित हुई। स्वागताध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द जी की सूझबूझ और लोकप्रियता का इससे प्रबल प्रमाण क्या हो सकता है?

स्वामी जी देह और मन से सच्चे आर्य पुरुष थे। वह आत्मसाक्षात्कार के आलोक से दीप्त योगी थे। वैदिक युग को मूर्त रूप देने के लिए शिक्षा की लोकोपकारी योजना लेकर गुरुकुल आए थे। उन्होने न केवल पजाब के राजनीतिक और सामाजिक रूप का कल्प किया अपितु उन्होने गाधी जी के आध्यात्मिक और स्वावलम्बी भारत की कल्पना को मूर्त रूप भी दिया। दीनबन्धु एण्डरूज उनसे इतने प्रभावित हुए कि महात्मा गाधी को दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटन पर पत्र लिखकर स्वामी श्रद्धानन्द जी से मिलने की प्रेरणा दी। महात्मा गाधी जिस दिन उन्हे मिले वह भारतीय सास्कृतिक जागरण के इतिहास मे याद किए जाने योग्य दूसरा महत्वपूर्ण दिन है। दोनो ही महापुरुष थे दोनों ही महात्मा थे। महात्मा गाधी ने लिखा है— अगर कोई मुझे महात्मा के नाम से पुकारते भी थे तो मैं यही सोच लेता था कि महात्मा मुन्शीराम जी के बदले भूल से मुझ किसी ने पुकार लिया होगा। मैं जानता था कि हिन्दुस्तान की जनता ने उन्हे उसकी देश और समाज-सेवाओ के लिए महात्मा की उपाधि दी थी।

1925 मे आचार्य दयानन्द जी की जन्म-शताब्दी पर उन्होंने गुरुकुल का लक्ष्य विषय पर एक लेख लिखकर अपने विचार प्रकट किए थे। उन्होने प्राचीन गुरु शिष्य सम्बन्धो पर आधारित शिक्षा व्यवस्था को जीवित करने के साथ प्राच्य और पाश्चात्य ज्ञान विज्ञान के समन्वय पर भी बल दिया। आचार्य का स्वरूप शिक्षा का स्वरूप पाठ्यक्रम पाठ्य विधि अध्ययन स्थान और सामग्री समान शिक्षा और समान जीवन-यापन की सुविधा प्रदान करना तथा समाज और राष्ट्र की आवश्यकता की पूर्ति की दिशा में सचेष्टता के मूल आधार पर खडी उनकी शिक्षा-योजना ने देश-विदेश मे तहलका मचा दिया। स्वामी जी ने गोखले साहब की प्रेरणा पर गुरुकुलीय पद्धति पर आधारित शिक्षा प्रदान करने की देशव्यापी योजना भी बनाई थी जो क्रियान्वित न हो सकी। स्वामी जी ने श्री गोपालकृष्ण गोखले को गुरुकुल आमंत्रित किया ताकि वह इस रूपरेखा को मूर्त रूप दे सकें परन्तु श्री गोखले कार्याधिक्य के कारण गुरुकुल न आ सके और यह योजना पूर्ण न हो सकी। स्वामी जी देश की बुनियादी शिक्षा पद्धति बदलना चाहते थे। उन का विचार था कि प्रत्येक नगर के पास प्रत्येक पाच गावो के समूह के मध्य प्रारम्भिक शिक्षा के लिए पाठशालाए खोल दी जाए जिनमे पढकर बालक केन्द्रीय गुरुकुल मे शिक्षा ग्रहण कर सकें। चार वर्ष की पाठ विधि हो और जनता की सभाए बनाकर लडकी और लडको की अनिवार्य शिक्षा का प्रबन्ध कराया जाए। आज की नवोदय शिक्षा मे इस योजना की कुछ झलक मिलती हैं। काश पराधीन भारत मे यदि यह योजना लागू हो जाती तो आज राष्ट्रभक्त सुशिक्षित नवयुवको की फौज ने अज्ञान गरीबी रूढिवादिता और वैमनस्य भरे समाज मे एक नया युग ही स्थापित कर दिया होता। स्वामी जी उच्चकोटि के शिक्षा शास्त्री थे। अभी देश के शिक्षाशास्त्रियों को स्वामी जी को आदर्श मानकर एक महान लक्ष्य की पूर्ति करनी है। उनका यह स्वप्न उनके जीवन मे साकार न हो सका। आर्यसमाज यदि इस दिशा मे कार्य करे तो वर्तमान अशान्ति की औषध बाहरी शिक्षण सस्थाओ को गुरुकुल से प्राप्त हो सकती है।

(क्रमश)

## ऋषि निर्वाण दिवस

आर्य समाज कृष्णानगर दिल्ली की ओर से ऋषि निर्वाण दिवस पर 26 10 89 को प्रभात फेरी का आयोजन किया गया जिसमे लगभग 250 स्त्री पुरुष बच्चे सम्मिलित हुए कृष्णा नगर एव आसपास के क्षेत्र से जहा से भी प्रभात फेरी हुई निवासियो ने पुष्प वर्षा मिष्ठान एव फलो द्वारा अभूतपूर्व स्वागत किया। सारा क्षेत्र वैदिक ध्वनि से गुजायमान हो गया।

—मन्त्री

## बिहार मे आर्य-समाज की दुर्दशा

बिहार के आर्यो का शिष्टमण्डल 3 अक्टबर 1989 को दिल्ली मे आर्य नेताओ से मिला। देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी के नेतृत्व मे यह शिष्टमण्डल प्रो रत्नसिंह नैतिक शिक्षा सस्थान दिल्ली श्री क्षितीश वेदालकार सम्पादक आर्य जगत दिल्ली श्री प यशपाल सुधाशु आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली एव श्री रामनाथ सहगल मन्त्री आर्य प्र देशिक सभा दिल्ली शिष्टमण्डल ने बिहार मे आर्य समाज की दुर्दशा स्थिति से आर्य नेताओ को परिचित कराया।

मन्त्री

(शेष पृष्ठ 1 का)

काका कालेलकर ने लिखा है— जिस दिन स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने प्रिय पुत्र को लेकर गुरुकुल की स्थापना के सकल्प से गगा के तट पर निवास किया वह दिन भारतवर्ष के वर्तमान इतिहास मे महत्त्व का था। उस दिन उन्होने जाति के उद्धार की नींव डाली। जिस दिन उन्होने अन्त्यज बालको को अपनाया उसी दिन हिन्दू जाति के सगठन का सूत्रपात किया। और जिस समय उन्होंने पत्थर गोली और खजर की तरफ तुच्छता की नजर से देखा उसी दिन उन्होंने भारतवर्ष को निर्भयता का पाठ पढाया। अपनी अतुल श्रद्धा से उन्होने अपना दीक्षा नाम कृतार्थ किया। कायरो के जमाने मे इस पुरुषसिंह की निर्भयता बहुत लोग न समझ पाए होंगे और सशय की नजर से उन्हें देखा होगा पर ऐसा समय जरूर आएगा जब विरोधी भी स्वीकार करेंगे कि भारतवर्ष का यह आधुनिक सन्यासी सबको मित्र की दृष्टि से ही देखता था। सचमुच श्रद्धानन्द राष्ट्र-मूर्ति थे।

इस राष्ट्रमूर्ति के जीवन की तेजस्विता राष्ट्र की आत्मा को सदा तेजस्विता की ओर अग्रसर करती रहे!

मेरी अमेरिका यात्रा के संस्मरण

# हवाई यात्रा की आशंकाएँ और आनन्द–2

—दत्तात्रय बाळे

(गताक से आगे)

**कम्प्यूटर की खराबी**

लन्दन पहुचने पर दूसरे वायुयान द्वारा अमेरिका के लिये प्रस्थान करना था। अब सब यात्री उस दूसरे विमान मे बैठकर विशाल अटलांटिक महासागर के ऊपर लगभग दो घटे की यात्रा पूरी कर रहे थे तभी पुन एक भयभीत करने वाले समाचार की घोषणा की गई और चालक द्वारा यह आशका व्यक्त की गयी कि हवाई जहाज को चालित करने वाला जो कम्प्यूटर है वह ठीक तरह से काम नहीं कर रहा है और उसकी जाच की जा रही है। उसके बाद मे ये निर्णय किया जायेगा कि अगली यात्रा जारी रखना उपयुक्त है या नही। स्पष्ट है कि इस अवधि मे यात्रियो की मनोदशा बडी तनावपूर्ण रही क्योकि नीचे सिवाय विशाल महासागर और उसकी मीलो उठने वाली लहरो के अतिरिक्त और कोई आश्वस्त करने वाला दृश्य दिखाई नहीं दे रहा था। अन्त मे जहाज को पुन लन्दन लौटाये जाने की घोषणा की गई जहा लम्बी प्रतीक्षा के बाद दूसरे वायुयान मे यात्रियो को बैठाया गया। बाद मे मालूम हुआ कि जिस वायुयान से यात्रा प्रारम्भ की गयी थी वह एक विशाल नवीनतम वायुयान कुछ ही समय पूर्व निर्मित किया गया था। उसमे लगे आधुनिकतम कम्प्यूटरो का अभी परीक्षण नही हो पाया था इसलिये लौटने के बाद पूर्व परिचित वायुयान का ही उपयोग करना पडा।



बाळे दपती के साथ मार्शल विश्वविद्यालय के अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति विभाग के अध्यक्ष प्रो क्लेयर मेटस

**प्राईवेट अर्थात व्यक्तिगत वायुयान**

इस सब विलम्ब के कारण हम अपने गन्तव्य स्थान अर्थात अमेरिका के पीटसबर्ग मे रात के 3 बजे पहुच पाये। वहा से पुन नियमित वायुयान से जाने मे और अधिक देरी की सभावना को ध्यान मे रखकर मेरीपुत्री तथा उसके पति [illegible] छ सीटो वाला एक व्यक्तिगत हवाई जहाज हमे ले जाने के लिए लेकर आये। इस प्रकार हम लगभग 4 बजे अपने स्थान पर पहुचे। अमेरिका मे प्राय सबके पास और कुछ परिवारो मे जिनमे भारतीय परिवार सम्मिलित हैं बड बच्चो सहित सबकी अलग-अलग मोटर गाडिया है किन्तु कुछ व्यक्तियो के पास अपने छोटे और प्राईवेट वायुयान भी हैं। आगे जानकारी करने से पता लगा कि इस प्रकार व्यक्तिगत वायुयान रखने वालो का वहा एक सगठन बना हुआ है और नियमित वायुयान सेवा के लिये उतरने व उडान की सुविधा है। ये सुविधाए इन व्यक्तिगत वायुयानो को भी निर्धारित राशि देकर उपलब्ध होती हैं। वायुयान की यात्रा आदि मे आजकल कम्प्यूटर का उपयोग होता है इसलिये इन व्यक्तिगत वायुयानो की उडान तथा उतरने और मार्ग आदि सब स्वचालित होते हैं। छ व्यक्तियो के इस वायुयान मे मैं और मेरी पत्नी पुत्री तथा उसके पति डॉ शर्मा के अतिरिक्त उनका मित्र चालक इस प्रकार हम पाच व्यक्ति थे। छोटे हवाई जहाज मे नीची उडान तथा हवा के दबाव आदि के कारण उतनी स्थिरता नही होती जितनी बड अन्तर्राष्ट्रीय वायुयान मे होती है जो लगभग 30 40 हजार फीट पर उडते हैं। इसलिये इस प्रकार के छोटे वायुयानो मे दुर्घटना की अधिक आशकाए होती हैं फिर भी हम पाच घटे के स्थान मे 45 मिनिट मे अपने घर सकुशल पहुच गये।

**सुरक्षा सम्बन्धी नियम**

अन्तर्राष्ट्रीय विशालकाय वायुयानो की यात्रा से पूर्व सुरक्षा आदि सम्बन्धी कुछ नियमो का पालन सब जगह एकसा है। विदेश यात्रा के लिये अपने देश का पासपोर्ट लेना होता है जिसमे यह अंकित किया जाता है कि आप किस किस देश की यात्रा कर सकते हैं। भारत सरकार द्वारा हमे दिये गये पासपोर्ट मे यह उल्लेख था कि हम दक्षिण अफ्रीका को छोडकर अन्य सभी देशो की यात्रा कर सकते हैं। अपने देश के पासपोर्ट के बाद जिस देश मे जाना हो वहा के दूतावास द्वारा वीजा प्राप्त करना आवश्यक होता है। हवाई यात्रा के निश्चित समय से लगभग दो घटे पूर्व हवाई अड्डे पर पहुचने का नियम है क्योकि वहा अनेक औपचारिकताऐं पूरी होने के बाद ही वायुयान मे प्रवेश मिलता है। बढती हुई भीड भाड तथा सुरक्षा की दृष्टि से आजकल केवल यात्रियो को ही एयर पोर्ट मे प्रवेश दिया जाता है पहले के समान उनके मित्र आदि अब अन्दर नही जा पाते हैं।

**यात्रा की औपचारिकताए**

प्रवेश के बाद सबसे पहले पासपोर्ट आदि की जाच होती है। भारत सरकार ने अब यात्रा की औपचारिकताए विदेश यात्रा करने वालो पर भी लगभग रुपये तीन सौ प्रति व्यक्ति के हिसाब से यात्रा टैक्स लगा दिया है। इस देन के बाद कस्टम अर्थात चुगी विभाग मे सामान की यह देखने के लिये जाच की जाती है कि उसमे कोई अवैध सामान तो नही है। अन्तर्राष्ट्रीय उडानो मे सीधी यात्रा करने वालो को प्रतिव्यक्ति दो सूटकेस ले जाने की अनुमति है जो हवाई जहाज के नीचे सामान कक्ष मे रखे जाते हैं किन्तु यदि रास्ते मे कही रुककर जाना हो तो दो स्थान पर केवल एक ही सूटकेस वह भी निर्धारित वजन का ले जाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक व्यक्ति अपने साथ एक छोटा सूटकेस हवाई जहाज मे भी ले जा सकता है। जो अपनी सीट के नीचे या ऊपर बने खानो मे रखा जाता है। चुगी या कस्टम के बाद सबसे महत्वपूर्ण औपचारिकता सिक्योरिटी अर्थात सुरक्षा सम्बन्धी कार्यवाही होती है जो गत कई वर्षों मे हवाई जहाज के विस्फोटो तथा उसे भगाकर उडा ले जाने के कारण काफी कडी की गई है। साथ मे ले जाने वाले छोटे सूटकेस पर्स व छोटी बड सभी चीजो की एक यान्त्रिक प्रणाली के द्वारा जाच की जाती है कई स्थानो पर इस प्रणाली के द्वारा अन्दर के चित्र छोटे पर्दे पर देखे जा सकते हैं। और उनमे यदि चाकू छुरी तलवार पिस्तौल आदि कोई विस्फोटक वस्तु हो तो उसमे से एक विशेष प्रकार की आवाज होती है जिसके आधार पर उसे खोलकर देखने के बाद आपत्तिजनक न होने पर ही ले जाने की अनुमति मिलती है।

**तलाशी**

इसी प्रकार प्रत्येक यात्री को एक ऐसे दरवाजे से गुजरना पडता है कि जिसमे इसी प्रकार के जाच यन्त्र के द्वारा आपत्तिजनक वस्तुओ की जानकारी दी जाती है इसके उपरान्त भी कई स्थानो पर महिला और पुरुष अधिकारी सिर से पैर तक यात्रियो को हाथ से टटोल कर भी तलाशी लेते है। इन सब सुरक्षा सबधी जाचो के बाद सब यात्रियो को सुरक्षित सिक्योरिटी के केन्द्र मे एकत्रित बैठना होता है उसके बाद न वहा कोई अन्य व्यक्ति जा सकता है और न यात्रियो मे से ही कोई बाहर आ सकता है वहा से हवाई जहाज तक पहुचने का रास्ता भी एक विशेष प्रकार की बनी ऊपर-नीचे से बद गैलरी मे से होता है। जिसका उद्देश्य यह है कि इसके बाद किसी प्रकार का बाहर का सम्पर्क न हो सके। वायुयान मे अपने निर्धारित स्थान पर बैठने के बाद सबको बैल्ट या सुरक्षा की कमर पेटिया बाधनी होती है और जब तक हवाई जहाज निर्धारित ऊचाई पर न पहुचे तब तक किसी यात्री को अपने स्थान से उठने व चलने आदि की अनुमति नही दी जाती।

**हवाई यान सुविधाए**

जैसा मैंने ऊपर कहा है कि आधुनिकतम हवाई यान एक विशाल लम्बे थियेटर हॉल के समान होते है। उनमे से कई दो मजिले भी होते हैं जिनमे 300 से 500 तक यात्री भिन्न भिन्न श्रेणियो के टिकिट लेकर बैठते है। जहाज मे नीचे सब जगह गलीचे जमी बिछायत होती है और कुर्सिया भी इसी प्रकार गद्दीदार होती हैं जो आगे पीछे करके आराम कुर्सी जैसी बन जाती है। वायुयान की यात्रा मे नियमित रूप से भोजन व नाश्ते आदि के अतिरिक्त अन्य पेय पदार्थ समय समय पर वितरित किये जाते हैं मदिरा पान करने वाले लोगो के लिये सभवत यह अच्छा अवसर होता है क्योकि वहा महगी से महगी और भिन्न भिन्न प्रकार की मदिराये निःशुल्क दी जाती हैं।

(क्रमश)

## महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर रोहतक की हीरक जयन्ती महोत्सव

आपको यह जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि आपका अपना यह प्रिय सम्थान उत्तरोत्तर उन्नति करता हुआ अपनी स्थापना के 75वें वर्ष मे पहुच गया है। अतएव इस उपलक्ष्य मे हर्षोल्लास के साथ फाल्गुन कृष्णा द्वादशी से अमावस्या पयन्त स 2046 शिवरात्रि के अवसर पर 22 23 24 एव 25 फरवरी 1990 ई मे सस्था के हीरक जयन्ती महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है।

इस शुभ अवसर पर आर्यजगत् के अनेक धुरन्धर विद्वान तप पूत वीतराग साधु-सन्यासी, प्रान्तीय तथा केन्द्र सरकार के प्रमुख राजनैतिक नेता तथा उच्चकोटि के आर्य भजनोपदेशक पधार रहे हैं। अत आप सपरिवार भारी सख्या मे पधार कर धर्म लाभ उठायें।

सभी दानी सज्जनो से नम्र-निवेदन है कि इस आदर्श गुरुकुल की उन्नति एव सुसचालन के लिए मुक्तहस्त से दान देकर कृतार्थ करे।

—स्वामी ओमानन्द सरस्वती (आचार्य)

## वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज लल्लापुरा का 54 वा वार्षिकोत्सव 25 से 28-12-89 को मनाया जायगा। इस शुभावसर पर आर्य जगत् के विख्यात महोपदेशक, प्राध्यापक, वेद विदुषी, सगीतज्ञ एव भजनोपदेशकगण पधार रहे हैं। जनता जनार्दन से साग्रह नम्र निवेदन है कि इस महोत्सव मे पधार कर उपदेशो से लाभ उठावें तथा तन, मन, धन से सहयोग देकर समारोह को सफल बनायें।

—मन्त्री

### दयानन्द बाल सदन, अजमेर

## आचार्य की आवश्यकता

दयानन्द बाल सदन अजमेर जिसमे 150 बालक-बालिकाए हैं, उसके लिये एक निष्ठावान 45 से [illegible] वर्ष आयु के आर्य विद्वान आचार्य की आवश्यकता है। प्रारम्भिक वेतन 14[illegible]/-, वेतन शृखला 1120-2050 नि शुल्क आवास तथा बिजली पानी की सुविधा। आवेदन मत्री के नाम शीघ्र प्रस्तुत करें।

## ऋषि दयानन्द वचनामृत

✱ प्रजा को अपने सन्तान के सदृश सुख देवे और प्रजा अपने पिता सदृश राजा और राज पुरुषो को जाने।

✱ सब कर्मों का यथावत फल देना ही ईश्वर का काम है क्षमा करना नही।

✱ जो मनुष्य पक्षपाती होता है वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मतवाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने मे प्रवृत्त होता है इसलिये वह सत्य मत को नहीं प्राप्त हो सकता।

✱ मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि हठ दुराग्रह और अविद्यादि दोषो मे सत्य का छोड असत्य मे झुक जाता है।

✱ जो बलवान होकर निबलो की रक्षा करता है वही मनुष्य कहाता है और जो स्वार्थवश होकर पर हानिमात्र करता रहता है वह पशुओ का भी बडा भाई है।

✱ आर्य उसको कहते हैं जो गुण कर्म स्वभाव और सत्य व्यवहारो मे सब से अधिक हो।

✱ जो जीव जैसा कर्म करता है वैसा ही फल पाता है।

✱ ससार मे सुखी-दुखी अपने-अपने पुण्य-पापो के कारण हैं।

✱ माता-पिता तथा अध्यापक ईर्ष्या द्वेष से विद्यार्थियो का ताडन न करे।

## आर्यसमाज शिक्षा सभा, अजमेर

### आवश्यकता

(1)

विरजानन्द सीनियर हायर सैकण्डरी विद्यालय हेतु एक व्याख्याता (स्कूल शिक्षा) नागरिक-शास्त्र-योग्यता—एम ए (राजनीति शास्त्र) तथा बी एड वेतन शृखला 1490-3050 तथा देय महगाई भत्ता। आवेदन मत्री के नाम 10/- के निर्धारित प्रपत्र पर शीघ्र प्रस्तुत करें।

(2)

सूर्यदेव सैकण्डरी विद्यालय हेतु एक द्वितीय ग्रेड गणित अध्यापक-योग्यता-बी एस सी (गणित विषय सहित) तथा बी. एड—वेतन शृखला 1140 से 2250 तथा देय महगाई भत्ता। अनुभवी तथा उच्च योग्यता-धारी को प्राथमिकता। आवेदन 10/- के निर्धारित प्रपत्र पर मन्त्री के नाम शीघ्र प्रस्तुत करें।

(3)

स्टेनोग्राफर एक—योग्यता हायर सैकण्डरी तथा किसी मान्यता प्राप्त सस्थान से आशुलिपि मे डिप्लोमा। वेतन शृखला 1140 से 2250 तथा देय महगाई भत्ता। आवेदन 10/- के निर्धारित प्रपत्र पर मत्री के नाम शीघ्र प्रस्तुत करें।

(4)

विरजानन्द प्राईमरी विद्यालय हेतु दो सहायक अध्यापक-योग्यता-हायर सैकण्डरी व एस टी सी वेतन शृखला—880 से 1680 तथा देय महगाई भत्ता। अनुभवी को प्राथमिकता। आवेदन 10/- के निर्धारित प्रपत्र पर मत्री के नाम शीघ्र प्रस्तुत करें।

(5)

सगठन सचिव योग्यता स्नातक एव कम से कम पाच वर्ष का वरिष्ठ लिपिक का अनुभव। वेतन शृखला—1400 से 2825 तथा देय महगाई भत्ता। उच्च योग्यताधारी एव अनुभवी को प्राथमिकता। आवेदन मत्री के नाम 10/- के निर्धारित प्रपत्र पर शीघ्र प्रस्तुत करे।

## आर्यसमाज अजमेर द्वारा प्रकाशित साहित्य

### प्रो. दत्तात्रेय आर्य द्वारा लिखित पुस्तकें

1. वेद धर्म और हिन्दू समाज को आर्यसमाज की देन—मूल्य 0 50 पैसे
2. हमारी राष्ट्रीयता का आधार—मूल्य रु 1 00
3. विद्यार्थियों के लिए आचार सहिता—मूल्य 0 50 पैसे
4. दी आर्यसमाज हिन्दू विदाउट हिन्दुइज्म (अग्रेजी)—[illegible] रियायती दर रु 75 00
5. आर्यसमाज हिन्दू धर्म का सम्प्रदाय नही-मूल्य—50 00 रु
6. आर्यसमाज दी मोस्ट पावरफुल मूवमेंट (सा दे सभा द्वारा प्रकाशित)—रु 5 00

### दयानन्द शोधपीठ के प्रकाशन

1. दयानन्द कथा सग्रह मूल्य रु 3 00
2. महर्षि दयानन्द पत्रों के दर्पण मे मूल्य रु 50 00

### अन्य प्रकाशन

1. धर्म शिक्षा (भाग 1 से 11 तक) पूरे सैट का मूल्य रु 32 00
2. परिचय निर्देशिका (समस्त देश-विदेश की आर्य शिक्षण सस्थाओ का परिचय)—मूल्य रु 12 00
3. आर्यसमाज (हिन्दी) मूल्य सजिल्द रु 20 00 अजिल्द रु 16 00 ले लाला लाजपतराय

## सत्यार्थ-प्रकाश ग्रन्थ माला 15 भाग

### (प्रत्येक समुल्लास पर स्वतन्त्र ट्रेक्ट)

1—ईश्वर एक नाम अनेक
2—आदर्श माता-पिता
3—शिक्षा और चरित्र निर्माण
4—गृहस्थाश्रम का महत्व
5—सन्यासी कौन और कैसा हो?
6—राज्य व्यवस्था
7—ईश्वर और वेद
8—जगत की उत्पत्ति
9—स्वर्ग और नरक कहा है?
10—चौके चूल्हे मे धर्म नही
11—हिन्दू धर्म की निर्बलता
12—बौद्ध और जैन मत
13—वेद और ईसाई मत
14—इस्लाम और वैदिक धर्म
15—सत्य का अर्थ तथा प्रकाश

**विशेष** सभी ट्रैक्ट आर्य जगत् के चोटी के विद्वानो के द्वारा लिखित हैं एव ग्रन्थमाला का सम्पादन आर्यसमाज अजमेर के प्रधान प्रो दत्तात्रेय जी आर्य ने किया है। ग्रन्थमाला के सैट का मूल्य 8/- रुपये है।

स्वत्वाधिकारी आर्यसमाज अजमेर के लिए प्रकाशक एव सपादक रासासिंह हेतु रतनलाल शर्मा द्वारा-श्री आर्य प्रिन्टर्स बाबू मौहल्ला केसरगज अजमेर मे मुद्रित एव आर्यसमाज भवन, अजमेर से प्रकाशित।